विजयेश्वर पञ्चाङ्ग

891

नास्ति मातृसमं तीर्थ पुत्राणां तारणाय च हितायात्र परत्रार्थ यैस्तु माता प्रपूजिता

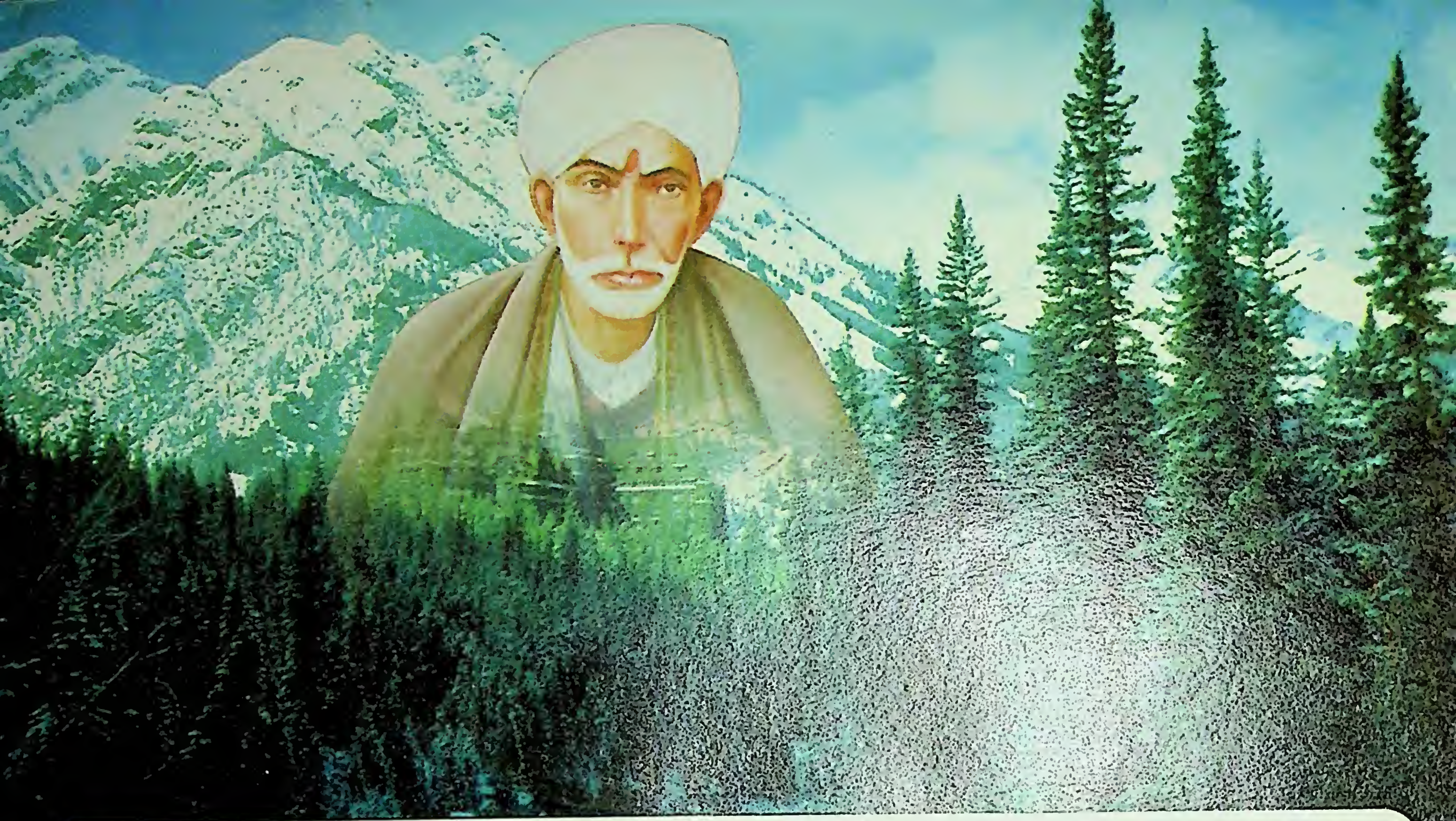

विजयेश्वर पंचांग के प्रवर्तक ज्यो. आफताब शर्मा (अगस्त 1887–अक्तूबर 1966)

शारदा
गुरुमुखी
उड़िया
सिन्धी
उर्दू
प्रणवे च दृढ़ा मतिः
स वै "हिन्दू"
गुजराती-मराठी
असमिया-बंगला
तमिल
मलयालम
तेलुगु

ज्येष्ठा देवी मन्दिर

ॐ

प्रवर्तक
ज्यो॰ आफताब शर्मा

संस्थापक
पं॰ प्रेमनाथ शास्त्री

891

विजयेश्वर पञ्चाङ्ग

सप्तर्षि
5084

रजि॰

विक्रमी
2065

सम्पादक
ओंकार नाथ शास्त्री

प्रकाशक
अवतार कृष्ण ज्योतिषी

गणित कर्ता
भूषण लाल ज्योतिषी
एम. ए. साहित्यचार्य

Price : Rs. 50.00

2

विषय सूची

विषय सूची	2	आप का जन्म दिन कब	34	शिव संकल्प	25	स्तोत्र	116
दो शब्द	3	यज्ञ, यज्ञोपवीत इत्यादि		शिवोह	31	पुरुष सूकत	122
भूलिये मत	4	की सामग्री	35	ब्राह्मी विद्या	45	सुर्याष्टकम	123
नमस्कार	5	ग्रहण विवरण	40	विष्णु प्रार्थना	47	शान्तिपाठ	124
नोट	6	2065 ज्योतिष की	42	अष्टादश श्लोकी गीता	52	गायत्री मन्त्र	125
श्रद्धांजली	7	नज़र में		राम स्तुति	67	कन्याओं का यज्ञोपवीत	130
चण्डी यज्ञ निर्वाण दिवस	10	पंचांग	45	हनुमान चालीसा	70	धर्म शास्त्र	133
संदिग्ध व्रत	11	मुहूर्त	85	गौरी स्तुति	77	श्राद्ध	138
महत्वपूर्ण दिन	12	राशि के अनुसार	116	गायत्री चालीसा	85	जन्म दिन पूजा	141
व्रतों की सूची	13	राशि फल	128	दुर्गा स्तुति	88	प्रेप्युन	147
गण्डान्त	15	साढ सत्ती	164	अपराध क्षमास्तोत्र	90	प्राणायाम	151
महात्माओं के श्राद्ध	16	ऋतुपति	166	गुरू स्तुति	90	सन्ध्या	158
पंचक	18	शारदा पढ़िये	168	नवग्रह पूजा	96	गोत्र	161
जयन्तियां	19	आमदनी खर्च	170	काहं मा स तरि	97	अन्तिम संस्कार	168
यात्रायें	21	जातक मिलाप	173	प्रभात आव	98	शिवनामावल्यष्टकम्	179
गुरुपर्व	22	**पाठ प्रकरण**	**8**	जमीन्दारी	103	नये प्रकाशन	181
महत्वपूर्ण यज्ञ	23	नित्यनियम विधि	9	चन्द्र शेखर	106	ज़रा ध्यान दें	182
निषेध समय	23	गणपति स्तोत्र	13	विल्वाष्टकम	110	मार्तण्ड महात्म्य	183
हमारे पर्व	24	गाणेश स्तुति	17	चन्द्रशेखरा शंकरा	112	विक्रेता	184
मुहर्त 2009	26	शंकर पूजन	20	इन्द्राक्षी	113	**गीता पढ़िऐ**	
स्वप्न	29	शिवस्तुति	22	आरती	114		

ॐ

दो शब्द

विजयेश्वर पञ्चांग के 324वें जन्म दिवस पर विजयेश्वर पञ्चांग कार्यालय के सदस्य समस्त जनता को धन्यवाद देते हुये परम पिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि आगामी वर्ष (विक्रमी 2065) सभी जनता के लिये खुशी, समृद्धि का सन्देश लेकर आये। विजयेश्वर पञ्चांग के विषय में हमें अपने सुझाओं से सूचित करें।

ओंकार नाथ शास्त्री
सम्पादक
94191-33233

इनको भूलिये मत

हमारी सभ्यता तथा संस्कृति के मूल स्रोत

- सन्थया चोंग
- सन्यवारी
- ब्रान्द फश
- हून्य म्यट
- तरंग गण्डुन
- देव गौण
- द्वार पूजा
- पोश पूजा
- फिर थुर
- आलथ
- व्यूग
- क्रूल खारुन
- लाय बोय
- दयबत
- मास अबीद
- वारिदान
- दिवत गूल्य
- दिवच तबचि
- बूठ मुचरिथ कमरस मंज अचुन

- मनन माल
- रत्न चाँगिजि
- क्रूल पछ
- गौर त्रय
- अनथ
- थाल भरुण
- थालस बुथवुछुन
- तहर बनावन्य
- वरी बनावन्य
- बिहिथ ख्योंन
- न्यश पत्रि बुथ बुछुन
- न्यशत्र थालस प्यठ थावन्य
- शंख वायुन
- मेखला संस्कार
- मॉलिस माजि हुँज सेवा
- गुल्य गंडिथ नमस्कार करुन
- जिठ्यन आदर करुन
- गुरुस आदर करुन

यज्ञोपवीत का संस्कार घर पर करें

घर पर काश्मीरी भाषा में बात करें

बच्चे को 12 वर्ष की आयु तक यज्ञोपवीत धारण करायें

जन्म दिन तिथि के अनुसार मनायें

नमस्कार

1. यदि आपको विजयेश्वर पंचांग के विषय में कुछ पूछना हो
2. यदि आप को धर्म शास्त्र कर्मकाण्ड अथवा किसी प्रकार की कोई धार्मिक समस्या हो
3. यदि आप यज्ञोपवीत या कोई धार्मिक अनुष्ठान कराना चाहते हैं
4. यदि आप सम्पादक ओंकारनाथ शास्त्री से मिलना चाहते हैं

? तो

पर सम्पर्क करें।

☎ : 0191-2555607

: 09419133233

9818701244 D

मिलने का समय :

प्रात: 10 बजे से 2 बजे तक।

विजयेश्वर

पञ्चांग कार्यालय (रजि)

अजीत कॉलोनी (एक्स)

गोल गुजराल, जम्मू

E-mail : omvijayshwer@yahoo.com

नोट : विजयेश्वर पंचांग की धार्मिक आस्था को सुरक्षित रखने के निमित कोई भी महानुभाव विजयेश्वर पंचांग के किसी भी पृष्ठ पर किसी प्रकार की मुहर या स्टीकर लगाने की तथा मूल्य बडाने की चेष्टा न करें।

प्रकाशक

नोट : सभी महात्माओं की जयन्तियां श्राद्ध तथा यज्ञ विस्तारपूर्वक अलग से लिखे गये हैं। यदि किसी महापुरुष का श्राद्ध, जयन्ती या यज्ञ लिखने से रह गया होगा तो कृपया हमें इस नम्बर (9419133233) पर सूचित करें।

सम्पादक

पं॰ प्रेमनाथ शास्त्री शोध संस्थान का कार्य क्षेत्र

१ पं॰ प्रेमनाथ शास्त्री के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर अनुसंधान कार्य करने की व्यवस्था करना।
२ कश्मीर के प्राचीन सांस्कृतिक इतिहास का पुनर मूल्यांकन तथा धार्मिक सांस्कृति सम्पदा की जानकारी प्रदान करना।
३ संस्कृत भाषा और शारदा लिपि पढ़ाने की व्यवस्था करना।
४ कर्मकांड विधि से जनता को परिचित कराना।
५ युवा मानस को अपनी भव्य परम्परा से परिचित कराना।
६ विचार गोष्ठियों, समिनार तथा बाल प्रतियोगिताओं का आयोजन।
७ विविध कलाओं से जुड़े कार्यक्रम तैयार करना।
८ एक शोध पुस्तकालय की स्थापना आदि।

लक्ष्य महान् है, पथ अगम्य, साधन अल्प, दिशाएँ धूमिल लेकिन आकांक्षाएँ असम्भव के वक्ष को चीर कर आगे बढ़ने की प्रेरणा दे रही हैं।

अध्यक्ष

स्वर्गीय पण्डित प्रेमनाथ शास्त्री के प्रति श्रद्धाँजलि

प्रोफ़ेसर (डॉ0) भूषण लाल कौल, डी़ लिट

स्वर्गीय पण्डित प्रेमनाथ शास्त्री (4 अक्टूबर 1920 ई0 - 28 अगस्त 1999 ई0) एक चर्चित शास्त्र व्याख्याता, प्रबुद्ध बुद्धिजीवी, माहिर गणितज्ञ, फलित ज्योतिष के ज्ञाता, वेदविद, शैवशास्त्राचार्य, अनुभवी लेखक, सफल अनुवादक, कुशल वक्ता एवं विश्वस्त व्याख्याकार थे। उन की जिह्वा पर माँ शारदा का वास था।

सौम्य, शिष्ट, सुसभ्य, मर्यादित एवं शान्त व्यक्तित्व के धनी शास्त्र जी मध्यवर्गीय वैष्णव गृहस्थ होने के साथ साथ एक सुहृद् बन्धु, व्यवहार कुशल पथ-प्रदर्शक एवं गुप्तदानी भी थे। आचार्य प्रवर श्रेष्ठ सांस्कृतिक परम्परा को जन जन तक पहुंचाने के हेतु आजीवन साधनारत रहे। एक साथ विभिन्न शास्त्रों और धर्म ग्रन्थों से प्रमाण प्रस्तुत कर सम्बद्ध (Relevant) श्लोकों, मंत्रों और ऋचाओं की स्मृति दिला करं 20वीं शताब्दी का यह कश्मीर वासी महापण्डित सुनने वालों को मंत्रमुग्ध कर देता था।

शास्त्री जी एक क्रान्तिकारी (Revolutionary) पण्डित थे। उन का निजी अध्ययन अत्यंत व्यापक, बहुमुखी और तर्काश्रित था। प्राचीन भारत के शक्तिस्त्रोत से लेकर वर्तमान भारत के निर्माताओं तक वे समानरूप

से आकृष्ट थे। इतना ही नहीं समकालीन आवश्यकताओं एवं विवशताओं के प्रति सचेत भी थे। ज्योतिषी जी की ज्ञान गरिमा का आभास उन की वाक् पटुता में स्पष्ट झलकता है। अपनी बात को प्रभावशाली ढंग से श्रोत: गण तक पहुंचाने में वे सिद्धहस्त थे और इस लिये शास्त्र ज्ञान, गीतारहस्य, उपनिषद सार, ब्राह्मण ग्रन्थ, विविध पुराण, रामायण एवं महाभारत तथा उनका निजी अनुभव सहायक सिद्ध होता था

शास्त्री जी के व्यक्तित्व का एक और आकर्षण था उनका मधुर कंठ - संगीतमय प्रस्तुति। उनके द्वारा रिकाड किया गया गीता जी का श्रुति मधुर पाठ श्रोत: जन को मुदित कर देता है। शायद ही कश्मीरी पण्डितों में कोई ऐसा घर होगा जहां शास्त्री जी का मन्त्रोच्चार किसी न किसी रूप में उपलब्ध न हो। यह कोई अतिश्योक्तिनहीं, यह हमारे पारिवारिक और सामाजिक जीवन का यथार्थ है।

शास्त्रीय जी अनुशासन बद्ध जीवन जीने में विश्वास रखते थे। 'हॉय' और 'वॉय' के कीटाणु ग्रस्त रुग्ण कल्चर से उन्हे बेहद घृणा थी। वे किसी प्रकार के अभद्र ओर अशिष्ट व्यवहार को सहन करने के लिये तैयार नहीं थे। एक प्रतिष्ठित ब्राह्मण एवं धर्म संस्थापक की समस्त विशेषताएँ उन के व्यक्तित्व में निहित थी।

शास्त्री जी को अपनी मातृभाषा कश्मीरी के साथ बेहद लगाव था। आज भी श्रीमद्‌भगवद् गीता का कश्मीरी भाषा में भाष्य एंव अर्थ सहित व्याख्या सुन कर लोग गद्‌गद् हो उठते हैं। वेद मंत्रों के कथ्य को कश्मीरी

भाषा में व्याख्या करते मैं न स्वयं उन्हें सुना है। वे उच्चस्तर की कश्मीरी भाषा का व्यवहार करने में सिद्ध हंस्त थे। उन के लोकप्रिय होने का एक कारण यह भी है।

शास्त्री जी शारदा, फारसी, देवनागरी, नस्तालीक एवं रोमन लिपियों के जानकार थे। उन्हें संस्कृत, हिन्दी एवं कश्मीरी के अतिरिक्त उर्दू भाषा से बेहद लगाव था। प्रायः उर्दू भाषा एवं फारसी लिपि का खुलकर प्रयोग करते थे।

'नक्षत्र पत्री' (न्यश पॅत्र) से 'पंचांग' तक तथा 'विजयेश्वर पंचांग' से 'रणवीरेश्वर पंचांग' तक विकास के विभिन्न पड़ाव तय करते हुए ज्योतिषी जीने 'विजयेश्वर पंचांग' को वर्तमान काल की आवश्यकताओं के अनुरूप एक नये सांचे में डालने का सफल प्रयास किया। हर वर्ष पंचांग में नये विषय जोड़कर इसे धर्माधारित शास्त्रोक्त आचारण व्यवहार सम्बन्धी निर्देष्ट्र (Guide Book) का रूप प्रदान किया।

उन के मुख मंडल में अद्भुत तेज, आँखों में प्रखर जोत, व्यक्तित्व में चुम्बकीय शक्ति और मुख पर खिलती मुस्कान उन्हें आकर्षण का केन्द्र बना देती थी।

वे हमारे विगत और वर्तमान की पहचान थे। धर्म ध्वजा धारण कर उन्होंने ससम्मान जीवन जीने की प्रेरणा दी।

उन्हें मेरा शतशत नमन।

23 नवम्बर, 2008 ई0

भूषण लाल कौल

महा चण्डी यज्ञ

स्वयमानन्द आश्रम मुट्ठी जम्मू में

(7 सप्तम्बर 2008 से 9 सप्तम्बर 2008 तक)

यह महा चण्डीयज्ञ भाद्र शुक्ल पक्ष सप्तमी से भाद्र शुक्ल पक्ष नवमी तक जगत कल्याण के लिये आयोजित किया जा रहा है। समस्त जनता जनार्दन से प्रार्थना है कि कार्यक्रम के अनुसार इस यज्ञ में सम्मिलित हो कर पुण्य के भागी बने।

कार्यक्रम

पुर्ष्पाचन (दुर्गा सप्तशती)	-	7 सप्तम्बर प्रातः 9 बजे
कलशस्थापन	-	7 सप्तम्बर रात 9 बजे
यज्ञारम्भ	-	8 सप्तम्बर प्रातः 9 बजे
पूर्णाहुति	-	9 सप्तम्बर 1 बजे 30 मि दिन
प्रसाद वितरण	-	9 सप्तम्बर 2 बजे दिन

मूल मन्त्र

विधेहि द्विषतां नाशं विधेहि बलमुच्चकैः।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि।।

अर्थ : जो मुझ से द्वेष रखते हो, उनके नाश और मेरे बल की वृद्धि करो। रूप दो, जय दो, यश दो और मेरे काम-क्रोध आदि शुत्रओं का नाश करो।

पं० प्रेमनाथ शास्त्री का

नवां निर्वाण दिवस

18 अगस्त 2008 को

उनके जन्मस्थान बिजबिहारा, कश्मीर

में हरिश्चन्द्र घाठ (शिव मन्दिर) पर आयोजित किया जा रहा है। समस्त जनता से निवेदन है कि कार्यक्रम के अनुसार इस यज्ञ में समिलित हो जायें।

कार्यक्रम

कलशस्थापन	-	17 अगस्त 2008 रात 9 बजे
पूर्णाहुति	-	18 अगस्त 2008 1 बजे 30 मि दिन
प्रसाद	-	2 बजे दिन

नोट :

यात्रियों के लिये बैठने की व्यवस्था तथा भोजन का प्रबन्ध होगा।

- प्रबंधक

संदिग्ध व्रत

चैत्र नवरात्र

इस वर्ष चैत्र शुक्ल प्रतिपदा का क्षय हुआ है इस कारण चैत्र कृष्ण पक्ष अमावसी को ही नवरात्र का आरम्भ हुआ है। निर्णय सिन्धु के अनुसार यदि चैत्र शुक्ल पक्ष प्रतिपदा का क्षय हो तो उस समय चैत्र कृष्ण पक्ष अमावसी के दिन ही नवरात्रा आरम्भ होता है।

'पर दिने प्रतिपदोऽत्यन्तासत्त्वे दर्शयुता पूर्वैव ग्राह्या'

अक्षया तृतीया

पूर्वाह्ण-व्यापिनी ग्राह्या' (निर्णय सिन्धु)

अर्थात् : अक्षय तृतीया पूर्वाह्ण वाली ग्रहण करनी चाहिये यदि दोनो दिन पूर्वाह्ण में तृतीया हो तो शास्त्रानुसार दूसरेदिन तीन मुहूर्त (6 घडी) से अधिक काल में व्याप्त तृतीया को ही अक्षय तृतीया मनानी चाहिये, यदि दूसरे दिन तीन मुहूर्त से कम समय तक तृतीया हो तो पहले दिन ही अक्षया तृतीया मनानी चाहिये। इस वर्ष 7 और 8 मई दोनो दिन पूर्वाह्ण में तृतीया है परन्तु आठ मई को तृतीया 6 घडी से कम समय तक है इस कारण अक्षया तृतीया का व्रत 7 मई वैशाख शुक़्ल पक्ष द्वितीया को ही मनाया जायेगा।

रक्षा बन्धन

इस वर्ष श्रावण पूर्णिमा के दिन चन्द्र ग्रहण भी है परन्तु शास्त्र के अनुसार रक्षा बन्धन मनाने में ग्रहण का कोई भी दोष नही है शास्त्रों में लिखा है।

रक्षा बन्धनं - इदं ग्रहण संक्रान्ति दिनेऽपि कर्तव्यम् (धर्म सिन्धु)

अर्थात् : रक्षा बन्धन का त्यौहार ग्रहण तथा संक्रान्ति होने पर भी मनाना चाहिये।

रामनवमी

यह पर्व चैत्र शुक्ल पक्ष नवमी को किया जाता है। जिस दिन मध्याह्ण को नवमी होगी उसी दिन 'रामनवमी' होती है। इस वर्ष

13 अप्रैल रविवार को अष्टमी दिन के 11 बजे 25 मिनट तक है फिर नवमी आरम्भ होती है, 14 अप्रैल को नवमी प्रातः 10 बजकर 39 मिनट पर समाप्त होती है। 13 अप्रैल रविवार अष्टमी को मध्याह्न में नवमी होने से अष्टमी के दिन ही रामनवमी का पर्व भी है।

अष्टम्या नवमी विद्धा कर्तव्या फलकाङ्क्षिभिः।
न कुर्यान्नवमी तात दशम्यां तु कदाचन।।

महत्वपूर्ण दिन

विजया सप्तमी

इस वर्ष यह महान पर्व वैशाख शुक्ल पक्ष सप्तमी रविवार तदनुसार 11 मई को दिन के 1 बजे 16 मिन्ट तक रहेगा। इस महान पर्व पर मार्तण्ड तीर्थ पर श्राद्ध करने से मनुष्य पितृ ऋण से मुक्त होता है।

त्र्यहः

जो तिथि सूर्य उदय को स्पर्श नही करती है उस को त्र्यहः कहते हैं (अर्थात् तिथि का गुम होना)

त्रिस्पृक्

जो तिथि दो दिन सूर्य उदय को स्पर्श करती है त्रिस्पृक् कहलाती है (अर्थात् वह तिथि दो होती है)
यदि त्र्यहः अथवा त्रिस्पृक के दिन शुभवार (सोमवार, बुधवार, वीरवार, शुक्रवार) हो तो किसी प्रकार का दोष नही होता है हम प्रत्येक शुभकार्य इस दिन कर सकते हैं परन्तु यदि इस दिन क्रूरवार (रविवार, मंगलवार, शनिवार) हो तो कोई शुभकार्य नही किया जा सकता है।

भौमार्क शनि वारेषु त्र्यहस्पृक दिवसो यदि।
कार्यं निष्फलतां याति शुभे शोभनमादिशेत्।।

(का ज्यो0 संग्रहः)

व्रतों की सूची 2065 के लिये

संकट चतुर्थी (चन्द्रोदय)				कुमार षष्टी			अष्टमी व्रत			पूर्णिमा व्रत		
वैशाख	24 अप्रैल	गुरु	10-44	चैत्र	10 अप्रैल	गुरुवार	चैत्र	13 अप्रैल	रविवार	चैत्र	20 अप्रैल	रविवार
ज्येष्ठ	23 मई	शुक्र	10-17	वैशाख	10 मई	शनिवार	वैशाख	12 मई	सोमवार	वैशाख	20 मई	भौमवार
आषाढ	22 जून	रवि	10-14	ज्येष्ठ	8 जून	रविवार	ज्येष्ठ	11 जून	बुधवार	ज्येष्ठ	18 जून	बुधवार
श्रावण	21 जुलाई	सोम	9-21	आषाढ	8 जुलाई	भौमवार	आषाढ	10 जुलाई	गुरुवार	आषाढ	18 जुलाई	शुक्रवार
भाद्र	20 अगस्त	बुध	8-58	श्रावण	6 अगस्त	बुधवार	श्रावण	9 अगस्त	शनिवार	श्रावण	16 अगस्त	शनिवार
आश्विन	18 सिप्त	गुरु	8-13	भाद्र	5 सप्तम्बर	शुक्रवार	भाद्र	8 सिप्तम्बर	सोमवार	भाद्र	15 सिप्तम्बर	सोमवार
कार्तिक	17 अक्टू	शुक्र	7-43	आश्विन	5 अक्टू	रविवार	आश्विन	7 अक्टू	भौमवार	आश्विन	14 अक्टूबर	भौमवार
मार्ग	16 नवम्बर	रवि	8-40	कार्तिक	4 नवम्बर	भौमवार	कार्तिक	6 नवम्बर	गुरुवार	कार्तिक	13 नवम्बर	गुरुवार
पौष	15 दिस	सोम	8-40	मार्ग	3 दिसम्बर	बुधवार	मार्ग	6 दिसम्बर	शनिवार	मार्ग	12 दिसम्बर	शुक्रवार
माघ	14 जनवरी	बुध	9-35	पौष	2 जनवरी	शुक्रवार	पौष	4 जनवरी	रविवार	पौष	11 जनवरी	रविवार
फाल्गुन	12 फरवरी	गुरु	9-18	माघ	1 फरवरी	रविवार	माघ	3 फरवरी	भौमवार	माघ	9 फरवरी	सोमवार
चैत्र	14 मार्च	शनि	10-00	फाल्गुन	2 मार्च	सोमवार	फाल्गुन	4 मार्च	बुधवार	फाल्गुन	11 मार्च	बुधवार

अमावसी व्रत

वैशाख	5 मई	सोम
ज्येष्ठ	3 जून	भौम
आषाढ	3 जुलाई	गुरु
श्रावण	1 अगस्त	शुक्र
भाद्र	30 अगस्त	शनि
आश्विन	29 सिप्तम्बर	सोम
कार्तिक	28 अक्टू	भौम
मार्ग	27 नवम्बर	गुरु
पौष	27 दिसम्बर	शनि
माघ	26 जनवरी	सोम
फाल्गुन	24 फरवरी	भौम
चैत्र	26 मार्च	गुरु

संक्रान्ति व्रत

वैशाख	13 अप्रैल	रवि
ज्येष्ठ	14 मई	बुध
आषाढ	14 जून	शनि
श्रावण	16 जुलाई	बुध
भाद्र	16 अगस्त	शनि
आश्विन	16 सिप्तम्बर	भौम
कार्तिक	17 अक्टू	शुक्र
मार्ग	16 नवम्बर	रवि
पौष	15 दिसम्बर	सोम
माघ	14 जनवरी	बुध
फाल्गुन	12 फरवरी	गुरु
चैत्र	14 मार्च	शनि

एकादशी व्रत

चैत्र शुक्ल पक्ष	16 अप्रैल	बुध
वैशाख कृष्ण पक्ष	2 मई	शुक्र
वैशाख शुक्ल पक्ष	15 मई	गुरु
ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष	31 मई	शनि
ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष	14 जून	शनि
आषाढ कृष्ण पक्ष	29 जून	रवि
आषाढ शुक्ल पक्ष	13 जुला	रवि
श्रावण कृष्ण पक्ष	28 जुल	सोम
श्रावण शुक्ल पक्ष	12 अगस्त	भौम
भाद्र कृष्ण पक्ष	27 अगस्त	बुध
भाद्र शुक्ल पक्ष	11 सप्त	गुरु
आश्विन कृष्ण पक्ष	25 सप्त	गुरु
आश्विन शुक्ल पक्ष	11 अक्टू	शनि
कार्तिक कृष्ण पक्ष	24 अक्टू	शुक्र
कार्तिक शुक्ल पक्ष	9 नव	रवि
मार्ग कृष्ण पक्ष	23 नव	रवि
मार्ग शुक्ल पक्ष	9 दिस	भौम
पौष कृष्ण पक्ष	23 दिस	भौम
पौष शुक्ल पक्ष	7 जन	बुध
माघ कृष्ण पक्ष	21 जन	बुध
माघ शुक्ल पक्ष	6 फरवरी	शुक्र
फाल्गुन कृष्ण पक्ष	20 फरवरी	शुक्र
फाल्गुन शुक्ल पक्ष	7 मार्च	शनि
चैत्र कृष्ण पक्ष	22 मार्च	रवि

गण्ड मूल नक्षत्रों का आरम्भ और समाप्ति काल

अश्विनी, आश्लेषा, मघा, ज्येष्ठा, मूला, रेवती नक्षत्र गण्डमूल कहलाते हैं गण्डमूल नक्षत्र पर उत्पन्न हुये बच्चों की शान्ति करानी चाहिये यदि जन्मकाल में शान्ति न करवाई गई तो बच्चा जिस नक्षत्र पर पैदा हुआ होगा उसी समय पर बच्चे की शान्ति करानी चाहिये जन्म होने के दिन से 27 दिनों के पश्चात् वही नक्षत्र आयेगा जिस नक्षत्र पर बच्चे ने जन्म लिया होगा

घर पर बच्चों के साथ कश्मीरी भाषा में बात करें

गण्डान्त आरम्भ			
15	अप्रैल	9-45	दिन
24	अप्रैल	8-18	रात
3	मई	3-30	रात
12	मई	6-48	प्रात:
21	मई	2-48	रात
31	मई	12-18	दिन
8	जून	2-58	दिन
18	जून	8-30	दिन
27	जून	8-18	रात
5	जुलाई	12-17	रात
15	जुलाई	3-00	दिन
24	जुलाई	2-31	रात
2	अगस्त	10-30	दिन
11	अगस्त	10-17	रात
21	अगस्त	7-51	प्रात:
29	अगस्त	7-37	शा
8	सिप्तम्बर	6-18	प्रात:
17	सिप्तम्बर	2-32	दिन
25	सिप्तम्बर	2-49	रात
5	अक्टूबर	2-18	दिन

गण्डान्त समाप्त			
15	अप्रैल	9-36	रात
25	अप्रैल	7-59	प्रात:
4	मई	2-6	दिन
12	मई	5-57	दिन
22	मई	3-8	दिन
1	जून	12-33	रात
8	जून	1-53	रात
18	जून	7-19	शां
28	जून	7-24	प्रात:
6	जुलाई	11-13	दिन
15	जुलाई	4-16	रात
25	जुलाई	1-56	दिन
2	अगस्त	9-57	रात
12	अगस्त	6-47	शां
30	अगस्त	7-15	प्रात:
8	सिप्तम्बर	5-58	शां
17	सिप्तम्बर	1-34	रात
26	सिप्तम्बर	2-53	दिन
5	अक्टूबर	1-53	रात

गण्डान्त आरम्भ			
14	अक्टूबर	11-30	रात
23	अक्टूबर	8-26	दिन
1	नवम्बर	9-42	रात
11	नवम्बर	11-6	दिन
19	नवम्बर	2-11	दिन
28	नवम्बर	4-21	रात
8	दिसम्बर	8-27	रात
16	दिसम्बर	10-5	रात
26	दिसम्बर	10-28	दिन
4	जनवरी	4-54	रात
13	जनवरी	8-30	दिन
22	जनवरी	4-44	दिन
1	फरवरी	11-01	दिन
9	फरवरी	7-44	शा
18	फरवरी	11-57	रात
28	फरवरी	4-14	दिन
9	मार्च	5-25	रात
18	मार्च	7-49	प्रात:
27	मार्च	11-13	रात

गण्डान्त समाप्त			
15	अक्टूबर	12-2	दिन
23	अक्टूबर	7-43	शा
2	नवम्बर	8-23	दिन
11	नवम्बर	11-33	रात
19	नवम्बर	1-43	रात
29	नवम्बर	4-30	दिन
9	दिसम्बर	7-59	दिन
17	दिसम्बर	10-13	दिन
26	दिसम्बर	10-39	रात
5	जनवरी	4-15	दिन
13	जनवरी	7-49	शा
22	जनवरी	4-19	रात
1	फरवरी	10-48	रात
10	फरवरी	7-13	प्रात:
19	फरवरी	11-15	दिन
28	फरवरी	3-51	रात
10	मार्च	4-48	दिन
18	मार्च	7-13	शा
28	मार्च	10-49	दिन

कश्मीर के महात्माओं के श्राद्ध

नोट : नीचे लिखे गए श्राद्धों में 'दि' 'प्र' के आधार से एक दिन की तिथि आगे पीछे भी हो सकती है स्वयं ठीक कीजिए।

श्री चण्डी ग्राम महात्मा	चैत्र शुक्ल पक्ष सप्तमी	12 अप्रैल
स्वा भाई टोठ जी	चैत्र शुक्ल पक्ष दशमी	15 अप्रैल
नन्दकीश्वर महाराज (पुरखू)	चैत्रा शुक्ल पक्ष पूर्णिमा	20 अप्रैल
स्वा बोनकाक	वैशाख कृष्ण पक्ष चतुर्थी	24 अप्रैल
मंगल राज भैरव	वैशाख कृष्ण पक्ष पंचमी	25 अप्रैल
ऋीष पीर श्राद्ध	वैशाख कृष्ण पक्ष पंचमी	25 अप्रैल
परमदयाल पृथ्वी नाथ	वैशाख कृष्ण पक्ष अष्टमी	29 अप्रैल
स्वा महादेव काक भान	वैशाख कृष्ण पक्ष दशमी	1 मई
श्री सूरदास निर्वाण दिवस	वैशाख कृष्ण पक्ष दशमी	1 मई
श्री शंकर साहिब	वैशाख शुक्ल पक्ष प्रति	6 मई
स्वा शम्भु नाथ	वैशाख शुक्ल पक्ष तृतीया	8 मई
योगीराज धर्मदत्त जी	वैशाख शुक्ल पक्ष तृतीया	8 मई
स्वा मोती लाल जी	वैशाख शुक्ल पक्ष अष्टमी	12 मई
श्री सर्वानन्दजी गुसानी गुण्ड	वैशाख शुक्ल पक्ष एकादशी	15 मई
श्री काक जी	ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष द्वितीया	22 मई
स्व बादशाह कलन्द्र	ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष चतुर्थी	24 मई
स्वामी नाथ जी	ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष त्रयोदशी	2 जून
भगवान गोपी नाथ	ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष द्वितीया	5 जून
पण्डित शंकर राजदान	ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष अष्टमी	11 जून
श्री वामन जी	आषाढ पक्ष वदि तृतीया	21 जून
स्वामी नन्दलाल जी	आषाढ कृष्ण पक्ष सप्तमी	26 जून
स्वामी किन टोठ (बडगाम)	आषाढ कृष्ण पक्ष सप्तमी	26 जून
श्री गोबिन्द कौल जलाली	आषाढ कृष्ण पक्ष सप्तमी	26 जून
श्री मोहन लाल ठुरसु कोफूर	आषाढ कृष्ण पक्ष दशमी	28 जून
श्री चन्द्र काक बचरू	आषाढ शुक्ल पक्ष तृतीया	5 जुलाई
स्वा श्री विभीषण जी	आषाढ शुक्ल पक्ष षष्ठी	8 जुलाई
स्वामी आनन्द जी विलगाम	आषाढ शुक्ल पक्ष सप्तमी	9 जुलाई
श्री कण्ठ काक वांचू	आषाढ़ शुक्ल पक्ष दशमी	12 जुलाई
स्वा0 पुष्कर नाथ	आषाढ शुक्ल पक्ष द्वादशी	14 जुलाई
स्वामी विद्याधर जी	आषाढ शुक्ल पक्ष त्रयोदशी	16 जुलाई
स्वामी लाल जी	श्रावण कृष्ण पक्ष तृतीया	21 जुलाई
श्री नन्द काक शर्मा (वेरीनाग)	श्रावण कृष्ण पक्ष एकादशी	28 जुलाई

ग्रट बब दिवस	श्रावण कृष्ण पक्ष द्वादशी	29 जुलाई
स्वामी कशकाक (मनिगाम)	श्रावण शुक्ल पक्ष पंचमी	6 अगस्त
जानकीनाथ साहिब दर	श्रावण शुक्ल पक्ष अष्टमी	9 अगस्त
श्री मान भट्ट (मान) फतेहपुरी	भाद्र शुक्ल पक्ष त्रयोदशी	14 अगस्त
स्वामी गोविन्द कौल	श्रावण शुक्ल पक्ष चर्तुदशी	15 अगस्त
स्वामी गण काक	श्रावण शुक्ल पक्ष पुर्णिमा	16 अगस्त
पं0 प्रेमनाथ शास्त्री	भाद्र कृष्ण पक्ष द्वितीया	18 अगस्त
स्वामी परमानन्द जी	भाद्र शुक्ल पक्ष चतुर्थी	3 सप्तम्बर
माता उमादेवी	भाद्र शुक्ल पक्ष अष्टमी	8 सप्तम्बर
स्वामी निरंजनाथ कौल	भाद्र शुक्ल पक्ष एकादशी	11 सप्तम्बर
स्वामी काशीनाथ बब	भाद्र शुक्ल पक्ष द्वादशी	12 सप्तम्बर
श्री मान भट्ट (फतेहपुरी)	भाद्र शुकल पक्ष त्रयोदशी	13 सप्तम्बर
ब्रह्मचारीश्री कण्ठ कौल(जलाली)	भाद्र शुक्ल पक्ष चतुदर्शी	14 सप्तम्बर
श्री शकर साहब	आश्विन कृष्ण पक्ष प्रति	16 सप्तम्बर
स्वामी लक्ष्मण जी	आश्विन कृष्ण पक्ष चतुर्थी	19 सप्तम्बर
स्वामी क्राल बब	आश्विन कृष्ण पक्ष चर्तुदशी	28 सप्तम्बर
स्वामी हरिकृष्ण	आश्विन शुक्ल पक्ष द्वितीया	1 अक्टूबर
श्री शिव जी भागाती	आश्विन शुक्ल पक्ष द्वादशी	12 अक्टूबर
श्री नन्दलाल साहिब	आश्विन शुक्ल पक्ष त्रयोदशी	12 अक्टूबर
श्री परमहंस कृष्णानन्द संतोष	कार्तिक कृष्ण पक्ष द्वितीया	16 अक्टूबर
श्री सिद्ध बब	कार्तिक कृष्ण पक्ष द्वितीया	16 अक्टूबर
ज्योतिषी आफताभ राम शर्मा	कार्तिक कृष्ण पक्ष चतुर्थी	18 अक्टूबर
स्वा0 विदलाल (गुशी)	कार्तिक कृष्ण पक्ष षष्ठी	20 अक्टूबर
श्री मधुसूदन राजदान	कार्तिक शुक्ल पक्ष षष्ठी	4 नवम्बर
श्री महादेव काक रत्नीपोरा	कार्तिक शुक्ल पक्ष अष्टमी	6 नवम्बर
स्वामी आत्माराम	कार्तिक शुक्ल पक्ष एकादशी	9 नवम्बर
स्वामी काशीनाथ हुगामा	मार्ग कृष्ण पक्ष पंचमी	17 नवम्बर
स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती	मार्ग कृष्ण पक्ष षष्ठी	18 नवम्बर
स्वामी सर्वानन्द जी	मार्ग कृष्ण पक्ष त्रयोदशी	25 नवम्बर
स्वा स्वयमानन्दजी (मुर्टी)	मार्ग कृष्ण पक्ष त्रयोदशी	25 नवम्बर
स्वामी जीवन साहब	मार्ग शुक्ल पक्ष द्वितीया	29 नवम्बर
स्वा विद्याधर जी रत्नीपोरा	मार्ग शुक्ल पक्ष त्रयोदशी	30 नवम्बर
स्वामी कृष्ण जू राजदान	मार्ग शुक्ल पक्ष अष्टमी	6 दिसम्बर
भट मुत अम्बाला	मार्ग शुकल पक्ष नवमी	7 दिसम्बर
श्री रघुनाथ कुकिल	पौष कृष्ण पक्ष नवमी	20 दिसम्बर
अभिनव गुप्त निर्वाण दिवस	पौष कृष्ण पक्ष दशमी	21 दिसम्बर
स्वा केशव नाथ कौल	पौष कृष्ण पक्ष दशमी	21 दिसम्बर
श्री अशोकानन्द	पौष कृष्ण पक्ष अमावसी	27 दिसम्बर
प0 लक्ष्मण जू सागाम	पौष कृष्ण पक्ष अमावसी	27 दिसम्बर
स्वामी शिव राम	पौष शुक्ल पक्ष प्रतिपदा	28 दिसम्बर

श्री राघवानन्द जी	पौष शुक्ल पक्ष तृतीया	30 दिसम्बर
मथुरा देवी	पौष शुक्ल पक्ष चतुर्दशी	10 जनवरी
श्री आफताभ राम	माघ कृष्ण पक्ष पंचमी	15 जनवरी
स्वा सत्यानन्द महंत	माघ कृष्ण पक्ष अष्टमी	18 जनवरी
स्वामी राम जी	माघ कृष्ण पक्ष चतुर्दशी	25 जनवरी
श्री नन्द लाल जी	माघ शुकल पक्ष तृतीया	29 जनवरी
स्वामी वामन जी महाराज	माघ शुकल पक्ष त्रयोदशी	7 फरवरी
स्वा0 जीवन साहब	फाल्गुन कृष्ण पक्ष द्वितीया	11 फरवरी
शारिका जी	फाल्गुन कृष्ण पक्ष तृतीया	12 फरवरी
स्वा राम कृष्णानन्द सरस्वती	फाल्गुन कृष्ण पक्ष सप्तमी	16 फरवरी
स्वा श्यामलाल ओगरा	फाल्गुन कृष्ण पक्ष अष्टमी	17 फरवरी
स्वामी महताब काक जी	फाल्गुन शुक्ल पक्ष द्वितीया	27 फरवरी
स्वा0 रामजुव सफाया (तबरदार)	फाल्गुन शुक्ल पक्ष षष्ठी	2 मार्च
श्री मानकाक जी गौतमनाग	फाल्गुन शुक्ल पक्ष दशमी	6 मार्च
स्वा0 हरकाक	चैत्र कृष्ण पक्ष सप्तमी	18 मार्च
श्री किशकाक वडीपोरा	चेत्र कृष्ण पक्ष नवमी	20 मार्च
ब्रह्मचार्य अर्जुनदेव	चैत्र कृष्ण पक्ष दशमी	21 मार्च
श्री श्याम लाल वांचू (हाज़ीन)	चैत्र कृष्ण पक्ष चर्तुदशी	25 मार्च
श्री गाशकाक	चैत्र कृष्ण पक्ष अमावसी	26 मार्च

पंचक आरम्भ		पंचक समाप्त	
29 अप्रैल	12-36 रात	4 मई	7-49 प्रात:
27 मई	7-47 प्रात:	31 मई	5-57 दिन
23 जून	1-35 दिन	27 जून	2-9 रात
20 जुलाई	7-16 शां	25 जुलाई	8-19 दिन
16 अगस्त	2-4 रात	21 अगस्त	1-44 दिन
13 सिप्तम्बर	10-27 दिन	17 सिप्तम्बर	8-16 रात
10 अक्टूबर	7-48 शां	15 अक्टूबर	5-5 प्रात:
6 नवम्बर	4-44 रात	11 नवम्बर	3-42 दिन
4 दिसम्बर	12-8 दिन	8 दिसम्बर	2-14 रात
31 दिसम्बर	6-7 शां	5 जनवरी	10-44 दिन
27 जनवरी	11-58 रात	1 फरवरी	4-52 दिन
24 फरवरी	6-52 प्रात:	28 फरवरी	10-21 रात
23 मार्च	3-2 दिन	28 मार्च	5-10 प्रात:

कश्मीर के महात्माओं की जयन्तियाँ

नोट : विजयेश्वर पंचांग में उन महानुभावों की जयन्तियाँ लिखी गई हैं जिन का निर्वाण हुआ है। - प्रबन्धक

श्री मोहन लाल ठुस्सु (कोफूर)	चैत्र शुक्ल पक्ष प्रतिपदि	6 अप्रैल	श्री 100 रामानन्द जी	ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष अष्टमी	11 जून
स्वा केशवनाथ कौल	चैत्र शुक्ल पक्ष प्रतिपदि	6 अप्रैल	श्री सिद्ध बब	ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष नवमी	12 जून
स्वा नन्दलाल (बडगाम)	चैत्र शुक्ल पक्ष प्रतिपदि	6 अप्रैर्ल	स्वा राम जी धूपवन आश्रम	ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष दशमी	13 जून
स्वा बादशाह कलन्दर	चैत्र शुक्ल पक्ष पूर्णिमा	20 अप्रैल	रूप भवानी	ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष पूर्णिमा	18 जून
स्वा महादेव काक भान	वैशाख कृष्ण पक्ष सप्तमी	28 अप्रैल	स्वा महादेव काक रत्नीपोरा	ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष पूर्णिमा	18 जून
स्वा जानकी नाथ साहिबं दर	वैशाख कृष्ण पक्ष सप्तमी	28 अप्रैल	स्वा राधे श्याम	आषाढ कृष्ण पक्ष प्रतिपदि	19 जून
स्वा लक्ष्मण जी	वैशाख कृष्ण पक्ष द्वादशी	2 मई	भट्ट मोत अम्वाला	आषाढ कृष्ण पक्ष द्वितीय	20 जून
स्वा किन टोठ	वैशाख कृष्ण पक्ष द्वादशी	2 मई	स्वा सत्यानन्द महंत	आषाढ़ कृष्ण पक्ष तृतीया	21 जून
स्वा गोविन्द कौल जलाली	ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष पंचमी	25 मई	स्वा श्यामलाल ओगरा	आषाढ कृष्ण पक्ष एकादशी	29 जून
श्री काशी नाथ (बाबा)	ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष अष्टमी	28 मई	स्वा स्वयमानन्द जी (मुट्ठी)	आषाढ़ शुक्ल पक्ष षष्ठी	8 जुलाई
श्री प्ररमहंस कृष्णानन्द संतोष	ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष द्वादशी	1 जून	भगवान गोपीनाथ जी	आषाढ शुक्ल पक्ष द्वादशी	15 जुलाई
श्री नन्दकीश्वर महाराज	ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष अमावसी	3 जून	स्वा विद्याधर जी रत्नीपोरा	आषाढ़ शुक्ल पक्ष त्रयोदशी	16 जुलाई
श्री मान बट्ट (मान) फतेपुरी	ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष प्रतिपदा	4 जून	ज्योतिषी आफताब शर्मा	श्रावण शुक्ल पक्ष षष्ठी	7 अगस्त
श्री रघुनाथ कोकिलू	ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष पंचमी	8 जून	श्री कृष्णजू राज़दान	भाद्र शुक्ल पक्ष चतुर्थी	3 सप्त
स्वा राम कृष्णानन्द सरस्वती	ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष अष्टमी	11 जून	लल्लेश्वरी	भाद्र शुक्ल पक्ष अष्टमी	8 सप्त
			ब्रह्मचारी श्रीकण्ठ कौल(जलाली)	भाद्र शुक्ल पक्ष चतुर्दशी	14 सप्त

पं0 प्रेमनाथ शास्त्री	आश्विन कृष्ण पक्ष सप्तमी	21 सप्त
स्वा आनन्द जी	आश्विन कृष्ण पक्ष द्वादशी	26 सप्त
स्वा हरकाक	आश्विन कृष्ण पक्ष त्रयोदशी	27 सप्त
स्वा महादेव काक	कार्तिक कृष्ण पक्ष चतुर्थी	18 अक्टू
परमदयाल पृथ्वी नाथ पण्डित	कार्तिक कृष्ण पक्ष अष्टमी	21 अक्टू
स्वा महादेव काक भान (तोफ)	कार्तिक कृष्ण पक्ष नवमी	22 अक्टू
स्वा महताब काक	कार्तिक शुक्ल पक्ष चतुर्थी	2 नवम्बर
स्वा हरि कृष्ण जी	कार्तिक शुक्ल पक्ष एकादशी	9 नवम्बर
श्रीमती कमलाजी काचरू	कार्तिक शुक्ल पक्ष द्वादशी	10 नवम्बर
स्वा पुष्करनाथ जी	कार्तिक शुक्ल पक्ष द्वादशी	10 नवम्बर
चन्डीगाम महात्मा	कार्तिक शुक्ल पक्ष पूर्णिमा	13 नवम्बर
शारिका जी	मार्ग शुक्ल पक्ष द्वितीया	29 नवम्बर
स्वा जीवन साहिब रैणावारी	मार्ग शुक्ल पक्ष द्वितीया	29 नवम्बर
श्री श्याम लाल वांचू (हज़ीन)	मार्ग शुक्ल पक्ष द्वितीया	29 नवम्बर
मस्त बब	मार्ग शुक्ल पक्ष अष्टमी	6 दिसम्बर
शारदा देवी	पौष कृष्ण पक्ष सप्तमी	18 दिसम्बर
श्री नन्दलाल साहिब	पौष कृष्ण पक्ष दशमी	21 दिसम्बर
स्वा राम जी	पौष कृष्ण पक्ष द्वादशी	24 दिसम्बर
श्री मिरज़ काक जी	पौष शुक्ल पक्ष प्रतिपदा	28 दिसम्बर
स्वा बोनकाक	पौष शुक्ल पक्ष दशमी	6 जनवरी
स्वा कशकाक (मनिगाम)	माघ शुक्ल पक्ष प्रतिपदा	27 जनवरी
पं0 लक्ष्मण जूव सागाम	माघ शुक्ल पक्ष चतुर्थी	30 जनवरी
स्वा निरञ्जन नाथ कौल	माघ शुक्ल पक्ष अष्टमी	3 फरवरी
श्री बिदलाल गुशी	फाल्गुन कृष्ण पक्ष चतुर्थी	13 फरवरी
श्री शंकरनाथ राज़दान वंनपुह	फाल्गुन शुक्ल पक्ष पंचमी	1 मार्च
स्वा रामजु सफाया (तवरदार)	फाल्गुन शुक्ल पक्ष षष्टी	2 मार्च
स्वा शम्भु नाथ	फाल्गुन शुक्ल पक्ष सप्तमी	3 मार्च
श्री नन्दलाल	फाल्गुन शुक्ल पक्ष अष्टमी	4 मार्च
स्वा गोविन्द कौल	फाल्गुन शुक्ल पक्ष त्रयोदशी	9 मार्च
श्री क्राल बब	फाल्गुन शुक्ल पक्ष पूर्णिमा	11 मार्च
स्वा विभीषण जी	चैत्र कृष्ण पक्ष तृतीया	13 मार्च
स्वा शिव जी भागाती	चैत्र कृष्ण पक्ष सप्तमी	18 मार्च

हमारे धर्म ग्रन्थों में प्रमुख तीन ऋण बताये गये हैं पितृ ऋण, देव ऋण और ऋषि ऋण। इन तीन ऋणों में से पितृ ऋण को महत्वपूर्ण माना गया है। पितृ ऋण को चुकाने के लिये अपने माता पिता का श्राद्ध अवश्य करें। श्राद्ध किसी तीर्थ से आठ गुणा फलदायी है। - धर्म शास्त्र

महत्त्वपूर्ण यात्राएं

हारी पर्वत श्रीनगर देवी आंगन-पलोडा- डोक जम्मू	चैत्र शुक्ल पक्ष तृतीया	8 अप्रैल
उमा भगवती यात्रा भ्रारि आगन	चैत्र शुक्ल पक्ष अष्टमी	13 अप्रैल
चक्रीश्चर यात्रा हारी पर्वत श्रीनगर पलोडा-डोक जम्मू शिवा भगवती यात्रा, अकिन गाम	चैत्र शुक्ल पक्ष नवमी	14 अप्रैल
कमला यात्रा त्राल	वैशाख शुक्ल पक्ष पंचमी	9 मई
डुमट बल यात्रा	वैशाख शुक्ल पक्ष एकादशी	15 मई
गणपतयार यात्रा	वैशाख शुक्ल पक्ष चर्तुदशी	18 मई
ज्येष्ठा देवी यात्रा	ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष पंचमी	25 मई
नन्दकीश्चवर यात्रा सीर जागीर,आकलपुर जम्मू	ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष अमावसी	3 जून
क्षीरभवानी यात्रा तुलमुल, कश्मीर खनबरिन्य यात्रा देवसर मंज गाम यात्रा मंजगाम लकुटी पुरा यात्रा हरिश्वर यात्रा, खुनमुह	ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष अष्टमी	11 जून
श्रीमती हुद्धामाता यात्रा	आषाढ शुक्ल पक्ष अष्टमी	10 जुलाई
हारी पर्वत श्रीनगर देवी आंगन, पलोडा डोक जम्मू	आषाढ शुक्ल पक्ष नवमी	11 जुलाई
लोक भवन यात्रा	आषाढ शुक्ल पक्ष द्वादशी	15 जुलाई
खिव यात्रा	आषाढ शुक्ल पक्ष चतुर्दशी	17 जुलाई
पाजथ नाग यात्रा	श्रावण शुक्ल पंचमी	6 अगस्त
शोपियान यात्रा	श्रावण शुक्ल पक्ष द्वादशी	13 अगस्त
श्री अमर नाथ यात्रा थजीवारा, विजबिहारा ध्यानेश्वर यात्रा बांढीपोरा	श्रावण शुक्ल पक्ष पूर्णिमा	16 अगस्त
नवदल यात्रा त्राल	भाद्र कृष्ण पक्ष चतुर्थी	20 अगस्त
मार्तण्ड तीर्थ यात्रा मटन	भाद्र शुक्ल पक्ष षष्ठी	5 सप्तम्बर

...गंगा यात्रा	...शुक्ल पक्ष अष्टमी	8 सप्तम्बर
गौतम नाग यात्रा कश्मीर	भाद्र शुक्ल पक्ष एकादशी	11 सप्तम्बर
व्यथवतुर यात्रा कश्मीर	भाद्र शुक्ल पक्ष त्रयोदशी	13 सप्तम्बर
पाप हरण नाग अनन्तनाग यात्रा ऐशमुकाम यात्रा कारकूट नाग यात्रा विजयेश्वर यात्रा (विजविहारा कश्मीर) सोमयार यात्रा श्रीनगर	भाद्र शुक्ल पक्ष चतुर्दशी	14 सप्तम्बर
भद्रकाली यात्रा	आश्विन कृष्ण पक्ष अमावसी	29 सप्तम्बर
मार्तण्ड तीर्थ यात्रा	आश्विन शुक्ल पक्ष नवमी	8 अक्टूबर
चक्रीश्वर यात्रा श्रीनगर	माघ शुक्ल पक्ष सप्तमी	2 फरवरी
देवी आंगन पलोडा डोक जम्मू	फाल्गुन कृष्ण पक्ष अष्टमी	17 फरवरी
विचार नाग यात्रा	चैत्र कृष्ण पक्ष अमावसी	26 मार्च

सिक्खों के गुरुपर्व

(नानकशाही कैलेण्डर के अनुसार)

श्री गुरु अंगदेव जी	18 अप्रैल	शु...
श्री गुरु तेगबहादुर जी	18 अप्रैल	शुक्र...
श्री गुरु अर्जुनदेव जी	2 मई	शुक्रवा...
श्री गुरु अमरदास जी	23 मई	शुक्रवार
श्री गुरु हरगोविन्द जी	5 जुलाई	शनिवार
श्री गुरु हरकिशन जी	23 जुलाई	बुधवार
श्री गुरु रामदास जी	9 अक्टूबर	गुरुवार
श्री गुरु नानकदेव जी	13 नवम्बर	गुरुवार
श्री गुरु गोविन्द सिंह जी	5 जनवरी	सोमवार
श्री गुरु हरिराय जी	31 जनवरी	शनिवार

...हत्त्वपूर्ण यज्ञ तथा दिवस

...मन्दिर

...2 चैत्र शुक्ल पक्ष तृतीया

...ती

...चैत्र...

यज्ञ डोक वजीर...

लंकर ... शुक्ल पक्ष द्वादशी ... अप्रैल
स्थापन वैशाख कृष्ण पक्ष दशमी 30 मार्च
ोपोर) वैशाख शुक्ल पक्ष चतुर्दशी 1 मई
जीठयार ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष पंचमी 18 मई
आषाढ शुक्ल पक्ष पूर्णिमा 25 मई
ीर्थ आषाढ शुक्ल पक्ष पूर्णिमा 18 जुलाई
ो 29 मि दिन तक)
श्रावण शुक्ल पक्ष पूर्णिमा 18 जुलाई
भाद्र शुक्ल पक्ष ... 16 अगस्त

...मौकल धाम ...रोटा आश्विन शुक्ल पक्ष नवमी
अम्बिका विहार आश्विन शुक्ल पक्ष नवमी 8 अक्टू
यज्ञ स्वा मोहन बव 8 अक्टू
आश्रम, मिश्रीवाला कार्तिक शुक्ल पक्ष पूर्णिमा
यज्ञ काश्मीर भवन 13 नव
त्रिकूटा नगर जम्मू कार्तिक शुक्ल पक्ष पूर्णिमा
यज्ञ कुमार जी 13 नव
आश्रम मुट्ठी मार्ग शुक्ल पक्ष एकादशी
यज्ञ कुमार जी 9 दिस
आश्रम मुट्ठी माघ शुक्ल पक्ष पूर्णिमा
9 फरवरी

निषेध समय

शुक्रास्त
सिंह में सूर्य ...

हमारे पर्व और त्यौहार 2065 के लिये

थालस बुथ वुछुन	6 अप्रैल
नवरेह	6 अप्रैल
जंगत्रय	8 अप्रैल
बैशाखी	
दुर्गाष्टमी	
रामनवमी	13 अप्रैल
उमा जयन्ती	
शिवा भगवती	
शैलपुत्री जय0	
ऋषि पीरश्राद्ध	25 अप्रैल
वेताल षष्ठी	26 अप्रैल
परशुराम जयन्ती	7 मई
अक्षया तृतीया	7 मई
नारद एकादशी	15 मई
शारदा एकादशी	15 मई
गणेश चतुर्दशी	18 मई
ज्येष्ठाष्टमी	11 जून
निर्जला एकादशी	14 जून
रूप भवानी जयन्ती	18 जून
हार अष्टमी	10 जुलाई
हार नवमी	11 जुलाई
शारिका जयन्ती	11 जुलाई
देवशयनी एकादशी	13 जुलाई
हार द्वादशी	15 जुलाई
वहरात	16 जुलाई
ज्वाला चतुर्दशी	17 जुलाई
गुरु पूर्णिमा, व्यास पूजा	18 जुलाई
शीतला सप्तमी	25 जुलाई
कमला एकादशी	28 जुलाई
नाग पंचमी	6 अगस्त
श्रावण द्वादशी	13 अगस्त
भारत स्वतन्त्रता दिवस	15 अगस्त
रक्षा बन्धन	16 अगस्त
चन्दन षष्ठी	21 अगस्त
श्रीकृष्ण जन्माष्टमी	23 अगस्त
कुशामावसी	30 अगस्त
हरितालिका तृतीया	2 सप्त
विनायक चतुर्थी	3 सप्त
वराह पंचमी	4 सप्त
गंगाष्टमी	8 सप्त
शारदाष्टमी	8 सप्त
लल्लेश्वरी जयन्ती	8 सप्त
वितस्ता त्रयोदशी	13 सप्त
कश्मीरी पण्डितों का बलिदान दिवस	14 सप्त
अनन्त चतुर्दशी	14 सप्त

पितृपक्षारम्भ	15 सप्त
हरुद	16 सप्त
साहिब सप्तमी	21 सप्त
महालक्ष्मी अष्टमी	22 सप्त
पितृामावसी	28 सप्त
नवरात्रारम्भ	30 सप्त
दुर्गाष्टमी	7 अक्टू
महानवमी	8 अक्टू
सरस्वती विसर्जन	8 अक्टू
विजया दशमी	9 अक्टू
करवा चौथ	17 अक्टू
दीपावली	28 अक्टू
भाई दूज	30 अक्टू
गोपालाष्टमी	6 नवम्बर
महाकाल भैरवाष्टमी	20 नवम्बर
गीता जयन्ती	9 दिस
श्री दत्तात्रेय जयन्ती	12 दिस
मातृका पूजा	13 दिस
मुंजहर तहर	13 दिस
महाकाली जयन्ती	19 दिस
आनन्देश्वर भैरव जय0	21 दिस
उत्तरायण	21 दिस
क्ष्यचरि अमावसी	27 दिस
कश्मीरी पण्डितों का हौम लैण्ड दिवस	28 दिस
शिशर संक्रान्ति	14 जनवरी
साहिब सप्तमी	17 जनवरी
कश्मीरी पण्डितों का निर्वासण दिवस	19 जनवरी
शिव चतुर्दशी	24 जनवरी
गौरी तृतीया	29 जनवरी
त्रिपुरा चर्तुथी	30 जनवरी
वसन्त पंचमी	31 जनवरी
सूर्य सप्तमी	2 फरवरी
भीष्माष्टमी	3 फरवरी
भीमसेन एकादशी	6 फरवरी
यक्षणी चतुर्दशी	8 फरवरी
माघ पूर्णिमा	9 फरवरी
काव पूर्णिमा	9 फरवरी
हुरि अकदोह	10 फरवरी
होराष्टमी	17 फरवरी
शिव रात्रि (हेरथ)	22 फरवरी
शिवचर्तुदशी	23 फरवरी
डून्यमावसी	24 फरवरी
तैलाष्टमी	4 मार्च
होली	11 मार्च
थाल भरुण	13 मार्च
सोन्थ	14 मार्च
चित्र चतुर्दशी	25 मार्च
थाल भरुण	26 मार्च
श्री भट्ट दिवस	26 मार्च
विचार नाग यात्रा (कश्मीर)	26 मार्च

यज्ञोपवीत तथा विवाह मुहूर्त

अप्रैल - मई 2009 के लिए

यज्ञोपवीत मुहूर्त

चैत्र शुक्ल पक्ष

1 अप्रैल षष्ठी बुधवार
8-28 दिन से
10-21 दिन तक (वृ)
10-21 दिन से
12-37 दिन तक (मि)

वैशाख शुक्ल पक्ष

27 अप्रैल तृतीया सोमवार
9-7 दिन से
10-54 दिन तक (मि)
10-54 दिन से
1-18 दिन तक (क)
30 अप्रैल षष्ठी गुरुवार
6-33 प्रातः से
8-27 दिन तक (वृ)
8-27 दिन से
10-42 दिन तक (मि)
1 मई सप्तमी शुक्रवार
6-30 प्रातः से
8-24 दिन तक (वृ)
8-24 दिन से
10-38 दिन तक (मि)
6 मई द्वादशी बुधवार
6-10 प्रातः से
8-3 दिन तक (वृ)
8-3 दिन से
10-19 दिन तक (मि)
7 मई त्रयोदशी गुरुवार
6-6 प्रातः से
7-59 दिन तक (वृ)
7-59 दिन से
8-46 दिन तक (मि)

ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष

10 मई प्रतिपदा रविवार
10-35 दिन से
12-27 दिन तक (क)
11 मई द्वितीया सोमवार
7-44 प्रातः से
9-59 दिन तक (मि)
9-59 दिन से
12-23 दिन तक (क)

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष

28 मई पंचमी गुरुवार
6-37 प्रातः से
8-52 दिन तक (मि)

विवाह मुहूर्त

वैशाख कृष्ण पक्ष

15 अप्रैल षष्ठी बुधवार
7-32 प्रातः से
9-26 दिन तक (वृ)
9-26 दिन से
11-14 दिन तक (मि)
17 अप्रैल अष्टमी शुक्रवार
7-25 प्रातः से
9-18 दिन तक (वृ)
9-18 दिन से
11-33 दिन तक (मि)
9-3 रात से
11-23 रात तक (वृं)
11-23 रात से
1-26 रात तक (धं)
19 अप्रैल नवमी रविवार
10-33 दिन से

11-25 दिन तक (मि)
8-55 रात से
11-16 रात तक (वृं)
11-16 रात से
1-18 रात तक (धं)
20 अप्रैल दशमी सोमवार
7-13 प्रातः से
9-6 दिन तक (वृ)
9-6 दिन से
11-22 दिन तक (मि)
8-51 रात से
11-12 रात तक (वृं)
11-12 रात से
1-14 रात तक (धं)
23 अप्रैल त्रयोदशी गुरुवार
8-39 रात से
11-00 दिन तक (वृ)

11-00 रात से
1-2 रात तक (धं)
24 अप्रैल चतुदर्शी शुक्र
6-57 प्रातः से
8-50 दिन तक (वृ)
8-50 दिन से
11-6 दिन तक (मि)

वेशाख शुक्ल पक्ष

27 अप्रैल तृतीया सोमवार
8-32 दिन से
10-54 दिन तक (मि)
8-23 रात से
10-44 रात तक (वृं)
10-44 रात से
12-46 रात तक (धं)

4 मई दशमी सोमवार
10-17 रात से
12-19 रात तक (धं)
6 मई द्वादशी बुधवार
8-3 दिन से
10-19 दिन तक (मि)
7-48 रात से
10-8 रात तक (वृं)
10-8 रात से
12-12 रात तक (धं)
7 मई त्रयोदशी गुरुवार
7-59 दिन से
10-15 दिन तक (मि)
7-44 रात से
10-5 दिन तक (वृं)
10-5 रात से
12-7 रात तक (धं)

8 मई चतुदर्शी गुरुवार
7-55 प्रातः से
10-11 दिन तक (वृ)
7-40 रात से
10-1 रात तक (वृं)
10-1 रात से
12-3 रात तक (धं)

ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष

10 मई प्रतिपदि रविवार
7-47 प्रातः से
10-3 दिन तक (मि)
7-32 रात से
9-53 रात तक (वृं)
9-53 रात से
11-55 रात तक (धं)
13 मई चर्तुथी बुधवार

7-36 प्रातः से
9-25 दिन तक (मि)
15 मई षष्ठी शुक्रवार
3-37 दिन से
4-49 दिन तक (कं)
9-33 रात से
11-36 रात तक (धं)
2-40 रात से
3-59 रात तक (मी)
16 मई सप्तमी शनिवार
7-24 प्रातः से
9-39 दिन तक (मि)
2-25 दिन से
4-45 दिन तक (कं)
9-26 रात से
11-32 रात तक (धं)
2-36 रात से
3-55 रात तक (मी)

17 मई अष्टमी रविवार
7-20 प्रात: से
9-35 दिन तक (मि)
2-21 दिन से
4-41 दिन तक (कं)
20 मई एकादशी बुधवार
7-8 प्रात: से
9-24 दिन तक (मि)
2-9 दिन से
4-29 दिन तक (कं)
9-14 रात से
11-16 रात तक (धं)
21 मई द्वादशी गुरुवार
7-4 प्रात: से
9-20 दिन तक (मि)
2-5 दिन से
4-25 दिन तक (कं)

9-10 रात से
11-12 रात तक (धं)

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष

30 मई सप्तमी शनिवार
1-30 दिन से
3-50 दिन तक (कं)
8-34 रात से
10-37 रात तक (धं)
1-41 रात से
3-00 रात तक (मी)

साथ रटुन

(यज्ञोपवीत तथा विवाह के लिये वस्त्र, मसाला, अग्निवत्र, लिवुन, घरनावय, मंजलागन्य, मस मुचरावुन इत्यादि)

चैत्र शुक्ल पक्ष

30 मार्च चतुर्थी सोमवार
3-24 दिन से
1 अप्रैल षष्ठी बुधवार
7 बजे प्रात: तक
9 अप्रैल पूर्णिमा गुरुवार

वैशाख कृष्ण पक्ष

10 अप्रैल प्रतिपदि शुक्र
12 अप्रैल तृतीया रविवार

वैशाख शुक्ल पक्ष

27 अप्रैल तृतीया सोमवार
9-7 दिन से
30 अप्रैल षष्ठी गुरुवार

1 मई सप्तमी शुक्रवार
6 मई द्वादशी बुधवार
7 मई त्रयोदशी गुरुवार
8-46 प्रात: तक

ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष

10 मई प्रतिपदि रविवार
11 मई द्वितीया सोमवार
15 मई षष्ठी शुक्रवार
3-37 दिन से
22 मई त्रयोदशी शुक्रवार

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष

25 मई प्रतिपदि सोमवार
28 मई पंचमी गुरुवार

यज्ञ से देवताओं की और श्राद्ध से पितरों की तृप्ति होती है।

देव पूजा उत्तर मुख होकर और पितृ पूजा दक्षिण मुख हो कर करनी चाहिये।

पूजा के समय ताम्बे के पात्र का प्रयोग करनी चाहिये।

पंचगव्य

गोमूत्र, दूध, दही, घी और शहद

स्वप्न क्या है ?

इन्द्रियों से विषयों को देखना, सुनना, सूंघना तथा स्पर्श करना 'जाग्रत' अवस्था कहलाती है, स्वप्न और जाग्रत में इतना भेद है कि जाग्रण में देखने वाली चीजे हम फिर से बार–बार देख सकते हैं परन्तु स्वप्न में देखी हुई चीजें देखने को नही मिलती है, जाग्रत में जो कुछ भी हम देखते हैं, सुनते है वह चीजें परमात्मा की बनाई हुई हैं और जो कुछ हम स्वप्न में देखते हैं वह चीजें जीवात्मा की बनाई हुई हैं अर्थात् जाग्रत की सृष्टी परमात्मा की बनाई हुई होती है, स्वप्न में मान लीजिये कोई राजा बनता है कोई मन्त्री कोई शिकारी और कोई शेर बनता है यह सभी रूप जीवात्मा का ही रूपान्तर होता है, यह जीवात्मा खुद ही बनाई हुई सृष्टी होती है, जब मनुष्य गहरी नीद सो जाता है उस समय इन्द्रियां अन्तरमुखी हो जाती हैं और इन्द्रियों के हवास तेज हो जाते हैं, जाग्रत अवस्था के संस्कारों से स्वप्न अवस्था में जो विचार मनुष्य की बुद्धि में आते हैं, जो कुछ भी मनुष्य उस समय देखता है सुनता है, स्पर्श करता है स्वप्न कहलाता है स्वप्न भी मनुष्य के लिये भविष्य को बनाने वाला एक राज है वही स्वप्न अपना अच्छा या बुरा प्रभाव डालता है, जो गहरी नीदं में 'ब्राह्मी मुहूर्त' में अर्थात् रात्रि के समाप्त होने से एक घण्टा पहले देखा जाये अवश्य कुछ दिनों के अन्दर ही वह प्रभाव दिखाता है, रात्रि के पहले और चौथे भाग में देखे हुये स्वंप्न का फल एक वर्ष तक मिलता है दूसरे भाग में देखा हुआ लगभग आठ महीने तक अपना प्रभाव दिखाता है तीसरे भाग में देखा हुआ स्वप्न तीन महीनों तक फल देता है जो स्वप्न दिन में, रोग अथवा परेशानी की हालात में आते हैं उन पर विश्वास नहीं करना चाहिये। अशुभ स्वप्न के कुप्रभाव को कम करने के लिए भगवान् शंकर पर जल चढ़ाया करें।

स्वप्न	फल	स्वप्न	फल	स्वप्न	फल
बिल्ली देखना	लड़ाई का इशारा	आंधी देखना	सफर, चिन्ता	छींकना	कार्य में रुकावट
बकरी देखना	शुभ समाचार	इमारत बनाना	लाभ, तरक्की	जेब काटना	धन हानि
मंदिर देखना	इच्छ पूर्ण होना	उल्लू देखना	कष्ट	झण्डा देखना	धन लाभ
कुत्ते का काटना	शत्रु का भय	चाय पीना	सर्फलता	झरणा देखना	अधिक खर्च
सांप पकडना	शत्रु पर विजय	डोली देखना	इच्छा पूर्ण	वृक्ष काटना	धन हानि
शत्रु देखना	सफलता	तारे देखना	मनोरथ सिद्धि	सोना मिलना	कष्ट
रिश्वत लेना	अपमान होना	तेल देखना	परेशानी	शीशा देखना	रोग नाश
भिखारी देखना	सफर पडे	तपस्वी देखना	शान्ति	शेर देखना	शत्रुनाश
रोते हुये देखना	प्रसन्नता मिले	दही खाना	लाभ	रीछ देखना	शुभ समाचार
स्वयं रोगी होना	चिन्ता	देवी, देवता देखना	खुशी	रोटी खाना	इच्छा पूर्ण हो
बर्फ देखना	प्रिय से मिलना	धुआं देखना	कष्ट	बारिश देखना	रोग–झगडा
भैंस देखना	मुसीबत आये	पेड़ पर चढना	मान व तरक्की	प्यासा होना	कार्य में विध्न
नाग देखना	सुख प्राप्ति	पहाड़ से उतरना	हानि	शिकार करना	इच्छा पूर्ण
धोबी देखना	सफलता मिले	पपीता देखना	रोग व चिन्ता	शरीर जले	धन लाभ
अमरूद खाना	सन्तान सुख	छिपकली देखना	धन लाभ	आकाश देखना	तरक्की

स्वप्न	फल	स्वप्न	फल	स्वप्न	फल
रोगी देखना	दुःख दूर होना	कैंची देखना	स्त्री से झगड़ा	किल्ला देखना	तरक्की
मोर देखना	खुशी मिले	डाकू देखना	धन हानि	जहाज पर चढना	तबदीली
मच्छली देखना	धन व स्त्री मिले	ताला बंद देखना	कार्यो में रुकावट	आम खाना	सन्तान सुख
बिच्छू देखना	चिन्ता बढे	चोर देखना	धन हानि	अन्धा देखना	परेशानी
वारात देखना	चिन्ता	घोडे पर चढ़ना	पदोन्नति	इमली खाना	पुत्र प्राप्ति
पुल पर चलना	शुभ यात्रा	कबूतर देखना	शुभ समाचार	कंघी करना	इच्छा पूर्ण होना
पहाढ पर चढ़ना	धन व तरक्की	कुंए में गिरना	परेशानी	ग्रहण देखना	रोग व चिन्ता
पानी में डूबना	परेशानी	अंगूर खाना	इच्छा पूर्ण होना	जहाज देखना	यात्रा
नाखून काटना	रोग व दुःख से दूर	अपने को मृत देखना	आयु वृद्धि	डूबते देखना	अनिष्ट होना
दौलत देखना	सन्तान सुख	अरथी देखना	धन लाभ	तीर मारना	खुशी मिले
दवाई पीना	रोग नाश	आप्रेशन देखना	बीमारी का संकेत	दूध पीना	खुशी
तोता देखना	कष्ट से छुटकारा	आकाश से गिरना	मान हानि	दरिया में नहाना	रोग नाश
जुआ खेलना	धन हानि	आग उठाना	परेशानी	नदी में गिरना	चिन्ता
चावल खाना	शुभ समाचार	आलू देखना	मुसीबत	नाव में बैठना	झूठा आरोप
खून करना	संकट आना	अपनी शादी देखना	संकट	पतंग देखना	परेशानी

स्वप्न	फल	स्वप्न	फल	स्वप्न	फल
कपड़े धोना	परेशानी दूर	चांद देखना	स्वस्थ शरीर	चाबी देखना	धन लाभ
गाय देखना	राहत, खुशी	चावल देखना	खुशी	महन्दी लगाना	स्वस्थ शरीर
लड्डू खाना	खुशी	अतिथि देखना	विपति	अस्त्र देखना	दुःख दूर होना
जूता पहनना	यात्रा	आवारा भटकना	नौकरी मिलना	पुजारी देखना	धार्मिक रुचि
मछली पकड़ना	स्त्री मिले	आलिंगन	धन लाभ	यज्ञ देखना	सौभाग्यवर्धक
झाड़ू देखना	नुकसान	कमल देखना	धन प्राप्ति	मिर्च खाना	लड़ाई होना
ताली बजाना	खुशी	टेलीफोन करना	शुभ समाचार	अनार देखना	सुख मिले
दीवार से गिरना	धन हानि	टिकिट लेना	हानि	मूली खाना	दुःख दूर
नहर देखना	कष्ट का दूर होना	तोता देखना	कष्ट दूर	स्त्री देखना	परेशानी
नल देखना	कार्य सिद्धि	तैरते देखना	आयु में वृद्धि	लड़का पैदा होना	कष्ट
प्यासा होना	कार्यो में बाधा	तितली देखना	प्रेम में सफलता	लड़की पैदा होना	सुख
प्यन देखना	सफलता	तीर्थ देखना	धार्मिक रूचि	लोहा देखना	शत्रु लडे
मुर्गी देखना	स्त्री से मिलाप	त्रिशूल देखना	हर प्रकार से लाभ	लंगडा देखना	दुःख मिले
माली देखना	खुशी	थन(गाय) देखना	धन प्राप्ति	सफेद वस्तु देखना	सुख प्राप्ति
दूध पीना	खुशी	थप्पड़ खाना	शुभ	हाथ देखना	मित्र से मिलना

स्वप्न	फल	स्वप्न	फल
चांदी के जेवर	दुःख	अंगूठी देखना	सफलता
दर्जी देखना	काम बिगडना	अपनी शादी देखना	शरीर कष्ट
नंगा देखना	कष्ट	खरगोश देखना	स्त्री से मिलाप
न्यायालय देखना	झगड़े में सफलता	खिलौना देखना	सुख, शान्ति
ब्रह्मण देखना	शुभ काम करना	लाटरी का टिकट	लाभ पद
अंगूठी पहनना	शुभ लाभ	ब्रह्मण का गुस्सा	मुसीबत का सामना
अंगूठी छीनना	असफलता	बतख देखना	मायूसी
कंगन/कडा देखना	धन हानि	कौवा बोलना	प्रिय से मिलना
मिठाई खाना	मान व तरक्की	रेत देखना	रोग सूचक
रेत पर चलना	शत्रु से हानि	रोगी देखना	दुःख निवृति
अपनी मृत्यु	दीर्ध आयु	आग देखना	धन मिले
ऊंट देखना	हानि	ब्रह्मण घर आये	पद प्राप्ति
खेत देखना	संकट	गर्भपात	गम्भीर रोग
खून करना	संकट आना	चरखा देखना	आर्थिक लाभ
श्राद्ध करना	पितरों की प्रसन्नता		

यज्ञोपवीत

जन्मना जायते शूद्रः संस्कारात् द्विज उच्यते।
अर्थातः मनुष्य जन्म से शुद्र होता है तथा संस्कारों से वह द्विज कहलाता है।

हमारा जो भी पर्व, त्यौहार या धार्मिक संस्कार है उस के मनाने के लिए 'धर्म शास्त्र' में अपनी-अपनी विधि लिखी हुई है, धर्म शास्त्र में कहीं भी सामूहिक यज्ञोपवीत का विधान नहीं है इस लिये हमारा कर्तव्य है इस महत्वपूर्ण संस्कार में किसी प्रकार की शिथिलता न आये तथा हम बच्चे को यथा योग्य समय पर अर्थात 12 वर्ष तक यज्ञोपवीत का संस्कार करें यह संस्कार हम घर पर एक यज्ञ के रूप में कर सकते हैं इस शुभ अवसर पर किसी प्रकार का दिखावा करना शास्त्र विरुद्ध है।

आपका जन्मदिन कब?

गणित के आधार से पंचांग में कभी तिथि का क्षय होता है तथा कभी एक ही तिथि दो होती है ऐसी तिथियों पर यदि आप का जन्म दिन आयेगा तो वह कब मनाया जायेगा। नीचे देखें।

जो तिथि क्षय (गुम) है	आपका जन्म दिन
चैत्र शुक्ल पक्ष प्रतिपदि	6 अप्रैल
वैशाख कृष्ण पक्ष द्वादशी	2 मई
वैशाख शुक्ल पक्ष चतुर्दथी	8 मई
ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष चतुर्दशी	2 जून
आषाढ कृष्ण पक्ष अष्टमी	26 जून
अषाढ शुक्ल पक्ष प्रतिपदि	3 जुलाई
श्रावण कृष्ण पक्ष एकादशी	28 जुलाई
भाद्र कृष्ण पक्ष त्रयोदशी	28 अगस्त
आश्विन कृष्ण पक्ष पंचमी	19 सितम्बर
आश्विन शुक्ल पक्ष त्रयोदशी	12 अक्टूबर
कार्तिक कृष्ण पक्ष सप्तमी	20 अक्टूबर
मार्ग कृष्ण पक्ष द्वितीया	14 नवम्बर
मार्ग शुक्ल पक्ष त्रयोदशी	10 दिसम्बर
पौष कृष्ण पक्ष पंचमी	16 दिसम्बर
माघ कृष्ण पक्ष प्रतिपदि	11 जनवरी
माघ शुक्ल पक्ष द्वादशी	6 फरवरी
फाल्गुन शुक्ल पक्ष चर्तुथी	28 फरवरी
चैत्र कृष्ण पक्ष प्रतिपदि	11 मार्च

जो तिथि दो दिन हो	आपका जन्मदिन
वैशाख कृष्ण पक्ष सप्तमी	28 अप्रैल
वैशाख शुक्ल पक्ष पूर्णिमा	20 मई
आषाढ कृष्ण पक्ष चर्तुथी	23 जून
आषाढ शुक्ल पक्ष द्वादशी	15 जुलाई
भाद्र शुक्ल पक्ष सप्तमी	7 सितम्बर
आश्विन शुक्ल पक्ष दशमी	10 अक्टूबर
कार्तिक शुक्ल पक्ष दशमी	31 अक्टूबर
मार्ग शुक्ल पक्ष चर्तुथी	2 दिसम्बर
पौष कृष्ण पक्ष एकादशी	23 दिसम्बर
माघ कृष्ण पक्ष त्रयोदशी	24 जनवरी
फाल्गुन शुक्ल पक्ष प्रतिपदि	26 फरवरी
चैत्र शुक्ल पक्ष षष्ठी	17 मार्च

यज्ञ, यज्ञोपवीत तथा देवगौण के लिये सामग्री की सूची

सामग्री	एक स्वाहाकार के लिए	5 स्वाहाकार के लिए	यज्ञोपवीत के लिए	देवगौण के के लिए
चूना	200 ग्राम	1 किलो	2 किलो	250 ग्राम
आटा चावल	×	1 किलो	2 किलो	×
नमक	×	2 पैक्यट	4 पैक्यट	×
जव	5 किलो	15 किलो	30 किलो	2 किलो
चावल	2 किलो	5 किलो	10 किलो	250 ग्राम
घी	1 किलो	5 किलो	7 किलो	1 किलो
शक्कर	250 ग्राम	3 किलो	7 किलो	1 किलो
खजूर	250 ग्राम	1 किलो	2 किलो	250 ग्राम
नारियल	250 ग्राम	1 किलो	2 किलो	250 ग्राम
नीलोफर (पम्बच)	250 ग्राम	1 किलो	2 किलो	250 ग्राम
बादाम	250 ग्राम	1 किलो	2 किलो	250 ग्राम

पन्न पूजा की सामग्रीः–

धूप, रत्नदीप, कर्पूर, सिन्दूर, नारीवन, दूध, दही, फूल, चावल, जव, दूर्वा (द्रमुन), कपास का काता हुआ धागा, जाफल, एक रूपये का सिक्का।

पंचगव्य की सामग्रीः–

गोमूत्र, गोभर, दूध, दही, घी।

सामग्री	एक स्वाहाकार के लिए	5 स्वाहाकार के लिए	यज्ञोपवीत के लिए	देवगौण के के लिए
नाबद	250 ग्राम	2 किलो	2 किलो	×
क0 गण	50 ग्राम	½ किलो	½ किलो	×
श्रीफल	3 अदद	12 अदद	20 अदद	×
कन्द	3 अदद	12 अदद	20 अदद	×
काला तिल	250 ग्राम	2 किलो	3 किलो	100 ग्राम
सर्वोशद्धि	3 आरी	12 आरी	12 आरी	2 अदद
ज़ाफल	2 अदद	2 अदद	2 अदद	2 अदद
नारीवन (मौली)	1 गोला	½ किलो	½ किलो	1 गोला
सिन्दूर	25 ग्राम	100 ग्राम	100 ग्राम	25 ग्राम
धूप	1 डब्बा	3 डब्बे	3 डब्बे	1 डब्बा
अगरबती	1 डब्बा	1 डब्बा	1 डब्बा	×
काफूर	1 पैक्यट	1 पैक्यट	2 डब्बे	1 पैक्यट
स0 इलाची	5 रु0	100 ग्राम	200 ग्राम	×

गृह प्रवेश की सामग्रीः-

गौमाता का फोटू, श्री मद्भगवत् गीता, महालक्षामी अथवा इष्टदेवी का फोटू, लाल झण्डियाँ.6, पानी से भरा हुआ घड़ा, दूध का घड़ा, दही घी, चावल, धान्य, सात अनाज (थोड़ी मात्रा में) फूल, रत्नदीप, सिन्दूर केसर, नारीवन, तिल, लाय,जव,किशमिश, शहद, मिठ्ठाई, नमक, अखरोट।

सामग्री	एक स्वाहाकार के लिए	5 स्वाहाकार के लिए	यज्ञोपवीत के लिए	देवगौण के के लिए	
गोबर	थोडा सा	1 किलो	1 किलो	×	पांच प्रकार के फल, पांच खूटियाँ 16 अंगुल लम्बी, पांच चोरस पत्थर 5 अदद प्रतिमायें (वृषभ, घोडा, हाथी, मनुष्य) ताम्बे के पत्र पर बनी होनी चाहिये तथा चांदी का सांप होना चाहिये, 5 मिट्टी की वारियां, रत्नदीप के लिए 5 दीप, धूप कण्ठगण, तिल, सिन्दूर, नारीवन, लाय, दूध, दही, सर्षप सर्वौषधि, घी, फूल, चावल, नबाद, किशमिश।
फूल	2 किलो	5 किलो	7 किलो	2 किलो	
मिट्टी का कलश	1	1 अदद	2 अदद	1 छोटा	
बडा द्वीप	1 अदद	1 अदद	1 अदद	1 छोटा	
टाकू	3 अदद	5 अदद	20 अदद	20 अदद	
कलश के लिये वस्त्र	2½ मीटर	2½ मीटर	2½ मीटर	2½ मीटर	
ब्राह्मण के लिये वस्त्र	//	//	//	×	
तौलिया	1 अदद	2 अदद	2 अदद	2 अदद	
अखरोट	100	संख्या के अनुसार	संख्या के अनुसार	100 अदद	
वस्त्र देवगौण	×	×	×	✓	
वस्त्र नेत्र पट	×	×	5 मीटर खदर	×	
वस्त्र मेखलि महाराज	×	×	गीरि वस्त्र	×	
समिधा (तुलमूरि)	×	×	1000 तुलमूरि	×	
			9 inch लम्बी	×	

सामग्री	एक स्वाहाकार के लिए	5 स्वाहाकार के लिए	यज्ञोपवीत के लिए	देवगौण के के लिए
दालचीनी	5 रु0	100 ग्राम	200 ग्राम	×
रंग	5 रु0	100 ग्राम	200 ग्राम	×
काली मिर्च	5 रु0	100 ग्राम	200 ग्राम	×
ब्रय	1 रु0	2 रु0	2 रु0	1 रु0
सशर्प	1 रु0	2 रु0	2 रु0	1 रु0
लाल चन्दन	1 रु0	2 रु0	2 रु0	×
सफेद चन्दन	1 रु0	2 रु0	2 रु0	×
किशमिश	5 रु0	100 ग्राम	200 ग्राम	×
जिरिश	5 रु0	100 ग्राम	200 ग्राम	×
खोबानी	×	500 ग्राम	500 ग्राम	×
रूई	थोडी बहुत	थोडी बहुत	थोडी बहुत	थोडी बहुत
लकडी	20 किलो	1 क्वैटल	2 क्वैंटल	10 किलो
मिट्टी	छोटी गुत्थी	1 गुत्थी	2 गुत्थी	1 किलो

शंकु प्रतिष्ठा सामग्री

(कन दिनुकसामान) सात तीर्थों, नदियों का जल, सात धातु (सोना, चान्दी, ताम्बा, लोहा, पीतल, कांसी, जस्द) सात अनाज (गेंहू, मक्की, जव, माष, मूंग, चना, मटर) सात औषधियां (सोठ, हल्दी, बुनफशा, गुलाब पत्र, ग्यवथीर, कल द्युठ, पुदीना) पांच मिटियां (पांच तीर्थस्थानों की मिट्टी) पांच प्रकार के फूल,

सामग्री	एक स्वाहाकार के लिए	5 स्वाहाकार के लिए	यज्ञोपवीत के लिए	देवगौण के के लिए
तुलमूर	×	×	6 ft लम्बी	×
भिक्षा पात्र	×	×	1 थाली	×
घी पात्र	×	।	1 बौली	×
वारीदान	×	×	1 अदद	×
वुपल् हाक	×	×	थोडा सा	×
टय्क ताल	×	×	250 ग्राम	250 ग्राम
			संख्या के अनुसार	संख्या के अनुसार
हवन सामग्री	1 डब्बा	3 डब्बे	3 डब्बे	।
रंग बफ पांच प्रकार का	×	250 ग्राम एवं	250 ग्राम एवं	×
चौकी	×	×		जितने का देवगौण हो

मुण्डनः-

धर्मशास्त्र के अनुसार जीवन में दो बार मुण्डन करना जरूरी है पहले जब चूढ़ा कर्म (ज्रकासय) संस्कार किया जाता है दूसरा माता, पिता के दसवें दिन पर। दसवें दिन पर जो भी कोई क्रिया कर्म करेगा चाहे भाई मित्र ब्रांहमण या और कोई हो मुण्डन करना जरूरी है।

यज्ञ से देवताओं की और श्राद्ध से पितरों की तृप्ति होती है

ग्रहण विवरण

खग्रास सूर्य ग्रहण

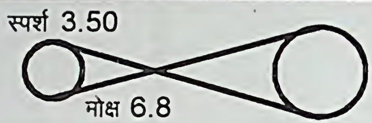

यह ग्रहण श्रावण कृष्ण पक्ष अमावसी तदनुसार 1 अगस्त 2008 शुक्रवार को दिन के 3 बजकर 50 मिनट पर आरम्भ हो कर शां को 6 बज कर 8 मिनट पर समाप्त होगा। यह ग्रहण पूरे भारत में भिन्न भिन्न समय पर खण्डग्रास रूप में देखा जायेगा, भारत के अतिरक्ति यह ग्रहण उत्तर अमरीका के उत्तरी क्षेत्रों, इंगलैण्ड, मलेशिया, पाकिस्तान, भूटान इत्यादि में दिखाई देगा।

जम्मू कश्मीर में यह ग्रहण दिन के 3 बज कर 54 मि पर आरम्भ होकर 5 बजे 51 मि पर समाप्त होगा। इस ग्रहण का सूतक प्रातः 3 बजे 54 मिनट से होगा। यह ग्रहण कर्कट राशि वालों तथा तिष्या और आश्लेषा नक्षत्र पर पैदा होने वालों के लिये हानि कारक है। अतः ग्रहण समाप्त होने के पश्चात् कर्कट राशि वालों को नव ग्रहों का पाठ अवश्य करना चाहिये।

भारत के कुछ प्रसिद्ध शहरों का ग्रहण स्पर्श तथा मोक्ष समय

स्थान	स्पर्श	मोर्क्ष	स्थान	स्पर्श	मोर्क्ष
कश्मीर	3-50	5-49	आगरा	4-8	5-58
जम्मू	3-54	5-51	इलहाबाद	4-11	6-01
देहली	4-03	5-57	चण्डीगढ	3-58	5-54
बम्बई	4-27	6-4	चेन्नई	4-41	6-8
बैंगलौर	4-42	6-7	जयपुर	4-7	5-58
अयोध्या	4-10	6-00	पूना	4-28	6-4

खण्डग्रास चन्द्र ग्रहण

यह ग्रहण श्राण शुक्ल पक्ष पूर्णिमा शनिवार तदानुसार 16/17 अगस्त की रात्रि को पूरे भारत वर्ष में दिखाई देगा। यह ग्रहण रात को 1 बज कर 6 मिनट से आरम्भ हो कर रात को 4 बजे 15 मिनट पर समाप्त हो गा। भारत के अतिरिक्त यह ग्रहण आरस्ट्रेलिया, पाकिस्तान, बर्मा, नेपाल, श्रीलंका, सिंगापुर, मलेशिया

इत्यादि स्थानों पर दिखाई देगा। ग्रहण का सूतक 16 अगस्त को 4 बंजे 6 मिनट से होगा। यह ग्रहण मकर तथा कुम्भ राशि वालों के लिये हानिकारक रहेगा, मकर तथा कुम्भ राशि वालों को चाहिये कि ग्रहण के समय नवग्रहों का पाठ करके दान तथा ब्रह्म भोज का आयोजन करे।

कंकण सूर्य ग्रहण

यह कंकण सूर्य ग्रहण माघ कृष्ण पक्ष अमावसी सोमवार तदानुसार 26 जनवरी 2009 को दिन के 2 बजे 11 मिनट पर आरम्भ हो कर 4 बजे 26 मिनट पर समाप्त होगा यह ग्रहण भारत के दक्षिण पूर्व में दिखाई देगा, जम्मू, कश्मीर, देहली, भोपाल, पंजाब, हरियाणा इत्यादि शहरों में यह ग्रहण दिखाई नही देगा। इस कारण इन स्थानों पर ग्रहण का कोई प्रभाव नही होगा, किसी प्रकार के व्रत रखने की ज़रूरत भी नही है।

यह ग्रहण बैंगलौर, हैदराबाद, कोलकत्ता, चेन्नई इत्यादि स्थानों पर दिखाई देगा।

यह ग्रहण श्रवण नक्षत्र वालों तथा मकर राशि वालों के लिये हानिकारक है। मकर राशि वालों को सूर्य सहस्रनाम का पाठ या पुष्पार्चन अवश्य करना चाहिए।

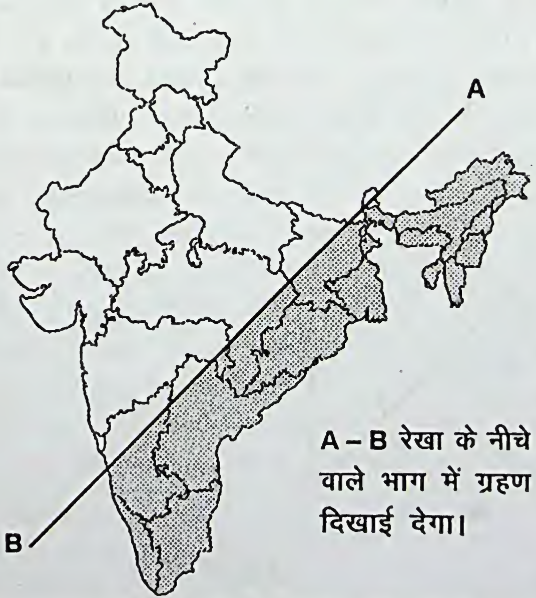

A – B रेखा के नीचे वाले भाग में ग्रहण दिखाई देगा।

2065 ज्योतिष की नज़र में

वर्ष का राजा सूर्य	वर्ष का मन्त्री सूर्य	धान्य का स्वामी चन्द्रमा	अजनास का स्वामी बुध
मेघ का स्वामी शनि	रस का स्वामी बृहस्पति	धातुओं के स्वामी मंगल	फलों के स्वामी शनि
धन के स्वामी मंगल	रक्षा मन्त्री शनि	वसन्त का वाहन घोड़ा	सम्वत्सर का नाम प्लव
आद्रा नक्षत्र में सूर्य का प्रवेश 21 जून 2 बजे 55 रात	आषाढ़ नवमी 11 जुलाई शुक्रवार		

संसार

वर्ष चक्र

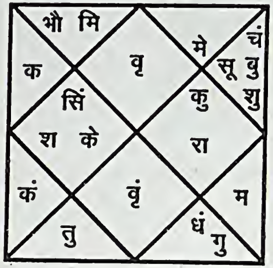

जगत् चक्र

6 अप्रैल 2008 रविवार को प्रातः 9 बजे 25 मिनट पर वृष लग्न पर नये वर्ष का प्रवेश हुआ है। वर्ष लग्न का स्वामी शुक्र वर्ष चक्र में ग्यारहवें भाव में सूर्य, चन्द्रमा तथा बुध के साथ बैठकर चतुर्ग्रही योग बनाता है इस योग से विश्व के विकासशील देशों में कुछ नये नये राजनैतिक एवं सामाजिक गठबन्धन होंगे। विश्व राजनीति में कुछ नये नये स्मीकरण बनेंगे। विश्व के प्रधान प्रतिष्ठित एवं गणमान्य देशों में प्रतिष्ठित व्यक्तियों का निधन एवं जन धनकी हानि का योग। विश्व में प्राकृतिक आपदा, विस्फोट, भूकम्प, बाढ इत्यादि से जनधन की हानि की सम्भावना। जनता में रोगों से अधिक परेशानी। विश्व के

प्रभावशाली देश स्वरक्षा के नाम पर अस्त्रशस्त्रों का भण्डार एकत्रित करने में लगे रहेंगे। कई प्रभावशाली देश भी आतंकवाद को बढावा देने में भाग लेंगे, कई देश शान्ति के प्रयासों में लगे रहेंगे। वर्ष के दस अधिकारिों में से सात स्थानों पर क्रूर ग्रहों का अधिकार है जिस में विशेष तौर से रजा, मन्त्री तथा रक्षा मन्त्री का महत्वपूर्ण पद भी क्रूरग्रहों ने ही संभाले हैं जिन के प्रभाव से जनता में क्रोध की मात्रा बढ़ेगी, हिंसक घटनाओं में वृद्धि होगी, राजनैतिक क्षेत्र में अस्थिरता रहेगी चारों ओर भ्रष्टाचार, चोरी, लूटमार, तोडफोड एवं साम्प्रदायिक दंगों का दृश्य देखा जायेगा। फलित ज्योतिष में लिखा है

स्वयं राजा, स्वयं मन्त्री जनेषु रोग पीडा
चौराग्नि शंका च भयं नृपाणाम्।

धन का स्वामी भौम होने से व्यापारिक वस्तुओं के मूल्यों में विशेष उतार चढाव, व्यापार में अस्थिरता का योग, असमय वर्षा के कारण फसलों में हानि, अमीरों तथा गरीबों के बीच आसामान्यता में वृद्धि, राजनेताओं की मनमानी के कारण प्रजा दुःखी रहेगी। सम्वत्सर का नाम प्लव होने से प्रतिष्ठित एवं उच्च पदस्थ लोग ही सत्ता, सम्पत्ति एवं सुख साधनों से सम्पन्न होंगे। साधारण जनता कई प्रकार के रोगों एवं आर्थिक परेशानियों के कारण दुःखी रहेगी। राजनेताओं में परस्पर विरोध, टकराव एवं शत्रुओं में वृद्धि होगी। क्रूर ग्रहों के फलस्वरूप विश्वशान्ति का सन्तुलन कई भार बिगडता दिखाई देगा परन्तु विश्वयुद्ध का कोई संकेत नहीं है आतंकवादी वारदातों पर काबू पाना विश्वसमुदाय के लिये चुनौती पूर्ण रहेगा।

भारत

59वां गणतन्त्र वर्ष

वर्ष के आरम्भ पर सिंह राशि का शनि वर्ष कुण्डली में भाग्येश तथा दसवें भाव का स्वामी हो कर दसवें भाव को पूर्ण दृष्टि से देख रहा है तथा राहू दसवें भाव में बैठा है इस शुभ योग से विश्व की राजनीति में भारत की प्रतिष्ठा तथा वर्चस्व बडेगा। सिंह राशि में शनि के होने सेतथा उसपर शुभग्रह बृहस्पति की पूर्ण दृष्टि के कारण भारत पूरे विश्व में अपनी सभ्यता तथा संस्कृति का आदान प्रदान करने में प्रयत्नशील रहेगा तथा उसमें कुछ हद तक सफलता भी प्राप्त करेगा। भारत के 59वें वर्ष लग्न का स्वामी शनि जो कि भारत की प्रभाव राशि भी है तथा जिसने इस वर्ष सेनापति का पद ग्रहण किया है के कारण कहीं पर

भयंकर भूकम्प, समुद्री तूफान, तथा उग्रवाद से काफी जनधन की हानि का योग। वर्ष का पूवार्द्ध प्रशासनवर्ग के लिये अग्निपरीक्षा का समय होगा। भारत के धार्मिक स्थानों एवं महानगरों में आतंकवाद का नाद हर समय बजता रहेगा वर्ष के आरम्भ पर शनि देव वक्री स्थिति में है इसके विषय में फलित शास्त्रों में लिखा है।

छत्रस्य भंग: सलिलस्य नाशो, लोकेषु पीडा, पशु वित्तहानि: स्याच्छ्री विहीनों यदि चक्रवर्ती, वक्रे च सौरौ पितृ संस्थितेच।।

कहीं शासन सत्ता में परिवर्तन, कहीं आकाल की स्थिति, प्रजा में भयंकर रोगों की उत्पति, जनधन की हानि इत्यादि भारतीय गणतन्त्र के वर्ष की ग्रहस्थिति के अनुसार लग्न का स्वामी एवं मुन्था का स्वामी शनि सिंह राशि में होने से शासन वर्ग के लिये भारी, एवं परिवर्तन का योग अथवा कठिन परिशानियों का सामना करना पड़ेगा अथवा किसी प्रतिष्ठित नेता के निधन का योग। इस योग से राजनीतिक पार्टियों की आन्तरिक उलझनें बढेंगी, भारत की सीमाओं पर विदेशी शत्रुओं द्वारा हिंसक एवं आतंकवादी गतिविधियों को बडावा देने का कुचक्र चलता रहेगा। भारत विज्ञान एवं टेकनोलाजी के क्षेत्र में जर्बदस्त उन्नति के साथसाथ विकास शील देशों के साथ साथ नये राजनैतिक एवं व्यवसायिक अनुबन्ध करेगा।

जम्मू-कशमीर

ग्रहों का विशेष प्रभाव जम्मू-कशमीर पर होता है, जम्मू कशमीर की प्रभाव राशि का स्वामी शुक्र वर्ष कुण्डली में सूर्य, चन्द्रमा तथा बुध के साथ मिल कर चर्तुग्रही योग बनाता है इस के फलस्वरूप जम्मू-कशमीर में भारत विरोधी तत्व अधिक सक्रिय होंगे तथा कहीं पर भूकम्प, कहीं पर उग्रर विस्फोट तथा कहीं आतंकवादियों की घुसपैठ शासक वर्ग को शान्ति का सांस लेने नहीं देगी। प्रशासनवर्ग यह्मं के लघु एवं बडे औद्योगिक क्षेत्रों के विकास हेतु नई नई योजनाओं को हाथ में लेगा, शिक्षा के क्षेत्र की ओर विशेष ध्यान दिया जायेगा परन्तु बेरोज़गारी, बिजली आदि समस्याओं से विरोधी दल लाभ लेने की कोशिश में रहेगा परन्तु अपनी आन्तरिक गुठबाजी के कारण विरोधी दल सफल नहीं रहेगा। शासकवर्ग यहां के पर्यटन, फल, कृषि, हस्तकला तथा उद्योगों को विशेष बढावा देने में कोई कसर नहीं छोडेगा परन्तु आतंकवादी संगठन अपनी विध्ंसक गतिविधियों से यहां के शान्त वातावरण को अस्तव्यस्त करते रहेंगे जो शस्कवर्ग के प्रगति प्रोग्राम में रुकावट डाल सकता है।

(शेष उस सर्वशक्तिमान के हाथों में)

चैत्र शुक्ल पक्ष
वि 2065-ई 2008

मीन में सूर्य, बुध, शुक्र। मिथुन में भौम। सिंह में शनि, केतु। धनु मे गुरु, कुम्भ में राहु।

दिन	मान	चैत्र	अप्रैल	वार	नक्षत्र		बजे	मि	तिथि		बजे	मि	वसन्तु ऋतु उत्तरायण - ईस्वी 2008 - शाका 1930	सूर्य उदय	सूर्य अस्त
31	23	24	6	रवि	रेव	प्र	9	8	अमा	दि	9	25	त्र्यहः (प्रति प्र 68) थालस बुथ वुछुन, नवरात्रारम्भ, नवरेह (A)	%	%
	27	25	7	सोम	अश्वि	दि	6	32	द्विती	प्र	2	44	क्षय:	15	50
	33	26	8	भौम	भरण	दि	3	54	तृती	प्र	11	19	जंगत्रय 9-15 रात वृष में चन्द्र, गजः।	14	51
	38	27	9	बुध	कृति	दि	1	22	चतु	प्र	8	6	सिद्ध:।	13	52
	45	28	10	गुरु	रोहि	दि	11	8	पंच	दि	5	11	10-9 रात मिथुन में चन्द्र, कुमार षष्ठी, उन्मूलम्।	12	52
	48	29	11	शुक्र	मृग	दि	9	18	षष्टी	दि	2	43	मानसम्।	10	53
	53	30	12	शनि	आद्र	दि	7	58	सप्त	दि	12	47	1-21 रात कर्क में चन्द्र, मासान्त, मुद्गरम्।	9	54
32	0	वैशा	13	रवि	पुन	दि	7	13	अष्ट	दि	11	25	वैशाखी, दुर्गाष्टमी रामनवमी 6-29 शा मेष मे सूर्य, मुहूर्त 45,(B)	8	55
	5	2	14	सोम	तिष्य	दि	7	2	नव	दि	10	39	नवदुर्गा विसर्जन, चक्रीश्वर यात्रा, श्रीनगर, पलोडा, (C)	7	55
	10	3	15	भौम	आश्ले	दि	7	25	दश	दि	10	26	7-25 प्रातः सिंह में चन्द्र, 5-50 प्रातः मेष में बुध, 9-45 (D)	5	56
	15	4	16	बुध	मघा	दि	8	19	एका	दि	10	44	कामदा एकादशी, चरः।	4	57
	20	5	17	गुरु	पूफा	दि	9	39	द्वाद	दि	11	30	4-3 दिन कन्या में चन्द्र मुसलम्।	3	57
	25	6	18	शुक्र	उफा	दि	11	22	त्रयो	दि	12	39	शूलमू।	2	58
	30	7	19	शनि	हस्त	दि	1	26	चर्तु	दि	2	8	2-34 रात तुला में चन्द्र, मृत्युः।	1	59
31	35	8	20	रवि	चित्र	दि	3	47	पूर्णि	दि	3	55	हनुमान जयन्ती, काम्यः।	0	0

(A) 9-8 रात मेष मे चन्द्र और पंचक समाप्त, 3-54 दिन से 4-13 रात तक गण्डान्त, विचार नागयात्रा, श्री भट्ट दिवस, प्रवर्धः।।(B) पहाड़ी संक्रान्ति व्रत, ध्वजः।(C) जम्मू, प्राजापत्यः। (D)दिन से 9:36 रात तक गण्डान्त, आनन्दः

मध्याह्न : प्रति का पहले दिन, द्वि से सप्त अपने दिन, अष्ट से द्वा पहले दिन, त्रयो से पूर्णि अपने दिन

श्राद्ध : प्रति का पहले दिन, द्वि से पंच अपने दिन, षष्ठी से पूर्णि पहले दिन।

वैशाख कृष्ण पक्ष
वि 2065-ई 2008

मेष में सूर्य, बुध। मिथुन में भौम। सिंह में शनि, केतु। धनु में बृहस्पति। कुम्भ में राहु। मीन में शुक्र।

दिन	मान	वैश	अप्रैल	वार	नंक्षत्र		बजे	मि	तिथि		बजे	मि	वसन्तु ऋतु उत्तरायण - शाका 1930	सूर्य उदय	सूर्य अस्त
32	40	9	21	सोम	स्वा	दि	6	23शं	प्रति	दि	5	59	छत्रम्।	5/54	7/0
	45	10	22	भौम	विशा	प्र	9	11	द्विती	प्र	8	15	2-28 दिन वृश्चिक में चन्द्र, श्रीवत्सः।	57	1
	50	11	23	बुध	अनु	प्र	12	8	तृती	प्र	10	40	सौम्यः।	56	2
	50	12	24	गुरु	ज्येष्ठ	प्र	3	7	चतु	प्र	1	7	3-7 रात धनु में चन्द्र और मूल आरम्भ, संकट चतुर्थी (A)	55	2
	53	13	25	शुक्र	मूला	दिन रात			पंच	प्र	3	28	9-42 रात मेष में शुक्र, 7-59 प्रातः तक गण्डान्त, श्री पंचमी (B)	54	3
	58	14	26	शनि	मूला	दि	5	59	षष्ठी	प्र	5	32	वेताल षष्ठी, मुसलम्।	53	4
33	3	15	27	रवि	पूषा	दि	8	34	सप्त	दिन रात			3-9 दिन मकर में चन्द्र, दिन अधिक, शूलम।	52	5
	7	16	28	सोम	उषा	दि	10	41	सप्त	दि	7	8	2-45 दिन कर्कट में भौम, मृत्युः।	51	5
	10	17	29	भौम	श्रवण	दि	12	9	अष्ट	दि	8	5	12-36 रात कुम्भ में चन्द्र और पंचक आरम्भ, वृष में बुध (C)	50	6
	15	18	30	बुध	धनि	दि	12	51	नव	दि	8	17	9-26 दिन मकर मे राहु, मैत्रम्।	49	7
	20	19	मई	गुरु	शत	दि	12	44	दश	दि	7	37	बुलबुल लंकर यज्ञ, सौम्यः।	48	7
	23	20	2	शुक्र	पूभा	दि	11	47	एका	दि	6	8	त्र्यहः (द्वा प्र 3-52) 6-6 प्रातः मीन में चन्द्र, वरूथिनी एकादशी,(D)	47	8
	27	21	3	शनि	उभा	दि	10	7	त्रयो	प्र	12	57	3-30 रात से गण्डान्त, शुक्रास्त धौम्यः।	46	9
	33	22	4	रवि	रेव	दि	7	49	चर्तु	प्र	9	32	(अश्वि प्र 5-5) 7-49 प्रातः मेष में चन्द्र और पंचक समाप्त,(E)	45	10
	34	23	5	सोम	भरण	प्र	2	5	अमा	दि	5	48	सोमामावसी चरः।	44	10

(A) (चन्द्रोदय 10-44) 8-18 रात से गण्डान्तः, कालदण्डः। (B)ऋषिपीर श्राद्ध स्थिरः।(C) 5-44 शां, काम्यः। (D) ध्वांक्षः। (E) 2-6 दिन तक गण्डान्त । प्रवर्धः।

मध्याह्न : प्रति से सप्त अपने दिन, अष्ट से द्वाद तक पहले दिन, त्रयों से अमा अपने दिन।

श्राद्ध : प्रति का पहले दिन, द्वि से सप्त अपने दिन, अष्ट से द्वाद पहले दिन, त्रयो से अमा अपने दिन।

वैशाख शुक्ल पक्ष
वि 2065-ई 2008

मेष में सूर्य, शुक्र। वृष में बुध। कर्कट में भौम, केतु। सिंह में शनि धनु में बृहस्पति। मकर में राहु।

दिन	मान	वैशा	मई	वार	नक्षत्र		बजे	मि	तिथि		बजे	मि	वसन्त ऋतु उत्तरायण - शाका 1930	सूर्य उदय	सूर्य अस्त
33	40	24	6	भौम	कृति	प्र	11	3	प्रति	दि	1	56	7-20 प्रातः वृष में चन्द्र, मुसलम्।	[illegible]	[illegible]
	45	25	7	बुध	रोहि	प्र	10	9	द्विती	दि	10	8	**अक्षया तृतीया** परशुंराम जयन्ती, शूलम्।	42	12
	50	26	8	गुरु	मृग	दि	5	34	तृती	दि	6	34	त्र्यहः (चतु प्र 3-24), 6-48 प्रातः मिथुन में चन्द्र, मृत्युः।	42	13
	55	27	9	शुक्र	आर्द्र	दि	3	30	पंच	प्र	12	48	काम्यः।	41	13
	58	28	10	शनि	पुर्न	दि	2	2	षष्ठी	प्र	10	51	कुमार षष्ठी, 8-20 दिन कर्क में चन्द्र, छत्रम्।	40	14
34	00	29	11	रवि	तिण्य	दि	1	16	सप्त	प्र	7	37	**विजया सप्तमी** मार्तण्ड तीर्थ यात्रा 1 बजे 16 दिन तक, श्रीवत्सः	39	15
	5	30	12	सोम	आश्ले	दि	1	14	अष्ट	प्र	9	7	1-14 दिन सिंह में चन्द्र, 6-48 प्रातः से 5-59 शां तक (A)	38	15
	10	31	13	भौम	मघा	दि	1	55	नव	प्र	9	19	मासान्त, कालदण्डः।	38	16
	10	ज्ये0	14	बुध	पूफा	दि	3	12	दश	प्र	10	8	9-37 रात दिन कन्या में चन्द्र, 3-23 दिन वृष में सूर्य (B)	37	17
	15	2	15	गुरु	उफा	दि	5	1	एका	प्र	11	27	शारदा एकादशी, डुमट बल यात्रा, मातंगः।	36	18
	20	3	16	शुक्र	हस्त	दि	7	15	द्वाद	प्र	1	10	अमृतम्।	35	18
	22	4	17	शनि	चित्र	प्र	9	46	त्रयो	प्र	3	10	8-29 दिन तुला में चन्द्र, काण्डः।	35	19
	25	5	18	रवि	स्वा	प्र	12	30	चर्तु	प्र	5	22	गणेश चर्तुदशी, गणपत्तयार यात्रा, श्रीनगर, अलापकः।	34	20
	30	6	19	सोम	विश	प्र	3	23	पूर्णि	दिन रात			दिन अधिक, 8-39 रात वृश्चिक में चन्द्र, मैत्रम्।	34	20
	32	7	20	भौम	अनू	दिन रात			पूर्णि	दि	7	41	6-46 प्रातः वृष में शुक्र, वज्रम्।	33	21

(A) गण्डान्त, सौम्यः। (B) मुर्हत 30 समुद्रीय, संक्रान्ति व्रत, ग्रीष्म ऋतु स्थिरः।

मध्याह्न : प्रति का अपने दिन, द्वि से चतु पहले दिन, पंच से पूर्णि अपने दिन।

श्राद्ध : प्रति से चतु पहले दिन, पंच से पूर्णि अपने दिन।

ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष

वि 2065-ई 2008

वृष में सूर्य, बुध, शुक्र। कर्कट में भौम, केतु। सिह मे शनि। धनु में बृहस्पति। मकर में राहु।

दिन	मान	ज्ये0	मई	वार	नक्षत्र		बजे	मि	तिथि		बजे	मि	ग्रीष्म ऋतु उतरायण - शाका 1930	सूर्य उदय	सूर्य अस्त
34	35	8	21	बुध	अनू	दि	6	19	प्रति	दि	10	5	2-48 रात से गण्डान्त, सौम्यः।	/32	/22
	37	9	22	गुरु	ज्येष्ठ	दि	9	16	द्विती	दि	12	28	9-16 दिन धनु में चन्द्र और मूल आरम्भ, 3-8 दिन तक (A)	32	22
	40	10	23	शुक्र	मूला	दि	12	8	तृती	दि	2	45	संकट चतुर्थी (चन्द्रोदय 10-17) स्थिरः।	31	23
	42	11	24	शनि	पूषा	दि	2	49	चर्तु	दि	4	50	9-27 रात मकर में चन्द्र, मातंगः।	31	24
	45	12	25	रवि	उषा	दि	5	11	पंच	दि	6	34	**ज्येष्ठा देवी यज्ञ** ज़ीठयार काश्मीर, अमृतम्।	30	24
	50	13	26	सोम	श्रवण	दि	7	4	षष्टी	प्र	7	49	सिद्धः।	30	25
	52	14	27	भौम	धनि	प्र	8	21	सप्त	प्र	8	25	7-47 प्रातः कुम्भ में चन्द्र और पंचक आरम्भ उन्मूलम्।	30	26
35	55	15	28	बुध	शत	प्र	8	54	अष्ट	प्र	8	17	मानसम्।	29	26
	00	16	29	गुरु	पूभा	प्र	8	40	नव	दि	7	21शं	2-48 दिन मीन में चन्द्र, मुद्गरम्।	29	27
	0	17	30	शुक्र	उभा	प्र	7	40	दशा	दि	5	38	ध्वजः। (B)	28	27
	2	18	31	शनि	रेव	द्रि	5	57	एका	दि	3	12	5-57 शां मेष में चन्द्र और पंचक समाप्त, अपरा एकादशी	28	28
	3	19	जून	रवि	अश्वि	दि	3	38	द्वाद	दि	12	09	आनन्दः।	28	29
	7	20	2	सोम	भरण	दि	12	52	त्रयो	दि	8	37	त्र्यहः (चर्तु प्र 4-48) 6-8 शां वृष में चन्द्र, चरः।	28	29
	7	21	3	भौम	कृति	दि	9	50	अमा	प्र	12	53	नन्दकीश्वर यात्रा, सीर जागीर, अकलपुर जम्मू मुसलम्।	27	30

(A) गणडान्त, कालदण्डः। (B) 12-18 दिन से 12-33 रात तक गण्डान्त, प्राजापत्यः।

मध्याह्न : प्रति का पहले दिन, द्वि से द्वाद अपने दिन, त्रयो, चर्त पहले दिन, अमा अपने दिन।

श्राद्ध : प्रति से पंच पहले दिन, षष्ठ से नव अपने दिन, दश से चर्त पहले दिन, अमा अपने दिन

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष
वि 2065-ई 2008

4 जून की ग्रहस्थिति : वृष में सूर्य, बुध, शुक्र। कर्कट में भौम, केतु। सिंह में शनि। धनु में बृहस्पति। मकर में राहु।

दिन	मान	ज्ये0	जून	वार	नक्षत्र		बजे	मि	तिथि		बजे	मि	ग्रीष्म ऋतु उत्तरायण - शाका 1930	सूर्य उदय	सूर्य अस्त
35	10	22	4	बुध	रोहि	दि	6	45	प्रति	प्र	9	1	(मृग प्र 3-47) 5-14 शां मिथुन में चन्द्र, (A)	5/27	7/30
	10	23	5	गुरु	आर्द्र	प्र	1	9	द्विती	दि	5	26	काण्ड:।	27	31
	15	24	6	शुक्र	पुर्न	प्र	11	1	तृती	दि	2	16	5-30 शां कर्कट में चन्द्र, अलापक:।	27	31
	17	25	7	शनि	तिष्य	प्र	9	31	चतु	दि	11	42	मैत्रम्।	27	32
	17	26	8	रवि	आश्ले	प्र	8	46	पंच	दि	9	49	कुमार षष्ठी, 8-46 रात सिंह में चन्द्र, 2-58 दिन से (B)	27	32
	17	27	9	सोम	मघा	प्र	8	48	षष्ठी	दि	8	43	ध्वांक्ष:।	26	32
	17	28	10	भौम	पूफा	प्र	9	35	सप्त	दि	8	25	3-54 रात कन्या में चन्द्र, धौम्य:।	26	33
	20	29	11	बुध	उफा	प्र	11	5	अष्ट	दि	8	53	ज्येष्ठाष्टमी, क्षीर भवानी यात्रा, काश्मीर, जानीपुरा, जम्मू (C)	26	34
	23	30	12	गुरु	हस्त	प्र	1	10	नव	दि	10	00	क्षय:।	26	34
	23	31	13	शुक्र	चित्र	प्र	3	40	दश	दि	11	39	2-22 दिन तुला में चन्द्र, 4-40 दिन मिथुन में शुक्र, (D)	26	34
	23	आषा	14	शनि	स्वा	दिन रात			एका	दि	1	41	निर्जला एकादशी, 10-2 रात मिथुन में सूर्य, मुर्हत 45 (E)	26	35
	25	2	15	रवि	स्वा	दि	6	27	द्वाद	दि	3	58	2-39 रात वृश्चिक में चन्द्र, अलापक:।	26	35
	25	3	16	सोम	विशा	दि	9	23	त्रयो	दि	6	21	मैत्रम्।	26	35
	25	4	17	भौम	अनू	दि	12	21	चर्तु	प्र	8	43	वज्रम्।	27	36
	27	5	18	बुध	ज्ये	दि	3	15	पूर्णि	प्र	11	00	3-15 दिन धनु में चन्द्र और मूल आरम्भ, रूपभवानी, कबीर (F)	27	36

ज्येष्ठाष्टमी 11 जून

(A) शूलम्। (B)1-53 रात तक गण्डान्त, वज्रम्। (C) शालीमार गार्डन, देहली। प्रवर्ध:। (D) मसान्त, गज:। (E) दरियाई संक्रान्ति, व्रत, सिद्ध:। (F) जयन्ती वट सावित्री, 8-30 दिन से 7-19 शां तक गण्डान्त, ध्वांक्ष:।

मध्याह्न : प्रति से तृती अपने दिन, चतु से दश पहले दिन, एका से पूर्णि अपने दिन।

श्राद्ध : प्रति, द्वि अपने दिन, तृती से त्रयो पहले दिन, चर्तु, पूर्णि अपने दिन।

आषाढ कृष्ण पक्ष
वि 2065-ई 2008

19 जून की ग्रहस्थिति : मिथुन में सूर्य, शुक्र। कर्कट में भौम, केतु। सिंह में शनि। धनु में बृहस्पति।मकर में राहु। वृष में बुध।

दिन	मान	आषा	जून	वार	नक्षत्र		बजे	मि	तिथि		बजे	मि	ग्रीष्म ऋतु उतरायण - शाका 1930	सूर्य उदय	सूर्य अस्त
35	25	6	19	गुरु	मूला	दि	10	1	प्रति	प्र	1	8	धौम्यः।	[illegible]	[illegible]
	25	7	20	शुक्र	पूषा	प्र	8	35	द्विति	प्र	3	2	3-11 रात मकर में चन्द्र, प्रवर्धः।	27	37
	25	8	21	शनि	उषा	प्र	10	52	तृती	प्र	4	37	4-57 दिन सिंह में भौम, दक्षिणायन, क्षयः।	27	37
	25	9	22	रवि	श्रव	प्र	12	47	चतु	दिन रात			दिन अधिक, संकट चतुर्थी (चन्द्रोदय 10-14) मुसलम्।	27	37
	27	10	23	सोम	धनि	प्र	2	15	चतु	दि	5	49	1-35 दिन कुम्भ में चन्द्र और पंचक आरम्भ, शूलम्।	28	37
	27	11	24	भौम	शत	प्र	3	11	पंच	दि	6	31	मृत्युः।	28	37
	25	12	25	बुध	पूभा	प्र	3	30	षष्ठी	दि	6	39	9-29 रात मीन में चन्द्र, काम्य।	28	38
	25	13	26	गुरु	उभा	प्र	3	9	सप्त	दि	6	10	त्र्यहः (अष्ट प्र 5-00) छत्रम्।	29	38
	22	14	27	शुक्र	रेव	प्र	2	9	नव	प्र	3	11	2-9 रात मेष में चन्द्र और पंचक समाप्त, 8-18 रात (A)	29	38
	22	15	28	शनि	अश्वि	प्र	12	33	दशा	प्र	12	46	7-24 दिन तक गण्डान्त, सौम्यः।	29	38
	22	16	29	रवि	भरण	प्र	10	26	एका	प्र	9	51	3-50 रात वृष में चन्द्र, कालदण्डः।	30	38
	20	17	30	सोम	कृति	प्र	7	56	द्वाद	दि	6	32	स्थिरः।	30	38
	20	18	जुला	भौम	रोहि	दि	5	12	त्रयो	दि	2	59	3-48 रात मिथुन में चन्द्र, मातंगः।	30	38
	17	19	2	बुध	मृग	दि	2	24	चर्तु	दि	11	21	अमृतम्।	31	38
	17	20	3	गुरु	आर्द्र	दि	11	44	अमा	दि	7	49	त्र्यहः (प्रति प्र 4-32) 3-54 रात कर्कट में चन्द्र, काण्डः।	31	38

(A) से गण्डान्त, श्रीवत्सः।

मध्याह्न : प्रति से चतु अपने दिन, पंच से अष्ट पहले दिन, नव से त्रयो अपने दिन, चर्तुद, अमा पहले दिन।

श्राद्ध : प्रति से युत अपने दिन, पंच से अष्ट पहले दिन, नव से द्वाद अपने दिन, त्रयो से अमा पहले दिन।

आषाढ शुक्ल पक्ष
वि 2065-ई 2008

3 जुलाई की ग्रहस्थिति : मिथुन में सूर्य, शुक्र। कर्कट में केतु। सिंह में भौम, शनि। धनु में बृहस्पति। मकर में राहु। वृष में बुध।

दिन	मान	आष	जुला	वार	नक्षत्र		बजे	मि	तिथि		बजे	मि	ग्रीष्म ऋतु दक्षिणायन - शाका 1930	सूर्य उदय	सूर्य अस्त
35	17	21	4	शुक्र	पुन	दि	9	21	द्विती	प्र	1	40	अलापक:।	5/32	7/38
	15	22	5	शनि	तिष्य	दि	7	25	तृती	प्र	11	22	12-17 रात से गण्डान्त, मैत्रम्।	32	38
	15	23	6	रवि	आश्ले	दि	6	6	चतु	प्र	9	45	6-6 प्रात: सिंह से चन्द्र, 6-53 प्रात: मिथुन में बुध (A)	32	37
	12	24	7	सोम	पूफा	दिन रात			पंच	प्र	8	53	कर्कट में शुक्र-रात 2-36, ध्वज:।	33	37
	12	25	8	भौम	पूफा	दि	5	37	षष्ठी	प्र	8	49	कुमार षष्टी, 11-47 दिन कन्या में चन्द्र, धौम्य:।	33	37
	7	26	9	बुध	उफा	दि	6	32	सप्त	प्र	9	29	प्रवर्ध:।	34	37
	7	27	10	गुरु	हस्त	दि	8	9	अष्ट	प्र	10	50	9-11 रात तुला में चन्द्र, **हार अष्टमी**, मजगाम यात्रा, क्षय:।	35	37
	5	28	11	शुक्र	चित्र	दि	10	22	नव	प्र	12	41	**हार नवमी**, शारिका जयन्ती, चक्रीश्वर, हारी पर्वत श्रीनगर, (B)	35	36
	0	29	12	शनि	स्वाति	दि	1	00	दश	प्र	2	54	सिद्ध:।	36	36
	0	30	13	रवि	विशा	दि	3	54	एका	प्र	5	16	9-9 दिन वृश्चिक में चन्द्र, देवशयनी एकां हरिस्वाप उन्मूलम्।	36	36
34	57	31	14	सोम	अनूरा	दि	6	52	द्वाद	दिन रात			दिन अधिक, मानसम्।	37	35
	55	32	15	भौम	ज्येष्ठा	प्र	9	45	द्वाद	दि	7	38	9-45 रात धनु में चन्द्र और मूल आरम्भ, मासान्त मुद्गरम्।	37	35
	52	श्राव	16	बुध	मूला	प्र	12	26	त्रयो	दि	9	52	8-57 दिन कर्क में सूर्य, मुहर्त 30 किनारी, संक्रान्ति व्रत (C)	38	35
	52	2	17	गुरु	पूषा	प्र	2	51	चुर्त	दि	11	50	ज्वाला चतुर्दशी, खिव यात्रा, प्रजापत्य:।	39	34
	47	3	18	शुक्र	उपा	प्र	4	54	पूर्णि	दि	1	29	9-24 दिन मकर में चन्द्र, गुरु पूर्णिमा, व्यास पूजा, (D)	39	34

(A) 11-13 दिन तक गण्डान्त, (मघ प्र 5-28) वज्रम्। (B) पलोडा, जम्मू **शुक्र उदय** गज:। (C) वहरात वर्षाऋतु ध्वज:। (D) आनन्द:।

मध्याह्न : प्रति का पहले दिन, द्वि से द्वाद अपने दिन, त्रयो से चर्तु पहले दिन पूर्णि अपने दिन।

श्राद्ध : प्रति का पहले दिन, द्वि से द्वाद अपने दिन, त्रयो से पूर्णि पहले दिन।

श्रावण कृष्ण पक्ष
वि 2065-ई 2008

19 जुलाई की ग्रहस्थिति : कर्कट में सूर्य, शु0, केतु। सिंह में भौम, शनि। धनु में बृहस्पति। मकर में राहु। मिथुन में बुध।

दिन	मान	श्रा	ज़ुला	वार	नक्षत्र		बजे	मि	तिथि		बजे	मि	वर्षा ऋतु दक्षिणायन - शाका 1930	सूर्य उदय	सूर्य अस्त
34	45	4	19	शनि	श्रवण	दिन रात			प्रति	दि	2	46	स्थिरः।	5/40	7/33
	42	5	20	रवि	श्रवण	दि	6	35	द्विती	दि	3	37	7-16 प्रातः कुम्भ में चन्द्र और पंचक आरम्भ, मुसलम।	40	33
	38	6	21	सोम	धनि	दि	7	50	तृती	दि	4	3	संकट चतुर्थी (चन्द्रोदय 9-21) शूलम्।	41	32
	35	7	22	भौम	शत	दि	8	40	चतु	दि	4	2	2-58 रात मीन में चन्द्र, मृत्युः।	42	32
	31	8	23	बुध	पूभा	दि	9	1	पंच	दि	3	32	8-50 रात कर्क में बुध, काम्यः।	42	31
	28	9	24	गुरु	उभा	दि	8	54	षष्ठी	दि	2	33	2-31 रात से गण्डान्त, छत्रम्।	43	30
	25	10	25	शुक्र	रेव	दि	8	19	सप्त	दि	1	5	8-19 दिन मेष में चन्द्र और पंचक समाप्त, 1-56 दिन (A)	44	30
	21	11	26	शनि	अश्वि	दि	7	16	अष्ट	दि	11	11	सौम्यः।	44	29
	18	12	27	रवि	भरण	दि	5	19	नव	दि	8	53	(कृति प्र 4-1) 11-24 दिन वृष में चन्द्र, कालदण्डः।	45	29
	15	13	28	सोम	रोहि	प्र	1	57	दश	दि	6	14	त्र्यहः (एका प्र 3-21) कमला एकादशी, प्रवर्धः।	45	28
	11	14	29	भौम	मृग	प्र	11	45	द्वाद	प्र	12	20	12-52 दिन मिथुन में चन्द्र, क्षयः।	46	27
	8	15	30	बुध	आर्द्र	प्र	9	31	त्रयो	प्र	9	18	गजः।	46	27
	5	16	31	गुरु	पुन	प्र	7	25	चर्तु	दि	6	22	1-56 दिन कर्क में चन्द्र, सिद्धः।	47	26
	1	17	अग	शुक्र	तिष्य	दि	5	35	अमा	दि	3	43	12-19 दिन सिंह में शुक्र, खण्ड ग्रास सूर्य ग्रहण, उन्मूलम्।	48	25

सूर्य ग्रहण 1 अगस्त

(A) तक गण्डान्त, शीतला सप्तमी, श्रीवत्सः।

मध्याह्न : प्रति से सप्त अपने दिन, अष्ट से एका पहले दिन, द्वा से अमा अपने दिन।

श्राद्ध : प्रति से एका पहले दिन, द्वाद से चर्तु अपने दिन, अमा पहले दिन।

श्रावण शुक्ल पक्ष
वि 2065-ई 2008

2 अगस्त की ग्रहस्थिति : कर्कट में सूर्य, बुध, केतु। सिंह मे भौम, शुक्र, शनि। धनु में गुरु। मकर में राहु।

दिन	मान	श्राव	अग	वार	नक्षत्र		बजे	मि	तिथि		बजे	मि	वर्षा ऋतु दक्षिणायन - शाका 1930	सूर्य उदय	सूर्य अस्त
33	56	18	2	शनि	आश्ले	दि	4	8	प्रति	दि	1	26	4-8 दिन सिंह में चन्द्र, 10-30 दिन से 9-57 रात तक (A)	5/49	7/24
	52	19	3	रवि	मघा	दि	3	13	द्विति	दि	11	40	मुद्गरम्।	50	23
	48	20	4	सोम	पूफा	दि	2	55	तृती	दि	10	31	8-57 रात कन्या में चन्द्र, ध्वजः।	50	22
	48	21	5	भौम	उफा	दि	3	19	चतु	दि	10	3	प्राजापत्यः।	51	21
	42	22	6	बुध	हस्त	दि	4	26	पंच	दि	10	19	कुमार षष्ठी, नागपंचमी, आनन्दः।	52	21
	38	23	7	गुरु	चित्र	दि	6	12	षष्ठी	दि	11	17	5-14 प्रातः तुला में चन्द्र, 11-22 दिन सिंह में बुध, चरः।	52	20
	33	24	8	शुक्र	स्वाति	प्र	8	32	सप्त	दि	12	52	मुसलम्।	53	19
	30	25	9	शनि	विशा	प्र	11	15	अष्ट	दि	2	54	4-33 दिन वृश्चिक में चन्द्र,2-53 रात कन्या में भौम शूलम्।	54	18
	26	26	10	रवि	अनूरा	प्र	2	11	नव	दि	5	13	मृत्युः।	54	17
	21	27	11	सोम	ज्येष्ठ	प्र	5	6	दश	प्र	7	36	10:17 रात से गण्डान्त, काम्यः।	55	16
	17	28	12	भौम	मूला	दिन रात			एका	प्र	9	51	9-23 दिन तक गण्डान्त, 5-6 प्रातः धनु में चन्द्र और मूल (B)	56	15
	13	29	13	बुध	मूला	दि	7	49	द्वाद	प्र	11	47	श्रावण द्वादशी, शोपियान यात्रा, ध्वजः।	56	14
	8	30	14	गुरु	पूषा	दि	10	12	त्रयो	प्र	1	17	4-43 दिन मकर में चन्द्र, प्राजापत्यः।	57	13
	5	31	15	शुक्र	उषा	दि	12	7	चुर्त	प्र	2	17	मासान्त, आनन्दः।	58	12
	1	भाद्र	16	शनि	श्रवण	दि	1	33	पूर्णि	प्र	2	46	2-4 रात कुम्भ में चन्द्र और पंचक आरम्भ, 5-23 शां सिंह (C)	58	11

रक्षा बन्धन 16 अगस्त

चन्द्र ग्रहण 16 अगस्त

(A) गण्डान्त, मानसम्, (B) आरम्भ, छत्रम्। (C) में सूर्य मुहर्त 30, समुद्रीय संक्रान्ति व्रत, रक्षा बन्धन, श्री अमरनाथ यात्रा, थजीवारा यात्रा, बिजविहारा, खण्ड ग्रास चन्द्र ग्रहण, स्थिरः।

मध्याह्न : प्रति का अपने दिन, द्वि से षष्ठी पहले दिन, सप्त से पूर्णि अपने दिन।

श्राद्ध : प्रति से नव पहले दिन, दश से पूर्णि अपने दिन।

भाद्र कृष्ण पक्ष
वि 2065-ई 2008

17 अगस्त की ग्रहस्थिति : सिंह में सूर्य, बुध, शुक्र, शनि। कन्या में भौम। धनु में बृहस्पति। मकर में राहु। कर्कट में केतु।

दिन	मान	भाद्र	अग	वार	नक्षत्र		वजे	मि	तिथि		वजे	मि	वर्षा ऋतु दक्षिणायन - शाका 1930	सूर्य उदय	सूर्य अस्त
32	56	2	17	रवि	धनि	दि	2	28	प्रति	प्र	2	45	मातंगः।	[illegible]	[illegible]
	48	3	18	सोम	शत	दि	2	54	द्विती	प्र	2	15	अमृतम्।	[illegible]	8
	45	4	19	भौम	पूभा	दि	2	53	तृती	प्र	1	19	8-55 दिन मीन में चन्द्र, काण्डः।	0	7
	41	5	20	बुध	उभा	दि	2	28	चतु	प्र	12	00	संकट चतुर्थी (चन्द्रोदय 8-58) आलापकः।	1	6
	36	6	21	गुरु	रेव	दि	1	44	पंच	प्र	10	23	1-44 दिन मेष में चन्द्र और पंचक समाप्त, **चन्दन षष्ठी** (चन्द्रोदय (A)	2	5
	32	7	22	शुक्र	अश्वि	दि	12	42	षष्ठी	प्र	8	31	वज्रम्।	2	4
	28	8	23	शनि	भर	दि	11	27	सप्त	दि	6	26	5-7 शां वृष में चन्द्र, **जन्माष्टमी** (चन्द्रोदय 10-47) ध्वांक्षः।	3	3
	22	9	24	रवि	कृति	दि	10	2	अष्ट	दि	4	11	3-35 रात कन्या में बुध, धौम्यः।	4	2
	18	10	25	सोम	रोहि	दि	8	30	नव	दि	1	51	7-42 शां मिथुन में चन्द्र, 10-27 रात कन्या में शुक्र, प्रवर्धः।	4	0
	13	11	26	भौम	मृग	दि	6	54	दशा	दि	11	28	क्षयः।	5	[illegible]
	10	12	27	बुध	पुर्न	प्र	3	48	एका	दि	9	7	10-10 कर्कट में चन्द्र, मुसलम्।	6	58
	6	13	28	गुरु	तिष्य	प्र	2	27	द्वाद	दि	6	51	त्र्यहः (त्रयो प्र 4-46) शूलम्।	6	57
31	58	14	29	शुक्र	आश्ले	प्र	1	21	चर्तु	प्र	2	56	1-21 रात सिंह में चन्द्र, 7-37 रात से गण्डान्त, मृत्युः।	7	56
	55	15	30	शनि	मघा	प्र	12	37	अमा	प्र	1	28	7-15 प्रातः तक गण्डान्त, कुशामावसी, काम्यः।	7	54

(A) (10-03) 7-51 प्रातः से 6-47 शां तक गण्डान्त, मैत्रम्।

मध्याह्न : प्रति से नव अपने दिन, दश से त्रयो पहले दिन, चर्तु अमा अपने दिन।

श्राद्ध : प्रति से सप्त अपने दिन, अष्ट से त्रयों पहले दिन, चर्तु अमा अपने दिन।

भाद्र शुक्ल पक्ष

वि 2065-ई 2008

31 अगस्त की ग्रहस्थिति : सिंह में सूर्य, शनि। कन्या में भौम, बुध, शुक्र। धनु में बृहस्पति। मकर में राहु। कर्कट में केतु।

दिन	मान	भाद्र	अग	वार	नक्षत्र		बजे	मि	तिथि		बजे	मि	वर्षा ऋतु दक्षिणायन - शाका 1930	सूर्य उदय	सूर्य अस्त
31	51	16	31	रवि	पूफा	प्र	12	18	प्रति	प्र	12	27	छत्रम्।	[illegible]	[illegible]
	46	17	सप्त	सोम	उफा	प्र	12	32	द्विती	प्र	11	59	6-19 प्रातः कन्या में चन्द्र, श्रीवत्सः।	9	52
	40	18	2	भौम	हस्त	प्र	1	21	तृती	प्र	12	6	हरितालिका तृत्तीया, सौम्यः।	10	50
	36	19	3	बुध	चित्र	प्र	2	47	चुत	प्र	12	51	1-59 दिन तुला में चन्द्र, विनायक चतुर्थी, कालदण्डः।	11	49
	31	20	4	गुरु	स्वाति	प्र	4	47	पंच	प्र	2	13	वराह पंचमी, स्थिरः।	11	48
	25	21	5	शुक्र	विशा	दिन रात			षष्ठी	प्र	4	6	12:38 रात वृश्चिक में चन्द्र, कुमार षष्ठी, मातंगः।	12	47
	21	22	6	शनि	विशा	दि	7	18	सप्त	दिन रात			दिन अधिक, शूलम्।	13	45
	16	23	7	रवि	अनू	दि	10	8	सप्त	दि	6	22	मृत्युः।	13	44
	10	24	8	सोम	ज्येष्ठ	दि	1	6	अष्ट	दि	8	47	1-6 दिन धनु में चन्द्र और मूल आरम्भ, 6-18 प्रातः से (A)	14	43
	6	25	9	भौम	मूला	दि	3	57	नव	दि	11	9	छत्रम्।	14	41
	2	26	10	बुध	पूषा	दि	6	30	दश	दि	1	12	1-4 रात मकर में चन्द्र, श्रीवत्सः।	15	39
30	56	27	11	गुरु	उषा	प्र	8	33	एका	दि	2	47	नारद एकादशी, गौतम नाग यात्रा, सौम्यः।	15	39
	51	28	12	शुक्र	श्रव	प्र	9	59	द्वाद	दि	3	46	धौम्यः।	16	37
	47	29	13	शनि	धनि	प्र	10	46	त्रयो	दि	4	4	10-27 दिन कुम्भ में चन्द्र और पंचक आरम्भ, वितस्ता (B)	16	36
	41	30	14	रवि	शत	प्र	10	54	चुर्त	दि	3	42	अनन्त चर्तुदशी, अनन्तनाग यात्रा, पाप हरण नाग यात्रा, क्षयः।	17	35
	36	31	15	सोम	पूभा	प्र	10	28	पूर्णि	दि	2	43	मासान्त्, पितृपक्षारम्भ, पूर्णिमा तथा अकदोह का श्राद्ध गजः।	18	33

(A)5-58 शा तक गण्डान्त, गंगाष्टमी, शारदाष्टमी, लल्लेश्वरी जयन्ती, यज्ञ स्वयमानन्द आश्रम, मुट्ठी, जम्मू, काम्यः। (B) त्रयोदशी, व्यथवोत्र यात्रा, प्रवर्धः।

मध्याह्न : प्रति से सप्त अपने दिन, अष्ट नव पहले दिन, दश से पूर्णि अपने दिन।

श्राद्ध : प्रति से सप्त अपने दिन, अष्ट से पूर्णि पहले दिन।

आश्विन कृष्ण पक्ष
वि 2065-ई 2008

16 सिप्तबर की ग्रहस्थिति : कन्या में सूर्य, भौम, बुध, शुक्र। धनु में बृहस्पति। मकर में राहु। कर्कट में केतु। सिंह में शनि।

दिन	मान	असो	सिप्त	वार	नक्षत्र		बजे	मि	तिथि		बजे	मि	शरद ऋतु दक्षिणायन - शाका 1930	सूर्य उदय	सूर्य अस्त
30	32	1	16	भौम	उभा	प्र	9	33	प्रति	दि	1	14	द्वितीया का श्राद्ध, 5-21 शां कन्या में सूर्य, मुर्हत 45, दरियाई (A)	6/18	6/32
	26	2	17	बुध	रेव	प्र	8	16	द्विती	दि	11	20	तृतीया का श्राद्ध 8-16 शां मेष में चन्द्र और पंचक समाप्त (B)	19	31
	21	3	18	गुरु	अश्वि	प्र	6	45	तृती	दि	9	8	चुत का श्राद्ध संकट चतुर्थी (चन्द्रोदय 8-13), मानसम्।	20	29
	17	4	19	शुक्र	भरण	दि	5	7	चतु	दि	6	46	पंचमी का श्राद्ध त्र्यहः (पंच प्र 4-21) 10-42 रात वृष में (C)	20	28
	11	5	20	शनि	कृत	दि	3	27	षष्ठी	प्र	1	57	षष्ठी का श्राद्ध ध्वजः।	21	26
	7	6	21	रवि	रोहि	दि	1	52	सप्त	प्र	11	40	सतम का श्राद्ध, 1-7रात मिथुन में चन्द्र, साहिब सप्तमी, (D)	21	25
	3	7	22	सोम	मृग	दि	12	25	अष्ट	प्र	9	32	अष्ट का श्राद्ध, आनन्दः।	22	24
29	56	8	23	भौम	आर्द्र	दि	11	8	नव	प्र	7	36	नवं का श्राद्ध, 4-19 रात कर्क में चन्द्र, चरः।	23	22
	52	9	24	बुध	पुर्न	दि	10	5	दश	दि	5	53	दंह तथा एकादशीका श्राद्ध मुसलम्।	23	21
	48	10	25	गुरु	तिष्य	दि	9	15	एका	दि	4	25	द्वादशी का श्राद्ध, 11-1 दिन तुला में भौम, 2-49 रात से गण्डान्त (E)	24	20
	41	11	26	शुक्र	आश्ले	दि	8	42	द्वाद	दि	3	14	त्रवाह का श्राद्ध, 8-42 दिन सिंह में चन्द्र, 2-53 दिन तक (F)	25	18
	37	12	27	शनि	मघा	दि	8	25	त्रयो	दि	2	21	चुदाह का श्राद्ध काम्यः।	25	17
	31	13	28	रवि	पूफा	दि	8	29	चर्तु	दि	1	50	अमावसी का श्राद्ध, 2-34 दिन कन्या में चन्द्र, पित्रामावसी छत्रम्।	26	16
	26	14	29	सोम	उफा	दि	8	56	अमा	दि	1	42	श्रीवत्सः।	27	14

(A) शरद ऋतु संक्रान्ति व्रत हरुद, सिद्धः। (B) 2-32 दिन से 1-34 रात तक गण्डान्त, उन्मूलम्। (C) चन्द्र, 10-15 दिन तुला में शुक्र, मुद्गरम्। (D) प्राजापत्यः। (E) शूलम्। (F) गण्डान्त मृत्युः।

मध्याह : प्रति का अपने दिन, द्वि से पंच पहले दिन, षष्ठी से अमा अपने दिन।

श्राद्ध : प्रति से पंच पहले दिन, षष्ठी से दशा अपने दिन, एका से अमा पहले दिन।

आश्विन शुक्ल पक्ष
वि 2065-ई 2008

30 सप्तम्बर की ग्रहस्थिति : कन्या में सूर्य, बुध। तुला में भौम, शुक्र। धनु में बृहस्पति। मकर में राहु। सिंह में शनि। कर्कट में केतु।

दिन	मान	असो	सिप्त	वार	नक्षत्र		बजे	मि	तिथि		बजे	मि	शरद ऋतु दक्षिणायन - शाका 1930	सूर्य उदय	सूर्य अस्त
29	22	15	30	भौम	हस्त	दि	9	49	प्रति	दि	2	2	10-26 रात तुला में चन्द्र **नवरात्रारम्भ** सौम्यः।	6/27	6/13
	18	16	अक्टू	बुध	चित्र	दि	11	11	द्विति	दि	2	53	कालदण्डः।	28	12
	11	17	2	गुरु	स्वा	दि	1	3	तृती	दि	4	14	स्थिरः।	29	10
	7	18	3	शुक्र	विशा	दि	3	23	चतु	दि	6	5	8:45 दिन वृश्चिक में चन्द्र, मातंगः।	29	9
	3	19	4	शनि	अनू	दि	6	7	पंच	प्र	8	20	अमृतमू।	30	8
28	56	20	5	रवि	ज्ये	प्र	9	6	षष्ठी	प्र	10	50	9-6 रात धनु में चन्द्र और मूल आरम्भ, 2-18 दिन से 1-53 (A)	31	6
	51	21	6	सोम	मूल	प्र	12	8	सप्त	प्र	1	22	अलापकः।	32	5
	47	22	7	भौम	पूषा	प्र	2	58	अष्ट	प्र	3	41	**दुर्गाष्टमी**, मैत्रम्।	32	4
	41	23	8	बुध	उषा	प्र	5	23	नव	प्र	5	34	9-37 दिन मकर में चन्द्र, **महानवमी**, भद्रकाली यात्रा, सरस्वती (B)	33	3
	36	24	9	गुरु	श्रव		दिन	रात	दश		दिन	रात	दिन अधिक, विजयादशमी, ध्वजः।	34	1
	32	25	10	शुक्र	श्रव	दि	7	10	दश	दि	6	47	7-48 शां कुम्भ में चन्द्र और पंचक आरम्भ, धौम्यः।	34	0
	28	26	11	शनि	धनि	दि	8	13	एका	दि	7	14	पापांकुशा एकादशी, प्रवर्धः।	35	5/59
	21	27	12	रवि	शत	दि	8	29	द्वाद	दि	6	53	त्र्यहः (त्रौ प्र 5-45) 2-10 रात मीन में चन्द्र, क्षयः।	36	58
	16	28	13	सोम	पूभा	दि	7	58	चर्तु	प्र	3	55	1 बजे रात वृश्चिक में शुक्र, गजः।	37	56
	12	29	14	भौम	उभा	दि	6	48	पूर्णि	प्र	1	32	11-30 रात से गण्डान्त, सिद्धः।	37	55

(A) रात तक गण्डान्त, कुमार षष्ठी, काण्डः। (B) विंसजन, वज्रम्।

मध्याह्न : प्रति से दश अपने दिन, एका से त्रयो पहले दिन, चर्तु, पूर्ण अपने दिन।

श्राद्ध : प्रति से चतु पहले दिन, पंच से दश अपने दिन, एका से त्रयो पहले दिन, चर्तु, पूर्ण अपने दिन।

कार्तिक कृष्ण पक्ष

वि 2065-ई 2008

15 अक्टूबर की ग्रहस्थिति : कन्या में सूर्य, बुध। तुला में भौम। वृश्चिक में शुक्र। धनु में बृहस्पति। मकर में राहु। कर्कट में केतु। सिहं में शनि।

दिन	मान	अश्वि	अक्टू	वार	नक्षत्र		बजे	मि	तिथि		बजे	मि	शरद ऋतु - दक्षिणायन - शाका 1930	सूर्य उदय	सूर्य अस्त
28	8	30	15	बुध	अश्वि	प्र	3	00	प्रति	प्र	10	46	5-5 प्रातः मेष में चन्द्र और पंचक समाप्त, 12-2 दिन तक (A)	6/38	5/54
	3	कार्ति	16	गुरु	भरण	प्र	12	43	द्विती	प्र	7	45	काम्यः।	39	53
27	58	2	17	शुक्र	कृति	प्र	10	24	तृती	दि	4	39	6-8 प्रातः वृष में चन्द्र, 5-20 प्रातः तुला में सूर्य मुर्हूत (B)	40	52
	52	3	18	शनि	रोहि	प्र	8	12	चतु	दि	1	39	श्रीवत्सः।	40	50
	48	4	19	रवि	मृग	प्र	6	15	पंच	दि	10	51	7-11 प्रातः मिथुन में चन्द्र, सौम्यः।	41	49
	43	5	20	सोम	आद्र	दि	4	39	षष्ठी	दि	8	23	त्र्यहः (सप्त प्र 6-17) कालदण्डः।	42	48
	38	6	21	भौम	पुर्न	दि	3	26	अष्ट	प्र	4	38	9-42 दिन कर्कट में चन्द्र, स्थिरः।	43	47
	30	7	22	बुध	तिष्य	दि	2	41	नव	प्र	3	26	मातंगः।	43	46
	26	8	23	गुरु	आश्ले	दि	2	21	दश	प्र	2	40	2-21 दिन सिंह में चन्द्र, 8-27 प्रातः से 7-43 शां तक (C)	44	45
	21	9	24	शुक्र	मघा	दि	2	26	एका	प्र	2	19	रमा एकादशी, काण्डः।	45	44
	16	10	25	शनि	पूफा	दि	2	54	द्वाद	प्र	2	21	9-5 रात कन्या में चन्द्र, अलापकः।	46	43
	11	11	26	रवि	उफा	दि	3	45	त्रयो	प्र	2	45	मैत्रम्।	47	42
	3	12	27	सोम	हस्त	दि	4	58	चर्तु	प्र	3	33	5-42 शां तुला में चन्द्र, वज्रम्।	48	41
26	58	13	28	भौम	चित्र	प्र	6	33	अमा	प्र	4	44	दीपावली, ध्वांक्षः।	48	40

दीपावली 28 अक्टूबर

(A) गण्डान्त, मासान्त, मृत्युः (B) 15 किनारी, संकट चतुर्थी (चन्द्रोदय 7-31) करवा चौथ, संक्राति व्रत, छत्रम्। (C) गण्डान्त, अमृतम्।

मध्याह्न : प्रति से चतु अपने दिन, पंच से सप्त पहले दिन, अष्ट से अमा अपने दिन।

श्राद्ध : प्रति से तृती अपने दिन, चतु से सप्त पहले दिन, अष्ट से अमा अपने दिन।

कार्तिक शुक्ल पक्ष
वि 2065-ई 2008

29 अक्टूबर की ग्रहस्थिति : तुला मे सूर्य, भौम। वृश्चिक में शुक्र। धनु मे बृहस्पति। मकर में राहु। कर्कट में केतु। सिंह में शनि। कन्या में बुध।

दिन	मान	क्त	अक्टू	वार	नक्षत्र		बजे	मि	तिथि		बजे	मि	शरद ऋतु दक्षिणायन - शाका 1930	सूर्य उदय	सूर्य अस्त
26	53	14	29	बुध	स्वा	प्र	8	30	प्रति	प्र	6	19	धौम्य:।	6/49	5/39
	48	15	30	गुरु	विशा	प्र	10	50	द्विती	दिन रात			दिन अधिक, 4-13 दिन वृश्चिक में चन्द्र, भाई दूज, प्रवर्ध:।	50	38
	43	16	31	शुक्र	अनू	प्र	1	32	द्विती	दि	8	17	2-47 रात तुला में बुध, क्षय:।	51	37
	38	17	नव	शनि	ज्येष्ठ	प्र	4	30	तृती	दि	10	36	4-30 रात धनु में चन्द्र और मूल आरम्भ, 9-4 रात से (A)	52	36
	35	18	2	रवि	मूला	दिन रात			चतु	दि	1	11	8-23 प्रात: तक गण्डान्त, सिद्ध:।	53	35
	31	19	3	सोम	मूला	दि	7	36	पंच	दि	3	51	अलापक:।	54	34
	31	20	4	भौम	पूषा	दि	10	41	षष्ठी	प्र	6	25	कुमार षष्टी, 5-25 शां मकर में चन्द्र, मैत्रम्।	54	33
	28	21	5	बुध	उषा	दि	1	30	सप्त	प्र	8	39	वज्रम्।	55	32
	23	22	6	गुरु	श्रव	दि	3	49	अष्ट	प्र	10	18	4-44 रात कुम्भ में चन्द्र और पंचक आरम्भ, गोपालाष्टमी (B)	56	31
	18	23	7	शुक्र	धनि	दि	5	27	नव	प्र	11	11	8-35 रात धनु में शुक्र, 2-47 रात वृश्चिक में भौम प्राजापत्य:।	57	31
	13	24	8	शनि	शत	प्र	6	16	दश	प्र	11	13	आनन्द:।	58	30
	11	25	9	रवि	पूभा	प्र	6	13	एका	प्र	10	21	12-19 दिन मीन में चन्द्र, हरिबोधिनी एकादशी, शिवस्वाप, चर:।	59	29
	11	26	10	सोम	उभा	दि	5	20	द्वाद	प्र	8	38	मुसलम्।	/0	28
	6	27	11	भौम	रेव	दि	3	42	त्रयो	प्र	6	12	3-42 दिन में मेष में चन्द्र और पंचक समाप्त, शूलम्।	1	28
	1	28	12	बुध	अश्वि	दि	1	29	चर्तु	दि	3	12	11-6 दिन से 11-33 रात तक गण्डान्त, मृत्यु:।	2	27
	0	29	13	गुरु	भरण	दि	10	51	पूर्णि	दि	11	47	4-9 दिन वृष में चन्द्र, काम्य:।	2	26

(A) गण्डान्त, गज:। (B) ध्वज:।

मध्याह्न : प्रति, द्वि अपने दिन, तृती का पहले दिन, चतु से चतुर्द अपने दिन, पूर्णि पहले दिन।

श्राद्ध : प्रति द्वि अपने दिन, तृती से पंच पहले दिन, षष्ठी से चतुर्द अपने दिन, पूर्णि पहले दिन।

मार्ग कृष्ण पक्ष

वि 2065-ई 2008

14 नवम्बर की ग्रहस्थिति : तुला में सूर्य, बुध। वृश्चिक में भौम। धनु में बृहस्पति, शुक्र। मकर में राहु। कर्कट में केतु। सिंह में शनि।

दिन	मान	क्त	नव	वार	नक्षत्र		बजे	मि	तिथि		बजे	मि	शरद ऋतु - दक्षिणायन - शाका 1930	सूर्य उदय	सूर्य अस्त
25	56	30	14	शुक्र	कृति	दि	8	00	प्रति	दि	8	11	त्र्यहः (द्विती प्र 4-33) मासान्त, छत्रम्		
	53	मार्ग	15	शनि	मृग	प्र	2	55	तृती	प्र	1	4	3-44 दिन मिथुन में चन्द्र वज्रम्।	7/3	5/26
	48	2	16	रवि	आर्द्र	प्र	12	20	चतु	प्र	9	55	5-8 प्रातः वृश्चिक में सूर्य, मुर्हूत 30, किनारी संक्रान्ति व्रत (A)	4	25
	43	3	17	सोम	पुर्न	प्र	10	7	पंच	प्र	7	13	4-33 दिन कर्कट में चन्द्र, धौम्यः।	5	25
	41	4	18	भौम	तिष्य	प्र	8	46	षष्ठी	दि	5	4	प्रवर्धः।	6	24
	38	5	19	बुध	आश्ले	प्र	8	1	सप्त	दि	3	32	8-1 रात सिह में चन्द्र, 5-46 शां वृश्चिक में बुध, 2-11 (B)	7	24
	33	6	20	गुरु	मघा	प्र	7	53	अष्ट	दि	4	39	महाकाल भैरवाष्टमी, गजः।	8	23
	31	7	21	शुक्र	पूफा	प्र	8	21	नव	दि	2	22	2-33 रात कन्या में चन्द्र, सिद्धः।	9	23
	26	8	22	शनि	उफा	प्र	9	21	दश	दि	2	39	उन्मूलम।	10	22
	26	9	23	रवि	हस्त	प्र	10	49	एका	दि	3	27	उत्पना एकादशी, मानसम्।	11	22
	23	10	24	सोम	चित्र	प्र	12	40	द्वाद	दि	4	40	11-42 दिन तुला में चन्द्र, मुद्गरम्।	12	22
	18	11	25	भौम	स्वाति	प्र	2	52	त्रयो	प्र	6	16	ध्वजः।	12	21
	16	12	26	बुध	विशा	प्र	5	22	चर्तु	प्र	8	12	10-43 रात वृश्चिक में चन्द्र, प्राजापत्यः।	13	21
	13	13	27	गुरु	अनूरा		दिन रात		अमा	प्र	10	25	आनन्दः।	14	21
														15	20

(A) संकट चतुर्थी (चन्द्रोदय 8-26) हेमन्त ऋतु ध्वांक्षः। (B) दिन से 1-43 रात तक गण्डान्त, क्षयः।

मध्याह्न : प्रति द्वि पहले दिन, तृती से अमा अपने दिन।

श्राद्ध : प्रति द्वि का पहले दिन, तृती से षष्ठी अपने दिन, सप्त से द्वा पहले दिन, त्रयो से अमा अपने दिन।

मार्ग शुक्ल पक्ष
वि 2065-ई 2008

28 नवम्बर की ग्रहस्थिति : वृश्चिक में सूर्य, बुध, भौम। धनु में बृहस्पति, शुक्र। मकर मे राहु। कर्कट में केतु। सिंह में शनि।

दिन	मान	मग	नव	वार	नक्षत्र		बजे	मि	तिथि		बजे	मि	हेमन्त ऋतु दक्षिणायन - शाका 1930	सूर्य उदय	सूर्य अस्त
25	11	14	28	शुक्र	अनू	दि	8	7	प्रति	प्र	12	52	4-21 रात से गण्डान्त, क्षयः।	7/16	5/20
	8	15	29	शनि	ज्येष्ठ	दि	11	5	द्विती	प्र	3	30	11-5 दिन धनु में चन्द्र और मूल आरम्भ, 4-30 दिन तक गण्डान्त, गजः।	17	20
	3	16	30	रवि	मूला	दि	2	11	तृती	प्र	6	12	मुसलम्।	18	20
	2	17	दिस	सोम	पूषा	दि	5	18	चतु	दिन रात			दिन अधिक, 12-4 रात मकर में चन्द्र, उन्मूलम्।	19	20
	1	18	2	भौम	उषा	प्र	8	17	चर्तु	दि	8	51	1-44 रात मकर में शुक्र, मानसम्।	19	20
24	58	19	3	बुध	श्रव	प्र	10	58	पंच	दि	11	15	कुमार षष्ठी, छत्रम्।	20	20
	56	20	4	गुरु	धनि	प्र	1	9	षष्ठी	दि	1	13	12-8 दिन कुम्भ में चन्द्र और पंचक आरम्भ, श्रीवत्सः।	21	20
	53	21	5	शुक्र	शत	प्र	2	39	सप्त	दि	2	33	सौम्यः।	22	20
	55	22	6	शनि	पूभा	प्र	3	22	अष्ट	दि	3	6	9-16 रात मीन में चन्द्र, कालदण्डः।	23	20
	51	23	7	रवि	उभा	प्र	3	13	नव	दि	2	48	स्थिरः।	24	20
	48	24	8	सोम	रेव	प्र	2	14	दश	दि	1	37	2-14 रात मेष में चन्द्र और पंचक समाप्त, 7-29 रात धनु में बुध (A)	24	20
	48	25	9	भौम	अश्वि	प्र	12	30	एका	दि	11	36	11-42 रात मकर में बृहस्पति, मोक्षदा एकादशी, गीता जयन्ती, (B)	25	20
	47	26	10	बुध	भरण	प्र	10	9	द्वाद	दि	8	54	त्र्यहः (त्रौ प्र 5-37) 3-29 रात वृष में चन्द्र, काण्डः।	26	20
	46	27	11	गुरु	कृति	प्र	7	21	चर्तु	प्र	1	58	अलापकः।	27	20
	43	28	12	शुक्र	रोहि	दि	4	18	पूर्णि	प्र	10	7	2-44 रात मिथुन में चन्द्र, दत्तात्रेय जयन्ती, मैत्रम्।	27	20

(A) 8-27 रात से गण्डान्त, मातंगः। (B) 7-59 प्रातः तक गण्डान्त, अमृतम्।

मध्याह्न : प्रति से चत तक अपने दिन, पंच का पहले दिन, षष्ठी से दश तक अपने दिन, एका से त्रयो तक पहले दिन, चर्तु, पूर्णि अपने दिन

श्राद्ध : प्रति से चतु अपने दिन, पंच से त्रयो पहले दिन, चतुर्द पूर्णि अपने दिन।

पौष कृष्ण पक्ष
वि 2065-ई 2008

13 दिसम्बर की ग्रहस्थिति : वृश्चिक में सूर्य, भौम। धनु में बुध। मकर से शुक्र, गुरु, राहु। ककर्ट में केतु, सिंह में शनि।

दिन	मान	मगर	दिस	वार	नक्षत्र		बजे	मि	तिथि		बजे	मि	हेमन्तऋतु दक्षिणायन - शाका 1930	सूर्य उदय	सूर्य अस्त
24	41	29	13	शनि	मृग	दि	1	11	प्रति	प्र	6	16	मुजंहर तहर, मातृका पूजा वज्रम्।	[illegible]	[illegible]
	42	50	14	रवि	आर्द्र	दि	10	12	द्विती	दि	2	35	2-10 रात कर्कट में चन्द्र, मासान्त, ध्वांक्षः।	29	21
	41	षौष	15	सोम	पुर्न	दि	7	32	तृती	दि	11	16	धनु में सूर्य रात 7-45, मुर्हूत 30, दरियाई, संकट चतुर्थी (A)	29	21
	40	2	16	भौम	आश्ले	प्र	3	45	चतु	दि	8	27	त्र्यहः (पंच प्र 6-16) 3-45 रात सिंह मे चन्द्र, 10-5 रात से(B)	30	22
	41	3	17	बुध	मघा	प्र	2	52	षष्ठी	प्र	4	47	10-13 दिन तक गण्डान्त, चरः।	31	22
	37	4	18	गुरु	पूफा	प्र	2	43	सप्त	प्र	4	4	मुसलम्।	31	22
	40	5	19	शुक्र	उफा	प्र	3	18	अष्ट	प्र	4	6	8-48 दिन कन्या में चन्द्र, 11-32 दिन धनु में भौम, (C)	32	23
	38	6	20	शनि	हस्त	प्र	4	33	नव	प्र	4	49	मृत्युः।	32	23
	37	7	21	रवि	चित्र	प्र	6	23	दश	प्र	6	9	5-24 शां तुला में चन्द्र, आनन्देश्वर भैरव जयन्ती, उत्तरायण, (D)	33	24
	38	8	22	सोम	स्वा		दिन	रात	एका		दिन	रात	दिन अधिक, छत्रम्।	33	24
	37	9	23	भौम	स्वा	दि	8	41	एका	दि	7	59	4-38 रात वृश्चिक में चन्द्र, सफला एकादशी, ध्वजः।	34	25
	38	10	24	बुध	विशा	दि	11	19	द्वाद	दि	10	10	प्राजापत्यः।	34	25
	40	11	25	गुरु	अनूरा	दि	2	12	त्रयो	दि	12	37	आनन्दः।	35	26
	40	12	26	शुक्र	ज्येष्ठ	दि	5	13	चर्तुद	दि	3	13	5-12 शां धनु में चन्द्र और मूल आरम्भ, 10-18 दिन (E)	35	27
	41	13	27	शनि	मूला	प्र	8	17	अमा	प्र	5	52	5-52 रात मकर में बुध, यक्षामावसी मुसलम्।	36	27

(A) (चन्द्रोदय 8-29) संक्रान्ति व्रत, धौम्यः। (B) गण्डान्त, आनन्दः। (C) महाकाली जयन्ती, शूलम्। (D) काम्यः। (E) से 10-39 रात तक गण्डान्तः चरः।

मध्याह्न : प्रति द्वि अपने दिन, तृती से पंच पहले दिन, षष्ठी से एका अपने दिन, द्वा का पहले दिन, त्रयो से अमा अपने दिन

श्राद्ध : प्रति द्वि का अपने दिन, तृती से पंच पहले दिन, षष्ठी से एका अपने दिन, द्वाद से चर्तु अपने दिन, अमा का अपने दिन।

पौष शुक्ल पक्ष
वि 2065-ई 2008-09

28 दिसम्बर की ग्रहस्थिति : धनु में सूर्य, भौम। मकर में बुध, बृहस्पति शुक्र, राहु। कर्कट में केतु। सिंह में शनि।

दिन	मान	पौष	दिस	वार	नक्षत्र		बजे	मि	तिथि		बजे	मि	हेमन्त ऋतु - उत्तरायण - शाका 1930	सूर्य उदय	सूर्य अस्त
24	40	14	28	रवि	पूषा	प्र	11	28	प्रति	प्र	8	30	शूलम्।	7/[illegible]	5/[illegible]
	42	15	29	सोम	उषा	प्र	2	14	द्विती	प्र	11	1	6-4 प्रातः मकर में चन्द्र, 6-24 प्रातः कुम्भ में शुक्र, मृत्युः।	36	28
	43	16	30	भौम	श्रव	प्र	4	54	तृती	प्र	1	17	अलापकः।	37	29
	45	17	31	बुध	धनि	प्र	7	13	चतु	प्र	3	12	6-7 शां कुम्भ में चन्द्र और पंचक आरम्भ, मैत्रम्।	37	30
	45	18	जन	गुरु	शत		दिन	रात	पंच	प्र	4	38	2009 ई0, वज्रम्।	37	30
	47	19	2	शुक्र	शत	दि	9	4	षष्ठी	प्र	5	29	4-4 रात मीन में चन्द्र, कुमार षष्ठी, सौम्यः।	37	31
	50	20	3	शनि	पूभा	दि	10	29	सप्त	प्र	5	38	कालदण्डः।	37	32
	50	21	4	रवि	उभा	दि	10	53	अष्ट	प्र	5	2	4-54 रात से गण्डान्त, स्थिरः।	38	33
	51	22	5	सोम	रेव	दि	10	44	नव	प्र	3	41	10-44 दिन मेष में चन्द्र और पंचक समाप्त, 4-15 दिन (A)	38	33
	52	23	6	भौम	अश्वि	दि	9	51	दश	प्र	1	38	अमृतम्।	38	34
	55	24	7	बुध	भरण	दि	8	18	एका	प्र	10	58	(कृति प्र 6-10) 1-49 दिन वृष में चन्द्र, पुत्रदा एका, काण्डः।	38	35
	57	25	8	गुरु	रोहि	प्र	3	36	द्वाद	प्र	7	48	उन्मूलम्।	38	36
25	0	26	9	शुक्र	मृग	प्र	12	45	त्रयो	दि	4	18	2-12 दिन मिथुन में चन्द्र, मानसम्।	38	37
	0	27	10	शनि	आर्द्र	प्र	1	47	चर्तु	दि	12	37	मुद्गरम्।	38	38
	3	28	11	रवि	पुर्न	प्र	6	54	पूर्णि	दि	8	56	त्र्यहः (प्रति प्र 5-25) 1-36 दिन कर्कट में चन्द्र, ध्वजः।	38	39

(A) तक गण्डान्त, मातंगः।

मध्याह्न : प्रति से चतुर्द तक अपने दिन, पूर्णि का पहले दिन।

श्राद्ध : प्रति से त्रयो तक अपने दिन, चतुर्द तथा पूर्णि पहले दिन।

माघ कृष्ण पक्ष
वि 2065-ई 2009

12 जनवरी की ग्रहस्थिति : धनु में सूर्य, भौम। मकर में बुध, बृहस्पति, राहु। कुम्भ में शुक्र। कर्कट में केतु। सिंह में शनि।

दिन मान	पौष	जन	वार	नक्षत्र		बजे	मि	तिथि		बजे	मि	हेमन्त ऋतु - उत्तरायण - शाका 1930	सूर्य उदय	सूर्य अस्त
25 7	29	12	सोम	तिष्य	दि	4	16	द्विती	प्र	2	13	मासान्त बृहस्पति अस्त प्राजापत्यः।	7/39	5/39
10	माघ	13	भौम	आश्ले	दि	2	2	तृती	प्र	11	31	2-2 दिन सिंह में चन्द्र, 8-30 दिन से 7-49 शां तक (A)	38	40
12	2	14	बुध	मघा	दि	12	22	चतु	प्र	9	27	संकट चतुर्थी (चन्द्रोदय 9-31) 6-25 प्रातः मकर में सूर्य (B)	38	41
15	3	15	गुरु	पूफा	दि	11	24	पंच	प्र	8	6	5-18 शां कन्या में चन्द्र, मुसलम्।	37	42
17	4	16	शुक्र	उफा	दि	11	11	षष्ठी	प्र	7	34	शूलम्।	37	43
21	5	17	शनि	हस्त	दि	11	45	सप्त	प्र	7	49	12-20 रात तुला में चन्द्र, सहिव सप्तमी, मृत्युः।	37	44
25	6	18	रवि	चित्र	दि	1	5	अष्ट	प्र	8	51	काम्यः।	37	45
27	7	19	सोम	स्वाति	दि	3	5	नव	प्र	10	33	छत्रम्।	36	46
31	8	20	भौम	विशा	दि	5	36	दश	प्र	12	45	10-56 दिन वृश्चिक में चन्द्र, श्रीवत्सः।	36	47
32	9	21	बुध	अनूरा	प्र	8	30	एका	प्र	3	16	षट् तिला एकादशी, सौम्यः।	36	48
35	10	22	गुरु	ज्येष्ठ	प्र	11	34	द्वाद	प्र	5	57	11-34 रात धनु में चन्द्र और मूल आरम्भ, 4-44 दिन से (C)	36	49
38	11	23	शुक्र	मूला	प्र	2	40	त्रयो	दिन रात			दिन अधिक, स्थिरः।	35	50
42	12	24	शनि	पूषा	प्र	5	38	त्रयो	दि	8	37	शिव चतुदर्शी, मातंगः।	34	51
48	13	25	रवि	उषा	दिन रात			चर्तु	दि	11	9	12-21 दिन मकर में चन्द्र, अमृतम्।	34	51
50	14	26	सोम	उषा	दि	8	24	अमा	दि	1	25	9-18 रात धनु में बुध वक्री, मृत्युः।	33	52

(A) गण्डान्त आनन्दः। (B) मुर्हूत 15 किनारी, शिशर संक्रान्ति व्रत, शिशर ऋतु चरः। (C) 4-19 रात तक गण्डान्त, कालदण्डः।

मध्याह्न : प्रति का पहले दिन, द्वि से त्रयो अपने दिन, चतुर्द का पहले दिन, अमा का अपने दिन।

श्राद्ध : प्रति का पहले दिन, द्वि से त्रयो अपने दिन, चर्त, अमा पहले दिन।

माघ शुक्ल पक्ष
वि 2065-ई 2009

27 जनवरी की ग्रहस्थिति : मकर में सूर्य, भौम, बृहस्पति, राहु। मीन में शुक्र। कर्कट में केतु। सिंह में शनि। धनु में वक्री बुध।

दिन	मान	माघ	जन	वार	नक्षत्र		बजे	मि	तिथि		बजे	मि	शिशर ऋतु - उत्तरायण - शाका 1930	सूर्य उदय	सूर्य अस्त
25	53	15	27	भौम	श्रवं	दि	1	52	प्रति	दि	3	21	11-58 रात कुम्भ में चन्द्र और पंचक आरम्भ, 12-1 दिन (A)	7/33	5/53
	57	16	28	बुध	धनि	दि	12	58	द्विती	दि	4	53	मैत्रम्।	32	54
26	1	17	29	गुरु	शत	दि	2	39	तृती	प्र	6	00	गौरी तृतीया, वज्रम्।	32	55
	6	18	30	शुक्र	पूभा	दि	3	53	चतु	प्र	6	38	9-37 दिन मीन में चन्द्र, त्रिपुरा चतुर्थी, ध्वांक्षः।	31	56
	10	19	31	शनि	उभा	दि	4	38	पंच	प्र	6	45	वसन्त पंचमी, धौम्यः।	31	57
	13	20	फर	रवि	रेव	दि	4	52	षष्ठी	प्र	6	20	4-52 दिन मेष में चन्द्र और पंचक समाप्त, कुमार षष्ठी, प्रवर्धः।	30	58
	18	21	2	सोम	अश्वि	दि	4	35	सप्त	दि	5	23	सूर्य सप्तमी मार्तण्ड तीर्थ यात्रा, कश्मीर, पलौडा जम्मू, क्षयः।	29	59
	22	22	3	भौम	भरण	दि	3	46	अष्ट	दि	3	54	9-29 रात वृष में चन्द्र, भीष्माष्टमी गजः।	29	6/0
	26	23	4	बुध	कृति	दि	2	28	नव	दि	1	55	सिद्धः।	28	1
	31	24	5	गुरु	रोहि	दि	12	44	दश	दि	11	29	11-44 रात मिथुन में चन्द्र, उन्मूलम।	27	2
	33	25	6	शुक्र	मृग	दि	10	39	एका	दि	8	42	त्र्यहः (द्वाद प्र 5-40) भीमसेन एकादशी मानसम्।	26	3
	38	26	7	शनि	आर्द्र	दि	8	19	त्रयो	प्र	2	30	12-30 रात कर्कट में चन्द्र, मुद्गरम्।	25	4
	48	27	8	रवि	तिष्य	प्र	3	28	चर्तुद	प्र	11	20	यक्षणी चतुदर्शी, श्रीवत्सः।	25	5
	46	28	9	सोम	आश्ले	प्र	1	13	पूर्णि	प्र	8	18	1-13 रात सिंह में चन्द्र, 7-44 प्रातः से 7-13 शां तक गण्डान्त (B)	24	6

(A) मीन में शुक्र, 2-24 रात मकर में भौम, अलापकः। (B) काव पूर्णमा, माघ पूर्णिमा, सौम्यः।

मध्याह्न : प्रति से नव अपने दिन, दश से द्वा पहले दिन, त्रयो से पूर्णि अपने दिन।

श्राद्ध : प्रति द्वि पहले दिन, तृती से सप्त अपने दिन, अष्ट से द्वाद पहले दिन, त्रयो से पूर्णि अपने दिन।

फाल्गुन कृष्ण पक्ष
वि 2065-ई 2009

10 फरवरी की ग्रहस्थिति : मकर में सूर्य, भौम, बुध, बृहस्पति, राहु। मीन में शुक्र। कर्कट में केतु। सिंह से शनि।

दिन	मान	माघ	फर	वार	नक्षत्र		बजे	मि	तिथि		बजे	मि	शिशर ऋतु - उत्तरायण - शाका 1930	सूर्य उदय	सूर्य अस्त
26	51	28	10	भौम	मघा	प्र	11	18	प्रति	दि	5	35	हुरि अकदोह, **बृहस्पति उदय** कालदण्ड:।	7/23	6/[illegible]
	56	29	11	बुध	पूफा	प्र	9	52	द्विती	दि	3	18	3-36 रात कन्या में चन्द्र, मासान्त, स्थिर:।	22	8
27	1	30	12	गुरु	उफा	प्र	9	2	तृती	दि	1	35	संकट चतुर्थी (चन्द्रोदय 9-18) 7-32 रात कुम्भ में सूर्य (A)	21	8
	6	फा	13	शुक्र	हस्त	प्र	8	55	चतु	दि	12	34	अमृतम्।	20	9
	11	2	14	शनि	चित्र	प्र	9	33	पंच	दि	12	20	9-8 दिन तुला में चन्द्र, काण्ड:।	19	10
	16	3	15	रवि	स्वा	प्र	10	58	षष्ठी	दि	12	53	अलापक:।	18	11
	21	4	16	सोम	विशा	प्र	1	4	सप्त	दि	2	12	6-29 शां वृश्चिक में चन्द्र, मैत्रम्।	17	12
	23	5	17	भौम	अनू	प्र	3	42	अष्ट	दि	4	9	**होराष्टमी** चक्रीश्वर यात्रा श्रीनगर, देवी आंगन पलोडा, मैत्रम्।	16	13
	28	6	18	बुध	ज्येष्ठ	प्र	6	41	नव	प्र	6	34	11-57 रात से गण्डान्त, ध्वांक्ष:।	15	14
	33	7	19	गुरु	मूला	**दिन**		**रात**	दश	प्र	9	13	6-41 प्रात: धनु में चन्द्र, 11-15 दिन तक गण्डान्त, धौम्य:।	14	15
	38	8	20	शुक्र	मूला	दि	9	48	एका	प्र	11	52	विजया एकादशी, स्थिर:।	13	16
	43	9	21	शनि	पूषा	दि	12	49	द्वाद	प्र	2	19	7-32 रात मकर में चन्द्र, मातंग:।	12	16
	48	10	22	रवि	उषा	दि	3	33	त्रयो	प्र	4	23	**शिवरात्रि-हेरथ,** अमृतम्।	11	17
	51	11	23	सोम	श्रव	दि	5	53	चर्तुद	प्र	5	59	शिवचर्तुदशी, सिद्ध:।	10	18
	56	12	24	भौम	धनि	प्र	7	44	अमा	प्र	7	4	डून्य-अमावसी 6-52 प्रात: कुम्भ में चन्द्र पंचक आरम्भ उन्मूलम्।	9	19

शिवरात्रि 22 फरवरी

(A) मुर्हूत 45, किनारी, संक्रान्ति व्रत, मातंग:।

मध्याह्न : प्रति से अमा अपने दिन।

श्राद्ध : प्रति से अष्ट पहले दिन, नव से अमा अपने दिन।

फाल्गुन शुक्ल पक्ष
वि 2065-ई 2009

25 फरवरी की ग्रहस्थिति : कुम्भ में सूर्य। मकर में भौम, बुध, बृहस्पति राहु। मीन में शुक्र। कर्कट में केतु। सिंह में शनि।

दिन	मान	फा	फर	वार	नक्षत्र		बजे	मि	तिथि		बजे	मि	शिशर ऋतु उत्तरायण - शाका 1930	सूर्य उदय	सूर्य अस्त
28	2	14	25	बुध	शत	प्र	9	5	प्रति	दिन रात			दिन अधिक, मानसम्।	7/8	6/20
	8	15	26	गुरु	पूभा	प्र	9	57	प्रति	दि	7	38	3-47 दिन मीन में चन्द्र, मुद्गरम्।	7	21
	13	16	27	शुक्र	उभा	प्र	10	21	द्विती	दि	7	42	ध्वजः।	5	21
	18	17	28	शनि	रेव	प्र	10	21	तृती	दि	7	19	त्र्यहः (चतु प्र 6-31) 10-21 रात मेष में चन्द्र और पंचक (A)	4	22
	21	18	मार्च	रवि	अश्वि	प्र	9	59	पंच	प्र	5	23	आनन्दः।	4	22
	26	19	2	सोम	भरण	प्र	9	18	षष्ठी	प्र	3	56	3-5 रात वृष में चन्द्र, कुमार षष्ठी, चरः।	3	23
	32	20	3	भौम	कृति	प्र	8	20	सप्त	प्र	2	12	मुसलम्।	2	24
	38	21	4	बुध	रोहि	प्र	7	8	अष्ट	प्र	12	14	3-39 रात कुम्भ में बुध, तैलाष्टमी शूलम्।	0	25
	43	22	5	गुरु	मृग	दि	5	43	नव	प्र	10	4	6-27 प्रातः मिथुन में चन्द्र, मृत्युः।	6/59	26
	46	23	6	शुक्र	आर्द्र	दि	4	7	दश	प्र	7	44	काम्यः।	58	26
	52	24	7	शनि	पुर्न	दि	2	25	एका	दि	5	18	8-51 दिन कर्कट में चन्द्र, 4-31 दिन कुम्भ मे भौम छत्रम्।	57	27
	58	25	8	रवि	तिष्य	दि	12	4	द्वाद	दि	2	49	श्रीवत्सः।	55	28
	58	26	9	सोम	आश्ले	दि	10	58	त्रयो	दि	12	23	10-58 दिन सिंह से चन्द्र, 4-25 रात से गण्डान्त, सौम्यः।	54	29
29	3	27	10	भौम	मघा	दि	9	24	चर्तु	दि	10	7	4-48 दिन तक गण्डान्त, होलिका दहन कालदण्डः।	53	29
	9	28	11	बुध	पूफा	दि	8	7	पूर्णि	दि	8	7	त्र्यहः (प्रति प्र 6-31) 1-51 दिन कन्या में चन्द्र, होली स्थिरः।	52	30

(A) समाप्त, 4-14 दिन से 3-51 रात तक गण्डान्त, प्राजापत्यः।

मध्याह्न : प्रति का अपने दिन, द्वि से चतु पहले दिन, पंच से त्रयो अपने दिन, चर्तु, पूर्णि पहले दिन।

श्राद्ध : प्रति का अपने दिन, द्वि से चतु पहले दिन, पंच से एका अपने दिन, द्वाद से पूर्णि पहले दिन।

चैत्र कृष्ण पक्ष
वि 2065-ई 2009

22 मार्च की ग्रहस्थिति : कुम्भ में सूर्य, भौम, बुध। मीन मे शुक्र। कर्कट में केतु। सिंह में शनि। मकर मे बृहस्पति, राहु।

दिन	मान	फा	मार्च	वार	नक्षत्र		वजे	मि	तिथि		वजे	मि	शिशर ऋतु उत्तरायण - शाका 1930	सूर्य उदय	सूर्य अस्त
29	12	28	12	गुरु	उफा	दि	7	13	द्विती	प्र	5	26	मातंगः।	6/50	6/31
	18	29	13	शुक्र	हस्त	दि	6	50	तृती	प्र	4	59	मासान्त, 6-52 शां तुला में चन्द्र, थाल भरुण अमृतम्।	49	32
	23	30	14	शनि	चित्र	दि	7	4	चतु	प्र	5	14	संकट चतुर्थी (चन्द्रोदय 10 वजे) 4-14 दिन मीन से सूर्य (A)	48	32
	26	चैत्र	15	रवि	स्वाति	दि	8	0	पंच	प्र	6	12	3-9 रात वृश्चिक में चन्द्र, अलापकः।	47	33
	32	2	16	सोम	विशा	दि	9	37	षष्ठी	दिन रात			दिन अधिक, मैत्रम्।	45	34
	38	3	17	भौम	अनूरा	दि	11	53	षष्ठी	दि	7	51	वज्रम्।	44	35
	43	4	18	बुध	ज्येष्ठ	दि	2	38	सप्त	दि	10	2	2-38 रात धनु में चन्द्र और मूल आरम्भ, 7-49 प्रातः (B)	43	35
	47	5	19	गुरु	मूला	दि	5	40	अष्ट	दि	12	34	स्थिरः।	41	36
	53	6	20	शुक्र	पूपा	प्र	8	44	नव	दि	3	11	3-29 रात मकर में चन्द्र, प्रवर्धः।	40	37
	52	7	21	शनि	उषा	प्र	11	36	दश	दि	5	37	क्षयः।	39	38
	55	8	22	रवि	श्रव	प्र	2	1	एका	प्र	7	40	9-34 रात मीन में बुध, मुसलम्।	37	38
30	0	8	23	सोम	धनि	प्र	3	53	द्वाद	प्र	9	7	3-2 दिन कुम्भ में चन्द्र और पंचक आरम्भ, शूलग्।	36	39
	2	10	24	भौम	शत	प्र	5	6	त्रयो	प्र	9	56	मृत्युः।	35	40
	10	11	25	बुध	पूभा	प्र	5	40	चर्तु	प्र	10	4	11-35 रात मीन में चन्द्र, शुक्रास्त, चित्र चतुदर्शी, काम्यः।	34	40
	15	12	26	गुरु	उभा	प्र	5	40	अमा	प्र	9	35	विचार नाग यात्रा, श्रीभट्ट दिवस, थाल भरुण, ध्वजः।	32	41

सोन्थ 14 मार्च

(A) मुर्हूत 15 दरियाई, संक्रान्ति व्रत, सोन्थ, वसंत ऋतु, काण्डः। (B) से 7-13 शां तक गण्डान्त, ध्वाक्षः।

मध्याह्न : प्रति का पहले दिन, द्वि से षष्ठी अपने दिन, सप्त का पहले दिन, अष्ट से अमा अपने दिन।

श्राद्ध : प्रति का पहले दिन, द्वि से षष्ठ अपने दिन, सप्त से दश पहले दिन, एका से अमा अपने दिन।

मुहूर्त प्रकरण सप्तर्षि सं 5084 विक्रमी 2065 ईस्वी 2008-09 के लिये

साथ रटुन

(यज्ञोपवीत तथा विवाह के लिये वस्त्र, मसाला अग्निवत्र, लिवुन, घरनावय मंज लागन्य, मस मुचरुन इत्यादि)

चैत्र शुक्ल पक्ष

10 अप्रैल पंचमी गुरुवार
11 अप्रैल षष्ठी शुक्रवार
9:18 दिन तक
20 अप्रैल पूर्णिमा रविवार

वैशाख कृष्ण पक्ष

21 अप्रैल प्रतिपदि सोम
23 अप्रैल तृतीया बुधवार
28 अप्रैल सप्तमी सोमवार
10-41 दिन से

आषाढ शुक्ल पक्ष

13 जुलाई एकादशी रवि
14 जुलाई द्वादशी सोम

श्रावण कृष्ण पक्ष

25 जुलाई सप्तमी शुक्र
28 जुलाई दशमी सोमवार

श्रावण शुक्ल पक्ष

6 अगस्त पंचमी बुधवार
7 अगस्त षष्ठी गुरुवार
8 अगस्त सप्तमी शुक्र
10 अगस्त नवमी रविवार
5:13 शां से
11 अगस्त दशमी सोमवार

अश्विन शुक्ल पक्ष

1 अक्टू द्वितीया बुधवार
2 अक्टू तृतीया गुरुवार
3 अक्टू चतुर्थी शुक्रवार
6:5 शां से
5 अक्टू षष्ठी रविवार
9 अक्टू दशमी गुरुवार
10 अक्टू दशमी शुक्र
7:10 प्रात: तक

कार्तिक कृष्ण पक्ष

19 अक्टू पंचम्या रविवार
20 अक्टू षष्ठी सोमवार
4-39 दिन से
26 अक्टू त्रयोदशी रविवार
3-35 दिन से

कार्तिक शुक्ल पक्ष

29 अक्टू प्रतिपदि बुधवार
30 अक्टू द्वितीया गुरुवार
31 अक्टू द्वितीया शुक्रवार
8-17 दिन तक
5 नवम्बर सप्तमी बुधवार
1-30 दिन से
6 नवम्बर अष्टमी गुरुवार
3-49 दिन तक

मार्ग कृष्ण पक्ष

17 नवम्बर पंचमी सोमवार
23 नवम्बर एकादशी रविवार
24 नवम्बर द्वादशी सोमवार

मार्ग शुक्ल पक्ष

28 नवम्बर प्रतिपदि शुक्रवार
3 दिसम्बर पंचमी बुधवार
12 दिसम्बर पूर्णिमा शुक्रवार
(15 दिसम्बर 2008 से 10 फरवरी 2009 तक पौष तथा बृहस्पति अस्त)

फाल्गुन कृष्ण पक्ष

13 फरवरी चतुर्थी शुक्रवार
12-34 दिन से
15 फरवरी षष्ठी रविवार
16 फरवरी सप्तमी सोमवार
22 फरवरी त्रयोदशी रवि
3-33 दिन से

फाल्गुन शुक्ल पक्ष

1 मार्च पंचमी रविवार
4 मार्च अष्टमी बुधवार
6 मार्च दशमी शुक्रवार
4-7 दिन से
8 मार्च द्वादशी रविवार
12-4 दिन तक

यज्ञोपवीत मुहूर्त
(मेखलि साथ) 2008 के लिये

चैत्र शुक्ल पक्ष

7 अप्रैल द्वितीया सोमवार
8-4 प्रातः से
9-58 दिन तक (वृ)
10 अप्रैल पंचमी गुरुवार
12-1 दिन से
2-25 दिन तक (क)
11 अप्रैल षष्ठी शुक्रवार
7-49 प्रातः से
9-18 दिन तक (वृ)
17 अप्रैल द्वादशी गुरुवार
7-25 प्रातः से
9-18 दिन तक (वृ)
11-33 दिन से
1-57 दिन तक (क)
18 अप्रैल त्रयोदशी शुक्रवार
7-21 प्रातः से
9-14 दिन तक (वृ)
11-29 दिन से
1-53 दिन तक (क)

वैशाख कृष्ण पक्ष

23 अप्रैल तृतीया बुधवार
7-1 प्रातः से
8-54 दिन तक (वृ)
11-10 दिन से
1-33 दिन तक (क)
(3 मई से 11 जुलाई तक शुक्रास्त)

आषाढ शुक्ल पक्ष

14 जुलाई द्वादशी सोमवार
5-47 प्रातः से
8-11 दिन तक (क)
12-49 दिन से
3-13 दिन तक (तु)
(16 जुलाई से 29 सिप्तम्बर तक यज्ञोपवीत के लिये निषेध समय)

आश्विन शुक्ल पक्ष

1 अक्टू द्वितीया बुधवार
11-11 दिन से
12-27 दिन तक (वृं)
2 अक्टू तृतीया गुरुवार
10-2 दिन से
12-23 दिन तक (वृं)
5 अक्टू षष्ठी रविवार
12-11 दिन से
2-13 दिन तक (धं)
10 अक्टू दशमी शुक्रवार
9-30 दिन से
11-51 दिन तक (वृं)

कार्तिक कृष्ण पक्ष

19 अक्टू पंचमी रविवार
8-55 दिन से
11-16 दिन तक (वृं)

कार्तिक शुक्ल पक्ष

31 अक्टू द्वितीया शुक्रवार
8-8 दिन से
10-29 दिन तक (वृं)

5 नवम्बर सप्तमी बुधवार
7-48 प्रातः से
10-9 दिन तक (वृं)

10 नवम्बर द्वादशी सोमवार
7-28 प्रातः से
9-49 दिन तक (वृं)

मार्ग कृष्ण पक्ष

17 नवम्बर पंचमी सोमवार
9-22 दिन से
11-24 दिन तक (धं)

मार्ग शुक्ल पक्ष

28 नवम्बर प्रतिपदि शुक्रवार
8-38 दिन से
10-41 दिन तक (धं)

4 दिसम्बर षष्ठी गुरुवार
8-15 दिन से
10-17 दिन तक (धं)

5 दिसम्बर सप्तमी शुक्रवार
8-11 दिन से
10-13 दिन तक (धं)

(15 दिसम्बर से 10 फरवरी 2009 तक निषेध समय)

फाल्गुन शुक्ल पक्ष

27 फरवरी द्वितीया शुक्रवार
10-38 दिन से
12-3 दिन तक (वृ)

8 मार्च द्वादशी रविवार
7-12 प्रातः से
8-31 दिन तक (मी)

16 वर्ष की आयु तक बच्चे का यज्ञोपवीत संस्कार करें

विवाह मुर्हूत

(खान्दर साथ) 2008 के लिये

चैत्र शुक्ल पक्ष

16 अप्रैल एकादशी बुधवार
7-29 प्रातः से
8-19 दिन तक (वृ)

17 अप्रैल द्वादशी गुरुवार
11-33 दिन से
1-57 दिन तक (क)
9-3 रात से
11-23 रात तक (वृं)
1-26 रात से
3-5 रात तक (म)

18 अप्रैल त्रयोदशी शुक्रवार
7-21 प्रातः से
9-14 दिन तक (वृ)
11-29 दिन से
1-53 दिन तक (क)
8-59 रात से
11-19 रात तक (वृं)
1-22 रात से
3-1 रात तक (म)

19 अप्रैल चतुदर्शी शनिवार
7-17 प्रातः से
9-10 दिन तक (वृ)
11-25 दिन से

1-49 दिन तक (क)
8-35 रात से
11-15 रात तक (वृं)
1-18 रात से
2-57 रात तक (म)
20 अप्रैल पूर्णिमा रविवार
7-13 प्रात: से
9-6 दिन तक (वृ)
11-21 दिन से
1-45 दिन तक (क)
8-51 रात से
11-11 रात तक (वृं)
1-14 रात से
2-53 रात तक (म)

वैशाख कृष्ण पक्ष

21 अप्रैल प्रतिपदि सोमवार
7-9 प्रात: से
9-2 दिन तक (वृ)
11-18 दिन से
1-41 दिन तक (क)
8-47 रात से
11-8 रात तक (वृं)
1-10 रात से
2-49 रात तक (म)
23 अप्रैल तृतीया बुधवार
7-1 प्रात: से
8-54 दिन तक (वृ)
11-10 दिन से
1-33 दिन तक (क)

28 अप्रैल सप्तमी सोमवार
7-41 प्रात: से
8-35 दिन तक (वृ)
10-50 दिन से
1-14 दिन तक (क)
3-35 दिन से
5-56 दिन तक (कं)
8-19 रात से
10-40 रात तक (वृं)
12-43 रात से
2-21 रात तक (म)

(3 मई से 11 जुलाई तक शुक्रास्त)

श्रावण कृष्ण पक्ष

23 जुलाई पंचमी बुधवार
9-57 दिन से
12-18 दिन तक (कं)
12-18 दिन से
2-41 दिन तक (तु)
2-41 दिन से
5-2 दिन तक (वृं)
11-28 रात से
12-59 रात तक (मे)
12-59 रात से
2-52 रात तक (वृ)
24 जुलाई षष्ठी गुरुवार
9-53 दिन से
12-14 दिन तक (कं)
12-14 दिन से
2-37 दिन तक (तु)
2-37 दिन से
4-58 दिन तक (वृं)
11-24 रात से
12-55 रात तक (मे)
12-55 रात से
2-54 रात तक (वृ)
28 जुलाई दशमी सोमवार
9-37 दिन से
11-58 दिन तक (क)
11-58 दिन से
2-21 दिन तक (तु)
2-21 दिन से
4-42 दिन तक (वृं)
9-49 रात से

11-8 रात तक (मी)
11-8 रात से
12-39 रात तक (मे)

श्रावण शुक्ल पक्ष

2 अगस्त प्रतिपदि शनिवार
9-29 रात से
10-48 रात तक (मी)
10-48 रात से
12-20 रात तक (मे)
12-20 रात से
2-13 रात तक (वृ)
3 अगस्त द्वितीया रविवार
9-14 दिन से
11-34 दिन तक (कं)
11-34 दिन से
1-58 दिन तक (तुं)

4 अगस्त तृतीया सोमवार
2-55 दिन से
4-19 दिन तक (वृं)
9-21 रात से
10-41 रात तक (मी)
10-41 रात से
12-12 रात तक (मे)
12-12 रात से
2-5 रात तक (वृ)
6 अगस्त पंचमी बुधवार
9-2 दिन से
11-23 दिन तक (कं)
11-23 दिन से
1-46 दिन तक (तु)
1-46 दिन से
4-7 दिन तक (वृं)
9-13 रात से

10-33 रात तक (मी)
10-33 रात से
12-4 रात तक (मे)
12-4 रात से
1-57 रात तक (वृ)
7 अगस्त षष्ठी गुरुवार
8-58 दिन से
11-19 दिन तक (कं)
1-42 दिन से
4-3 दिन तक (वृं)
9-9 रात से
10-29 रात तक (मी)
10-29 रात से
12-00 रात तक (मे)
12-00 रात से
1-53 रात तक (वृ)
8 अगस्त सप्तमी शुक्रवार

8-54 दिन से
11-15 दिन तक (कं)
1-38 दिन से
3-59 दिन तक (वृं)
10 अगस्त नवमी रविवार
8-46 दिन से
11-7 दिन तक (कं)
11-7 दिन से
1-30 दिन तक (तु)
8-58 रात से
10-17 रात तक (मी)
10-17 रात से
11-48 रात तक (मे)
14 अगस्त त्रयोदशी गुरुवार
10-51 दिन से
1-15 दिन तक (तु)

1-15 दिन से
3-35 दिन तक (वृं)
7-17 शा से
8-42 रात तक (कुं)
10-1 रात से
11-33 रात तक (मे)

(16 अगस्त से 29 सिप्तम्बर तक स्यंध पितृ पक्ष)

आश्विन शुक्ल पक्ष

1 अक्टू द्वितीया बुधवार
11-11 दिन से
12-27 दिन तक (वृं)
12-27 दिन से
2-29 दिन तक (धं)

6-53 शां से
8-24 रात तक (मे)
8-24 रात से
10-17 रात तक (वृ)
10-17 रात से
12-33 रात तक (मि)
2 अक्टू तृतीया गुरुवार
10-2 दिन से
12-23 दिन तक (वृं)
12-23 दिन से
1-3 दिन तक (धं)
3 अक्टू चतुर्थी शुक्रवार
2-21 दिन से
4-00 दिन तक (म)
8-16 रात से
10-9 रात तक (वृ)

10-9 रात से
12-25 रात तक (मि)
4 अक्टू पंचमी शनिवार
12-15 दिन से
2-17 दिन तक (धं)
2-17 दिन से
3-56 दिन तक (म)
5 अक्टू षष्ठी रविवार
8-8 रात से
10-1 रात तक (वृ)
10-1 रात से
12-17 रात तक (मि)
6 अक्टू सप्तमी सोमवार
9-46 दिन से
12-7 दिन तक (वृं)

2-9 दिन से
3-48 दिन तक (म)
6-33 शां से
8-4 रात तक (मे)
8-4 रात से
9-57 रात तक (वृ)
8 अक्टू नवमी बुधवार
9-38 दिन से
11-59 दिन तक (वृं)
11-59 दिन से
2-1 दिन तक (धं)
7-56 शां से
9-50 रात तक (वृ)
9-50 रात से
12-5 रात तक (मि)

10 अक्टू दशमी शुक्रवार
9-30 दिन से
11-51 दिन तक (वृं)
11-51 दिन से
1-54 दिन तक (धं)
7-48 शां से
9-42 रात तक (वृ)
9-42 रात से
11-57 रात तक (मि)
13 अक्टू चतुदर्शी सोमवार
9-19 दिन से
11-39 दिन तक (वृं)
11-39 दिन से
1-42 दिन तक (धं)
7-37 शां से

9-30 रात तक (वृ)
9-30 रात से
11-45 रात तक (मि)

कार्तिक कृष्ण पक्ष

18 अक्टू चतुर्थी शनिवार
8-59 दिन से
11-20 दिन तक (वृं)
11-20 दिन से
1-22 दिन तक (ध)
7-17 शां से
9-10 रात तक (वृ)
9-10 रात से
11-26 रात तक (मि)
19 अक्टू पंचमी रविवार
8-54 दिन से

11-16 दिन तक (वृं)
11-16 दिन से
1-18 दिन तक (धं)
25 अक्टू द्वादशी शनिवार
6-49 शां से
8-43 रात तक (वृ)
8-43 रात से
10-58 रात तक (मि)
26 अक्टू त्रयोदशी रविवार
8-27 दिन से
10-48 दिन तक (वृं)
10-48 दिन से
12-51 दिन तक (धं)
8-39 रात से
10-54 रात तक (मि)

27 अक्टू चतुदर्शी सोमवार
8-23 दिन से
10-44 दिन तक (वृं)
10-44 दिन से
12-47 दिन तक (धं)
6-38 शां से
8-31 रात तक (वृ)
8-31 रात से
10-46 रात तक (मि)

कार्तिक शुक्ल पक्ष

30 अक्टू द्वितीया गुरुवार
10-38 रात से
1-2 रात तक (क)

31 अक्टू द्वितीया शुक्रवार
10-29 दिन से
12-31 दिन तक (धं)
6-26 शां से
8-19 रात तक (वृ)
8-19 रात से
10-35 रात तक (मि)
2 नवम्बर चतुर्थी रविवार
10-21 दिन से
12-23 दिन तक (धं)
6-18 रात से
8-11 रात तक (वृ)
8-11 रात से
10-27 रात तक (मि)

5 नवम्बर सप्तमी बुधवार
7-48 दिन से
10-9 दिन तक (वृं)
10-9 दिन से
12-11 दिन तक (धं)
6 नवम्बर अष्टमी गुरुवार
7-5 शां से
10-11 रात तक (मि)
7 नवम्बर नवमी शुक्रवार
7-40 प्रातः से
10-1 दिन तक (वृं)
10-1 दिन से
12-1 दिन तक (धं)

9 नवम्बर एकादशी रविवार
7-44 रात से
9-59 रात तक (मि)
10 नवम्बर द्वादशी सोमवार
7-28 प्रातः से
9-49 दिन तक (वृं)
9-49 दिन से
11-52 दिन तक (धं)
7-40 रात से
9-55 रात तक (मि)

मार्ग कृष्ण पक्ष

21 नवम्बर नवमी शुक्रवार
6-57 शां से
9-12 रात तक (मि)

1-57 रात से
4-18 रात तक (कं)
22 नवम्बर दशमी शनिवार
9-2 दिन से
11-4 दिन तक (धं)
2-8 दिन से
3-28 दिन तक (मी)
6-53 रात से
9-8 रात तक (मि)
1-53 रात से
2-33 रात तक (कं)
23 नवम्बर एकादशी रवि
8-58 दिन से
11-00 दिन तक (धं)
2-5 दिन से

3-24 दिन तक (मी)
11-28 रात से
1-49 रात तक (मि)
24 नवम्बर द्वादशी सोमवार
8-54 दिन से
10-57 दिन तक (धं)
2-1 दिन से
3-20 दिन तक (मी)
6-45 शां से
9-00 रात तक (मि)
1-45 रात से
4-6 रात तक (कं)

मार्ग शुक्ल पक्ष

29 नवम्बर द्वितीया शनिवार
1-41 दिन से

3-00 दिन तक (मी)
6-25 शां से
8-40 रात तक (मि)
1-26 रात से
3-46 रात तक (कं)
30 नवम्बर तृतीया रविवार
1-37 दिन से
2-11 दिन तक (मी)
1 दिसम्बर चतुर्थी सोमवार
6-17 रात से
8-33 रात तक (मि)
1-18 रात से
3-38 रात तक (कं)
3 दिसम्बर पंचमी बुधवार
1-10 रात से

3-31 रात तक (कं)
4 दिसम्बर षष्ठी गुरुवार
8-15 दिन से
10-17 दिन तक (धं)
1-21 दिन से
2-41 दिन तक (मी)
6-5 शां से
8-21 रात तक (मि)
7 दिसम्बर नवमी रविवार
8-3 दिन से
10-5 दिन तक (धं)
1-9 दिन से
2-29 दिन तक (मी)
5-54 शां से
8-9 रात तक (मि)

8 दिसम्बर दशमी सोमवार
2-14 रात से
3-11 रात तक (कं)
3-11 रात से
5-34 रात तक (तु)
11 दिसम्बर चतुर्दशी गुरुवार
12-39 रात से
2-59 रात तक (कं)
2-59 रात से
5-23 रात तक (तु)
12 दिसम्बर पूर्णिमा शुक्रवार
7-43 प्रातः से
9-46 दिन तक (धं)
12-50 दिन से
2-9 दिन तक (मी)

12-35 रात से
2-55 रात तक (कं)

पौष कृष्ण पक्ष

13 दिसम्वर प्रतिपदि शनि
7-39 प्रात: से
9-42 दिन तक (धं)
12-46 दिन से
1-11 दिन तक (मी)
(15 दिसम्बर से 10 फरवरी 2009 तक पौह और बृहस्पति अस्त)

फाल्गुन कृष्ण पक्ष

13 फरवरी चतुर्थी शुक्र
8-42 दिन से
10-1 दिन तक (मी)
10-1 दिन से
11-33 दिन तक (मे)
11-33 दिन से
1-26 दिन तक (वृ)
10-47 रात से
1-11 रात तक (तु)
1-11 रात से
3-32 रात तक (वृं)
3-32 रात से
5-34 रात तक (धं)
14 फरवरी पंचमी शनि
8-38 दिन से
9-58 दिन तक (मी)
9-58 दिन से
11-29 दिन तक (मे)
11-29 दिन से
1-22 दिन तक (वृ)
1-22 दिन से
3-38 दिन तक (मि)
8-23 रात से
10-43 रात तक (कं)
10-43 रात से
1-7 रात तक (वृं)
1-7 रात से
3-8 रात तक (धं)
15 फरवरी षष्ठी रविवार
8-34 दिन से
9-54 दिन तक (मी)
9-54 दिन से
11-25 दिन तक (मे)
11-25 दिन से
1-18 दिन तक (वृ)
1-18 दिन से
3-34 दिन तक (मि)
8-19 रात से
10-39 रात तक (कं)
19 फरवरी दशमी गुरुवार
8-18 दिन से
9-38 दिन तक (मी)
9-38 दिन से
11-9 दिन तक (मे)
11-9 दिन से
1-3 दिन तक (वृ)
1-3 दिन से
3-18 दिन तक (मि)
8-3 रात से
10-24 रात तक (कं)
10-24 रात से
12-47 रात तक (तु)
12-47 रात से
3-8 रात तक (वृं)
20 फरवरी एकादशी शुक्र
8-14 दिन से
9-34 दिन तक (मी)
23 फरवरी चतुदर्शी सोम
7-48 शां से
10-8 रात तक (कं)
10-8 रात से
12-31 रात तक (तु)
12-31 रात से
2-52 रात तक (वृं)

फाल्गुन शुक्ल पक्ष

26 फरवरी प्रतिपदि गुरु
9-56 रात से
12-20 रात तक (तु)
12-20 रात से
2-40 रात तक (वृं)
2-40 रात से
4-43 रात तक (धं)
27 फरवरी द्वितीया शुक्र
9-6 दिन से
10-38 दिन तक (मे)
10-38 दिन से
12-31 दिन तक (वृ)
12-31 दिन से
2-46 दिन तक (मि)
9-52 रात से
12-16 रात तक (तु)
12-16 रात से
2-37 रात तक (वृं)
4 मार्च अष्टमी बुधवार
8-47 दिन से
10-18 दिन तक (मे)
12-11 दिन से
2-27 दिन तक (मि)
9-33 रात से
11-56 रात तक (तु)
11-56 रात से
2-17 रात तक (वृं)
5 मार्च नवमी गुरुवार
8-43 दिन से
10-14 दिन तक (मे)
10-14 दिन से
12-7 दिन तक (वृ)

शंकु प्रतिष्ठा

बुनियाद-मकान
(कंन-धुन)

वैशाख कृष्ण पक्ष

23 अप्रैल तृतीया बुधवार
7-1 प्रात: से
8-54 दिन तक (वृ)

श्रावण कृष्ण पक्ष

21 जुलाई तृतीया सोमवार
10-5 दिन से
12-26 दिन तक (कं)
5-10 दिन से
7-12 शां तक (धं)
23 जुलाई पंचमी बुधवार
9-57 दिन से
12-28 दिन तक (कं)
5-2 दिन से
7-4 शां तक (धं)
24 जुलाई षष्ठी गुरुवार
9-53 दिन से
12-14 दिन तक (कं)
4-58 दिन से
7-0 शां तक (धं)
25 जुलाई सप्तमी शुक्र
9-49 दिन से
12-10 दिन तक (कं)

श्रावण शुक्ल पक्ष

6 अगस्त पंचमी बुधवार
9-2 दिन से
11-23 दिन तक (कं)
4-7 दिन से
6-9 शां तक (धं)
7 अगस्त षष्ठी गुरुवार
8-58 दिन से
11-19 दिन तक (कं)
4-3 दिन से
6-5 शां तक (धं)
8 अगस्त सप्तमी शुक्र
8-58 दिन से
11-19 दिन तक (कं)

भाद्र कृष्ण पक्ष

18 अगस्त द्वितीया सोम
3-20 दिन से
5-22 दिनं तक (धं)

भाद्र शुक्ल पक्ष

1 सिप्तम्बर द्वितीया सोम
6-6 दिन से
7-31 शां तक (कुं)
4 सिप्त पंचमी गुरुवार
5-54 दिन से
7-19 शां तक (कुं)

कार्तिक कृष्ण पक्ष

18 अक्टू चतुर्थी शनिवार
3-1 दिन से
4-26 दिन तक (कुं)

कार्तिक शुक्ल पक्ष

31 अक्टू द्वितीया शुक्र
10-29 दिन से
12-31 दिन तक (धं)
5 नवम्बर सप्तमी बुधवार
10-9 दिन से
12-11 दिन तक (धं)

मार्ग शुक्ल पक्ष

3 दिसम्बर पंचमी बुधवार
8-19 दिन से
10-21 दिन तक (धं)
12 दिसम्बर पूर्णिमा शुक्र
7-43 प्रात: से
9-46 दिन तक (धं)
11-25 दिन से
12-50 दिन तक (कुं)

फाल्गुन कृष्ण पक्ष

13 फरवरी चतुर्थी शुक्र
12-34 दिन से
1-26 दिन तक (वृ)
14 फरवरी पंचमी शनि
7-19 प्रात: से
8-38 दिन तक (कुं)
8-38 दिन से
9-59 दिन तक (मी)
15 फरवरी षष्ठी रविवार
7-15 प्रात: से
8-34 दिन तक (कुं)
8-34 दिन से
9-54 दिन तक (मी)

फाल्गुन शुक्ल पक्ष

27 फरवरी द्वितीया शुक्र
7-47 प्रात: से
9-6 दिन तक (मी)
12-31 दिन से
2-46 दिन तक (मि)

प्रवेश मुहूर्त (नविस मकानस या फलैटस अचनुक साथ)

चैत्र शुक्ल पक्ष

10 अप्रैल पंचमी गुरुवार
4-47 दिन से
7-7 शां तक (कं)

वैशाख कृष्ण पक्ष

21 अप्रैल प्रतिपदि सोमवार
5-59 दिन से
6-23 शां तक (कं)
23 अप्रैल तृतीया बुधवार
3-55 दिन से
6-16 शां तक (कं)

आषाढ शुक्ल पक्ष

12 जुलाई दशमी शानिवार
10-40 दिन से
1-1 दिन तक (कं)
14 जुलाई द्वादशी सोमवार
10-33 दिन से
12-53 दिन तक (कं)

आश्विन शुक्ल पक्ष

1 अक्टू द्वितीया बुधवार
12-27 दिन से
2-29 दिन तक (ध)
2 अक्टू तृतीया गुरुवार

12-23 दिन से
2-25 दिन तक (धं)
4 अक्टू पंचमी शनिवार
12-15 दिन से
2-17 दिन तक (धं)
10 अक्टू दशमी शुक्रवार
11-51 दिन से
1-54 दिन तक (धं)
11 अक्टू एकादशी शनि
11-47 दिन से
1-50 दिन तक (धं)

कार्तिक कृष्ण पक्ष

18 अक्टू चतुर्थी शनिवार
3-1 दिन से
4-26 दिन तक (कुं)

कार्तिक शुक्ल पक्ष

31 अक्टू द्वितीया शुक्रवार
10-29 दिन से
12-31 दिन तक (धं)
2-10 दिन से
3-35 दिन तक (कुं)
5 नवम्बर सप्तमी बुधवार
10-9 दिन से
12-11 दिन तक (धं)
8 नवम्बर दशमी शनिवार
9-57 दिन से
11-59 दिन तक (धं)
3-4 दिन से
4-23 दिन तक (मी)
10 नवम्बर द्वादशी सोमवार
9-49 दिन से
11-52 दिन तक (धं)
1-30 दिन से
2-56 दिन तक (कुं)

मार्ग शुक्ल पक्ष

4 दिसम्बर षष्ठी गुरुवार
8-15 दिन से
10-17 दिन तक (धं)
1-21 दिन से
2-41 दिन तक (मी)
5 दिसम्बर सप्तमी शुक्र
8-11 दिन से
10-13 दिन तक (धं)
1-17 दिन से
2-37 दिन तक (मी)

फाल्गुन कृष्ण पक्ष

13 फरवरी चतुर्थी शुक्रवार
1-26 दिन से
3-42 दिन तक (मि)
14 फरवरी पंचमी शनिवार
7-19 प्रातः से
8-38 दिन तक (कुं)
8-38 दिन से
9-58 दिन तक (मी)

फाल्गुन शुक्ल पक्ष

27 फरवरी द्वितीया शुक्र
12-31 दिन से
2-46 दिन तक (मि)

चूढा कर्म मुहूर्त
ज़र कासय साथ

चैत्र शुक्ल पक्ष

7 अप्रैल द्वितीया सोमवार
6.33 प्रातः से
8.4 प्रातः तक (मे)
10 अप्रैल पंचमी गुरुवार
6.21 प्रातः से
7.53 प्रातः तक (मे)
18 अप्रैल त्रयोदशी शुक्र
7.21 प्रातः से
9.14 दिन तक (वृ)

वैशाख कृष्ण पक्ष

23 अप्रैल तृतीया बुधवार

7-1 प्रातः से
8-59 दिन तक (वृ)

आश्विन कृष्ण पक्ष

1 अक्टू द्वितीया बुधवार
7-42 प्रातः से
10-6 दिन तक (तु)
10-6 दिन से
12-27 दिन तक (वृं)
2 अक्टू तृतीया गुरुवार
7-38 प्रातः से
10-2 दिन तक (तु)
10-2 दिन से
12-23 दिन तक (वृं)

10 अक्टू दशमी शुक्रवार
7-7 प्रातः से
9-30 दिन तक (तु)
9-30 दिन से
11-50 दिन तक (वृं)

कार्तिक शुक्ल पक्ष

31 अक्टू द्वितीया शुक्रवार
8-8 दिन से
10-29 दिन तक (वृं)
10-29 दिन से
12-31 दिन तक (धं)
5 नवम्बर सप्तमी बुधवार
7-48 प्रातः से
10-9 दिन तक (वृं)

10-9 दिन से
12-11 दिन तक (धं)

मार्ग कृष्ण पक्ष

17 नवम्बर पंचमी सोमवार
9-22 दिन से
11-24 दिन तक (धं)

मार्ग शुक्ल पक्ष

5 दिसम्बर सप्तमी शुक्र
8-11 दिन से
10-13 दिन तक (धं)

फाल्गुन शुक्ल पक्ष

27 फरवरी द्वितीया शुक्र
7-47 प्रातः से
9-6 दिन तक (मी)

9-6 दिन से
10-38 दिन तक (मे)

जातकर्म मुहूर्त (काहनेथर)

चैत्र शुक्ल पक्ष

7 अप्रैल द्वितीया सोमवार
10 अप्रैल पंचमी गुरुवार
11 अप्रैल षष्ठी शुक्रवार
9-18 दिन तक
17 अप्रैल द्वादशी गुरुवार
18 अप्रैल त्रयोदशी शुक्र
12-39 दिन तक

वैशाख कृष्ण पक्ष

23 अप्रैल तृतीया बुधवार

आषाढ शुक्ल पक्ष

14 जुलाई द्वादशी सोमवार

श्रावण कृष्ण पक्ष

20 जुलाई द्वितीया रविवार
21 जुलाई तृतीया सोमवार
23 जुलाई पंचमी बुधवार
9-1 दिन से

श्रावण शुक्ल पक्ष

6 अगस्त पंचमी बुधवार
7 अगस्त षष्ठी गुरुवार

8 अगस्त सप्तमी शुक्रवार
12-52 दिन तक
14 अगस्त त्रयोदशी गुरु
10-12 दिन से

आश्विन शुक्ल पक्ष

1 अक्टू द्वितीया बुधवार
2 अक्टू तृतीया गुरुवार
9 अक्टू दशमी गुरुवार
10 अक्टू दशमी शुक्रवार

कार्तिक कृष्ण पक्ष

19 अक्टू पंचमी रविवार
10-51 दिन तक

कार्तिक शुक्ल पक्ष

31 अक्टू द्वितीया शुक्रवार
5 नवम्बर सप्तमी बुधवार
10 नवम्बर द्वादशी सोमवार

मार्ग कृष्ण पक्ष

17 नवम्बर पंचमी सोमवार

मार्ग शुक्ल पक्ष

3 दिसम्बर पंचमी बुधवार
4 दिसम्बर षष्ठी गुरुवार
5 दिसम्बर सप्तमी शुक्रवार
8 दिसम्बर दशमी सोमवार

फाल्गुन कृष्ण पक्ष

13 फरवरी चतुर्थी शुक्रवार
12-34 दिन से

फाल्गुन शुक्ल पक्ष

27 फरवरी द्वितीया शुक्र
1 मार्च पंचमी रविवार
8 मार्च द्वादशी रविवार

वाग्दान मुहूर्त (गण्डन साथ)

चैत्र शुक्ल पक्ष

10 अप्रैल पंचमी गुरुवार
11 अप्रैल षष्ठी शुक्रवार
9-18 दिन तक

16 अप्रैल एकादशी बुध
17 अप्रैल द्वादशी गुरुवार
18 अप्रैल त्रयोदशी शुक्र

वैशाख कृष्ण पक्ष

21 अप्रैल प्रतिपदि सोमवार
23 अप्रैल तृतीया बुधवार
25 अप्रैल पंचमी शुक्रवार
28 अप्रैल सप्त सोमवार
7-8 प्रात: तक
30 अप्रैल नवमी बुधवार
8-17 प्रात: से
12-51 तक
1 मई दशमी गुरुवार
12-44 दिन से
2 मई एकादशी शुक्रवार

आषाढ शुक्ल पक्ष

13 जुलाई एकादशी रवि
3-54 दिन से
14 जुलाई द्वादशी सोमवार
18 जुलाई पूर्णिमा शुक्रवार

श्रावण कृष्ण पक्ष

20 जुलाई द्वितीया रविवार
23 जुलाई पंचमी बुधवार
24 जुलाई षष्ठी गुरुवार
25 जुलाई सप्तगी शुक्र
8-19 प्रात: तक
27 जुलाई नवमी रविवार
8-53 दिन से
28 जुलाई दशमी सोमवार

श्रावण शुक्ल पक्ष

3 अगस्त द्वितीया रविवार
4 अगस्त तृतीया सोमवार
6 अगस्त पंचमी बुधवार
8 अगस्त सप्तमी शुक्रवार
13 अगस्त द्वादशी बुधवार
14 अगस्त त्रयोदशी गुरु

आश्विन शुक्ल पक्ष

1 अक्टू द्वितीया बुधवार
11-11 दिन से
2 अक्टू तृतीया गुरुवार
6 अक्टू सप्तमी सोमवार
9 अक्टू दशमी गुरुवार
10 अक्टू दशमी शुक्रवार

कार्तिक कृष्ण पक्ष

19 अक्टू पंचमी रविवार
23 अक्टू दशमी गुरुवार
2-21 दिन से
24 अक्टू एकादशी शुक्र
26 अक्टूबर त्रयोदशी रवि

कार्तिक शुक्ल पक्ष

29 अक्टू प्रतिपदि बुधवार
31 अक्टू द्वितीया शुक्रवार
2 नवम्बर चतुर्थी रविवार
1-11 दिन से
3 नवम्बर पंचमी सोमवार
5 नवम्बर सप्तमी बुधवार
9 नवम्बर एकादशी रवि
10 नवम्बर द्वादशी सोम
13 नवम्बर पूर्णिमा गुरुवार
10-51 दिन से

मार्ग कृष्ण पक्ष

21 नवम्बर नवमी शुक्रवार
2-22 दिन से
23 नवम्बर एकादशी रवि

मार्ग शुक्ल पक्ष

28 नवम्बर प्रतिपदि शुक्र
30 नवम्बर तृतीया रविवार
3 दिसम्बर पंचमी बुधवार
4 दिसम्बर षष्ठी गुरुवार
7 दिसम्बर नवमी रविवार
2-48 दिन से
8 दिसम्बर दशमी सोमवार
12 दिसम्बर पूर्णिमा शुक्र

फाल्गुन कृष्ण पक्ष

13 फरवरी चतुर्थी शुक्र
12-34 दिन से
15 फरवरी षष्ठी रविवार
19 फरवरी दशमी गुरुवार
20 फरवरी एकादशी शुक्र
22 फरवरी त्रयोदशी रवि

फाल्गुन शुक्ल पक्ष

26 फरवरी प्रतिपदि गुरु
27 फरवरी द्वितीया शुक्र

विद्यारम्भ मुहूर्त
(पढाई आरम्भ करने अथवा स्कूल में प्रवेश करने का मुहूर्त)

चैत्र शुक्ल पक्ष

7 अप्रैल द्वितीया सोमवार
10 अप्रैल पंचमी गुरुवार
11-8 दिन से
11 अप्रैल षष्ठी शुक्रवार
16 अप्रैल एकादशी बुधवार
8-19 प्रातः से
17 अप्रैल द्वादशी गुरुवार
9-39 दिन से तक

वैशाख कृष्ण पक्ष

23 अप्रैल तृतीया बुधवार
25 अप्रैल पंचमी शुक्रवार

आषाढ शुक्ल पक्ष

14 जुलाई द्वादशी सोमवार

100

आश्विन शुक्ल पक्ष

1 अक्टू द्वितीया बुधवार
2 अक्टू तृतीया गुरुवार
9 अक्टू दशमी गुरुवार
10 अक्टू दशमी शुक्रवार

कार्तिक कृष्ण पक्ष

19 अक्टू पंचमी रविवार
10-51 दिन तक

कार्तिक शुक्ल पक्ष

31 अक्टू द्वितीया शुक्रवार
2 नवम्बर चतुर्थी रविवार
1-11 दिन से
3 नवम्बर पंचमी सोमवार
9 नवम्बर एकादशी रवि

मार्ग कृष्ण पक्ष

17 नवम्बर पंचमी सोमवार

मार्ग शुक्ल पक्ष

30 नवम्बर तृतीया रविवार
3 दिसम्बर पंचमी बुधवार
4 दिसम्बर षष्ठी गुरुवार

फाल्गुन कृष्ण पक्ष

13 फरवरी चतुर्थी शुक्र
12-34 दिन से

फाल्गुन शुक्ल पक्ष

26 फरवरी प्रतिपदि गुरु
1 मार्च पंचमी रविवार
6 मार्च दशमी शुक्रवार
8 मार्च द्वादशी रविवार

दधि मुहूर्त

लड़की को दूध देने का मुर्हूत (दुध साथ)

चैत्र शुक्ल पक्ष

10 अप्रैल पंचमी गुरुवार
11-8 दिन से

आषाढ शुक्ल पक्ष

13 जुलाई एकादशी रवि
3-54 दिन से

श्रावण कृष्ण पक्ष

20 जुलाई द्वितीया रविवार
6-35 प्रात: तक

श्रावण शुक्ल पक्ष

5 अगस्त चुतर्थी भौमवार
3-19 दिन से
10 अगस्त नवमी रविवार
5-13 दिन से
12 अगस्त एकादशी भौम

आश्विन शुक्ल पक्ष

30 सप्तम्बर प्रतिपदि भौम
9 अक्टू दशमी गुरुवार

कार्तिक कृष्ण पक्ष

19 अक्टू पंचमी रविवार
26 अक्टू त्रयोदशी रवि
3-45 दिन से

कार्तिक शुक्ल पक्ष

2 नवम्बर चतुर्थी रविवार
1-11 दिन से

मार्ग कृष्ण पक्ष

18 नवम्बर षष्ठी भौमवार
5-4 दिन से
23 नवम्बर एकादशी रवि

मार्ग शुक्ल पक्ष

30 नवम्बर तृतीया रविवार

दिवचक्षीर मुर्हूत

चैत्र शुक्ल पक्ष

7 अप्रैल द्वितीया सोमवार

20 अप्रैल पूर्णिमा रविवार

वैशाख कृष्ण पक्ष

21 अप्रैल प्रतिपदि सोमवार

23 अप्रैल तृतीया बुधवार

आषाढ शुक्ल पक्ष

13 जुलाई एकादशी रवि

14 जुलाई द्वादशी सोमवार

श्रावण कृष्ण पक्ष

20 जुलाई द्वितीया रविवार

30 जुलाई त्रयोदशी बुध

श्रावण शुक्ल पक्ष

14 अगस्त त्रयोदशी गुरु

10-21 दिन से

आश्विन शुक्ल पक्ष

9 अक्टू दशमी गुरुवार

10 अक्टू दशमी शुक्रवार

कार्तिक कृष्ण पक्ष

20 अक्टू षष्ठी सोमवार

26 अक्टू त्रयोदशी रविवार

कार्तिक शुक्ल पक्ष

5 नवम्बर सप्तमी बुधवार

6 नवम्बर अष्टमी गुरुवार

मार्ग कृष्ण पक्ष

17 नवम्बर पंचमी सोमवार

मार्ग शुक्ल पक्ष

3 दिसम्बर पंचमी बुधवार

4 दिसम्बर षष्ठी गुरुवार

12-8 दिन तक

फाल्गुन कृष्ण पक्ष

22 फरवरी त्रयोदशी रवि

फाल्गुन शुक्ल पक्ष

6 मार्च दशमी शुक्रवार

8 मार्च द्वादशी रविवार

नया मकान, फलैट या भूमि खरीदने का मुर्हूत

चैत्र शुक्ल पक्ष

7 अप्रैल द्वितीया सोमवार

10 अप्रैल पंचमी गुरुवार

11 अप्रैल षष्ठी शुक्रवार

17 अप्रैल द्वादशी गुरुवार

9-39 दिन से

18 अप्रैल त्रयोदशी शुक्र

वैशाख कृष्ण पक्ष

23 अप्रैल तृतीया बुधवार

25 अप्रैल पंचमी शुक्रवार

श्रावण कृष्ण पक्ष

21 जुलाई तृतीया सोमवार

25 जुलाई सप्तमी शुक्र

28 जुलाई दशमी सोमवार

श्रावण शुक्ल पक्ष

6 अगस्त पंचमी बुधवार

7 अगस्त षष्ठी गुरुवार

13 अगस्त द्वादशी बुधवार

7-49 दिन तक

14 अगस्त त्रयोदशी गुरु

10-12 दिन से

आश्विन शुक्ल पक्ष

1 अक्टू द्वितीया बुधवार

6 अक्टू सप्तमी सोमवार

9 अक्टू दशमी गुरुवार

10 अक्टू दशमी शुक्रवार

6-47 प्रात: तक

कार्तिक कृष्ण पक्ष

20 अक्टू षष्ठी सोमवार
4-39 दिन से

कार्तिक शुक्ल पक्ष

31 अक्टू द्वितीया शुक्रवार
3 नवम्बर पंचमी सोमवार
5 नवम्बर सप्तमी बुधवार
10 नवम्बर द्वादशी सोमवार
5-20 दिन से

मार्ग कृष्ण पक्ष

17 नवम्बर पंचमी सोमवार
24 नवम्बर द्वादशी सोमवार

मार्ग शुक्ल पक्ष

28 नवम्बर प्रतिपदि शुक्र
3 दिसम्बर पंचमी बुधवार
4 दिसम्बर षष्ठी गुरुवार
8 दिसम्बर दशमी सोमवार

फाल्गुन कृष्ण पक्ष

19 फरवरी दशमी गुरुवार

फाल्गुन शुक्ल पक्ष

26 फरवरी प्रतिपदि गुरुवार

छत (सीमंट स्लैब) डालने का मुर्हूत

चैत्र शुक्ल पक्ष

11 अप्रैल षष्ठी शुक्रवार
9-18 दिन से
17 अप्रैल द्वादशी गुरुवार
9-39 दिन से
18 अप्रैल त्रयोदशी शुक्र
12-22 दिन तक

वैशाख कृष्ण पक्ष

28 अप्रैल सप्तमी सोमवार

श्रावण कृष्ण पक्ष

20 जुलाई द्विती रविवार
6-35 प्रात: तक
30 जुलाई त्रयोदशी बुध

श्रावण शुक्ल पक्ष

14 अगस्त त्रयोदशी गुरु
10-12 दिन से

आश्विन शुक्ल पक्ष

9 अक्टू दशमी गुरुवार
10 अक्टू दशमी शुक्रवार

कार्तिक कृष्ण पक्ष

5 नवम्बर सप्तमी बुध
6 नवम्बर अष्टमी गुरुवार
3-49 दिन तक

मार्ग कृष्ण पक्ष

17 नवमी पंचमी सोमवार

मार्ग शुक्ल पक्ष

3 दिसम्बर पंचमी बुधवार
4 दिसम्बर षष्ठी गुरुवार

फाल्गुन कृष्ण पक्ष

22 फरवरी त्रयोदशी रवि

फाल्गुन शुक्ल पक्ष

6 मार्च दशमी शुक्रवार
8 मार्च द्वादशी रविवार
12-4 दिन तक

सामूहिक यज्ञोपवीत में सम्मिलित होना धार्म शास्त्र के विरुद्ध है।

वाहन खरीदने का मुर्हूत (स्कूटर, घाडी इत्यादि अननुक साथ)

चैत्र शुक्ल पक्ष

7 अप्रैल द्वितीया सोमवार
10 अप्रैल पंचमी गुरुवार
11-8 दिन से
11 अप्रैल षष्ठी शुक्रवार
9-19 दिन तक
16 अप्रैल एकादशी बुधवार
8-19 दिन से
17 अप्रैल द्वादशी गुरुवार
18 अप्रैल त्रयोदशी शुक्र

वैशाख कृष्ण पक्ष

21 अप्रैल प्रतिपदि सोमवार
5-59 शां से
23 अप्रैल तृतीया बुधवार

आषाढ शुक्ल पक्ष

14 जुलाई द्वादशी सोमवार

श्रावण कृष्ण पक्ष

21 जुलाई तृतीया सोमवार

श्रावण शुक्ल पक्ष

4 अगस्त तृतीया सोमवार
6 अगस्त पंचमी बुधवार
7 अगस्त षष्ठी गुरुवार
8 अगस्त सप्तमी शुक्रवार
12-52 दिन तक
13 अगस्त द्वादशी बुधवार
7-49 प्रात: से
14 अगस्त त्रयोदशी गुरु

आश्विन शुक्ल पक्ष

1 अक्टू द्वितीया बुधवार
2 अक्टू तृतीया गुरुवार
10 अक्टू दशमी शुक्रवार
7-10 प्रात: से

कार्तिक शुक्ल पक्ष

31 अक्टू द्वितीया शुक्रवार
3 नवम्बर पंचमी सोमवार
7-36 प्रात: से
5 नवम्बर सप्तमी बुधवार
10 नवम्बर द्वादशी सोम

मार्ग कृष्ण पक्ष

17 नवम्बर पंचमी सोमवार

मार्ग शुक्ल पक्ष

4 दिसम्बर षष्ठी गुरुवार
8 दिसम्बर दशमी सोम

फाल्गुन कृष्ण पक्ष

13 फरवरी चतुर्थी शुक्रवार
12-34 दिन से

फाल्गुन शुक्ल पक्ष

26 फरवरी प्रतिपदि गुरु
7-38 प्रात: से
27 फरवरी द्वितीया शुक्र

नया चूल्हा जलाने का मुर्हूत

चैत्र शुक्ल पक्ष

7 अप्रैल द्वितीया सोमवार
10 अप्रैल पंचमी गुरुवार
11 अप्रैल षष्ठी शुक्रवार
9-18 दिन तक
16 अप्रैल एकादशी बुधवार
8-19 प्रात: से
17 अप्रैल द्वादशी गुरुवार

9-39 दिन तक

18 अप्रैल त्रयोदशी शुक्रवार

11-22 दिन तक

वैशाख कृष्ण पक्ष

23 अप्रैल तृतीया बुधवार

28 अप्रैल सप्तमी सोमवार

7-8 प्रात: तक

आषाढ़ शुक्ल पक्ष

14 जुलाई द्वादशी सोमवार

श्रावण कृष्ण पक्ष

25 जुलाई सप्तमी शुक्रवार

8-19 दिन से

श्रावण शुक्ल पक्ष

4 अगस्त तृतीया सोमवार

10-31 दिन तक

6 अगस्त पंचमी बुधवार

8 अगस्त सप्तमी शुक्रवार

12-52 दिन तक

11 अगस्त दशमी सोमवार

14 अगस्त त्रयोदशी गुरुवार

10-12 दिन से

आश्विन शुक्ल पक्ष

1 अक्टू द्वितीया बुधवार

11-11 दिन से

2 अक्टू तृतीया गुरुवार

9 अक्टू दशमी गुरुवार

10 अक्टू दशमी शुक्रवार

7-10 प्रात: तक

कार्तिक कृष्ण पक्ष

20 अक्टू षष्ठी सोमवार

4-39 दिन से

24 अक्टू एकादशी शुक्रवार

कार्तिक शुक्ल पक्ष

30 अक्टू द्वितीया गुरुवार

31 अक्टू तृतीया शुक्रवार

5 नवम्बर सप्तमी बुधवार

मार्ग कृष्ण पक्ष

17 नवम्बर पंचमी सोमवार

21 नवम्बर नवमी शुक्रवार

2-22 दिन से

मार्ग शुक्ल पक्ष

3 दिसम्बर पंचमी बुधवार

फाल्गुन कृष्ण पक्ष

13 फरवरी चतुर्थी शुक्रवार

12-34 दिन से

16 फरवरी सप्तमी सोमवार

फाल्गुन शुक्ल पक्ष

6 मार्च दशमी शुक्रवार

4-7 दिन से

शिशर मुर्हूत (शिशुर लागनुक साथ)

मार्ग कृष्ण पक्ष

23 नवम्बर एकादशी रवि

मार्ग शुक्ल पक्ष

28 नवम्बर प्रतिपदि शुक्र

4 दिसम्बर षष्ठी गुरुवार

7 दिसम्बर नवमी रविवार

2-48 दिन से

12 दिसम्बर पूर्णिमा शुक्र

पौष कृष्ण पक्ष

19 दिसम्बर अष्टमी शुक्रवार

21 दिसम्बर दशमी रविवार

24 दिसम्बर द्वादशी बुधवार

25 दिसम्बर त्रयोदशी गुरु

पौष शुक्ल पक्ष

4 जनवरी अष्टमी रविवार

8 जनवरी द्वादशी गुरुवार

पन्न मुर्हूत (पन्न द्युनुक साथ)

भाद्र शुक्ल पक्ष

3 सप्त चतुर्थी बुधवार

4 सप्त पंचमी गुरुवार

5 सप्त षष्ठी शुक्रवार

7 सप्त सप्तमी रविवार

13 सप्त त्रयोदशी शनिवार

10-46 दिन तक

14 सप्त चतुदर्शी रविवार

3-42 दिन तक

दीपदान मुर्हूत (तील द्युनुक साथ)

आश्विन शुक्ल पक्ष

1 अक्टू द्वितीया बुधवार

6 अक्टू सप्तमी सोमवार

14 अक्टू पूर्णिमा भौमवार

कार्तिक शुक्ल पक्ष

31 अक्टू द्वितीया शुक्रवार

3 नवम्बर पंचमी सोमवार

13 नवम्बर पूर्णिमा गुरुवार

फाल्गुन कृष्ण पक्ष

13 फरवरी चुतर्थी शुक्रवार

12-34 दिन से

फाल्गुन शुक्ल पक्ष

2 मार्च षष्ठी सोमवार

4 मार्च अष्टमी बुधवार

6 मार्च दशमी शुक्रवार

9 मार्च त्रयोदशी सोमवार

12-32 दिन तक

नया दुकान खोलना या नया काम आरम्भ करने का मुहूर्त

चैत्र शुक्ल पक्ष

7 अप्रैल द्वितीया सोमवार

10 अप्रैल पंचमी गुरुवार

17 अप्रैल द्वादशी गुरुवार

9-39 दिन से

18 अप्रैल त्रयोदशी शुक्रवार

12-39 दिन तक

वैशाख कृष्ण पक्ष

23 अप्रैल तृतीया बुधवार

25 अप्रैल पंचमी शुक्रवार

आषाढ शुक्ल पक्ष

14 जुलाई द्वादशी सोमवार

श्रावण कृष्ण पक्ष

21 जुलाई तृतीया सोमवार

25 जुलाई सप्तमी शुक्रवार

श्रावण शुक्ल पक्ष

6 अगस्त पंचमी बुधवार

7 अगस्त षष्ठी गुरुवार

13 अगस्त द्वादशी बुधवार

7-49 दिन तक

14 अगस्त त्रयोदशी गुरु

10-12 दिन से

आश्विन शुक्ल पक्ष

1 अक्टू द्वितीया बुधवार

6 अक्टू सप्तमी सोमवार

9 अक्टू.दशमी गुरुवार

10 अक्टू दशमी शुक्रवार

कार्तिक कृष्ण पक्ष

20 अक्टू षष्ठी सोमवार

4-39 दिन से

कार्तिक शुक्ल पक्ष

31 अक्टू द्वितीया शुक्रवार

3 नवम्बर पंचमी सोमवार

7-36 प्रातः तक

5 नवम्बर सप्तमी बुधवार

10 नवम्बर द्वादशी सोमवार

5-20 शां से

मार्ग कृष्ण पक्ष

17 नवम्बर पंचमी सोमवार

24 नवम्बर द्वादशी सोम

मार्ग शुक्ल पक्ष

28 नवम्बर प्रतिपदि शुक्र

8-7 दिन तक

3 दिसम्बर पंचमी बुधवार

8 दिसम्बर दशमी सोम

फाल्गुन कृष्ण पक्ष

13 फरवरी चतुर्थी शुक्र

12-34 दिन से

19 फरवरी दशमी गुरुवार

फाल्गुन शुक्ल पक्ष

26 फरवरी प्रतिपदि गुरु

6 मार्च दशमी शुक्रवार

4-7 दिन से

अन्न प्राशन मुर्हूत

चैत्र शुक्ल पक्ष

7 अप्रैल द्वितीया सोमवार

10 अप्रैल पंचमी गुरुवार

वैशाख कृष्ण पक्ष

23 अप्रैल तृतीया बुधवार

28 अप्रैल सप्तमी सोमवार

7-8 प्रातः तक

30 अप्रैल नवमी बुधवार

8-17 दिन से

1 मई दशमी गुरुवार

2 मई एकादशी शुक्रवार

श्रावण कृष्ण पक्ष

23 जुलाई पंचमी बुधवार

9-1 दिन से

25 जुलाई सप्तमी शुक्रवार

श्रावण शुक्ल पक्ष

6 अगस्त पंचमी बुधवार

8 अगस्त सप्तमी शुक्रवार

12-52 दिन तक

आश्विन शुक्ल पक्ष

1 अक्टू द्वितीया बुधवार

2 अक्टू तृतीया गुरुवार

9 अक्टू दशमी गुरुवार

10 अक्टू दशमी शुक्रवार

कार्तिक कृष्ण पक्ष

20 अक्टू षष्ठी सोमवार

4-39 दिन से

कार्तिक शुक्ल पक्ष

30 अक्टू द्वितीया गुरुवार

31 अक्टू द्वितीया शुक्रवार

5 नवम्बर सप्तमी बुधवार

मार्ग कृष्ण पक्ष

17 नवम्बर पंचमी सोमवार

मार्ग शुक्ल पक्ष

3 दिसम्बर पंचमी बुधवार

5 दिसम्बर सप्तमी शुक्र

8 दिसम्बर दशमी सोम

फाल्गुन शुक्ल पक्ष

27 फरवरी द्वितीया शुक्र

कर्ण छेदन मुर्हूत (कन चम्बनुक साथ)

चैत्र शुक्ल पक्ष

7 अप्रैल द्वितीया सोमवार

10 अप्रैल पंचमी गुरुवार

11-8 दिन से

11 अप्रैल षष्ठी शुक्रवार

9-28 दिन तक

18 अप्रैल त्रयोदशी शुक्रवार

11-22 दिन से

वैशाख कृष्ण पक्ष

23 अप्रैल तृतीया बुधवार

आषाढ शुक्ल पक्ष

14 जुलाई द्वादशी सोमवार

श्रावण कृष्ण पक्ष

21 जुलाई तृतीया सोमवार

7-50 प्रातः तक

24 जुलाई षष्ठी गुरुवार

8-54 दिन से

25 जुलाई सप्तमी शुक्रवार

1 अगस्त अमावसी शुक्र

श्रावण शुक्ल पक्ष

6 अगस्त पंचमी बुधवार

7 अगस्त षष्ठी गुरुवार

आश्विन शुक्ल पक्ष

1 अक्टू द्वितीया बुधवार

9 अक्टू दशमी गुरुवार

10 अक्टू एकादशी शुक्र

2-10 दिन तक

कार्तिक कृष्ण पक्ष

20 अक्टू षष्ठी सोमवार

4-39 दिन से

कार्तिक शुक्ल पक्ष

31 अक्टू द्वितीया शुक्रवार

5 नवम्बर सप्तमी बुधवार

1-30 दिन से

6 नवम्बर अष्टमी गुरूवार

7 नवम्बर दशमी सोमवार

5-20 दिन से

मार्ग कृष्ण पक्ष

17 नवम्बर पंचमी सोमवार

24 नवम्बर द्वादशी सोमवार

27 नवम्बर अमावसी गुरु

मार्ग शुक्ल पक्ष

28 नवम्बर प्रतिपदि शुक्र

8-7 दिन तक

3 दिसम्बर पंचमी बुधवार

4 दिसम्बर षष्ठी गुरुवार

8 दिसम्बर दशमी सोम

फाल्गुन कृष्ण पक्ष

13 फरवरी चतुर्थी शुक्र

12-34 दिन से

फाल्गुन शुक्ल पक्ष

6 मार्च दशमी शुक्रवार

4-7 दिन से

वस्त्रधारण मुर्हूत

चैत्र शुक्ल पक्ष

10 अप्रैल पंचमी गुरुवार

17 अप्रैल द्वादशी गुरुवार

9-39 दिन से

18 अप्रैल त्रयोदशी शुक्रवार
20 अप्रैल पूर्णिमा रविवार

वैशाख कृष्ण पक्ष

23 अप्रैल तृतीया बुधवार
27 अप्रैल सप्तमी रविवार
8-34 दिन से
30 अप्रैल नवमी बुधवार
8-17 दिन से
2 मई एकादशी शुक्रवार
4-47 दिन से

वैशाख शुक्ल पक्ष

7 मई द्वितीया बुधवार
9 मई पंचमी शुक्रवार
3-30 दिन से
11 मई सप्तमी रविवार
15 मई एकादशी गुरुवार
5-1 शां से
16 मई द्वादशी शुक्रवार
20 मई पूर्णिमा सोमवार

ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष

21 मई प्रतिपदि बुधवार
25 मई पंचमी रविवार
30 मई दशमी शुक्रवार
1 जून द्वादशी रविवार

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष

4 जून प्रतिपदि बुधवार
6-45 प्रात: तक
6 जून तृतीया शुक्रवार
11 जून अष्टमी बुधवार
8-53 दिन से
12 जून नवमी गुरुवार
10 बजे दिन से
15 जून द्वादशी रविवार

आषाढ कृष्ण पक्ष

26 जून सप्तमी गुरुवार

आषाढ शुक्ल पक्ष

4 जुलाई द्वितीया शुक्रवार
9 जुलाई सप्तमी बुधवार
10 जुलाई अष्टमी गुरुवार
13 जुलाई एकादशी रविवार
18 जुलाई पूर्णिमा शुक्रवार

श्रावण कृष्ण पक्ष

20 जुलाई द्वितीया रविवार
6-35 प्रात: तक
23 जुलाई पंचमी बुधवार
9-1 दिन से
24 जुलाई षष्ठी गुरुवार
25 जुलाई सप्तमी शुक्रवार

श्रावण शुक्ल पक्ष

6 अगस्त पंचमी बुधवार
7 अगस्त षष्ठी गुरुवार
8 अगस्त सप्तमी शुक्रवार
10 अगस्त नवमी रविवार
5-13 दिन से
14 अगस्त त्रयोदशी गुरु
10-12 दिन से

भाद्र कृष्ण पक्ष

17 अगस्त प्रतिपदि रविवार
21 अगस्त पंचमी गुरुवार
22 अगस्त षष्ठी शुक्रवार
24 अगस्त अष्टमी रविवार
10-2 दिन से
27 अगस्त एकादशी बुध
28 अगस्त द्वादशी गुरुवार

भाद्र शुक्ल पक्ष

4 सप्तम्बर पंचमी गुरुवार
5 सप्तम्बर षष्ठी शुक्रवार
7 सप्तम्बर सप्तमी रविवार
10 सप्तम्बर दशमी बुधवार
6-30 शां से
11 सप्तम्बर एकादशी गुरु

आश्विन कृष्ण पक्ष

17 सप्तम्बर द्वितीया बुध
18 सप्तम्बर तृतीया गुरुवार
21 सप्तम्बर सप्तमी रविवार
24 सप्तम्बर दशमी बुधवार
25 सप्तम्बर एकादशी गुरु

आश्विन शुक्ल पक्ष

1 अक्टू द्वितीया बुधवार
2 अक्टू तृतीया गुरुवार
3 अक्टू चतुर्थी शुक्रवार
6-5 शां से
10 अक्टू दशमी शुक्रवार
7-10 प्रात: से

कार्तिक कृष्ण पक्ष

26 अक्टू त्रयोदशी रविवार

कार्तिक शुक्ल पक्ष

29 अक्टू प्रतिपदि बुधवार
30 अक्टू द्वितीया गुरुवार
31 अक्टू द्वितीया शुक्रवार
5 नवम्बर सप्तमी बुधवार
6 नवम्बर अष्टमी गुरुवार
3-49 दिन से

मार्ग कृष्ण पक्ष

17 नवम्बर पंचमी सोमवार
23 नवम्बर एकादशी रवि

मार्ग शुक्ल पक्ष

28 नवम्बर प्रतिपदि शुक्र
8-7 दिन तक
4 दिसम्बर षष्ठी गुरुवार
7 दिसम्बर नवमी रविवार
2-48 दिन से
12 दिसम्बर पूर्णिमा शुक्र

पौष कृष्ण पक्ष

19 दिसम्बर अष्टमी शुक्र
21 दिसम्बर दशमी रविवार
24 दिसम्बर द्वादशी बुधवार
25 दिसम्बर त्रयोदशी गुरु

पौष शुक्ल पक्ष

4 जनवरी अष्टमी रविवार
8 जनवरी द्वादशी गुरुवार
11 जनवरी पूर्णिमा रविवार

माघ कृष्ण पक्ष

15 जनवरी पंचमी गुरुवार
11-24 दिन से
16 जनवरी षष्ठी शुक्रवार
18 जनवरी अष्टमी रविवार
21 जनवरी एकादशी बुध

माघ शुक्ल पक्ष

28 जनवरी द्वितीया बुधवार
1 फरवरी षष्ठी रविवार
5 फरवरी दशमी गुरुवार

फाल्गुन कृष्ण पक्ष

13 फरवरी चतुर्थी शुक्रवार
12-34 दिन से
15 फरवरी षष्ठी रविवार
22 फरवरी त्रयोदशी रवि

फाल्गुन शुक्ल पक्ष

27 फरवरी द्वितीया शुक्र
1 मार्च पंचमी रविवार
4 मार्च अष्टमी बुधवार
6 मार्च दशमी शुक्रवार
4-7 दिन से
8 मार्च द्वादशी रविवार
11 मार्च पूर्णिमा बुधवार
8-7 प्रात: से

चैत्र कृष्ण पक्ष

12 मार्च द्वितीया गुरुवार
13 मार्च तृतीया शुक्रवार
15 मार्च पंचमी रविवार

सर्वार्थ सिद्धि योग

(किसी खास परिरिथिति वश कोई कार्य मुहूर्त पर कर सकना सम्भव न होने पर सर्वार्थ सिद्धि योग मुहूर्त का आश्रय लेना चाहिये।)

चैत्र शुक्ल पक्ष

7 अप्रैल द्वितीया सोमवार
8 अप्रैल तृतीया भौमवार
3-54 दिन से
9 अप्रैल चतुर्थी बुधवार
10 अप्रैल पंचमी गुरुवार
13 अप्रैल अष्टमी रविवार
7-13 प्रातः से
14 अप्रैल नवमी सोमवार
7-2 प्रातः तक
15 अप्रैल दशमी भौमवार
7-25 प्रातः तक

वैशाख कृष्ण पक्ष

23 अप्रैल तृतीया बुधवार
28 अप्रैल सप्तमी सोमवार
10-41 दिन से
4 मई चतुर्दशी रविवार
7-59 प्रातः से

वैशाख शुक्ल पक्ष

6 मई प्रतिपदि भौमवार
7 मई द्वितीया बुधवार
9 मई पंचमी शुक्रवार
3-30 दिन से
11 मई सप्तमी रविवार
1-16 दिन तक

ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष

21 मई प्रतिपदि बुधवार
6-19 प्रातः तक
25 मई पंचमी रविवार
26 मई षष्ठी सोमवार
1 जून द्वादशी रविवार
3 जून अमावरी भौमवार
9-50 दिन तक

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष

4 जून प्रतिपदि बुधवार
6-45 प्रातः तक
6 जून तृतीया शुक्रवार
14 जून एकादशी शनिवार
16 जून त्रयोदशी सोमवार
9-23 दिन से

आषाढ कृष्ण पक्ष

27 जून नवमी शुक्रवार
3 जुलाई अमावसी गुरुवार

आषाढ शुक्ल पक्ष

4 जुलाई द्वितीया शुक्रवार
9-21 दिन तक
9 जूलाई सप्तमी बुधवार
6-32 प्रातः से
12 जुलाई दशमी शनिवार
14 जुलाई द्वादशी सोमवार

श्रावण कृष्ण पक्ष

19 जुलाई प्रतिपदि शनि
24 जुलाई षष्ठी गुरुवार
25 जुलाई सप्तमी शुक्र
28 जुलाई दशमी सोमवार
31 जुलाई चतुर्दशी गुरुवार

श्रावण शुक्ल पक्ष

6 अगस्त पंचमी बुधवार

भाद्र कृष्ण पक्ष

19 अगस्त तृतीया मंगलवार
2-53 दिन से
21 अगस्त पंचमी गुरुवार
22 अगस्त षष्ठी शुक्रवार

25 अगस्त नवमी सोमवार

28 अगस्त द्वादशी गुरुवार

भाद्र शुक्ल पक्ष

12 सप्तम्बर द्वादशी शुक्र

आश्विन कृष्ण पक्ष

18 सप्तम्बर तृतीया गुरुवार

20 सप्तम्बर षष्ठी शनिवार
3-27 दिन से

22 सप्तम्बर अष्टमी सोम

25 सप्तम्बर एकादशी गुरु
9-15 दिन तक

28 सितम्बर चतुदर्शी रवि
8-29 दिन से

29 सप्तम्बर अमावसी सोम

आश्विन शुक्ल पक्ष

10 अक्टू दशमी शुक्रवार

14 अक्टू पूर्णिमा भौमवार
6-48 प्रात: तक

कार्तिक कृष्ण पक्ष

18 अक्टू चुतर्दशी शनिवार

22 अक्टू नवमी बुधवार
2-41 दिन से

24 अक्टू एकादशी शुक्र
2-26 दिन से

26 अक्टू त्रयोदशी रविवार

कार्तिक शुक्ल पक्ष

2 नवम्बर चतुर्थी रविवार

11 नवम्बर त्रयोदशी भौम
3-42 दिन से

मार्ग कृष्ण पक्ष

19 नवम्बर सप्तमी बुधवार

21 नवम्बर नवमी शुक्रवार

23 नवम्बर एकादशी रवि

27 नवम्बर अमावसी गुरु

मार्ग शुक्ल पक्ष

30 नवम्बर तृतीया रविवार
2-11 दिन से

7 दिसम्बर नवमी रविवार

9 दिसम्बर एकादशी भौम

पौष कृष्ण पक्ष

24 दिसम्बर द्वादशी बुधवार
11-19 दिन से

25 दिसम्बर त्रयोदशी गुरु
2-12 दिन तक

पौष शुक्ल पक्ष

4 जनवरी अष्टमी रविवार
10-53 दिन तक

6 जनवरी दशमी भौमवार
9-51 दिन तक

7 जनवरी एकादशी बुध
8-18 दिन से

माघ कृष्ण पक्ष

21 जनवरी एकादशी बुध

25 जनवरी चतुर्दशी रवि

माघ शुक्ल पक्ष

1 फरवरी षष्ठी रविवार
4-52 दिन से

3 फरवरी अष्टमी भौम
3-46 दिन से

4 फरवरी नवमी बुधवार

8 फरवरी चतुर्दशी रवि

फाल्गुन कृष्ण पक्ष

22 फरवरी त्रयोदशी रवि

23 फरवरी चतुर्दशी सोम

फाल्गुन शुक्ल पक्ष

1 मार्च पंचमी रविवार

3 मार्च सप्तमी भौमवार

4 मार्च अष्टमी बुधवार

6 मार्च दशमी शुक्रवार
4-7 दिन से

8 मार्च द्वादशी रविवार
12-4 दिन तक

11 मार्च पूर्णिमा बुधवार

चैत्र कृष्ण पक्ष

14 मार्च चतुर्थी शनिवार
7-4 प्रातः से
16 मार्च षष्ठी सोमवार
9-39 दिन से

यात्रा मुर्हूत

चैत्र शुक्ल पक्ष

7 अप्रैल पश्चिमोतर
9 अप्रैल उत्तर विना
1-22 दिन से
10 अप्रैल पूर्व पश्चिम
11 अप्रैल पश्चिम बिना
9-18 दिन तक
16 अप्रैल उत्तर विना
8-19 दिन से
17 अप्रैल पूर्व पश्चिम
18 अप्रैल पश्चिम विना

वैशाख कृष्ण पक्ष

22 अप्रैल उत्तर विना
25 अप्रैल पश्चिम विना
26 अप्रैल पूर्व विना
27 अप्रैल पूर्वोत्तर
28 अप्रैल पूर्व विना
29 अप्रैल पूर्व दक्षिण
30 अप्रैल पूर्वि पश्चिम
1 मई पूर्व पश्चिम
2 मई पूर्वोत्तर
3 मई पश्चिमोत्तर

वैशाख शुक्ल पक्ष

7 मई उत्तर विना
8 मई पूर्व पश्चिम
6-34 प्रातः तक
9 मई पश्चिम विना
3-30 दिन से
10 मई पूर्व विना
11 मई पूर्वोत्तर
15 मई पूर्व पश्रिम
16 मई पश्चिम विना
20 मई पूर्व दक्षिण

ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष

21 मई उत्तर विना
22 मई पूर्व पश्चिम
23 मई पश्चिम विना
24 मई पूर्व विना
25 मई पूर्वोत्तर
26 मई पूर्व विना
27 मई पूर्व यात्रा
28 मई पूर्व पश्चिम
29 मई पूर्व पश्चिम
30 मई पूर्वोत्तर
31 मई पश्चिमोत्तर
1 जून पूर्वोत्तर

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष

4 जून उत्तर विना
6 जून पश्चिम विना
7 जून पूर्व विना
10 जून पूर्व दक्षिण
11 जून उत्तर विना
12 जून पूर्व पश्चिम
10 बजे दिन से
16 जून पूर्व विना
9-23 दिन से
17 जून पूर्व दक्षिण
18 जून उत्तर विना

आषाढ कृष्ण पक्ष

19 जून पूर्व पश्चिम
20 जून पश्चिम विना
21 जून पूर्व विना
23 जून पश्चिमोत्तर
24 जून पूर्व यात्रा
25 जून पूर्व पश्चिम
26 जून पूर्व पश्चिम

28 जून पूर्व विना
1 जुलाई पूर्व दक्षिण
3 जुलाई पूर्व पश्चिम
11-44 दिन से

आषाढ शुक्ल पक्ष

4 जुलाई पश्चिम विना
5 जुलाई पूर्व विना
7-25 प्रातः तक
7 जुलाई पूर्व विना
8 जुलाई पूर्व दक्षिण
9 जुलाई पूर्व पश्चिम
10 जुलाई पूर्व पश्चिम
8-9 दिन तक
13 जुलाई पूर्वोत्तर
3-54 दिन से

14 जुलाई पूर्व विना
17 जुलाई पूर्व पश्चिम
11-50 दिन से
18 जुलाई पश्चिम विना

श्रावण कृष्ण पक्ष

19 जुलाई पूर्व विना
20 जुलाई पूर्वोत्तर
21 जुलाई पश्चिमोत्तर
22 जुलाई पूर्वि यात्रा
4-2 दिन से
23 जुलाई पूर्व पश्चिम
24 जुलाई पूर्व पश्चिम
25 जुलाई पूर्वोत्तर
26 जुलाई पूर्व विना
7-16 प्रातः तक

28 जुलाई पूर्व विना
29 जुलाई पूर्व दक्षिण
31 जुलाई पूर्व पश्चिम
6-22 शां से

श्रावण शुक्ल पक्ष

3 अगस्त पूर्वोत्तर
3-13 दिन तक
4 अगस्त पूर्व विना
5 अगस्त पूर्व दक्षिण
10-3 दिन से
6 अगस्त उत्तर विना
10 अगस्त पूर्वोत्तर
5-3 दिन से
11 अगस्त पूर्व विना
12 अगस्त पूर्व दक्षिण
14 अगस्त पूर्व पश्चिम

भाद्र कृष्ण पक्ष

18 अगस्त पश्चिमोत्तर
19 अगस्त पूर्व यात्रा
21 अगस्त पूर्व पश्चिम
22 अगस्त पश्चिम विना
24 अगस्त पूर्वोत्तर
10-2 दिन से
25 अगस्त पूर्व विना
1-51 दिन से
26 अगस्त पूर्व दक्षिण
6-54 प्रातः तक
27 अगस्त उत्तर विना
28 अगस्त पूर्व पश्चिम

भाद्र शुक्ल पक्ष

31 अगस्त पूर्वोत्तर

1 सप्तम्बर पूर्व विना
2 सप्तम्बर पूर्व दक्षिण
6 सप्तम्बर पूर्व विना
7-18 दिन से
7 सप्तम्बर पूर्वोत्तर
8 सप्तम्बर पूर्व विना
9 सप्तम्बर पूर्व दक्षिण
11-9 दिन से
10 सप्तम्बर उत्तर विना
11 सप्तम्बर पूर्व पश्चिम
12 सप्तम्बर पश्चिम विना
13 सप्तम्बर पूर्वोत्तर
14 सप्तम्बर पूर्वोत्तर
3-42 दिन से

आश्विन कृष्ण पक्ष

17 सप्तम्बर पूर्व पश्चिम
18 सप्तम्बर पूर्व पश्चिम
20 सप्तम्बर पूर्व विना
3-27 दिन से
21 सप्तम्बर पूर्वोत्तर
22 सप्तम्बर पूर्व विना
24 सप्तम्बर उत्तर विना
25 सप्तम्बर पूर्व पश्चिम
28 सप्तम्बर पूर्वोत्तर
1-50 दिन से
29 सप्तम्बर पूर्व विना

आश्विन शुक्ल पक्ष

30 सप्तम्बर पूर्व दक्षिण
4 अक्टू पूर्व विना
5 अक्टू पूर्वोत्तर
6 अक्टू पूर्व विना
7 अक्टू पूर्व दक्षिण
9 अक्टू पूर्व पश्चिम
10 अक्टू पश्चिम विना
11 अक्टू पश्चिमोत्तर
14 अक्टू पूर्व यात्रा

कार्तिक कृष्ण पक्ष

18 अक्टू पूर्व विना
1-39 दिन से
19 अक्टू पूर्वोत्तर
20 अक्टू पूर्व विना
4-39 दिन से
21 अक्टू पूर्व दक्षिण
24 अक्टू पश्चिम विना
2-26 दिन से
25 अक्टू पूर्व विना
26 अक्टू पूर्वोत्तर

कार्तिक शुक्ल पक्ष

31 अक्टू पश्चिम विना
1 नवम्बर पूर्व विना
2 नवम्बर पूर्वोत्तर
1-11 दिन से
3 नवम्बर पूर्व विना
4 नवम्बर पूर्व दक्षिण
5 नवम्बर उत्तर विना
6 नवम्बर पूर्व पश्चिम
8 नवम्बर पश्चिमोत्तर
9 नवम्बर पूर्वोत्तर
10 नवम्बर पश्चिमोत्तर
11 नवम्बर पूर्व यात्रा

मार्ग कृष्ण पक्ष

17 नवम्बर पूर्व विना
18 नवम्बर पूर्व दक्षिण
21 नवम्बर पश्चिम विना
2-22 दिन से
22 नवम्बर पूर्व विना
23 नवम्बर पूर्वोत्तर
27 नवम्बर पूर्व पश्चिम

मार्ग शुक्ल पक्ष

28 नवम्बर पश्चिम विना
29 नवम्बर पूर्व विना
30 नवम्बर पूर्वोत्तर
2 दिसम्बर पूर्व दक्षिण
3 दिसम्बर उत्तर विना
4 दिसम्बर पूर्व पश्चिम
5 दिसम्बर पूर्वोत्तर
6 दिसम्बर पश्चिमोत्तर
7 दिसम्बर पूर्वोत्तर
2-48 दिन से
8 दिसम्बर पश्चिमोत्तर
9 दिसम्बर पूर्व दक्षिण
12 दिसम्बर पश्चिम विना

पौष कृष्ण पक्ष

13 दिसम्बर पूर्व विना
1-11 दिन तक
18 दिसम्बर पूर्व पश्चिम
19 दिसम्बर पश्चिमोत्तर
24 दिसम्बर उत्तर विना
25 दिसम्बर पूर्व पश्चिम
26 दिसम्बर पश्चिम विना
3-13 दिन से

27 दिसम्बर पूर्व विना

पौष शुक्ल पक्ष

28 दिसम्बर पूर्वोत्तर
29 दिसम्बर पूर्व विना
30 दिसम्बर पूर्व दक्षिण
1 जनवरी पूर्व पश्चिम
2 जनवरी पूर्वोत्तर
3 जनवरी पूर्व विना
4 जनवरी पूर्वोत्तर
6 जनवरी पूर्व दक्षिणी
9-51 दिन से
8 जनवरी पूर्व पश्चिम
9 जनवरी पश्चिम विना

माघ कृष्ण पक्ष

15 जनवरी पूर्व पश्चिम
16 जनवरी पश्चिम विना
17 जनवरी पूर्व विना
21 जनवरी उत्तर विना
22 जनवरी पूर्व पश्चिम
23 जनवरी पश्चिम विना
24 जनवरी पूर्व विना
8-37 दिन तक
25 जनवरी पूर्वोत्तर
11-9 दिन से

माघ शुक्ल पक्ष

27 जनवरी पूर्व दक्षिण
28 जनवरी पूर्व पश्चिम
29 जनवरी पूर्व पश्चिम
31 जनवरी पश्चिमोत्तर
1 फरवरी पूर्वोत्तर
2 फरवरी पूर्व विना
4 फरवरी उत्तर विना
1-55 दिन से
5 फरवरी पूर्व पश्चिम
6 फरवरी पश्चिम विना
7 फरवरी पूर्व विना
8-19 दिन से

फाल्गुन कृष्ण पक्ष

13 फरवरी पश्चिम विना
12-34 दिन से
17 फरवरी पूर्व दक्षिण
19 फरवरी पूर्व पश्चिम
20 फरवरी पश्चिम विना
21 फरवरी पूर्व विना
22 फरवरी पूर्वोत्तर
24 फरवरी पूर्व यात्रा

फाल्गुन शुक्ल पक्ष

26 फरवरी पूर्व पश्चिम
27 फरवरी पूर्वोत्तर
28 फरवरी पश्चिमोत्तर
7-19 दिन तक
1 मार्च पूर्वोत्तर
4 मार्च उत्तर विना
7 मार्च पूर्व विना
8 मार्च पूर्वोत्तर
10 मार्च पूर्व दक्षिण
10-7 दिन से
11 मार्च उत्तर विना

चैत्र कृष्ण पक्ष

12 मार्च पूर्व पश्चिम
17 मार्च पूर्व दक्षिण
18 मार्च उत्तर विना
19 मार्च पूर्व पश्चिम
12-34 दिन तक
20 मार्च पश्चिम विना
3-11 दिन से
21 मार्च पूर्व विना
22 मार्च पूर्वोत्तर
23 मार्च पश्चिमोत्तर
24 मार्च पूर्व यात्रा
26 मार्च पूर्व पश्चिम

राशि के अनुसार यज्ञोपवीत, विवाह शंकु प्रतिष्ठा तथा प्रवेश मुहूर्त 2008 के लिये

यज्ञोपवीत मुहूर्त

मेष **सिंह** **धनु**

चैत्र शुक्ल पक्ष

7 अप्रैल द्वितीया सोमवार (सू)
10 अप्रैल पंचमी गुरुवार (सू)
11 अप्रैल षष्ठी शुक्रवार (सू)
17 अप्रैल द्वादशी गुरुवार
18 अप्रैल त्रयोदशी शुक्रवार

वैशाख कृष्ण पक्ष

23 अप्रैल तृतीया बुधवार (चं)

आषाढ शुक्ल पक्ष

14 जुलाई द्वादशी सोवार (चं)

आश्विन शुक्ल पक्ष

1 अक्टूबर द्वितीया बुधवार
2 अक्टूबर तृतीया गुरुवार
5 अक्टूबर षष्ठी रविवार (चं)
10 अक्टूबर दशमी शुक्रवार

कार्तिक कृष्ण पक्ष

19 अक्टूबर पंचमी रविवार

कार्तिक शुक्ल पक्ष

31 अक्टूबर द्वितीया शुक्रवार
5 नवम्बर सप्तमी बुधवार
10 नवम्बर द्वादशी सोमवार (च)

मार्ग कृष्ण पक्ष

17 नवम्बर पंचमी सोमवार (सू)

मार्ग शुक्ल पक्ष

4 दिसम्बर षष्ठी गुरुवार (सू)
5 दिसम्बर सप्तमी शुक्रवार (सू)

फाल्गुन शुक्ल पक्ष

27 फरवरी द्वितीया शुक्रवार (चं)
8 मार्च द्वादशी रविवार (च)

वृष **कन्या** **मकर**

चैत्र शुक्ल पक्ष

10 अप्रैल पंचमी गुरुवार (गु)
11 अप्रैल षष्ठी शुक्रवार (गु)

आषाढ शुक्ल पक्ष

14 जुलाई द्वादशी सोमवार (गु)

आश्विन शुक्ल पक्ष

1 अक्टूबर द्वितीया बुधवार (गु)
2 अक्टूबर तृतीया गुरुवार (गु)
5 अक्टूबर षष्ठी रविवार (गु)
10 अक्टूबर दशमी शुक्रवार (गु)

कार्तिक कृष्ण पक्ष

19 अक्टूबर पंचमी रविवार (गु)

कार्तिक शुक्ल पक्ष

31 अक्टूबर द्वितीया शुक्रवार (गु)
5 नवम्बर सप्तमी बुधवार (गु)
10 नवम्बर द्वादशी सोमवार (गु)

मार्ग कृष्ण पक्ष

17 नवम्बर पंचमी सोमवार (गु)

मार्ग शुक्ल पक्ष

28 नवम्बर प्रति शुक्रवार (गु)
4 दिसम्बर षष्ठी गुरुवार (गु)
5 दिसम्बर सप्तमी शुक्रवार (गु)

फाल्गुन शुक्ल पक्ष

27 फरवरी द्वितीया शुक्रवार (चं)
8 मार्च द्वादशी रविवार (चं)

मिथुन तुला कुम्भ

चैत्र शुक्ल पक्ष

7 अप्रैल द्वितीया सोमवार
10 अप्रैल पंचमी गुरुवार (चं)
11 अप्रैल षष्ठी शुक्रवार
17 अप्रैल द्वादशी गुरुवार
18 अप्रैल त्रयोदशी शुक्रवार (चं)

वैशाख कृष्ण पक्ष

23 अप्रैल तृतीया बुधवार

आषाढ शुक्ल पक्ष

14 जुलाई द्वादशी सोमवार

आश्विन शुक्ल पक्ष

1 अक्टूबर द्वितीया बुधवार (सू)
2 अक्टूबर तृतीया गुरुवार (सू)
5 अक्टूबर षष्ठी रविवार (सू)

कार्तिक कृष्ण पक्ष

19 अक्टूबर पंचमी रविवार

कार्तिक शुक्ल पक्ष

31 अक्टूबर द्वितीया शुक्रवार (चं)
5 नवम्बर सप्तमी बुधवार (चं)
10 नवम्बर द्वादशी सोमवार

मार्ग कृष्ण पक्ष

17 नवम्बर पंचमी सोमवार

मार्ग शुक्ल पक्ष

28 नवम्बर प्रतिपदि शुक्रवार
4 दिसम्बर षष्ठी गुरुवार (च)
5 दिसम्बर सप्तमी शुक्रवार

फाल्गुन शुक्ल पक्ष

27 फरवरी द्वितीया शुक्रवार (गु)
8 मार्च द्वादशी रविवार (गु)

कर्कट वृश्चिक मीन

चैत्र शुक्ल पक्ष

7 अप्रैल द्वितीया सोमवार
10 अप्रैल पंचमी गुरुवार
11 अप्रैल षष्ठी शुक्रवार (चं)
17 अप्रैल द्वादशी गुरुवार
18 अप्रैल त्रयोदशी शुक्रवार

वैशाख कृष्ण पक्ष

23 अप्रैल तृतीया बुधवार

आषाढ शुक्ल पक्ष

14 जुलाई द्वादशी सोमवार (सू)

आश्विन शुक्ल पक्ष

1 अक्टूबर द्वितीया बुधवार (चं)
2 अक्टूबर तृतीया गुरुवार (चं)
5 अक्टूबर षष्ठी रविवार
10 अक्टूबर दशमी शुक्रवार

कार्तिक शुक्ल पक्ष

31 अक्टूबर द्वितीया शुक्रवार (सू)
5 नवम्बर सप्तमी बुधवार (सू)
10 नवम्बर द्वादशी सोमवार (सू)

मार्ग कृष्ण पक्ष

17 नवम्बर पंचमी सोमवार (चं)

मार्ग शुक्ल पक्ष

28 नवम्बर प्रतिपदि शुक्रवार
4 दिसम्बर षष्ठी गुरुवार (चं)
5 दिसम्बर सप्तमी शुक्रवार (चं)

फाल्गुन शुक्ल पक्ष

27 फरवरी द्वितीया शुक्रवार (सू)
8 मार्च द्वादशी रविवार (सू)

राशि के अनुसार विवाह मुर्हूत

मेष **सिंह** **धनु**

चैत्र शुक्ल पक्ष

16 अप्रैल एकादशी बुधवार
17 अप्रैल द्वादशी गुरुवार
18 अप्रैल त्रयोदशी शुक्रवार
19 अप्रैल चतुर्दशी शनिवार
20 अप्रैल पूर्णिमा रविवार

वैशाख कृष्ण पक्ष

21 अप्रैल प्रतिपदि सोमवार
23 अप्रैल तृतीया बुधवार (चं)

श्रावण कृष्ण पक्ष

28 जुलाई दशमी सोमवार (सू)

श्रावण शुक्ल पक्ष

2 अगस्त प्रतिपदि शनिवार (सू)
3 अगस्त द्वितीया रविवार (सू)
4 अगस्त तृतीया सोमवार (सू)
6 अगस्त पंचमी बुधवार (सू)
7 अगस्त षष्ठी गुरुवार (सू)
8 अगस्त सप्तमी शुक्रवार (सू)
14 अगस्त त्रयोदशी गुरुवार (सू)

आश्विन शुक्ल पक्ष

1 अक्टूबर द्वितीया बुधवार
2 अक्टूबर तृतीया गुरुवार
3 अक्टूबर चर्तुथी शुक्रवार (चं)
4 अक्टूबर पंचमी शनिवार (चं)

5 अक्टूबर षष्ठी रविवार
6 अक्टूबर सप्तमी सोमवार
8 अक्टूबर अष्टमी बुधवार
10 अक्टूबर दशमी शुक्रवार
13 अक्टूबर चर्तुदशी सोमवार(चं)

कार्तिक कृष्ण पक्ष

18 अक्टूबर चर्तुथी शनिवार
19 अक्टूबर पंचमी रविवार
25 अक्टूबर द्वादशी शनिवार
26 अक्टूबर त्रयोदशी रविवार
27 अक्टूबर चतुर्दशी सोमवार

कार्तिक शुक्ल पक्ष

30 अक्टूबर द्वितीया गुरुवार (चं)
31 अक्टूबर द्वितीया शुक्रवार

2 नवम्बर चर्तुथी रविवार
5 नवम्बर सप्तमी बुधवार
9 नवम्बर एकादशी रविवार (चं)
10 नवम्बर द्वादशी सोमवार (चं)

मार्ग कृष्ण पक्ष

21 नवंबर नवमी शुक्रवार (सू)
22 नवंबर दशमी शनिवार (सू)
23 नवंबर एकादशी रविवार (सू)
24 नवम्बर द्वादशी सोमवार (सू)

मार्ग शुक्ल पक्ष

29 नवम्बर द्वितीय शनिवार (सू)
30 नवम्बर तृतीया रविवार (सू)
1 दिसम्बर चतुर्थी सोमवार (सू)
3 दिसम्बर पंचमी बुधवार (सू)

4 दिसम्बर षष्ठी गुरुवार (सू)
11 दिसम्बर चतुदर्शी गुरुवार
12 दिसम्बर पूर्णिमा शुक्रवार

पौष कृष्ण पक्ष

13 दिसम्बर प्रतिपदि शनिवार

फाल्गुन कृष्ण पक्ष

13 फरवरी चतुर्थी शुक्रवार
14 फरवरी पंचमी शनिवार
15 फरवरी षष्ठी रविवार
16 फरवरी सप्तमी सोमवार (चं)
19 फरवरी दशमी गुरुवार
20 फरवरी एकादशी शुक्रवार
23 फरवरी चुतदर्शी सोमवार

फाल्गुन शुक्ल पक्ष

26 फरवरी प्रतिपदि गुरुवार (चं)
27 फरवरी द्वितीया शुक्रवार (चं)
4 मार्च अष्टमी बुधवार
5 मार्च नवमी गुरुवार

वृष **कन्या** **मकर**

श्रावण कृष्ण पक्ष

23 जुलाई पंचमी बुधवार (गु)
24 जुलाई षष्ठी गुरुवार (गु)
28 जुलाई दशमी सोमवार (गु)

श्रावण शुक्ल पक्ष

4 अगस्त तृतीया सोमवार (गु)
6 अगस्त पंचमी बुधवार (गु)

7 अगस्त षष्ठी गुरुवार (गु)
8 अगस्त सप्तमी शुक्रवार (गु)
10 अगस्त नवमी रविवार (गु)
14 अगस्त त्रयोदशी गुरुवार (गु)

आश्विन शुक्ल पक्ष

1 अक्टूबर द्वितीया बुधवार (गु)
2 अक्टूबर तृतीया गुरुवार (गु)
3 अक्टूबर चतुर्थी शुक्रवार (गु)
4 अक्टूबर पंचमी शनिवार (गु)
8 अक्टूबर अष्टमी बुधवार (गु)
10 अक्टूबर दशमी शुक्रवार (गु)
13 अक्टूबर चतुर्दशी सोमवार(गु)

कार्तिक कृष्ण पक्ष

18 अक्टूबर चतुर्थी शनिवार (गु)
19 अक्टूबर पंचमी रविवार (गु)
25 अक्टूबर द्वादशी शनिवार (गु)
26 अक्टूबर त्रयोदशी रविवार(गु)
27 अक्टूबर चतुर्दशी सोमवार(गु)

कार्तिक शुक्ल पक्ष

30 अक्टूबर द्वितीया गुरुवार (गु)
31 अक्टूबर द्वितीया शुक्रवार (गु)
5 नवम्बर सप्तमी बुधवार (गु)
6 नवम्बर अष्टमी गुरुवार (गु)
7 नवम्बर नवमी शुक्रवार (गु)
9 नवम्बर एकादशी रविवार (गु)
10 नवम्बर द्वादशी सोमवार (गु)

मार्ग कृष्ण पक्ष

21 नवम्बर नवमी शुक्रवार (गु)
22 नवम्बर दशमी शनिवार (गु)
23 नवम्बर एकादशी रविवार (गु)
24 नवम्बर द्वादशी सोमवार (गु)

मार्ग शुक्ल पक्ष

1 दिसम्बर चतुर्थी सोमवार (गु)
3 दिसम्बर पंचमी बुधवार (गु)
4 दिसम्बर षष्ठी गुरुवार (गु)
7 दिसम्बर नवमी रविवार (गु)
11 दिसम्बर चुतदर्शी गुरुवार (गु)
12 दिसम्बर पूर्णिमा शुक्रवार (गु)

पौष कृष्ण पक्ष

13 दिसम्बर प्रतिपदि शनिवार

फाल्गुन कृष्ण पक्ष

13 फरवरी चुतर्थी शुक्रवार
14 फरवरी पंचमी शनिवार
15 फरवरी षष्ठी रविवार
19 फरवरी दशमी गुरुवार (चं)
20 फरवरी एकादशी शुक्रवार(चं)

फाल्गुन शुक्ल पक्ष

26 फरवरी प्रतिपदि गुरुवार
27 फरवरी द्वितीया शुक्रवार
4 मार्च अष्टमी बुधवार
5 मार्च नवमी गुरुवार

मिथुन तुला कुम्भ

चैत्र शुक्ल पक्ष

16 अप्रैल एकादशी बुधवार
17 अप्रैल द्वादशी गुरुवार
18 अप्रैल त्रयोदशी शुक्रवार (चं)
19 अप्रैल चर्तुदशी शनिवार
20 अप्रैल पूर्णिमा रविवार

वैशाख कृष्ण पक्ष

21 अप्रैल प्रतिपदि सोमवार
23 अप्रैल तृतीया बुधवार

श्रावण कृष्ण पक्ष

23 जुलाई पंचमी बुधवार
24 जुलाई षष्ठी गुरुवार
28 जुलाई दशमी सोमवार (चं)

श्रावण शुक्ल पक्ष

2 अगस्त प्रतिपदि शनिवार
3 अगस्त द्वितीया रविवार
4 अगस्त तृतीया सोमवार (चं)
6 अगस्त पंचमी बुधवार (चं)
7 अगस्त षष्ठी गुरुवार
8 अगस्त सप्तमी शुक्रवार
10 अगस्त नवमी रविवार
14 अगस्त त्रयोदशी गुरुवार (चं)

आश्विन शुक्ल पक्ष

1 अक्टूबर द्वितीया बुधवार (सू)
2 अक्टूबर तृतीया गुरुवार (सू)
3 अक्टूबर चुर्तथी शुक्रवार (सू)
4 अक्टूबर पंचमी शनिवार (सू)
5 अक्टूबर षष्ठी रविवार (सू)
6 अक्टूबर सप्तमी सोमवार (सू)
10 अक्टूबर दशमी शुक्रवार (सू)
13 अक्टूबर चतुर्दशी सोमवार(सू)

कार्तिक कृष्ण पक्ष

18 अक्टूबर चर्तुथी शनिवार (चं)
19 अक्टूबर पंचमी रविवार
25 अक्टूबर द्वादशी शनिवार (चं)
26 अक्टूबर त्रयोदशी रविवार(चं)
27 अक्टूबर चतुदर्शी सोमवार(चं)

कार्तिक शुक्ल पक्ष

30 अक्टूबर द्वितीया गुरुवार
31 अक्टूबर द्वितीया शुक्रवार
2 नवम्बर चतुर्थी रविवार
5 नवम्बर सप्तमी बुधवार (चं)
6 नवम्बर अष्टमी गुरुवार
7 नवम्बर नवमी शुक्रवार
9 नवम्बर एकादशी रविवार
10 नवम्बर द्वादशी सोमवार

मार्ग कृष्ण पक्ष

21 नवम्बर नवमी शुक्रवार (चं)
22 नवम्बर दशमी शनिवार (चं)
23 नवम्बर एकादशी रविवार (चं)

24 नवम्बर द्वादशी सोमवार

मार्ग शुक्ल पक्ष

29 नवम्बर द्वितीया शनिवार

30 नवम्बर तृतीया रविवार

1 दिसम्बर चतुर्थी सोमवार (चं)

3 दिसम्बर पंचमी बुधवार (चं)

4 दिसम्बर षष्ठी गुरुवार

7 दिसम्बर नवमी रविवार

8 दिसम्बर दशमी सोमवार

पौष कृष्ण पक्ष

13 दिसम्बर प्रतिपदि शनिवार (गु)

फाल्गुन कृष्ण पक्ष

14 फरवरी पंचमी शनिवार (गु)

15 फरवरी षष्ठी रविवार (गु)

16 फरवरी सप्तमी सोमवार (गु)

19 फरवरी दशमी गुरुवार (गु)

20 फरवरी एकादशी शुक्र (गु)

फाल्गुन शुक्ल पक्ष

26 फरवरी प्रतिपदि गुरुवार (गु)

27 फरवरी द्वितीया शुक्रवार (गु)

5 मार्च नवमी गुरुवार (गु)

कर्कट **वृश्चिक** **मीन**

चैत्र शुक्ल पक्ष

16 अप्रैल एकादशी बुधवार

17 अप्रैल द्वादशी गुरुवार

18 अप्रैल त्रयोदशी शुक्रवार

19 अप्रैल चर्तुदशी शनिवार

20 अप्रैल पूर्णिमा रविवार (चं)

वैशाख कृष्ण पक्ष

21 अप्रैल प्रतिपदि सोमवार (चं)

23 अप्रैल तृतीया बुधवार (चं)

श्रावण कृष्ण पक्ष

23 जुलाई पंचमी बुधवार

24 जुलाई षष्ठी गुरुवार

28 जुलाई दशमी सोमवार

श्रावण शुक्ल पक्ष

2 अगस्त प्रतिपदि शनिवार

3 अगस्त द्वितीया रविवार

4 अगस्त तृतीया सोमवार

6 अगस्त पंचमी बुधवार

7 अगस्त षष्ठी गुरुवार

8 अगस्त सप्तमी शुक्रवार

10 अगस्त नवमी रविवार

14 अगस्त त्रयोदशी गुरुवार

आश्विन शुक्ल पक्ष

1 अक्टूबर द्वितीया बुधवार (चं)

2 अक्टूबर तृतीया गुरुवार (चं)

3 अक्टूबर चर्तुथी शुक्रवार

4 अक्टूबर पंचमी शनिवार

5 अक्टूबर षष्ठी रविवार

6 अक्टूबर सप्तमी सोमवार

8 अक्टूबर नवमी बुधवार

10 अक्टूबर दशमी शुक्रवार (चं)

13 अक्टूबर चतुर्दशी सोमवार

कार्तिक कृष्ण पक्ष

18 अक्टूबर चुतर्थी शनिवार (सू)
25 अक्टूबर द्वादशी शनिवार (सू)
26 अक्टूबर त्रयोदशी रविवार (सू)

कार्तिक शुक्ल पक्ष

30 अक्टूबर द्वितीया गुरुवार (सू)
31 अक्टूबर द्वितीया शुक्रवार (सू)
2 नवम्बर चर्तुथी रविवार (सू)
5 नवम्बर सप्तमी बुधवार (सू)
6 नवम्बर अष्टमी गुरुवार (सू)
9 नवम्बर एकादशी रविवार (सू)
10 नवम्बर द्वादशी सोमवार (सू)

मार्ग कृष्ण पक्ष

21 नवम्बर नवमी शुक्रवार
22 नवम्बर दशमी शनिवार
23 नवम्बर एकादशी रविवार
24 नवम्बर द्वादशी सोमवार

मार्ग शुक्ल पक्ष

29 नवम्बर द्वितीया शनिवार
30 नवम्बर तृतीया रविवार
1 दिसम्बर चतुर्थी सोमवार
3 दिसम्बर पंचमी बुधवार
4 दिसम्बर षष्ठी गुरुवार
7 दिसम्बर नवमी रविवार
8 दिसम्बर दशमी सोमवार
11 दिसम्बर चर्तुदशी गुरुवार
12 दिसम्बर पूर्णिमा शुक्रवार

पौष कृष्ण पक्ष

13 दिसम्बर प्रतिपदि शनिवार (चं)

फाल्गुन कृष्ण पक्ष

13 फरवरी चर्तुथी शुक्रवार (सू)
16 फरवरी सप्तमी सोमवार (सू)
19 फरवरी दशमी गुरुवार (सू)
20 फरवरी एकादशी शुक्रवार (सू)
23 फरवरी चर्तुदशी सोमवार (सू)

फाल्गुन शुक्ल पक्ष

26 फरवरी प्रतिपदि गुरुवार (सू)
27 फरवरी द्वितीया शुक्रवार (सू)
4 मार्च अष्टमी बुधवार (सू)

प्रवेश मुर्हूत राशि के अनुसार

मेष | सिंह | धनु

चैत्र शुक्ल पक्ष

10 अप्रैल पंचमी गुरुवार

वैशाख कृष्ण पक्ष

21 अप्रैल प्रतिपदि सोमवार

आषाढ़ शुक्ल पक्ष

12 जुलाई दशमी शनिवार

आश्विन शुक्ल पक्ष

1 अक्टूबर द्वितीया बुधवार
2 अक्टूबर तृतीया गुरुवार
10 अक्टूबर दशमी शुक्रवार
11 अक्टूबर एकादशी शनिवार

कार्तिक कृष्ण पक्ष

18 अक्टूबर द्वितीया शनिवार

कार्तिक शुक्ल पक्ष

5 नवम्बर सप्तमी बुधवार

8 नवम्बर दशमी शनिवार

मार्ग शुक्ल पक्ष

4 दिसम्बर षष्ठी गुरुवार

5 दिसम्बर सप्तमी शुक्रवार

फाल्गुन कृष्ण पक्ष

13 फरवरी चर्तुथी शुक्रवार

14 फरवरी पंचमी शनिवार

वृष **कन्या** **मकर**

चैत्र शुक्ल पक्ष

10 अप्रैल पंचमी गुरुवार

वैशाख कृष्ण पक्ष

21 अप्रैल प्रतिपदि सोमवार

23 अप्रैल तृतीया बुधवार

आषाढ शुक्ल पक्ष

12 जुलाई दशमी शनिवार

14 जुलाई द्वादशी सोमवार

आश्विन शुक्ल पक्ष

1 अक्टूबर द्वितीया बुधवार

2 अक्टूबर तृतीया गुरुवार

4 अक्टूबर पंचमी शनिवार

10 अक्टूबर दशमी शुक्रवार

11 अक्टूबर एकादशी शनिवार

कार्तिक कृष्ण पक्ष

18 अक्टूबर चतुर्थी शनिवार

कार्तिक शुक्ल पक्ष

31 अक्टूबर द्वितीया शुक्रवार

5 नवम्बर सप्तमी बुधवार

8 नवम्बर दशमी शनिवार

10 नवम्बर द्वादशी सोमवार

मार्ग शुक्ल पक्ष

4 दिसम्बर षष्ठी गुरुवार

5 दिसम्बर सप्तमी शुक्रवार

फाल्गुन कृष्ण पक्ष

13 फरवरी चतुर्थी शुक्रवार

14 फरवरी पंचमी शनिवार

फाल्गुन शुक्ल पक्ष

27 फरवरी द्वितीया शुक्रवार

मिथुन **तुला** **कुम्भ**

वैशाख कृष्ण पक्ष

21 अप्रैल प्रतिपदि सोमवार

23 अप्रैल तृतीया बुधवार

आषाढ शुक्ल पक्ष

12 जुलाई दशमी शनिवार

14 जुलाई द्वादशी सोमवार

आश्विन शुक्ल पक्ष

1 अक्टूबर द्वितीया बुधवार

2 अक्टूबर तृतीया गुरुवार

4 अक्टूबर पंचमी शनिवार

कार्तिक शुक्ल पक्ष

31 अक्टूबर द्वितीया शुक्रवार

8 नवम्बर दशमी शनिवार

10 नवम्बर द्वादशी सोमवार

मार्ग शुक्ल पक्ष

4 दिसम्बर षष्ठी गुरुवार

5 दिसम्बर सप्तमी शुक्रवार

ककर्ट **वृश्चिक** **मीन**

चैत्र शुक्ल पक्ष

10 अप्रैल पंचमी गुरुवार

वैशाख कृष्ण पक्ष

23 अप्रैल तृतीया बुधवार

आषाढ शुक्ल पक्ष

14 जुलाई द्वादशी सोमवार

आश्विन शुक्ल पक्ष

4 अक्टूबर पंचमी शनिवार

10 अक्टूबर दशमी शुक्रवार

11 अक्टूबर एकादशी शनिवार

कार्तिक कृष्ण पक्ष

18 अक्टूबर चतुर्थी शनिवार

कार्तिक शुक्ल पक्ष

31 अक्टूबर द्वितीया शुक्रवार

5 नवम्बर सप्तमी बुधवार

10 नवम्बर द्वादशी सोमवार

फाल्गुन कृष्ण पक्ष

13 फरवरी चतुर्थी शुक्रवार

14 फरवरी पंचमी शनिवार

फाल्गुन शुक्ल पक्ष

27 फरवरी द्वितीया शुक्रवार

शंकु प्रतिष्ठा मुर्हूत बुनियाद-मकान (कन्न दिनुक साथ)

मेष **सिंह** **धनु**

श्रावण कृष्ण पक्ष

21 जुलाई तृतीया सोमवार

25 जुलाई सप्तमी शुक्रवार

श्रावण शुक्ल पक्ष

6 अगस्त पंचमी बुधवार

7 अगस्त षष्ठी गुरुवार

8 अगस्त सप्तमी शुक्रवार

भाद्र कृष्ण पक्ष

18 अगस्त द्वितीया सोमवार

भाद्र शुक्ल पक्ष

1 सिप्तम्बर द्वितीया सोमवार

4 सिप्तम्बर पंचमी गुरुवार

कार्तिक कृष्ण पक्ष

18 अक्टूबर चुतर्थी शनिवार

कार्तिक शुक्ल पक्ष

5 नवम्बर सप्तमी बुधवार

मार्ग शुक्ल पक्ष

3 दिसम्बर पंचमी बुधवार

12 दिसम्बर पूर्णिमा शुक्रवार

फाल्गुन कृष्ण पक्ष

13 फरवरी चतुर्थी शुक्रवार

14 फरवरी पंचमी शनिवार

15 फरवरी षष्ठी रविवार

वृष **कन्या** **मकर**

वैशाख कृष्ण पक्ष

23 अप्रैल तृतीया बुधवार

श्रावण कृष्ण पक्ष

21 जुलाई तृतीया सोमवार

23 जुलाई पंचमी बुधवार

24 जुलाई षष्ठी गुरुवार

श्रावन शुक्ल पक्ष

6 अगस्त पंचमी बुधवार

7 अगस्त षष्ठी गुरुवार

8 अगस्त सप्तमी शुक्रवार

भाद्र कृष्ण पक्ष

18 अगस्त द्वितीया सोमवार

भाद्र शुक्ल पक्ष

4 सितंबर पंचमी गुरुवार

कार्तिक कृष्ण पक्ष

18 अक्टूबर चतुर्थी शनिवार

कार्तिक शुक्ल पक्ष

31 अक्टूबर द्वितीया शुक्रवार

5 नवम्बर सप्तमी बुधवार

मार्ग शुक्ल पक्ष

3 दिसम्बर पंचमी बुधवार

12 दिसम्बर पूर्णिमा शुक्रवार

फाल्गुन कृष्ण पक्ष

13 फरवरी चतुर्थी शुक्रवार

14 फरवरी पंचमी शनिवार

15 फरवरी षष्ठी रविवार

फाल्गुन शुक्ल पक्ष

27 फरवरी द्वितीया शुक्रवार

मिथुन **तुला** **कुम्भ**

वैशाख कृष्ण पक्ष

23 अप्रैल तृतीया बुधवार

श्रावण कृष्ण पक्ष

21 जुलाई तृतीया सोमवार

23 जुलाई पंचमी बुधवार

24 जुलाई षष्ठी गुरुवार

25 जुलाई सप्तमी शुक्रवार

श्रावण शुक्ल पक्ष

7 अगस्त षष्ठी गुरुवार

8 अगस्त सप्तमी शुक्रवार

भाद्र कृष्ण पक्ष

18 अगस्त द्वितीया सोमवार

भाद्र शुक्ल पक्ष

1 सितम्बर द्वितीया सोमवार

4 सितम्बर पंचमी गुरुवार

कार्तिक शुक्ल पक्ष

31 अक्टूबर द्वितीया शुक्रवार

फाल्गुन शुक्ल पक्ष

27 फरवरी द्वितीया शुक्रवार

कर्कट **वृश्चिक** **मीन**

वैशाख कृष्ण पक्ष

23 अप्रैल तृतीया बुधवार

श्रावण कृष्ण पक्ष

23 जुलाई पंचमी बुधवार
24 जुलाई षष्ठी गुरुवार
25 जुलाई सप्तमी शुक्रवार

श्रावण शुक्ल पक्ष

6 अगस्त पंचमी बुधवार

भाद्र शुक्ल पक्ष

1 सिप्तम्बर द्वितीया सोमवार

कार्तिक कृष्ण पक्ष

18 अक्टूबर चतुर्थी शनिवार

कार्तिक शुक्ल पक्ष

31 अक्टूबर द्वितीया शुक्रवार
5 नवम्बर सप्तमी बुधवार

मार्ग शुक्ल पक्ष

3 दिसम्बर पंचमी बुधवार
12 दिसम्बर पूर्णिमा शुक्रवार

फाल्गुन कृष्ण पक्ष

13 फरवरी चतुर्थी शुक्रवार
14 फरवरी पंचमी शनिवार

फाल्गुन शुक्ल पक्ष

27 फरवरी द्वितीया शुक्रवार

देवगौण के लिए किसी मुहूर्त की जरूरत नहीं हैं

निषेध समय

शुक्रास्त	3 मई से 11 जुलाई
सिंह में सूर्य	16 अगस्त से 15 सप्तम्बर
पितृ पक्ष	15 सप्तम्बर से 28 सप्तम्बर
पौष	15 दिसम्बर से 13 जनवरी
बृहस्पति अस्त	12 जनवरी 2009
बृहस्पति उदय	10 फरवरी 2009
चैत्रवदि	12 मार्च से 26 मार्च

बारह राशियों का वर्ष फल तथा मासिक फल 2008-09 के लिए

मेष राशि का वर्षफल

नक्षत्र	अश्विनी				भरणी				कृतिका
चरण	1	2	3	4	1	2	3	4	1
नामाक्षर	चु	चे	चो	ला	ली	लू	ले	लो	आ

वर्ष के आरम्भ पर पांच ग्रहों का शुभ होना मेष राशि वालों के लिये शुभफल का सूचक है विशेष तौर से धनु राशि का बृहस्पति नवें भाव में होना सोने पर सुहाग का काम करता है क्योंकि बृहस्पति को फलित ज्योतिष में एक महत्वपूर्ण स्थान मिला है दो ग्रहों सूर्य तथा राहु का वेध में होना भी शुभ फल को दर्शाता है। इस शुभ योग के प्रभाव से मेष राशि वालों के लिये यह वर्ष हर प्रकार से सुख और शान्ति के माहोल में गुज़रे गा। गोचर फलित के अनुसार पहला चन्द्रमा होने से सुख और आनन्द की प्राप्ति, रोगों से मुक्ति, उत्तम गृहस्थ सुख तथा धन प्राप्ति, तीसरा भौम होने से साहस में वृद्धि, शुत्रओं पर विजय, धातुओं से धन की प्राप्ति, राज्य की ओर से सहायता, ग्यारहवां बुध होने से शारीरिक सुख, यश और धन की प्राप्ति मित्रों तथा पारिवारिक सदस्यों से अच्छा मेल

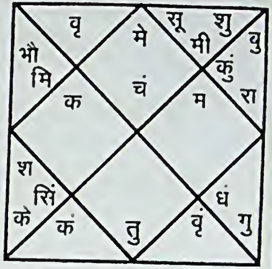

मिलाप, सन्तान प्राप्ति की सम्भावना, भाग्यस्थान में बृहस्पति होने से धन में वृद्धि, पुत्र जन्म का योग, भाग्योदय, राज्य में मान तथा पदोन्नति, हर कार्य मे सफलता भाइयों से सुख तथा लाभ, धार्मिक कार्यो मे रुचि इत्यादि शेष गृहो की स्थिति को देखते हुये यदि आप को सन्तान पक्ष से किसी प्रकार की चिन्ता है तो वह इस वर्ष अवश्य दूर हो जायेगी आपकी आर्थिक स्थिति में विशेष परिवर्तन आयेगा जिसे आप अपने अधूरे कार्यों को अन्तिम रूप दे सकते है नौकरी पेशा होने

पर दफतर का माहोल आप के अनुकूल रहेगा, तथा हर समय आदर व मान का योग। पांचवें भाव में शनि होने पर भी विधार्थियों के लिये हर प्रकार से सफलता का योग यदि आप उच्च शिक्षा के लिये कही बाहिर जाना चाहते है तो उस में अवश्य सफलता मिलेगी। क्रूर ग्रहों को शान्त करने के लिये नित्य रूप से गायत्री मन्त्र का जप किया करें।

ओ३म् भूर्भुवः स्वः, तत्सवितुवरेण्यं,
भर्गो देवस्य धीमहि, धियो यो नः प्रचोदंयात्

मेष राशि का मासिक फल

अप्रैल मास के आरम्भ पर शुभ ग्रहों का पलडा भारी होना शुभफल का ही सूचक है विशेष तौर से शरीर सुख का योग, आप की आमदनी आशा से अधिक रहेगी, दफ्तर में हर समय आदर व मान का योग, आमदनी अच्छी होने पर भी खर्च का योग प्रबल रहेगा, विद्यार्थियों के लिए सफलता का महीना।

मई माह के आरम्भ पर पहले भाव का सूर्य तथा चौथे भाव का भौम आप को शरीर के विषय में चिन्तित रखेगा परन्तु शेष ग्रहों की स्थिति को देखते हुये किसी भय का कोई योग नही है आप का खर्च शुभ कार्यो पर ही होगा, फजूल खर्च का योग नही है।

जून शुभाशुभ ग्रहों का पलडा एक जैसा होने से यह मास हर प्रकार से शान्ति के माहोल मे ही गुज़रेगा, आप जो भी कार्य करते हैं आप का काम अच्छी प्रकार से चलता रहेगा यदि आप नौकरी करते हैं तो पदोन्नति का योग बनता है।

जुलाई माह के आरम्भ पर ग्रहों में थोडा सा बदलाव आने के कारण आप की आर्थिक स्थिति में कुछ ठहराव जैसा दिखाई देगा परन्तु किसी प्रकार से चिन्ता का कोई योग नही है विद्यास्थान में दो क्रूर ग्रहों शनि तथा मंगल के होने से विद्यर्थियों के लिये चिन्ता का योग।

अगस्त मास के आरम्भ पर चौथे तथा पांचवे भाव में सात ग्रहों का होना शुभ फल का ही सूचक है इस शुभ योग के प्रभाव से आप का प्रत्येक कार्य बिना रुकावट के सिद्ध होगा, किसी अच्छे पुण्यात्मा से मिलने का योग। विद्यार्थियों के लिये सफलता का महीना।

सप्तम्बर ग्रहों की स्थिति को देखते हुये विदित होता है कि यह महीना हर प्रकार से सुख शान्ति में गुज़रेगा आप की आर्थिक स्थिति सुदृढ रहेगी यदि आप कारोबार करते है तो आप को आशा से अधिक लाभ मिलेगा, सन्तान पक्ष से कुछ अशान्ति का योग।

अक्टूबर पांच ग्रहों का शुभ होना हर प्रकार से सफलता को दिखाता है आप जो भी कार्य करते है आप का कार्य अच्छी प्रकार से चलता रहेगा। घर पर कोई शुभ कार्य करने का प्रोग्राम बन सकता है जिस की प्रतीक्षा आप बहुत समय से कर रहे है। विद्यार्थियों के लिये सफलता का महीना।

नवम्बर मास के आरम्भ पर ग्रहों की स्थिति को देखने से विदित होता है कि यह मास हर प्रकार से शान्ति के वातावरण में गुज़रेगा, आप की आर्थिक स्थिति में उतार चडाव आने पर भी आप पर इस का कोई बुरा प्रभाव नही पडेगा। खर्च का योग भी प्रबल रहेगा।

दिसम्बर मास के आरम्भ पर आठवें भाव में सूर्य तथा भौम का होना शरीर सुख का सूचक नही है यदि जातक से किसी अच्छे ग्रह की दशा चल रही है तो किसी प्रकार का भय नही है यदि जातक से भी डांवा डोल स्थिति है तो आप को शरीर के विषय में सावधान रहना होगा, रक्त विकार अथवा चोट का भय।

जनवरी मास के आरम्भ पर ग्रहों में बदलाव आने से शरीर स्वस्थ, बृहस्पति देव दसवें भाव में गया है तथा और तीन ग्रहों के साथ बैठा है जिस के प्रभाव से दरबार में हर समय आदर व मान का योग, नौकरी पेशा होने पर पदोन्नति का योग।

फरवरी शुभाशुभ ग्रहों की स्थिति को देखने से मालूम होता है कि यह मास भी गत मास की तरह शान्ति के माहोल में गुज़रेगा आप की आर्थिक स्थिति भी ज्यों की त्यों रहेगी। करोबारी होने पर यदि आप कारोबार को बडाना चाहते है तो समय ज़ाया मत कीजिये, सफलता आप को अवश्य मिलेगी।

मार्च शुभ ग्रहों का पलड़ा भारी होने से आप को प्रत्येक कार्य में सफलता तथा लाभ का योग, सन्तान पक्ष से कोई शुभ सन्देश मिलने का योग, दरबार तथा समाझ में हर समय आदर व मान का योग। विद्यार्थियों के लिये सफलता का महीना।

वृष राशि का वर्षफल

नक्षत्र	कृतिका			रोहिणी				मृगशिरा	
चरण	2	3	4	1	2	3	4	1	2
नामाक्षर	ई	उ	ए	ओ	वा	बी	बू	बे	वो

वर्ष के आरम्भ पर पहले भाव में मंगल तथा आठवें भाव में बृहस्पति का होना शरीर सुख के लिये मध्यम है यह दोनों ग्रह विशेष तौर से आप के पाचन शक्ति को प्रभावित कर सकते है तथा रक्त विकार का योग, चोट का भय, आप को चीर फाड का योग परन्तु शेष ग्रहों की स्थिति को देखते हुये किसी प्रकार का भय नही है वर्ष के आरम्भ पर चार ग्रहों का शुभ होना शुभ फल को ही दरशाते है इन के प्रभाव से हर प्रकार से लाभ, धन प्राप्ति, नवीन पद, आध्यात्मिक एवं मागंलिक कार्य करने का अवसर, सात्विकता में वृद्धि, राज्य कृपा, शुत्रओं को पराजय का सुख मिलता है। व्यवसाय में वृद्धि, मानसिक सुख शान्ति के साथ साथ उत्तम गृह सुख, हर ओर मान में वृद्धि इत्यादि। फलित गोचर के अनुसार शुभाशुभ ग्रहों को फलित शास्त्र की कसौटी पर परखने से विदित होता है कि यह वर्ष वृष राशि वालों के लिये संघर्ष के साथ साथ सफलता तथा लाभ देने वाला ही रहेगा परन्तु शरीर की स्थिति आप के चिन्ता का कारण बनता रहे गा यदि जातक से भी आप को मंगल की स्थिति डांवा डोल है तो शरीर के विषय में सावधान रहना पडेगा। नौकरी पेशा होने पर दफतर का माहोल आप के अनुकूल रहेगा तथा आप को पदोन्नति का अवसर भी मिले गा, आप की आर्थिक स्थिति हर प्रकार से सुदृढ़ रहेगी, कारोबारी होने पर आशा से अधिक लाभ का योग, यदि आप किसी सामाजिक संस्था के साथ सम्बन्ध रखते है तो सावधान रहें कही आप पर किसी प्रकार का लांछन न लगे, पांचवे भाव का बुध दसवें भाव में होने से विद्यार्थियों के लिये हर प्रकार से सफलता देने वाला वर्ष। क्रूर ग्रहों को शान्त करने के लिये इस मन्त्र का उच्चारण रोज करें।

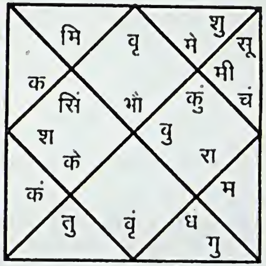

रोगान् अशेषान् अपहंसि तुष्टा
रुष्टा तु कामान् सकलान-भीष्टान।
त्वाम्-आश्रितानां च वित्-नराणाम्
त्वाम्-आश्रिता ह्याश्रियतां प्रयन्ति।।

वृष राशि का मासिक फल

अप्रैल चार ग्रहों का शुभ होना तथा शेष ग्रहों का अशुभ होना संर्घष तथा चिन्ता दर्शाता है ग्रह आप की आर्थिक स्थिति को प्रभावित कर सकते है जो आप के चिन्ता का कारण बन सकता है। आठवां बृहस्पति आप के पाचन शक्ति पर भी प्रभाव डाल सकता है। विद्यार्थियों के लिये सफलता का महीना।

मई शुभाशुभ ग्रहों की स्थिति को देखते हुये यह महीना धोड़ धूप में ही गुज़ारना पडेगा आपकी आर्थिकि स्थिति ज्यों की त्यों रहेगी परन्तु खर्च के बडे बडे प्लान बनेंगे, घर पर मित्रों, सम्बन्धियों का आना जाना ज़ोरों पर रहेगा, विद्यार्थियों के लिये सफलता का महीना।

जून मास के आरम्भ पर केवल तीन ग्रहों का शुभ होना संघर्ष का ही सूचक है चारों ओर से परेशानियों का दोर, यदि आप नौकरी करते हैं तो दफतर का माहोल आप के प्रतिकूल रहेगा, अपने अफसर लोगों के साथ बात बात पर अनवन, यदि आप कारोबार करते है तो हानि के लिये तयार रहे।

जुलाई ग्रहों में विशेष परिवर्तन न होने के कारण यह मास भी गतमाह की तरह दौड धूप में ही गुज़रेगा किसी नये काम को हाथ में लेने का कोई भी प्रोग्राम न बनाये। नौकरी पेशा होने पर अफसर लोगों के साथ शान्ति से रहने का प्रयत्न करो।

अगस्त चौथा भौम तथा आठवां बृहस्पति आप को अपने कुप्रभाव से प्रभावित करेंगे। अतः आप शरीर के विषय में सावधान रहें यदि आप शरीर से पहले से ही अस्वस्थ है तो किसी अच्छे डाक्टर से इलाज करायें। चौथा शनि आप के

दरबार को भी प्रभावित कर सकता है।

सप्तम्बर चौथे तथा पाचवें भाव में सात ग्रहों का होना गोचर फलित के अनुसार शुभ माना जाता हैं आप जो भी कार्य करते हैं वह अच्छी प्रकार से चलता रहेगा। आप की आर्थिक स्थिति में भी सुधार आयेगा जिसे आप शुभ कार्यों को अन्तिम रूप दे सकेगे हैं।

अक्टूबर मास के आरम्भ पर केवल तीन ग्रंहों का शुभ होना दौड धूप को ही दरशाता है परन्तु चार ग्रहों का वेध में होना भी शुभफल का ही संकेत इस कारण सामूहिक रूप से यह मास सुख और शान्ति के माहोल में गुज़रेगा।

नवम्बर पांच ग्रहों का शुभ होना फलित शास्त्रों के अनुसार शुभ माना जाता है घर पर कोई शुभ कार्य करने का प्रोग्राम बन सकता है जिसे में सभी सगे सम्बन्धी मित्र सम्मिलित होंगे, सन्तान पक्ष से कोई शुभ सन्देश का योग, विद्या प्राप्ति के लिये अच्छा समय।

दिसम्बर मास के आरम्भ पर ग्रहों में परिवर्तन आने के कारण यह मास दौड धूप के माहोल में ही गुज़रेगा, आप जिस प्रकार का कार्य करते हैं वह अच्छी प्रकार से चलता रहेगा। गृहस्थ की ओर से चिन्ता का योग।

जनवरी नये वर्ष का पहल मास वृष राशि वालों के लिये शुभ फल लेकर आया है आप जो भी कार्य करते हैं उस मे आशा से अधिक सफलता तथा लाभ, नौकरी पेशा होने पर पदोन्नति का योग, विद्यार्थियों के लिए हर प्रकार से सफलता देने वाला महीना।

फरवरी मास के आरम्भ पर ग्रहों की स्थिति आप के अनुकूल है आप का प्रत्येक कार्य बिना किसी रुकावट के चलता रहेगा, कारोबारी होने पर आशा से अधिक लाभ का योग यदि आप नौकरी की तलाश में है तो इस मास में कुछ आशा की किरण दिखती है।

मार्च बृस्पिति, राहु, बुध तथा भौम आप के भाग्यस्थान में बैटे है इन के शुभ प्रभाव से यह महीना हर प्रकार से शान्ति के माहोल में गुज़रेगा, आप की आर्थिक स्थिति भी सृदृढ रहेगी परन्तु खर्च के प्लान भी बनते रहेगे।

मिथुन राशि का वर्षफल

नक्षत्र	मृगशिरा		आर्द्रा				पुनर्वसु		
चरण	3	4	1	2	3	4	1	2	3
नामाक्षर	का	कि	कू	ध	ह	छ	के	को	हा

वर्ष के आरम्भ पर चार ग्रहों का शुभ होना तथा दो ग्रहों का वेध में होना गोचर फलित के अनुसार धन, स्वास्थ्य मित्रादि का सुख, राज्याधिकारियों और प्रतिष्ठित लोगों से मित्रता, सज्जनों द्वारा लाभ प्रत्येक कार्य में सफलता पदोन्नति का सुअवसर, मान, गौरव की प्राप्ति। आयु में वृद्धि, व्यापार में पर्याप्त लाभ पुत्रादि से मिलाप, उत्तम भोजन, मित्रों से हास-परिहास, स्त्री सुख, स्त्री वर्ग से लाभ, तरल पदार्थो से आय और वृद्धि। आराग्य, पराक्रम, सुख में वृद्धि, हर कार्य में सफलता, धन तथा नौकरी की प्राप्ति, शत्रुओं पर विजय,

पशु धन की प्राप्ति, भूमि प्राप्ति का योग इत्यादि परन्तु, बारवहां भौम आप को आवश्य प्रभावित करेगा, यह आप के शरीर को अस्वस्थ रख सकता है शरीर में रक्त विकार का योग अथवा चीर फाड का योग, धन फजूल खर्च करने का योग भी बनता है। सातवां बृहस्पति होने के कारण गृहस्थ पक्ष की ओर से चिन्ता। यदि आप गृहस्थाश्रम में जाना चाहते हैं तो बृहस्पति उस में रुकावट ला सकता है। यदि आप किसी प्रकार का कारोबार करते हैं तो आप को सावधानी बरतने की जरूरत है ऐसा न हो कि आप को हानि का मुहं देखना पडे। घर में ऐसा कोई प्रौग्राम बन सकता है जिस पर धन खर्च हो सकता है। विद्यास्थान का स्वामी शुक्र दसवें भाव में होने से विद्या के क्षेत्र में आशा से अधिक सफलता यदि आप उच्च विद्या के लिये विदेश जाने का कोई प्रौग्राम बना रहे है तो उस को अमली रूप दीजिये

सफलता आप को अवश्य मिलेगी। क्रूर ग्रहों को शान्त करने के लिये इस मन्त्र का उच्चारण रोज़ करें।

शंकरा चन्द्र शेखरा गंगाधरा सुमोहरा
पाहिमाम आभयंकरा मृत्युंजय विश्वेश्वरा।

मिथुन राशि का मासिक फल

अप्रैल मास के आरम्भ पर पहले भाव का भौम आप के शरीर को अवश्य प्रभावित कर सकता है अतः आप शरीर के विषय में सावधान रहें यह महीना दौडधूप में ही गुजरेगा, नौकरी पेशा होने पर दरबार का योग उत्तम तथा लाभ आशा से अधिक।

मई मास के आरम्भ पर पांच ग्रहों का शुभ होना हर प्रकार से शुभ फल का सूचक है आप जो भी कार्य करते है आप का काम अच्छी प्रकार से चलता रहेगा, ग्यारहवें भाव में सूर्य, बुध तथा शुक्र का एक साथ होना आशा से अधिक लाभ का सूचक।

जून शुभाशुभ ग्रहों का पलडा एक जैसा होने के कारण यह महीना सर्व साधारण रूप से अच्छा ही रहेगा। आप की आर्थिक स्थिति भी ज्यों की त्यों रहेगी। आप का कार्य अच्छी प्रकार से चलता रहेगा। यदि आप किसी सामाजिक संगठन के साथ सम्बन्धित है तो वहां पर आदर व मान का योग।

जुलाई ग्रहों की स्थिति को देखने से मालमू होता है यह महीना हर प्रकार से शान्ति के माहोल में गुज़रेगा यदि आप किसी प्रकार का कारोबार करते है तो आप को आशा से अधिक लाभ का योग यदि आप अपने कारोवार को बडाना चाहते हैं तो समय ज़ाया मत करो।

अगस्त केवल तीन ग्रहों का शुभ होना सर्घषं की और इशारा है इस कारण यह मास दौड धूप में ही निकलेगा। आप की आय भी ज्यों की त्यों रहेगी, सन्तान पक्ष की ओर से मानसिक चिन्ता। गृहस्थी होने पर स्त्री को शरीर की चिन्ता का योग।

सप्तम्बर ग्रहों की स्थिति डांवा डोल होने से यह मास चिन्ता

के माहोल में ही गुज़रेगा। चौथा भौम आप के शरीर को भी प्रभावित कर सकता है। इस कारण आप शरीर के विषय में सावधान रहें, नौकरी पेशा होने पर दरबार की ओर से चिन्ता।

अक्टूबर मास के आरम्भ पर ग्रहों की स्थिति में किसी प्रकार का हेर फेर न होने के कारण यह मास भी गत मास की तरह दौड धूप में ही व्यतीत होगा। चिन्ताओं का बाज़ार हर ओर खुला रहेगा। सन्तान पक्ष से कोई विशेष चिन्ता।

नवम्बर केवल दो ग्रहों का शुभ होना तथा शेष ग्रहों का अशुभ होना परेशानी का सूचक है वह परेशानी विशेष तौर से परिवार से सम्बन्धित रहेगी। यदि जातक से किसी अच्छे ग्रह की दशाचल रही हो गी फिर किसी प्रकार के भय का योग नही है नही तो आप पर झूठा इलज़ाम भी लग सकता है।

दिसम्बर छः ग्रहों में विशेष परिवर्तन आने से यह महीना हर प्रकार से शान्ति के माहोल में गुज़रेगा, आप की आर्थिक स्थिति सुदृढ़ हो जाये गी, आय के साथ साथ खर्च का योग भी प्रबल है यदि आप को किसी प्रकार की चिन्ता है तो इस मास में उस का समाधान होगा।

जनवरी मास के आरम्भ पर सातवें भाव में बृहस्पति के साथ मंगल की युति हुई है जो गृहस्थ की चिन्ता का सूचक है यदि आप गृहस्थ में प्रवेश करने की कतार में है तो इस महीने में ऐसा कोई योग नही बनता है नये वर्ष का पहला महीना कोई विशेष समाचार लेकर नही आया.है।

फरवरी मास के आरम्भ पर आठवें भाव में सूर्य, भौम, बृहस्पति तथा राहु का एक साथ होना शरीर सुख के लिये मध्यम यदि जातक से भी मंगल की स्थिति खराब है तो आप शरीर के विषय में सावधान रहें विशेष तौर से चीर फाड का योग। नौकरी पेशा होने पर दरबार में हर समय आदर व मान का योग।

मार्च मास के आरम्भ पर आठवें भाव में किसी प्रकार का परिवर्तन नही है इस लिये शरीर के विषय में सावधान रहें परन्तु शेष ग्रहों की स्थिति को देखते हुए किसी प्रकार के हानि का कोई योग नही आप की आय तथा खर्च एक जैसा रहेगा।

कर्कट राशि का वर्षफल

नक्षत्र	पुन	तिष्य				आश्लेषा			
चरण	4	1	2	3	4	1	2	3	4
नामाक्षर	ही	हू	हे	हो	हा	ही	हू	डे	डो

वर्ष के आरम्भ पर केवल चार ग्रह चन्द्रमा बुध, शुक्र तथा राहु शुभ स्थिति में हैं सूर्य तथा शनि वेध में हैं, शेष ग्रह अशुभ स्थिति में हैं गोचर फलित के अनुसार अभीष्ट की सिद्धि, सभी कार्यो का सरलता से पूर्ण होना, स्वस्थ शरीर, राज्य की ओर से धन और सम्मान की प्राप्ति, नौकरी में पदोन्नति, उत्तम गृहस्थ सुख, धन लाभ तथा पुत्र सुख, शत्रुओं पर विजय हर कार्य में सफलता तथा प्रसन्नता आर्थिक तथा सामाजिक स्थिति सन्तोशजनक, उत्तम वस्त्रों तथा आभूषणों की प्राप्ति, शरीर स्वस्थ, आशा से अधिक लाभ, राज्य कृपा, घर में मांगलिक तथा धार्मिक उत्सव, भाग्य में वृद्धि स्त्री से लाभ, भाईयों से सहायता तथा प्रेम इत्यादि। ऐसा गोचर फलित में दर्ज है। शुभाशुभ ग्रहों की स्थिति पर विचार करने से प्रतीत होतर है कि कर्कट राशि वालों का यह वर्ष संघर्ष पूर्ण ही रहेगा। एक और साढसत्ती होने से दूसरी और गोचर ग्रहों की स्थिति के कारण ऐसा प्रतीत होता है।

गोचर चक्र में बारहवें भाव में भौम होने से शरीर सुख मध्यम, बारहवां भौम आप के शरीर को आवश्य प्रभावित करेगा। इस के प्रभाव से रक्त विकार अथवा चोट का भय, परन्तु किसी विशेष भय का कोई योग नही है। यदि जातक में शनि की स्थिति अच्छी है तो साढसत्ती का प्रभाव आप पर बुरा नही होगा। यदि नौकरी करते हैं तो दफतर का माहोल आप के अनुकूल रहेगा, पदोन्नति का योग अवश्य बनता है। यदि आप कारोबार करते हैं तो आप को सावधान रहने की जरूरत है ऐसा न हो कि आप को हानि का मुंह देखना पडे,

फजूल खर्ची का योग भी बनता है यदि आप अपने कारोबार को बडाना चाहते हैं तो इस वर्ष के अन्तिम तीन महीनों में ऐसा कार्य करना तभी लाभ की आशा रखें। विद्यास्थान का स्वामी भौम बारहवें भाव में बैठा हैं जो विद्यार्थियों के लिये परेशानी का ही सूचक है। क्रूर ग्रहों को शान्त करने के लिये एक एक ग्रह का पुष्पार्चन रोज़ किया करें। पुष्पार्चन पुस्तक बाजार से मिल सकती है।

कर्कट राशि का मासिक फल

अप्रैल ग्रहों की स्थिति को देखते हुये यह मास सर्व साधारण रूप से गुज़रेगा। आप की आमदनी खर्च के अनुरूप ही रहेगी। नौकरी पेशा होने पर दफतर का माहोल आप के अनुरूप होगा, घर में किसी कार्यक्रम का प्रौग्राम बनेगा। जिस में सगे सम्बंधी मित्र सम्मलित होंगे।

मई मास के आरम्भ में ही मंगलदेव लग्न में आया है यह आप के स्वभाव पर अवश्य प्रभाव डालेगा, स्वभाव में चिडचिडापन रहेगा, क्रोध की मात्रा अधिक होगी, शरीर भी अस्वस्थ रहेगा, आप जो भी कार्य करते हैं आप का कार्य अच्छी प्रकार से चलता रहेगा, घर पर मेहमानों का आना जाना जोरो पर रहेगा।

जून इस मास के आरम्भ पर ग्रहों में सुधार होने के कारण यह मास हर प्रकार से लाभदायक तथा सफलता देने वाला रहेगा यदि घर में किसी प्रकार की कोई समस्या है तो उस का समाधान अवश्य होगा, गृहस्थी होने पर ग्रहस्थ की ओर से लाभ।

जुलाई मास के आरम्भ पर सभी ग्रहों का ग्यारहवे, बारहवें तथा दूसरे भाव में होना शुभ फल को दरशाता है इस शुभ योग के प्रभाव से यह महीना हर प्रकार से सुख और शान्ति के माहोल में गुज़रेगा, आप की आर्थिक स्थिति में विशेष सुधार होगा, विद्यार्थियों के लिये सफलता का महीना।

अगस्त सभी ग्रहों का लग्न तथा दूसरे भाव में होना शुभफल के ही सूचक है इस कारण गतमास की तरह ही यह महीना भी गुज़रेगा, घर पर कोई विशेष कार्य का प्रोग्राम बन सकता है जिस की प्रतीक्षा आप बहुत समय से कर रहे थे, गृहस्थी

होने पर गृहस्थ की ओर से शान्ति तथा सन्तान सुख का योग।

सप्तम्बर फलित ज्योतिष के अनुसार सभी ग्रहों का राहु तथा केतु में होना काल सर्प योग को दर्शाता है जो कि आमतौर पर हानिकारक ही होता है परन्तु यदि जातक से किसी अच्छे ग्रह की दशा है तो किसी प्रकार का भय नही है।

अक्टूबर पिछले मास का योग इस माह में भी है फलित शास्त्र के अनुसार यह योग कभी सोने पर सुहाग का काम देता है अर्थात् बहुत ही अच्छा होता है यह योग दिस्म्बर मास तक चलेगा यदि जातक में ग्रहों की स्थिति अच्छी है तो आशा से अधिक लाभ।

नवम्बर नवम्बर माह के भी ग्रहों की स्थिति वैसी ही है जैसे कि गत मास में थी इस कारण सभी कार्यो में सफलता तथा आशा से अधिक लाभ का योग यदि जातक की स्थिति भी डांवा डोल होगी तो लेने के देने पड़ेंगे, तथा हाथ में आया हुआ काम भी जायेगा।

दिसम्बर इस मास में भी ग्रहों की वही स्थिति है इस कारण आप की आर्थिक स्थिति सुदृढ बनेगी घर पर कोई ऐसा प्रोग्राम बनेगा जिस की आप बहुत दिनो से प्रतीक्षा कर रहे थे, सन्तान पक्ष की ओर से कोई शुभ समाचार।

जनवरी मास के आरम्भ पर चार ग्रह एक साथ सातवें भाव में आये हैं। जो आप के गृहस्थ को प्रभावित कर सकते है। ग्रहस्थ की ओर से किसी सदस्य के शरीर की चिन्ता या स्त्री का शरीर अस्वस्थ होने का योग।

फरवरी मास में आरम्भ पर ग्रहों में कोई विशेष फेरबदल नही हुआ है जिस कारण गृहस्थ की स्थिति में विशेष सुधार नही होगा, गृहस्थ में नई नई उलझनों से आप का सामना होगा। जो आप के लिये चिन्ता का कारण बनेगी। विद्यार्थियों के लिये सफलता का महीना।

मार्च मास के आरम्भ पर आठवां सूर्य आप के शरीर को प्रभावित कर सकता है विशेष तौर से सरर्दद अथवा आखों की तकलीफ हो सकती है परन्तु शेष ग्रहों की स्थिति से किसी प्रकार के भय का कोई योग नही है। फजूल खर्ची का प्रबल योगा।

सिंह राशि का वर्षफल

नक्षत्र	मघा				पूर्वा फाल्गुनी				उ फा0
चरण	1	2	3	4	1	2	3	4	1
नामाक्षर	मा	मी	मू	मे	मो	टा	टी	टू	टे

मास के आरम्भ पर बृहस्पति भौम तथा शुक्र ग्रह शुभ स्थिति में हैं। शेष सभी ग्रह अशुभ स्थिति में, गोचर फलित के अनुसार शुभ ग्रहों के अनुसार सुख और आनन्द की वृद्धि हर कार्य में सफलता, पद की प्राप्ति, कारोबार में उन्नति, कोई स्थिर लाभ, घर में मांगलिक कार्य करने का प्रौग्राम पुत्र जन्म की सम्भावना, तर्क शक्ति, सूझ-बूझ में वृद्धि होती है, ग्यारहवें भाव में भौम होने से आरोग्य और धन की प्राप्ति। आय में आशातीत वृद्धि, भूमि आदि से लाभ भाइयों की ओर से लाभ, कार्यो में सफलता का योग आठवां शुक्र होने से धन की प्राप्ति, सुखों में वृद्धि विलास की सामग्री में वृद्धि, कुटुम्बियों से धन तथा सुख की प्राप्ति, विद्या प्राप्ति का उत्तम योग इत्यादि। फलित शास्त्र के अनुसार शुभाशुभ ग्रहों की स्थिति को वेधाष्टक वर्ग की कसौटी पर परखने से मालूम होता है कि यह वर्ष सिंह राशि वालों के लिये संघर्ष के साथ सफलता तथा लाभदायक रहेगा। यदि आप को जीमन जाईदाद का कोई

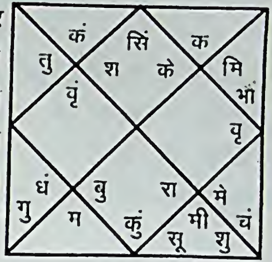

मसला है थोडा सा परिश्रम करने से वह मसला हल हो जायेगा, यदि आप को सन्तान पक्ष से किसी प्रकार की कोई चिन्ता है तो इस वर्ष उस का समाधान अवश्य होगा। यदि आप नौकरी की तलाश में हैं तो थोडा सा प्रयत्न करने से ही आप का यह कार्य सिद्ध होगा, यदि आप किसी सामाजिक अथवा सियासी संस्था के साथ सम्बन्ध रखते हैं तो थोडी सी सावधानी बरतने की आवश्यकता है तभी आप अपने कार्यक्रम में सफल होंगे, विद्यार्थी वर्ग को चाहिये कि वह पांचवें बृहस्पति का पूरा लाभ लें तथा पढाई में जुट जायें, आशा से अधिक सफलता का योग, यदि आप उच्च विद्या के लिये कहीं विदेश इत्यादि जाना चाहते है तो समय जाया मत कीजिये।

इस को अमली रूप दीजिय। क्रूर ग्रहों को शान्त करने के लिये आप हर रविवार को सूर्य देवता का पुष्पार्चन करें।

सिंह राशि का मासिक फल

अप्रैल मास के आरम्भ पर ग्रहों की स्थिति को देखते हुये यह मास सर्व साधारण माहोल में गुज़रेगा, आप की आमदनी आप के खर्च के अनुकूल ही रहेगी, शरीर अस्वस्थ होने पर भी किसी प्रकार का कोई भय नही है सन्तान पक्ष से कोई शुभ समाचार मिलने का योग।

मई पांचवें भाव में बृहस्पति का होना विद्यार्थी वर्ग के लिये हर प्रकार से सफलता का सूचक है यदि आप को सन्तान पक्ष से किसी प्रकार की कोई समस्या है तो इस मास में सफलता की कुछ आशा रखें।

जून मास के आरम्भ पर बारवां भौम आप के शरीर को प्रभावित कर सकता है यदि जातक से भी भौम की स्थिति अस्त व्यस्त होगी तो आप को शरीर के विषय में सावधान रहना पडेगा यदि आप नौकरी करते है तो दफतर का माहोल आप के अनुकूल रहेगा।

जुलाई मास के आरम्भ पर मंगल पहले भाव में आया है जो शरीर सुख के लिये मध्यम रहेगा, आप की आमदनी में आशा से अधिक लाभ का योग यदि आप को जमीन जाईदाद का कोई मसला है तो वह मसला इस मास में हल होने की सम्भावना है। विद्यार्थियों के लिये सफलता का महीना।

अगस्त सात ग्रहों का केवल दो भावों में होना शुभ फल की ओर इशारा है इस शुभ योग के प्रभाव से आप को प्रत्येक कार्य में सफलता तथा लाभ मिलेगा, आप जो भी कार्य करतें हैं आप का कार्य अच्छी प्रकार से चलता रहेगा। विद्यार्थियों के लिये सफलता का महीना।

सप्तम्बर मास के आरम्भ पर सभी ग्रहों को राहु तथा केतु ने अपने घेरे में ले लिया है यह भी एक प्रकार का शुभ योग है इस शुभ योग से बहुत देर से रुका हुआ आप का कोई कार्य सिद्ध होगा, नौकरी पेशा होने पर पदोन्नति का योग। घर पर कोई शुभ कार्यक्रम का योग।

अक्टूबर इस मास के ग्रहों की स्थिति गत मास की तरह ही है यह स्थिति दिसम्बर तक चलती रहेगी। इस स्थिति को फलित ज्योतिष में कालसर्प योग करते हैं परन्तु यह योग मनुष्य को कहीं से कही तक पहुंचा सकता है इस का फल अच्छा भी होता है खराब भी होता है जो प्रार्ब्धवश मिलता है।

नवम्बर मास के आरम्भ पर चार ग्रहों का शुभ होना हर प्रकार से शुभ फल का सूचक है आप जो भी कार्य करते है आप का कार्य अच्छी प्रकार से चलता रहेगा आप की आमदनी भी खर्च के अनुसार ही रहेगी। गृहस्थी होने पर स्त्री पक्ष से कुछ अशन्ति का योग, विद्यार्थियों के लिये सफलता का मास।

दिसम्बर मास के आरम्भ में चौथे भाव में तीन तथा पांचवे भाव में तीन ग्रहों का होना हर प्रकार लाभ देने वाला रहेगा यदि आप को ज़मीन जाईदाद का कोई मसला है तो वह मसला भी अवश्य हल होगा आप थोडी सी पहल करें यदि आप वाहन इत्यादि लाना चाहते हैं तो इस महीने में उस को अमली रूप दीजिये।

जनवरी नये वर्ष का पहला मास आप के लिये कोई विशेष समाचार लेकर नही आया है, छठे भाव में तीन शुभ ग्रहों बृहस्पति, बुध तथा शुक्र का होना किसी शुभ फल का द्योतक नही है यदि आप नौकरी करते है तो यह आप के दरबार पर भुरा प्रभाव डाल सकते है जो आप के लिये चिन्ता का कारण बनेगा।

फरवरी मास के आरम्भ पर ग्रहों मे कुछ परिवर्तन आने से आप के दरवार की स्थिति में कुछ सुधार अवश्य आयेगा, यदि आप किसी प्रकार का कारोबार करते हो तथा अपने कारोबार को बडाना चाहते है तो इस महीने में ऐसे प्रौग्राम को अमली रूप मत दें ऐसा न हो कि आप को हानि का मुह देखना पडे।

मार्च मास के आरम्भ पर ग्रहों की स्थिति को देखने से विदित होता है कि यह मास दौडधूप के माहोल में गुज़रेगा आप की आमदनी तथा खर्च ज्यों की त्यों रहेगा, गृहस्थ की ओर से किसी सदस्य के शरीर सम्बन्धित चिन्ता रहेगी परन्तु किसी प्रकार के भय का कोई योग नही है।

कन्या राशि का वर्षफल

नक्षत्र	उ फाल्गुनी			हस्त				चित्रा	
चरण	2	3	4	1	2	3	4	1	2
नामाक्षर	टो	पा	पी	पू	ष	ण	ठ	पे	पो

वर्ष के आरम्भ पर ग्रहों की डावां डोल स्थिति के कारण कन्या राशि वालों के लिये यह वर्ष कोई विशेष लाभदायक अथवा सफलतादायक नही रहेगा क्योंकि वर्ष के आरम्भ पर केवल एक ग्रह ही शुभ स्थिति में है गोजचर फलित के अनुसार छठा बुध होने से धन, अन्न तथा उत्तम वस्त्रों की प्राप्ति, अच्छी और मनोरंजक पुस्तकें पढ़ने का अवसर मिलता है, शत्रुओं पर विजय, शारीरिक तथा मानसिक सुख, लेखक तथा वाद्यकला में ख्याति इत्यादि, इस के अतिरिक्त आठवां चन्द्रमां सातवां सूर्य तथा दसवां भौम वेध में है, वेध में गया हुआ ग्रह भी शुभ फल को ही देता है इन शुभाशुभ ग्रहों की स्थिति को वेधाष्टक वर्ग की कसौटी पर परखने से विदित होता है कि वह वर्ष कन्या राशि वालों के लिये दौडधूप तथा संघर्ष का ही रहेगा। आप की आर्थिक स्थिति अच्छी होते हुये भी खर्च के ऐसे प्रौग्राम बनते रहेंगे जो आप के लिये चिन्ता का कारण बनेगा, नौकरी पेशा होने पर दरबार में हर समय आदर व मान का

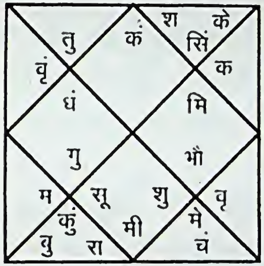

योग परन्तु दसवां भौम आप को हर समय अपने अफसर लोगों के साथ अनबन रखने को प्रवृत करेगा जो आप के लिये ठीक नही है। बारहवें भाव में शनि होने से शुभ कार्यों पर खर्च करने का योग। सातवें भाव में सूर्य तथा शुक्र के एक साथ होना भी गृहस्थ सुख का सूचक नही है। यदि आप अविवाहित हैं तो इस वर्ष विवाह का योग बनता है। विद्यार्थियों के लिये यह वर्ष विशेष सफलता देने वाला वर्ष नही रहेगा इस कारण विद्यार्थियों को चाहिये कि वह कारबद्ध हो कर पढाई में झुट जायें तभी सफलता की आशा रखें। क्रूर ग्रहों को शान्त करने के लिये आप नित्य 'गायत्री मन्त्र' का उच्चारण १०१ बार करें।

ओ३म् भूर्भुवः स्वः, तत्सवितुर्वरेण्यं,
भर्गो देवस्य धीमहि, धियो यो नः प्रचोदयात्

कन्या राशि का मासिक फल

अप्रैल मास के आरम्भ पर ग्रहों की डांवा डोल स्थिति के कारण यह मास सर्व साधारण रूप में ही गुज़रेगा, आप जिस प्रकार का कार्य करते हैं वह अच्छी प्रकार से चलता रहेगा परन्तु आप की आर्थिक स्थिति में अस्थिरिता आयेगी जो आप के लिये चिन्ता का कारण बनेगी।

मई चार ग्रहों का शुभ होना हर प्रकार से शुभ फल को दरशाता है इस कारण यह मास हर प्रकार से सुख शान्ति में गुज़रेगा, आप नौकरी करते है या कारोबार आप का काम हर प्रकार से चलता रहेगा। कारोबारी होने पर आप को आशा से अधिक लाभ का योग।

जून ग्रहों की स्थिति को देखने से विधित होता है यह मास अच्छे माहोल में गुज़रेगा यदि आप किसी सामाजिक संस्था के साथ सम्बन्ध रखते है तो उस क्षेत्र में हर प्रकार से सफलता तथा आदर व मान का योग। गृहस्थी होने पर गृहस्थ सुख का योग।

जुलाई मास के आरम्भ पर बारहवां भौम आप के शरीर को प्रभावित कर सकता है विशेष तौरसे शरीर में रक्तविकार का योग अथवा चोट का भय परन्तु किसी प्रकार के भय का कोई योग नही है यदि आप को जमीन जाईदाद सम्बन्धित कोई समस्या है तो वह समस्या इस मास में अवश्य हल होगी।

अगस्त मास के आरम्भ पर ग्यारहवें भाव में तीन शुभ ग्रहों के होने से यह महीना हर प्रकार से शुभ माहोल में गुज़रेगा आप की आर्थिक स्थिति में विशेष परिवर्तन आयेगा जिसे आप सभी कार्यक्रमों को आसानी से चला सकेंगें। खर्च भी अच्छे कार्यों पर खर्च होगा।

सप्तम्बर मास के आरम्भ पर छः ग्रहो का पहले तथा बारहवें भाव में होना शुभ फल को दर्शाता है इसी मास से दिसम्बर तक सभी ग्रहों को राहु तथा केतु ने अपने घेरे में लिया है

जो कई प्रकार से अच्छा भी है तथा कई प्रकार से हानि कारक भी है यदि जातक में ग्रहों की स्थिति अच्छी है तो यह योग सोने पर सुहाग का काम करेगा।

अक्टूबर ग्रहों में कुछ परिवर्तन आने से अक्टूकर का मास कन्या राशि वालों के लिये शान्ति के माहोल में ही गुज़रेगा, घर पर कोई ऐसा प्रौग्राम बनेगा जिस में सभी सगे सम्बन्धी सम्मिलित हूंगे, गृहस्थी होने पर गृहस्थ सुख का उत्तम योग। यदि आप अविवाहित हैं तो इस मास में इस प्रकार की बात चल सकती है।

नवम्बर मास के आरम्भ पर तीन ग्रहों का शुभ होना शुभ फल की ओर इशारा है इस शुभ योग से यह महीना हर प्रकार से शान्ति के माहोल में गुज़रेगा यदि जातक में किसी प्रकार की खराब दशा होगी तो सावधान रहने की ज़रूरत है क्योंकि जातक के ग्रह का प्रभाव ज्यादा होता है।

दिसम्बर मास के आरम्भ पर तीसरे तथा चौथे भाव में छः ग्रहों का होना कोई शुभ फल के सूचक नही है क्योंकि सभी ग्रह कुण्डली के बाहें तरफ है जो फलित शास्त्रों के अनुसार शुभ नही माना जाता है यदि जातक से अच्छे ग्रह की दशा चल रही है तो शुभ फल का योग।

जनवरी मास के आरम्भ पाचंवे भाव में चार ग्रहों का एकसाथ होना शुभ माना जाता है यदि आप को सन्तान पक्ष से किसी प्रकार की चिन्ता है तो उस का समाधान अवश्य होगा अथवा किसी नव जात शिशु के आगमन का योग जिस की प्रतीक्षा आप बहुत समय से कर रहे हैं।

फरवरी मास के आरम्भ पर ग्रहों की डावां डोल स्थिति के कारण यह मास सर्व साधारण रूप में ही गुज़रेगा। आप की आर्थिक स्थिति में गतिरोध की सम्भावना जो आप के मान्सिक सन्तुलन ठीक नही रखेगा, मान्सिक असन्तुलन के कारण सभी कार्यो पर प्रभाव पढता है विद्यार्थियों के लिये अशान्ति का महीना।

मार्च मास के आरम्भ ग्रहों में विशेष परिवर्तन न आने के कारण यह मास भी गत मास की तरह ही गुज़रेगा। आप की आर्थिक स्थिति ज्यों की त्यूं रहेगी। फजूल खर्ची का योग, इस मास में कोई भी नया कार्य आरम्भ करने का कोई प्रौग्राम न बनाये।

तुला राशि का वर्षफल

नक्षत्र	चित्रा		स्वाति				विशाखा		
चरण	3	4	1	2	3	4	1	2	3
नामाक्षर	रा	री	रु	रे	रो	ता	ति	तू	ते

वर्ष के आरम्भ पर चार ग्रहों का शुभ होना तथा एक ग्रह का वेध में होना शुभफल को दरशाता है गोचर फलित के अनुसार छठे भाव में सूर्य होने से कार्य सिद्धि और सुख की प्राप्ति अस्त्र-वस्त्रादि का लाभ, शत्रुओं पर विजय रोगों का नाश, राज्याधिकारियों से लाभ, शरीर स्वस्थ, सातवां चन्द्रमा होने से धन लाभ, काम सुख, छोटी परन्तु लाभदायक यात्रायें, वाणिज्य व्यवसाय में लाभ, उत्तम भोजन, शरीर सुख, वाहन तथा ख्याति की प्राप्ति ग्यारहवां शनि होने से लाभ की प्राप्ति। लोहे, भूमि, मशीनरी, पत्थर, सीमेट, कोयला, चमडा आदि से लाभ, रोगो से मुक्ति, पदोन्नति, नौकरों से लाभ, पांचवा राहु होने से धन, ऐश्वर्य में अचानक वृद्धि, भाग्य में वृद्धि इत्यादि। सभी ग्रहों की स्थिति को वेधाष्टकवर्ग की कसौटी पर परखने से विदित होता है कि तुला राशि वालों के लिये यह वर्ष हर प्रकार से लाभदायक तथा सुखदायक रहेगा यदि आप किसी प्रकार का कारोबार करते हैं तथा अपने कारोबार को वडाना

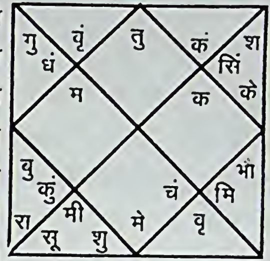

चाहते है तो समय ज़ाया मत कीजिये इस काम को अमली रूप दे दें। आप को आशा से अधिक लाभ मिलेगा। आप की आर्थिक स्थिति में विशेष परिवर्तन आयेगा, यदि आप किसी प्रकार की नौकरी करते हैं तो आप को पदोन्नति का अवसर अवश्य मिलेगा जिस की प्रतीक्षा आप बहुत समय से करते आ रहे हैं। दरबार में हर प्रकार से आदर व मान का योग यदि आप शियर इत्यादि किसी प्रकार का व्यवसाय करते हैं तो उस विषय में आप सावधान रहे। ऐसा न हो कि आप को हानि का मुंह देखना पडे। पाचवें भाव में वुध जो कि वेध में भी गया है के कारण विधार्थियों के लिये हर प्रकार से सफलता का वर्ष यदि आप उच्च विद्या के लिये कहीं जाना

चाहते हैं तो उस प्रोग्राम को अमली रूप दीजिये ग्रह आप के अनुकूल है। क्रूर ग्रहों को शान्त करने के लिये नित्य 'बहुरूपगर्भ' का पाठ किया करें।

तुला राशि का मासिक फल

अप्रैल मास के आरम्भ पर पांच ग्रहों का शुभ स्थिति के कारण यह महीना शान्ति के माहोल में गुज़रेगा, आप जो भी कार्य करते हैं आप का कार्य अच्छी प्रकार से चलता रहेगा, लाभ की दृष्टि से यह महीना अच्छा रहेगा, अच्छे अच्छे पुण्यात्माओं के साथ मिलने का मौका मिलेगा। विद्यार्थियों के लिये सफलता का महीना।

मई ग्रहों की स्थिति को देखते हुये प्रतीत होता है कि यह मास हर प्रकार से लाभ तथा सफलता देने वाला रहेगा, यदि आप को विभागीय पदोन्नति में किसी प्रकार की अडचन है तो थोडा परिश्रम करने से उस में आप सफलता प्राप्त कर सकते है।

जून मास के आरम्भ पर बारहवां सूर्य तथा चौथा राहु आप के शरीर को प्रभावित कर सकता है शरीर अस्वस्थ होने की सम्भावना परन्तु किसी प्रकार के भय का कोई योग नही। यदि आप किसी प्रकार का कारोबार करते हैं तो उस में आशा से अधिक लाभ की सम्भावना, विद्यार्थियो के लिये सफलता देने वाला मास।

जुलाई मास के आरम्भ पर ग्यारहवें भाव में शनि तथा भौम का एक साथ होना आर्थिक स्थिति में विशेष सुधार का संकेत। यदि आप किसी प्रकार की ठेकेदारी का कार्य करते है तो आप को सावधान रहने की जरूरत है ऐसा न हो कि आप को हानि का मुहं देखना पडे।

अगस्त गहों में विशेष बदलाव न आने के कारण यह मास भी गत मास की तरह ही शान्ति के माहोल में गुज़रेगा आप नौकरी करते हैं या कारोबार आप का काम अच्छी प्रकार से चलता रहेगा। आप की आर्थिक़ स्थिति में किसी प्रकार का ढीलापन नही आयेगा। विद्यार्थियों के लिये हर प्रकर से सफलता देने वाला मास

सिप्तम्बर बारहवें भाव में तीन ग्रहों का एक साथ होना ठीक नही है यह आप के शरीर पर प्रभाव डाल सकते हैं विशेष तौर से रक्त विकार, अथवा चीरफाड का योग परन्तु यदि जातक से किसी अच्छे ग्रह की दशा चल रही है तो किसी प्रकार के भय का कोई योग नही है आप की आर्थिक स्थिति में किसी प्रकार की अडचन नही आयेगीं।

अक्टूबर मास के आरम्भ पर बारहवां सूर्य, बुध तथा पहला मंगल आप के शरीर को प्रभावित कर सकता है प्रायः सरदर्द अथवा रक्त विकार का योग, यदि जातक में मंगल की स्थिति ठीक है, तो किसी प्रकार के भय का कोई योग नही है। घर पर कोई शुभ कार्यक्रम का प्रोग्राम बन सकता है जिस की प्रतीक्षा आप को बहुत समय से थी।

नवम्बर पहले भाव का सूर्य तथा भौम आप के स्वभाव में चिडचिडापन अथवा क्रोध की मात्रा में वृद्धि कर सकते है जो आप के पूरे वातावरण को अस्तव्यस्त कर सकता है परन्तु आप की आर्थिक स्थिति में किसी प्रकार की अडचन नही आयेगी।

दिसम्बर ग्रहों में फेरबदल होने के कारण शरीर स्वस्थ, आर्थिक स्थिति दृढ, शुभ कार्यों पर खर्च का योग, कई पुण्यात्माओं से मिलने का योग घर पर कोई ऐसा प्रोग्राम बन सकता है जिस में घर के सभी सम्बन्धियों, मित्रों इत्यादि का आना जाना रहेगा।

जनवरी चौथे भाव में बुध, बृहस्पति, शुक्र तथा राहु का एक साथ होना शुभ फल का सूचक है यदि आप को ज़मीन जाईदाद का कोई मसला है अथवा नये तामीर इत्यादि का कोई प्रोग्राम है तो आप आरम्भ कीजिये, यदि वाहन इत्यादि लाने का कोई प्रौग्राम है तो अमली रूप दीजिये।

फरवरी ग्रहों में कोई विशेष परिवर्तन न आने के कारण यह महीना भी अच्छे माहोल में सुख शान्ति में गुजरेगा। आप जो भी कार्य करते हैं आप का कार्य अच्छी प्रकार से चलता रहेगा। आप की आमदनी भी सन्तोषजनक रहेगी।

मार्च चौथे भाव की स्थिति दृढ होने के कारण आप को प्रापर्टी इत्यादि का जो भी मसला होगा अवश्य हल होगा यदि आप नई प्रापर्टी बनाना चाहते है तो आप अवश्य बनाये, सफलता आप को अवश्य होगी, विद्यार्थियों के लिये सफलता का महीना।

वृश्चिक राशि का वर्षफल

नक्षत्र	वि0	अनुराधा				ज्येष्ठा			
चरण	4	1	2	3	4	1	2	3	4
नामाक्षर	चु	चे	चो	ला	ली	लू	ले	लो	आ

वर्ष के आरम्भ पर चार ग्रहों का शुभ होना तथा दो ग्रहों का वेध में होना हर प्रकार से शुभफल को दरशाते है गोचर फलित के अनुसार छठे भाव में चन्द्रमा होने से धनलाभ, स्वस्थ शरीर, यश और आनन्द की प्राप्ति, महिलाओं से वार्तालाप का अवसर, अपने घर में सुखपूर्वक रहने का अवसर मिलेगा, शत्रुओं की पराजय, रोगों का नाश, खर्च ज्यादा, चौथा बुध होने से माता को सुख जमीन जायदाद में वृद्धि, अच्छे विद्वानों तथा भद्र पुरुषों तथा उच्च पदस्थ लोगों से मित्रतां, घरेलू जीवन का अच्छा सुख, दूसरे भाव में धनु राशि का बृहस्पति होने से धन का आगमन, कुटुम्ब के सुख में वृद्धि विवाह अथवा पुत्र जन्म का सुख, शत्रुओं के विरुद्ध कार्य करने की आवश्यकता, हर तरफ से मान तथा आदर का योग, परोपकार तथा दानादि की ओर प्रवृति ब़डती है, चल सम्पति जैसे कैश सर्टिफिकेटस आदि में वृद्धि, पाचंवे भाव में शुक्र के होने से पुत्रादिकों से प्रेम, अन्न तथा धन की प्राप्ति और उत्तम प्रकार का खाना पीना, यश की वृद्धि, शत्रुओं पर विजय, पुत्रादि के जन्म का अवसर, विभागीय परीक्षाओं में सफलता, आमोद प्रमोद की ओर प्रवृति इत्यादि गोचर फलित में दरज है। सभी ग्रहों की स्थिति को देखने से विदित होता है कि वृश्चिक राशि वालों के लिये यह वर्ष हर प्रकार से सुख और शान्ति से परिपूर्ण रहेगा, आप की आर्थिक स्थिति तथा खर्च की स्थिति एक जैसी रहेगी। गोचर चक्र में आठवें भाव में मगल का होना शरीर सुख का सूचक नही है इस कारण शरीर के विषय सावधान रहने की जरूरत है, विद्यास्थान में शुक्र का होना विद्यार्थियों के लिये हर प्रकार से सफलता देने वाला वर्ष। यदि आप उच्च विद्या के लिये कहीं जाना चाहते है तो

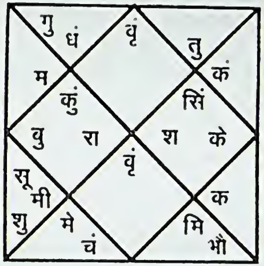

उस प्रोग्राम को अमली रूप दीजिये। शरीर को स्वस्थ रखने के लिये इस मन्त्र का उच्चारण रोज़ किया करें।

रोगान शेषान् अपि हंसि तुष्टा,
रुष्टा तु कामान् सकलानभीष्टान्
त्वामाश्रितानां न विपत् नराणां
त्वां आश्रिता ह्याश्रियतां नमामि।

वृश्चिक राशि का मासिक फल

अप्रैल मास के आरम्भ पर शुभाशुभ ग्रहों पर विचार करने से प्रतीत होता है कि यह मास हर प्रकार से सुख और शान्ति के माहोल में गुज़रेगा, दफतर में पदोन्नति का अवसर मिलेगा। अपने अफसर लोगों के साथ अच्छी बनती रहेगी, विद्यार्थियों के लिये सफलता का महीना।

मई ग्रहों में विशेष परिवर्तन न आने के कारण यह महीना भी हर प्रकार से शान्ति के माहोल में गुज़रेगा यदि आप कारोवार करते हैं तो कारोवार में अचानक वृद्धि जिस की प्रतीक्षा आप बहुत समय से कर रहे थे, गृहस्थी होने पर सन्तान सुख का योग।

जून मास के आरम्भ पर केवल तीन ग्रहों का शुभ होना संघर्ष का सूचक है जिस कारण इस मास में दौड धूप ज्यादा रहे गी आप जो भी कार्य करते हैं उस में भी कई प्रकार की अडचने आने की सम्भावना जो आप के लिये चिन्ता का कारण बनेगा।

जुलाई मास के आरम्भ पर ग्रहों की डावां डोल स्थिति रहेगी जो आप के कार्य में अस्थिरता ला सकता है वह अस्थिरता आप के लिये अशान्ति का कारण बनेगी। जिसे आप के सभी कार्यक्रम बिगड सकते है परन्तु आप की आर्थिक स्थिति में किसी प्रकार की अस्थिरता नही आयेगी।

अगस्त मास के आरम्भ पर चार ग्रहों का भाग्यस्थान में होना तथा तीन ग्रहों का दसवें भाव में होना शुभ फल का संकेत है इसके प्रभाव से आप जो भी कार्य करते है वह अच्छी प्रकार से चलेगा, विशेष तौर से दिसम्बर तक आपकी आर्थिक स्थिति दृढ रहेगी।

सप्तम्बर चार ग्रहों का एक साथ ग्यारहवें भाव में होना तथा दो ग्रहों का दसवें भाव में होना शुभफल की ओर इशारा है इस शुभ योग से आप का प्रत्येक कार्य अच्छी प्रकार से चलेगा तथा आशा से अधिक लाभ भी मिलेगा, घर पर कोई प्रौग्राम बनेगा जिस में अच्छी धन राशि खर्च होगी।

अक्टूबर मास के आरम्भ पर बारहवें भाव में भौम शुक्र तथा चन्द्रमा का होना शरीर सुख के लिये मध्यम यदि जातक में भी भौम की स्थिति खराब होगी तो शरीर के विषय में सावधान रहना पडेगा। परन्तु आप की आर्थिक स्थिति में किसी प्रकार की अडचन नही आयेगी।

नवम्बर बारहवें भाव में सूर्य, भौम तथा बुध का होना शरीर सुख का सूचक नही है गतमास की तरह यह मास भी शरीर सुख के लिये डावां डोल ही है यदि आप शरीर से पहले से ही अस्वस्थ है तो किसी अच्छे डाक्टर से इलाज करायें, आप की आमदनी तथा खर्च एक जैसा रहेगा।

दिसम्बर मास के आरम्भ पर सूर्य, भौम तथा बुध एक साथ पहले भाव में बैठे हैं तथा दूसरे भाव में चन्द्रमा बृहस्पति तथा शुक्र एक साथ वैठे है यह एक प्रकार से छत्र योग का सूचक है जो आप के लिये हर प्रकार से लाभदायक तथा सुखदायक रहेगा, विद्यार्थियों के लिये सफलता का महीना।

जनवरी मास के आरम्भ पर तीसरे भाव मे चार ग्रहों का एक साथ होना तथा शेष ग्रहों की स्थिति के कारण यह मास अशान्ति के ही माहोल में गुज़रेगा अपने सगेसम्बन्धियो, मित्रों के साथ मतभेद के कारण अशान्ति। आमदनी भी डांवा डोल ही रहेगी।

फरवरी ग्रहों में विशेष फरेबदल न होने के कारण यह मास भी अशान्ति के माहोल में ही गुज़रेगा। यदि आप को जमीन जाईदाद इत्यादि का कोई मसला है तो वह मसला इस मास में लटकता ही रहेगा, जायदाद सम्बन्धित कोई कार्य इस मास में न करें।

मार्च ग्रहों की एक जैसी स्थिति होने के कारण यह मास भी सर्व साधारण रूप में गुज़रेगा। यदि आप अविवाहित है तो इस मास में इस प्रकार का मसला हल नही होगा। विवाहित होने पर गृहस्थ की ओर से सांसारिक अशान्ति का योग।

धनु राशि का वर्षफल

नक्षत्र	मूला				पूर्वाषाढा				उत्तरा0
चरण	1	2	3	4	1	2	3	4	1
नामाक्षर	ये	या	भा	भि	भु	फ	ढ	भ	भे

वर्ष के आरम्भ पर केवल दो ग्रहों शुक्र तथा राहु का शुभ स्थिति में होना संघर्ष का सूचक है गोचर फलित के अनुसार चौथे भाव में शुक्र होने से मनोकामनायें पूर्ण, धन की प्राप्ति, वैभव विलास की सामग्री, वाहन इत्यादि की प्राप्ति, सम्बन्धियों से सहायता, जनता से सम्पर्क तथा प्रेम, शरीर तथा मन में विशेष बल की अनुभूति, तीसरे भाव में शत्रुओं पर विजय, धन लाभ अकस्मात भाग्योदय्, मित्रों से लाभ इत्यादि फलित ज्योतिष के आधार से शुभाशुभ ग्रहों पर विचार करने से मालूम होता है कि धनु राशि वालों का यह वर्ष हर प्रकार से संघर्ष तथा दौडधूप में गुजरेगा। कभी आशा से अधिक आमदनी कभी

धन की कमी यहां तक कि किसी से मांगने की नौबत आ सकती है यदि जातक में किसी अच्छे गृह की दशा चल रही है तो फिर थोडी बहुत कमी रहेगी। यदि आप किसी प्रकार का कारोबार करते है तो आप को सावधान रहने की ज़रूरत है ऐसा न हो कि आप का पैसा लोगों के पास फस जाये इस कारण अपने कारोबार को सीमित रखें। सातवें भाव में मंगल का होना गृहस्थ की ओर से परेशानी। यदि आप अभी विवाहित नही है तो इस वर्ष भी यह मसला लटकता ही रहेगा। यदि आप को ज़मीन जायदाद, वाहन सम्बन्धित कोई समस्या है तो थोडा सा परिश्रम करने से आप का यह मसला हल होगा। अगस्त 2008 तक का समय आप के लिये परेशानी का ही रहेगा। सप्तम्बर से सभी ग्रह राहु तथा केतु के घेरे में आयेगे। जिस से वर्ष के आखरी चार मास हर प्रकार से शान्ति के माहोल में गुज़रेगे, विद्यार्थियों के लिये भी परेशानी का वर्ष, विद्यार्थियों

को चाहिये कि वह डट कर पढाई में जुट जाये तभी सफलता की कुछ आशा दिखाई देती है। क्रूर ग्रहों को शान्त करने के लिये नव ग्रहों का पाठ स्वयं अवश्य करें।

धनु राशि का मासिक फल

अप्रैल ग्रहों की स्थिति को देखते हुये यह मास हर प्रकार से सर्व साधारण रूप में गुज़रेगा। आप की आमदनी सामान्य रहेगी, खर्च भी आमदनी के अनुसार ही रहेगा। स्त्री पक्ष से मानसिक अशान्ति का योग, नौकरी पेशा होने पर अपने अफसर लोगों के साथ अनबन।

मई मास के आरम्भ पर आठवां भौम आप के शरीर को प्रभावित कर सकता है विशेष तौर से रक्त विकार का योग अथवा चोट का भय, यदि जातक से भी भौम की स्थिति अच्छी नही होगी तो चीरफाड का योग।

जून इस मास में भी मंगल की स्थिति वैसी ही बनी हुई है सूर्य तथा बुध के छठे भाव में आने से आप के दफतर का माहोल आप के अनुकूल रहेगा। अफसर लोगों के साथ मिलने का योग जो आप के लिये लाभदायक रहेगा। विद्यार्थियों के लिये संघर्ष का महीना।

जुलाई ग्रहों की डावां डोल स्थिति को देखते हुये यह मास अशान्ति के माहोल में गुज़रेगा। आप की आमदनी में भी कुछ अस्थिरता का योग, कोई भी कार्य बिना किसी अडचन के सिद्ध होगा नहीं, आप जो भी काम करते हैं उस में किसी भी प्रकार का विघ्न आ सकता हैं।

अगस्त मास के आरम्भ पर सात ग्रहों का आठवें तथा नवें भाव में होना फलित ज्योतिष से शुभ फल के सूचक नही हैं अपने सगी सम्बन्धियों तथा मित्रों के साथ अनवन, जो आप के लिये परेशानी का कारण बनेगा, आप की आमदनी भी सीमित ही रहेगी।

सप्तम्बर मास के आरम्भ पर दसवें भाव में चन्द्रमा और बुध होने से दरबार की स्थिति में सुधार का योग। विभागीय पदोन्नति का अवसर भी मिल सकता है आप की आर्थिक

स्थिति में भी कुछ दृढता का योग परन्तु खर्च का योग भी प्रबल रहेगा।

अक्टूबर मास के आरम्भ में ग्रहों में विशेष परिवर्तन आने से आप की आर्थिक स्थिति में विशेष सुधार आयेगा। आप जो भी कार्य करते हैं उस में आशा से अधिक सफलता तथा लाभ, घर पर कोई ऐसा प्रोग्राम बनेगा जिस में अच्छी खासी धन राशि खर्च होगी।

नवम्बर चार ग्रहों का शुभ स्थिति में होना हर प्रकार से सुख और शान्ति का योग, शरीर स्वस्थ रहेगा, आमदनी भी अच्छी खासी रहेगी, खर्च भी किसी शुभ कार्य पर ही होगा, सन्तान पक्ष से कोई शुभ सन्देश मिलने का योग, यदि आप को सन्तान पक्ष से कोई चिन्ता है वह अवश्य दूर हो जायेगी।

दिसम्बर मास के आरम्भ पर केवल दो ग्रहों का शुभ होना तथा शेष ग्रहों का अशुभ होना थोडा बहुत संघर्ष का संकेत है संघर्ष का होते हुये भी हर क्षेत्र में सफलता का योग, आप की आमदनी भी सन्तोषजनक रहेगी, शरीर अस्वस्थ रहने की सम्भावना। विद्यार्थियों के लिये सफलता का महीना।

जनवरी चार ग्रहों का शुभ होना हर प्रकार से सफलता तथा लाभ देने के सूचक है दूसरे भाव में तीन शुभ ग्रहों का होना विशेष तौर से आप की आर्थिक स्थिति को दृढ करेंगे। आर्थिक स्थिति दृढ होने से आप के किसी भी कार्य मे रुकावट नही आ सकती है। शरीरिक स्थिति भी अच्छी रहेगी।

फरवरी शुभाशुभ ग्रहों की स्थिति को देखते हुये यह मास हर प्रकार से शान्ति के माहोल मे गुज़रेगा। आप जो भी कार्य करते हैं आप का काम अच्छी प्रकार से चलता रहेगा, आप की आमदनी भी सन्तोषजनक रहेगी, विद्यार्थियों के लिये सफलता देने वाला मास।

मार्च पांच ग्रहों के शुभ होने से यह मास हर प्रकार से सुख और शान्ति में गुज़रेगा। आप को आशा से अधिक लाभ मिलेगा। नौकरी पेशा होने पर दफतर में आदर व मान का योग। किसी पुण्यात्मा से मिलने का अवसर भी मिलेगा। गृहस्थ की ओर से शान्ति का योग।

मकर राशि का वर्षफल

नक्षत्र	उत्तराषाढा			श्रावण				धनिष्ठा	
चरण	2	3	4	1	2	3	4	1	2
नामाक्षर	भो	जा	जी	खी	खू	खे	खो	गा	गी

वर्ष के आरम्भ पर चार ग्रहों का शुभ स्थिति में होना तथा दो ग्रहों को वेध में होना हर प्रकार से सुख सम्पदा का सूचक है गोचर फलित के अनुसार तीसरा सूर्य तथा शुक्र होने से रोगों से मुक्ति, सुख चैन, सज्जनों एवं उच्च राज्याधिकारियों से मेल मिलाप, पुत्रों तथा मित्रों से धन लाभ तथा सम्मान, लक्ष्मी तथा मान प्रतिष्ठा की प्राप्ति, पदोन्नति, मित्रों की वृद्धि, शत्रुओं की पराजय, धन की प्राप्ति, साहस में वृद्धि, नौकरों का सुख, मान सम्मान में वृद्धि भाग्योदय, राज्य की ओर से लाभ, बहन-भाईयों का सुख, धर्म में रुचि इत्यादि दूसरा बुध तथा छठः भौम होने से धन अन्न, ताम्बादि तथा स्वर्ण की प्राप्ति, शत्रुओं पर सरलता से विजय, आनन्द की वृद्धि,

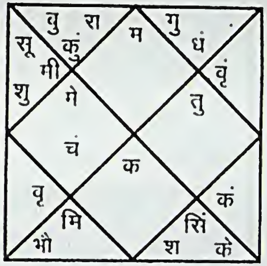

धन आभूषणों की प्राप्ति, भाषण शक्ति में वृद्धि और लाभ, विद्या प्राप्ति का उत्तम योग, अच्छे खाद्य पदार्थो की प्राप्ति तथा सम्बन्धियों से धन की प्राप्ति इत्यादि। फलित ज्योतिष के अनुसार शुभाशुभ ग्रहों पर विचार करने से मालूम होता है कि मकर राशि वालों के लिये यह वर्ष कोई शुभ समाचार लेकर आया है आप जो भी कार्य करते है नौकरी या कारोबार आप का काम अच्छी प्रकार से चलता रहेगा। आप को आशा से अधिक लाभ मिलेगा यदि आप अपने कारोबार को और बडावा देना चाहते हैं तो समय ज़ाया मत करो, ग्रह आप के अनुकूल है सफलता अवश्य होगी। यदि आप कोई इन्डस्ट्री इत्यादि खोलने का प्लान बना रहे हो तो उस को अमली रूप दीजिये सफलता आप को अवश्य मिलेगी यदि आप किसी सामाजिक संस्था अथवा राजनीतिक पार्टी से सम्बन्ध रखते हैं तो उस के हर प्रकार की सफलता तथा हर प्रकार से आदर व मान प्रतिष्ठा का योग। विद्यार्थियों के लिये हर प्रकार से सफलता का योग,

यदि आप उच्च विद्या के लिये कहीं जाना चाहते है तो उस को अमली रूप दीजिये सफलता आप को अवश्य मिलेगी। क्रूर ग्रहों को शान्त करने क लिये आप नित्य भगवान शंकर पर जल चढाते समय इस मन्त्र का उच्चारण करें।

ॐ नमः शम्भवाय च, मयोभवाय च, नमः शंकराय च मयस्कराय च, नमः शिवाय च शिवत्तराय च।

मकर राशि का मासिक फल

अप्रैल मास के आरम्भ पर शुभ ग्रहों का पलडा भारी होने से यह मास सुख शान्ति में गुजरेगा आप की आमदनी भी सन्तोष जनक रहेगी, घर पर सगे सम्बन्धियों मित्रों का आना जाना ज़ोरों पर रहेगा। यदि आप नौकरी की तलाश में है तो थोडा प्रयत्न करने से यह मसला हल होगा।

मई मास के आरम्भ पर सातवें भाव में भौम आने से स्त्री पक्ष से अशान्ति का योग, यदि आप अविवाहित हैं तो इस प्रकार का मसला लटकता ही रहेगा, आप जो भी कार्य कर रहे हैं आप का काम अच्छी प्रकार से चलता रहेगा।

जून : ग्रहों की स्थिति को देखने से विदित होता है कि यह मास हर प्रकार से दौड धूप के ही माहोल में गुज़रेगा, बारहवां बृहस्पति आपकी पाचन शक्ति पर प्रभाव डाल सकता है लग्न में राहु होने से छोटी मोटी यात्रा का योग, नौकरी पेशा होने पर स्थान परिवर्तन का योग।

जुलाई मास के आरम्भ पर आठवें भाव में भौम तथा शनि, पहले भाव में राहु तथा वारहवे भाव में वृहस्पति का होना शरीर सुख के लिये मध्यम आर्थिक दृष्टिं से यह महीना टीक ही रहेगा। स्त्री पक्ष से चिन्ता का योग।

अगस्त मास के आरम्भ पर ग्रहों मे विशेष हेरफेर न होने के कारण यह मास भी गत मास की तरह गुजरेगा, शरीर की स्थिति ज्यो की त्यों रहेगी यदि जातक से किसी अच्छे ग्रह की दशा चल रही है तो फिर शरीर सुख का योग, नही तो शरीर के विषय में सावधान रहने की जरूरत।

सप्तम्बर मास के आरम्भ पर ही राहु तथा केतु ने सभी ग्रहों को अपने घेरे में लिया है यह स्थिति दिसम्बर मास तक रहेगी सामूहिक रूप से यह स्थिति हर प्रकार से लाभदायक रहेगी, आप के सभी अदूरे कार्य पूरे हो जायें गे आप की आमदनी में भी स्थिरिता आयेगी।

अक्टूबर शुभाशुभ ग्रहों की स्थिति को देखते हुये यह मास हर प्रकार से सुख और शान्ति में गुज़रेगा आप की आमदनी तथा खर्च एक जैसा रहेगा, घर पर कोई शुभ कार्यक्रम का प्रोग्राम बनेगा, जिस में सभी सगे सम्बन्धी सम्मिलित होंगे।

नवम्बर दसवें भाव में सूर्य, भौम तथा बुध के होने से दरबार का योग उत्तम, दरबार में हर समय आदर व मान का योग, विभागीय पदोन्नति का योग भी बनता है यदि आप कारोबार करते है तो उस में आशा से अधिक लाभ की प्राप्ति।

दिसम्बर मास के आरम्भ पर ग्यारहवें तथा बारहवें भाव में सभी ग्रहों का होना शुभ फल को दरशाता है। इस शुभ योग के प्रभाव से विशेष तौर पर आप की आर्थिक स्थिति में सुधार होगा आप को आशा से अधिक लाभ मिलेगा, खर्च का योग भी अधिक।

जनवरी मास के आरम्भ पर बारहवें भाव में मंगल तथा सूर्य का होना शरीर सुख के लिये मध्यम विशेष तौर से रक्त विकार का योग अथवा चोट का भय, सर दर्द का योग भी बनता है। लग्न में राहु होने से स्थान परिवर्तन का योग।

फरवरी मास के आरम्भ पर लग्न में भौम, बुध तथा बृहस्पति के होने से शरीर सुख का योग मध्यम यदि जातक से किसी अच्छे ग्रह की दशा चल रही है तो किसी चिन्ता का कोई योग नही। आप की आमदनी ज्यों की त्यों रहेगी।

मार्च ग्रहों में विशेष फेर बदल न होने के कारण शरीर की स्थिति इस मास में भी वैसी ही रहेगी परन्तु किसी प्रकार के भय का कोई योग नही है आप की आर्थिक स्थिति स्थिर रहते हुये खर्च के बडे बडे प्लान बनते रहेंगे, विद्यार्थियों के लिये सफलता का महीना।

कुम्भ राशि का वर्षफल

नक्षत्र	धनिष्ठा		शतभिषजि				पू0 भाद्रपदा		
चरण	3	4	1	2	3	4	1	2	3
नामाक्षर	गू	गे	गो	सा	सी	सू	से	सो	दा

वर्ष के आरम्भ पर चार ग्रहों का शुभ होना तथा दो ग्रहों का वेध में होना हर प्रकार से शुभफल का संकेत है विशेष तौर से धनु राशि का बृहस्पति ग्यारहवें भाव में बैठा है गोचर फलित के अनुसार तीसरा चन्द्रमा होने से धन की प्राप्ति, वस्त्रादि का सुख, स्वस्थ शरीर, शत्रुओं पर विजय बन्धुजनों से लाभ, जनता से प्रेम बडता है, भाग्य में वृद्धि ग्यारहवां बृहस्पति होने से धन और प्रतिष्ठा की वृद्धि, शत्रुओं की पराजय, समस्त कार्यों में सफलता, विवाह अथवा पुत्र जन्म का योग, नौकरी में पदोन्नति, पुत्रों तथा राज्याधिकारियों से सुख, शुभ कार्यों में रुचि तथा वृद्धि, दूसरा शुक्र होने से ध ान की प्राप्ति, शरीर स्वस्थ, उत्तम स्त्री सुख, सन्तान प्राप्ति का योग, राज्य की ओर से मान, विद्या में उन्नति, गायन

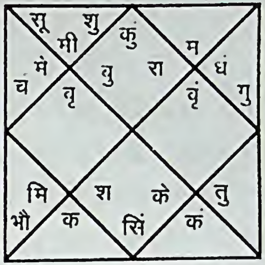

वादन में रुचि, शत्रुओं का नाश इत्यादि फलित ज्योतिष के आधार पर शुभाशुभ ग्रहों पर विचार करने से मालूम होता है। कि कुम्भ राशि वालों के लिये यह वर्ष हर प्रकार से सुख और शान्ति में गुज़रेगा क्योंकि ग्यारहवें भाव का बृहस्पति होना हर प्रकार से शुभ फल देने वाला होता है ज्योतिष में बृहस्पति को एक महत्वपूर्ण स्थान मिला है इस कारण जन्मचक्र अथवा गोचर चक्र में बृहस्पति की स्थिति अच्छी होनी चाहिये, बृहस्पति में बहुत शक्ति है यह किसी भी अनिष्ट का मुकाबला कर सकता है। शनि देव आप के लग्न को देख रहा है शनि की नज़र को मनहूस माना जाता है इस कारण यह आप के शरीर को प्रभावित कर सकता है। पाचवें भाव में भौम के होने से सन्तान पक्ष की ओर से चिन्ता तथा विद्यार्थियों के लिये संघर्ष का वर्ष, कठिन परिश्रम करके ही सफलता की आशा रखे। क्रूर ग्रहों को शान्त करने के लिये तथा अपने जीवन को सफल बनाने का एक मन्त्र उपाय है अपने माता पिता की सेवा करना।

कुम्भ राशि का मासिक फल

अप्रैल शुभाशुभ ग्रहों पर विचार करने से विदित होता है यह मास सुख और शान्ति के माहोल में गुज़रेगा। आप जो भी कार्य करते है आप का कार्य बिना किसी रुकावट के चलता रहेगा, आप की आमदनी भी सन्तोषजनक ही रहेगी।

मई मास के आरम्भ पर छः ग्रहों का शुभ होना हर प्रकार से सुख और शान्ति का सूचक है प्रत्येक कार्य में सफलता तथा लाभ, घर पर कोई शुभ कार्यक्रम का प्रोग्राम बनेगा जिस में आप के सभी सम्बन्धी मित्र सम्मिलित होंगे।

जून चौथे भाव में तीन ग्रहों के कारण यदि आप को जमीन जायदाद, वाहन इत्यादि से सम्बन्धित कोई मसला है तो इस मास में हल होने के आसार दिखाई देते हैं आप की आर्थिक स्थिति में किसी प्रकार का हेर फेर नही होगा।

जुलाई सातवां भौम तथा बारहवां राहु आप के शरीर को प्रभावित कर सकते हैं परन्तु शेष ग्रहों की स्थिति को देखते हुये किसी प्रकार के भय का कोई योग नही है यदि आप शरीर से पहले से अस्वस्थ है तो शरीर के विषय में सावधान रहना पडेगा।

अगस्त छठे भाव में चार ग्रहो का एक साथ होना हर प्रकार से शुभ फल का संकेत है विशेष तौर पर आप के दरबार की स्थिति सुदृढ होगी। दरबार मे आदर व मान का योग, अच्छे अच्छे पुण्यात्माओं के साथ मिलने का योग।

सप्तम्बर मास के आरम्भ पर आठवें भाव में चार ग्रहों चन्द्रमा, मंगल, बुध तथा शुक्र का होना शरीर सुख के लिये मध्यम माना जाता है शेष ग्रहों की स्थिति को देखते हुये किसी प्रकार के भय का कोई योग नही हैं।

अक्टूबर भाग्यस्थान में तीन ग्रहों का होना शुभ योग को दरशाता है आप में आध्यात्मिक प्रवृति बडेगी, किसी पुण्यात्मा से सम्पर्क का योग जिस की प्रतीक्षा आप बहुत समय से कर रहे है, सन्तान पक्ष से कोई शुभ समाचार।

नवम्बर सभी ग्रहों का नवे, दसवें, ग्यारहवें तथा बारहवें भाव में होना हर प्रकार से शुभ फल का सूचक है यह शुभ योग विशेष तोर से आप की आर्थिक स्थिति को सुदूढ बनायेगा। आप को आशा से अधिक लाभ होगा, स्त्री पक्ष से विशेष शान्ति का योग।

दिसम्बर मास के आरम्भ पर दसवें तथा ग्यारहवें भाव मे

छः ग्रहों का होना हर प्रकार से शुभ फल का संकेत है विशेष तौरसे दरबार का उत्तम योग, यदि आप किसी सामाजिक संस्था से सम्बन्ध रखते है तो उस में आदर व मान का योग।

जनवरी बारहवें भाव में चार ग्रहों का एक साथ होना शरीर सुख के लिये ठीक नही है इस कारण यह आप के शरीर को प्रभावित कर सकते है परन्तु शेष ग्रहों की स्थिति को देखते हुये किसी प्रकार के भय का कोई योग नहीं है।

फरवरी बारहवें भाव में सूर्य, भौम, बृहस्पति तथा राहु का होना फलित शास्त्र के अनुसार एक अशुभ योग है आप को शरीर के विषय में सावधान रहने की जरूरत है विशेष तौर से सर दर्द अथवा चोट का भय, विद्यार्थियों के लिये सफलता का महीना।

मार्च मास के आरम्भ पर ग्रहों में किसी प्रकार का परिवर्तन न होने के कारण यह मास भी गत मास की तरह ही गुज़रेगा, गृहस्थ सम्बन्धित चिन्ताओं के कारण मानसिक अशान्ति आप की आमदनी सामान्य रहेगी, विद्यार्थियों के लिये सफलता का महीना।

यदि आप अपने संस्कारों के विषय में जानना चाहते हैं तो अवश्य इस पुस्तक से लाभ उठायें।

यह पुस्तक आप को मिलसकती हैः–

1. विजयेश्वर पंचांग कार्यालय तालाब तिलो जम्मू
2. पं० प्रेमनाथ शास्त्री सांस्कृतिक शोध स्थान जम्मू
3. जे० के० बुक शाप तालाब तिलो जम्मू
4. Krishn Lal Masala Store 271 INA Market New Delhi

मीन राशि का वर्षफल

नक्षत्र	पू0	उत्तराभाद्रपदा				रेवती			
चरण	4	1	2	3	4	1	2	3	4
नामाक्षर	दी	दू	थ	झ	ञ	दे	दो	च	ची

वर्ष के आरम्भ पर केवल शुक्र तथा शनि का शुभ होना संघर्ष का सूचक है गोचर फलित के अनुसार पहला शुक्र होने से सुख और धन की प्राप्ति, शत्रु का नाश, विवाह अथवा पुत्र जन्म का योग, विद्याध्ययन में सफलता सब प्रकार के आमोद-प्रमोद और वैभव विलास की प्राप्ति, सत्यता की ओर झुकाव, व्यापार में वृद्धि, जलीय पदार्थों तथा सुगन्धित द्रव्यों तथा फैन्सी गुडस से लाभ, छठः शनि होने से धन, अन्न और सुख की वृद्धि शत्रुओं पर विजय भूमि, मकान आदि की प्राप्ति, शरीर स्वस्थ, गृहस्थ सुख का योग इत्यादि शेष सात ग्रहों की स्थिति अशुभ है। शुभाशुभ ग्रहों की स्थिति को देखते हुये प्रतीत होता है कि मीन राशि वालों का यह वर्ष संघर्ष से परिपूर्ण रहेगा। कोई भी कार्य बिना रुकावट के सिद्ध होगा नही, आप जो भी कार्य करते है नौकरी या कारोबार आप को हर क्षण सावधान रहने की ज़रूरत नौकरी पेशा होने पर आप पर झूठा इलजाम लगने का योग, कारोबारी होने पर लोगों के पास पैसा फसने का योग

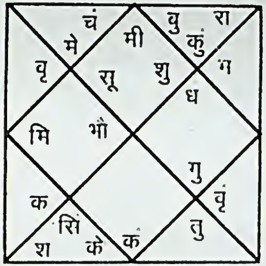

अथवा हानि की सम्भावना यदि जातक से किसी अच्छे ग्रह की दशा चल रही है तो इस प्रकार के योगों से छुटकारा हो सकता है यदि जातक से भी किसी क्रूर ग्रह की दशा चल रही होगी तो ऊपर लिखित योग का होना अवश्य होगा। चौथे भाव में भौम का होना स्त्री पक्ष से चिन्ता का योग, यदि आप अविवाहित हैं तो इस प्रकार का मसला इस वर्ष लटकता ही रहेगा, बारहवां बुध तथा राहु आप के शरीर को प्रभावित कर सकते हैं। शरीर अस्वस्थ रहने का योग, विद्यार्थियों के लिए हर प्रकार से सफलता का योग यदि आप उच्च विद्या के लिये अथवा नौकरी के लिये विदेश अथवा और कहीं जाना चाहते है तो आप इस प्रोग्राम को अमली रूप दीजिये, सफलता आप

को अवश्य मिलेगी। क्रूर ग्रहों को शान्त करने के लिये आप नित्य इस मन्त्र का उच्चारण करें।

सर्वा बाधा-विर्निमुक्तों धन धान्य समन्विता:।
मनुष्यो मत्प्रसादेन, भविश्यति न संशाय:।।

मीन राशि का मासिक फल

अप्रैल ग्रहों की शुभाशुभ स्थिति को देखते हुये यह मास दौड धूप के माहोल में ही गुज़रेगा, आप के कार्यो में अचानक रुकावट का योग, आप की आमदनी भी सीमित रहेगी, खर्च के बडे बडे प्रोग्राम बनते रहे गे जो आप के लिये परेशानी का कारण बनेगा।

मई मास के आरम्भ पर केवल तीन ग्रहों का शुभ होना भी संघर्ष का ही सूचक है नोकरी पेशा होने पर दफतर का माहोल आप के अनुकूल नही रहेगा, अपने अफसर लोगों के साथ अनबन के कारण मानसिक अशान्ति का योग।

जून ग्रहों में विशेष परिवर्तन न आने के कारण यह मास भी दौड धूप के माहोल में गुजरेगा। कार्यो में अचानक रुकावट का योग, नौकरी पेशा होने पर यदि आप को किसी प्रकार की विभागीय पदोन्नति का कोई अवसर है तो उस मे रुकावट का योग, कारोबारी होने पर लाभ में अचानक कमी।

जुलाई ग्रहों में थोडा सा हेर फेर होने के कारण यह महीना कुछ शान्ति के ही माहोल मे गुज़रेगा। आप जो भी कार्य करते है वह सामान्य रूप से चलता रहेगा परन्तु शत्रुवर्ग आप पर हावी होने का प्रयत्न करेगा। जो आप के लिये अशान्ति का कारण बनेगा।

अगस्त ग्रहों की स्थिति को देखते हुये यह मास भी दौड धूप के माहोल में ही गुजरेगा, पाचवें भाव मे चार ग्रहों के होने से सन्तानपक्ष की ओर से चिन्तां का योग, पांचवा भाव जो कि विद्यास्थान भी कहलाता है विद्यार्थियों के लिये परेशानी का महीना।

सप्तम्बर सभी ग्रहों को राहु तथा केतु ने दिसम्बर तक घेर के रखा है इस स्थिति के कारण तथा ग्रहों की अस्त व्यस्त स्थिति के कारण यह समय हर प्रकार से अशान्ति का

ही रहेगा, कार्यो में अचानक रुकावट सगे सम्बन्धियों से अनबन, विद्यार्थियों के लिये चिन्ता का समय।

अक्टूबर मास के आरम्भ पर ग्रहों की अस्त व्यस्त स्थिति को देखते हुये विदित होता है कि यह मास अशान्ति के माहोल में ही गुज़रेगा यदि आप किसी सामाजिक संस्था के साथ सम्बन्ध रखते हैं तो वहां पर जन्ता का रोष सुनना पडेगा जो आप के लिये चिन्ता का कारण बनेगा।

नवम्बर यह मास भी गत मास की तरह अशान्ति के माहोल में ही गुज़रेगा। आप जो भी कार्य करते हैं उस में अचानक रुकावट का योग तथा आर्थिक स्थिति में फेर बदल जो कि अशान्ति का कारण बन सकता है गृहस्थी होने पर स्त्री पक्ष की ओर से चिन्ता।

दिसम्बर शुभाशुभ ग्रहों को वेधाष्टकवर्ग की कसौटी पर परखने से विदित होता है कि यह मास हर प्रकार से दौड धूप के वातावर्ण में गुज़रेगा। हर कार्य में रुकावट आने पर भी किसी प्रकार की हानि का कोई योग नही है, घर पर खर्च के बडे बडे प्रोग्राम बनेगे।

जनवरी मास के आरम्भ पर ग्रहों में परिवर्तन आने से यह मास हर प्रकार से शान्ति के माहोल में गुज़रेगा, बहुत देर से रुके हुये कार्य फिर से हरकत में आयेगे, दफतर का माहोल आप के अनुकूल रहेगा, आप की आमदनी में भी बडोत्तरी होगी।

फरवरी मास के आरम्भ पर ग्यारहवें भाव में चार ग्रहों का होना हर प्रकार से शुभ फल का संकेत है प्रत्येक कार्य बिना किसी रुकावट के हल होगा। आप की आमदनी भी सन्तोषजनक रहेगी। परन्तु खर्च के प्लान भी बनते रहेंगे, घर पर सग्गे सम्बन्धियों का आना जोरों पर रहेगा।

मार्च इस मास की ग्रहस्थिति भी गत मास की तरह ही है ग्यारहवें भाव का बृहस्पति होने से आप का प्रत्येक कार्य अच्छी प्रकार से सम्पन्न होगा। कारोबारी होने पर आशा से अधिक लाभ, घर पर शुभ कार्यो का सम्पन्न होना, तथा अच्छे कार्यों पर धन का खर्च।

साढ-सत्ती 2008

कर्कट सिंह कन्या

कर्कट

16 जुलाई 2007 से शनि देव आप के चौथे, आठवें तथा ग्यारहवें भाव को देख रहा है तथा स्वयं दूसरे भाव में बैठा हैं। दूसरे भाव में बैठने से आप की आर्थिक स्थिति में विशेष बढोत्तरी होगी, कारोबारी होने पर आशा से अधिक लाभ, नौकरी पेशा होने पर यदि आप की विभागीय पदोन्नति रुकी हुई थी उस की रुकावट दूर होगी, यदि आप को ज़मीन जायदाद सम्बन्धित कोई मसला है तो इस प्रकार का मसला लटक़ता ही रहेगा। शनि देव आप के शरीर को भी प्रभावित कर सकता है यदि जातक में शनि की स्थिति अच्छी है तो साढसत्ती आपके लिये हर प्रकार से शुभ फलदायक रहेगी। शनि को शान्त करने के लिये इस मन्त्र का उच्चारण नित्य किया करें। कर्कट राशि वालों की साढसत्ती 1 सप्तम्वर 2009 को समाप्त होगी।

नमस्ते रौद्र देहाय नमस्ते चान्तकाय च
नमस्ते यमसंज्ञाय नमस्ते शौरये विभो।।

सिंह

शनि देव आप के तीसरे, सातवें तथा दरवार को देख रहा है जिस के प्रभाव से भाई बन्धु, सम्बधियों, मित्रों से अनबन रहेगी जो आप के लिये परेशानी का कारण बनेगा, फलित ज्योतिष के अनुसार शनि देव कुण्डली के जिस भाव में होता है उस की वृद्धि करता है। लग्न में शनि का होना हर प्रकार से लाभदायक तथा संफलता देने वाला है, आप की आर्थिक स्थिति में कभी शिथिलता आयेगी तथा कभी सुदृढ बनेगी जो आप के लिये चिन्ता का कारण बनेगा। यदि जातक में शनि की स्थिति अच्छी नही होगी तो शनि का प्रभाव बुरा ही होता है। शनि के क्रूर प्रभाव को शान्त करने के लिये शनिवार को वैशनव रहें तथा इस मन्त्र का उच्चारण नित्य करें। सिंह राशि वालों की साढसत्ती 15 नवम्बर 2011 को समाप्त होगी।

नमस्ते मन्दसंज्ञाय शनैश्चर नमोस्तुते।
प्रसादं कुरु देवेश दनस्य प्रणतंस्यच।

कन्या राशि वालों की साढसत्ती वास्तव में 1 नवम्बर 2006 को आरम्भ हुई है तथा 2 नवम्बर 2014 को समाप्त होगी। शनि देव आप के धन, गृहस्थ तथा दरबार को देख रहा है। यह आप के तीनों भावों को प्रभावित कर सकता है क्योंकि शनि देव की नज़र को फलित ज्योतिष में मनहूस माना गया है यह तीनों चीज़े मनुष्य जीवन के लिये अहम है इस कारण कन्या राशि वालों के लिये साढसत्ती परेशानी लेकर ही आई है परन्तु यदि आप के जातक में शनि की स्थिति ठीक है तो किसी प्रकार के भय का कोई योग नही है। शनि के क्रूर प्रभाव को कम करने के लिये स्वयम नव ग्रहों का पाठ करें तथा हर शनिवार को प्रातः गौ माता को आटे का पिण्ड खिलाये।

ढय्या

वृष मकर

वृष राशि वालों की ढय्या 1 नवम्बर 2006 को आरम्भ हुई है शनि देव आप के चौथे भाव मे बैठ कर आप के छटे, दसवें तथा लग्न को देख रहा है यह आप के दरबार को प्रभावित करं सकता है। दरबार में अपने अफ़सर लोगों के साथ अनबन जो आप के लिये परेशानी का कारण बनेगा। शनि देव आप के चौथे भाव में बैठे है जो आप को जायदाद सम्बन्धित सभी मसलों को हल करेगा यदि आप वाहन इत्यादि लाना चाहते तो उस को अमली रूप दीजिये।

मकर मकर राशि वालों की ढय्या 1 नवम्बर 2006 को आरम्भ हुई है। शनि आप के आठवें भाव में बैठा है जो शरीर सुख का सूचक है शनि देव आप के दरबार को देख रहा है जो आप को दरबार सम्बन्धित परेशानी रख सकता है। शनि देव आप को सन्तान पक्ष से भी परेशान कर सकता है तथा विधार्थियों के लिये भी असफलता का सूचक है। शनि का प्रभाव आम तौर पर बुरा ही होता है।

ऋतु पति

प्रेप्युन में ऋतुपति नारायण का नाम आता है वहां अपने अपने मास का ऋतुपति पढ़ना होता है इसी कारण यहां पर हर मास का ऋतुपति नारायण लिख रहा हूं।

वैशाखेः- शोभासहिताये, जनार्दनाये, विभूति सहिताये, मधुसूदनाये
ज्येष्ठेः- महिमा सहिताये, उपेन्द्राय, इच्छा सहिताये, त्रिविक्रमाये
आषाढेः- लक्ष्मी सहिताय, यज्ञ पुरुषाय, धरती सहिताय, वामनाय
श्रावणेः- कान्ति सहिताय, वासुदेवाय, रतिसहिताय, श्रीधराय
भाद्रपदेः- प्राप्रिसहिताय, हरये, माया सहिताय, हृषिकेषाय
आश्विनेः- पराकाम्या सहिताय, योगीश्वराय, धी सहिताय, पद्मनाभाय
कार्तिकेः- लिगमासहिताय, पुण्डरी काक्षाय, गरिमासहिताय, दामूदराय
मार्ग शीर्षेः- रुक्षमणि सहिताय, कृष्णाय, श्री सहिताय केशवाय,
पौषेः- प्रियासहिताय अनन्ताय, वाङ्गीश्वरी सहिताय, नारायणाय
माघेः- प्रीतिसहिताय, अच्युताय, कान्ता सहिताय, माधवाय
फाल्गुनेः- शक्ति सहिताय, चक्रिणे, क्रयासहिताय, गोविन्दाय
चैत्रेः- सिद्धि सहिताय, वैकुण्ठाय, मतिसहिताय, विष्णवे

तर्पण के लिये कुछ जानकारी

तपर्ण करते समय पहले महीना, पक्ष, तिथि और वार का नाम लें उस के पश्चात पित्रों का नाम लें जैसेः-

मासः- वैशाख मासस्य ज्येष्ठ मासस्य, आषाढ मासस्य, श्रावण मासस्य, भाद्रमासस्य, अश्विन मासस्य, कार्तिक मासस्य, मार्गमासस्य, पौष मासस्य, माघ मासस्य, फाल्गुन मासस्य, चैत्र मासस्य।

पक्षः- शुक्लपक्षस्य, कृष्णपक्षस्य।

तिथिः- प्रतिपदि, द्वितीयस्यां, तृतीयस्यां, चर्तुथ्यां, पंचम्यां, षष्ठयां, सप्तम्यां, अष्टम्यां, नवम्यां, दशम्यां, एकादशयां, द्वादश्यां, त्रयोदश्यां, चतुर्दश्यां, पूर्णिमायां, अमावस्यां।

वारः-

रविवार : रविवासरानितायां, सोमवार : सोमवासरानितायां
मंगलवार : मंगलवासरानितायां, बुधवार : बुधवासरानितायां
गुरुवार : गुरुवासरानितायां, शुक्रवार : शुक्रवासरानितायां
शनिवार : शनिवासरानितायां।

पित्रों का नाम लेने की विधि :-

पिता :- पित्रे (पिता का नाम) पितामहे (दादा का नाम) प्रपितामहे (परदादा का नाम)

मात्रे :- मात्रे (माता का नाम) माता की सास (पितामहे) माता की सास की सास (प्रपितामहे)

नानाः- मातामाहे (परनाना) प्रमातामाह्ये (उसका पिता) वृद्ध प्रमातामाह्ये

नानीः- मातामह्यै (परनानी) प्रमातामह्यै (उस की सास) वृद्ध प्रमातामह्यै

तपर्ण करते समय यह खयाल रखें कि यदि मातापिता जीवित हैं तो उन का नाम न लीजिये, पित्रों के नाम के साथ गोत्र का नाम भी लेना होता है जैसे

तत्सत् ब्रह्म, अध्य तावत् तिथौ अद्य माघ मासस्य कृष्ण पक्षस्य, तिथौ अमावस्यां, मंगल वासरानितायां पित्रे विष्णुदराय, भारद्वाजाय, पितामहाये कृष्णदराय, भारद्वाजाये प्रपितामहाये राज्यदराय भारद्वाजाये, मात्रे लीला वती देवयै, भारद्वाज्यै पितामह्यै अमरावती देव्यै, भारद्वाज्यै पितामह्यै अरनदती देव्यै भारद्वाज्यैः।

यहां पर "भारद्वाज" गोत्र का नाम है।

यदि तिथि "दि" हो तो दोतिथियां पढ़ी जाती हैं यथा द्वितीयस्यां परता तृतीयस्यां।

देवगौण के दिन मुहूर्त देखने की ज़रूरत नहीं है

शास्त्री जी कहते थे

1 हर काश्मीरी घर में बोलचाल काश्मीरी भाषा में होनी चाहिये।
2 काश्मीर को शरदा पीठ कहते हैं अतः शारदालिपि सीखिये।
3 काश्मीरी विद्यार्थियों को चाहिये उत्तर की ओर (काश्मीर की ओर) मुख करके विद्याध्ययन के समय बैठा करें निश्चय रखिय सफ़लता अवश्य होगी।
4 जन्म दिन होया कोई शुभ त्यौहार पीला चावल (तहर) जरूर बनायें यह काश्मीरी पण्डितों की एक पहचान है इस में कोई तामसिक पदार्थ न डालें।
5 गण्डुन, धर नावय तथा महन्दी रात के दिन "वरी" में तामसिक पदार्थ न डालें।
6 बुजर्गो को हाथ जोड कर प्रणाम कीजिये, माता-पिता से बढ कर कोई गुरु नहीं है हर कष्ट से बचने का उपाय है माता पिता की सेवा करना तथा आदर करना।
7 माता-पिता का श्राद्ध दिन भूलिये मत उस दिन अवश्य किसी दरिद्र नारायण की यथा शक्ति सेवा करें।
8 श्राद्ध के दिन मांस बनाना या खाना उस पितर को नरक में घसीटना है
9 जन्मदिन पर मांस बनाना या खाना उस मनुष्य की आयु कम करना है
10 महिलाये तथा लड़कियां बाल न कार्टे, बाल काटना अपशकुन है

शारदा पढ़िये

शारदा लिपि काश्मीरी पण्डितों की प्राचीन संस्कृति का चिन्ह है, हमारे पूर्वजों ने अथाह प्रयत्न से इस सुन्दर लिपि को बनाया है, काश्मीर के प्राचीन शैव, तान्त्रिक ऐतिहासिक तथा कर्मकाण्ड सम्बन्धित सभी ग्रंथ इसी शारदा लिपि में लिखे गये परन्तु आजकल यह लिपि मृत प्राय हो चुकी है इस का पुनरुद्धार करना प्रत्येक काश्मीरी पण्डित का कर्तव्य है। हम ने शारदा लिपि का प्राईमर बनाया है आप को हमारे कार्यालय से मुफ्त मिल सकता है।

𑆱𑇀𑆮𑆫 स्वर	𑆃 अ	𑆄 आ	𑆅 इ	𑆆 ई	𑆇 उ	𑆈 ऊ	𑆉 ऋ	𑆊 ॠ
	𑆍 ए	𑆎 ऐ	𑆏 ओ	𑆐 औ	𑆃𑆁 अं	𑆃𑆂 अः		

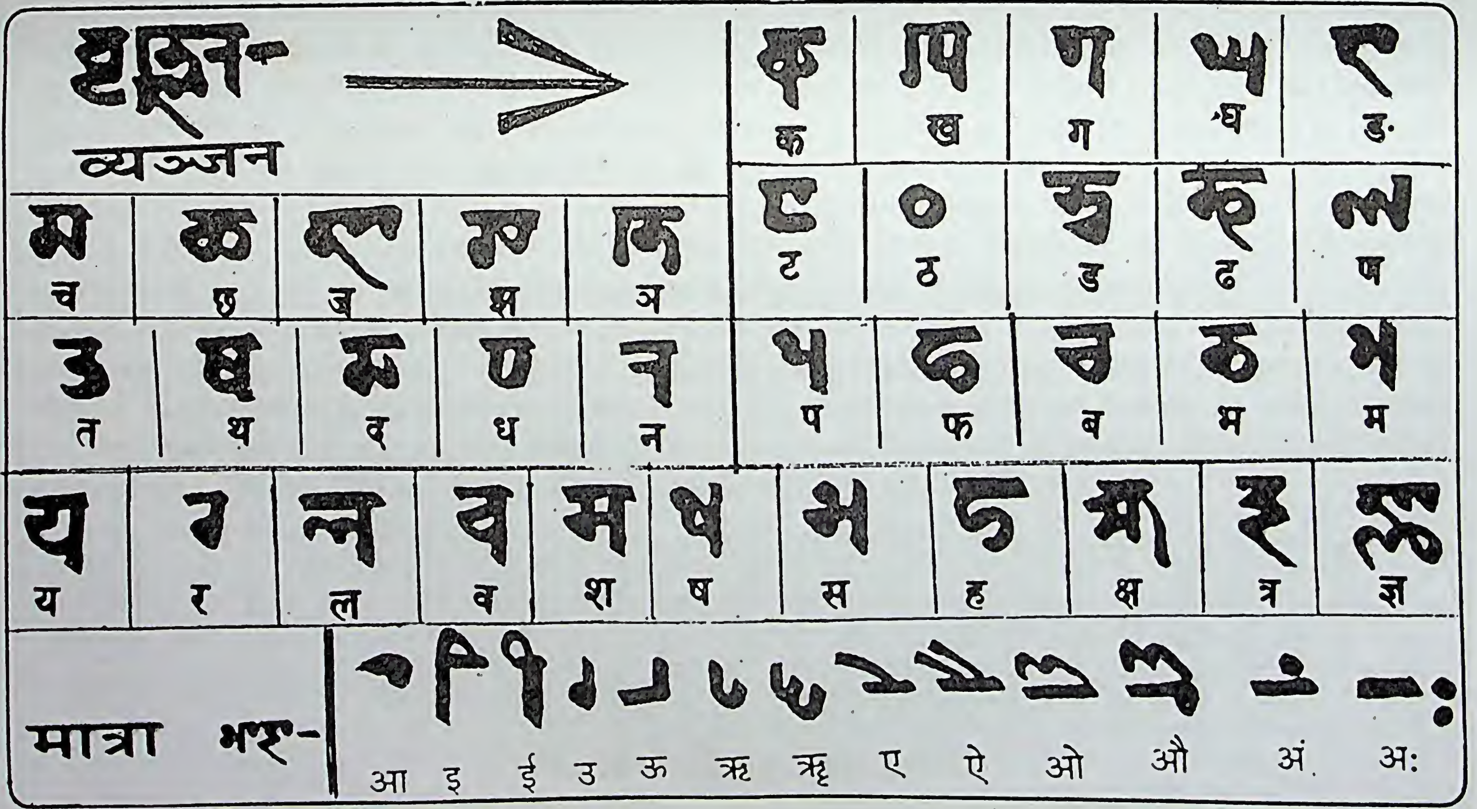
व्यञ्जन
क ख ग घ ङ
च छ ज झ ञ
ट ठ ड ढ ण
त थ द ध न
प फ ब भ म
य र ल व श ष स ह क्ष त्र ज्ञ
मात्रा
आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ ए ऐ ओ औ अं अः

आमदन खर्च का चित्र

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुंभ	मीन
लाभ	14	8	14	8	11	14	8	14	11	5	5	11
हानि	11	5	2	14	11	2	5	11	2	5	5	2

आमदनी और खर्च के अंकों के जोड़ से एक कम करक आठ पर भाग दीजिये, यदि

(1) एक बाकी बचेः- तो यह वर्ष सुख शान्ति के वातावरण में तथा आदर मान से व्यतीत होगा, यदि आप नौकरी करते हैं तो अचानक तर्की की सम्भावना है यदि आप नौकरी के तलाश में हैं तो प्रयत्न करने पर अवश्य सफलता होगी, यदि आप तिजारत करते हैं तो आप कारोबार को विशाल बनाने के निमित्त बेखटके धन लगायें, आप के कारोबर को विशाल बनाने के निमित्त यह वर्ष रिकार्ड होगा, कारोबार सम्बन्धित प्रत्येक काम में आप को लाभ रहेगा, विद्यार्थियों के लिये भी यह वर्ष अनुकूल है आप प्रयत्न कीजिये आशा से अधिक सफलता होगी।

(2) दो बाकी बचेः- जिन तर्की की आशाओं को लेकर आप बहुत समय से प्रतीक्षा कर रहे हैं प्रायः सभी आशायें पूर्ण होगी हर आरम्भ किये हुये कार्य में सफलता निश्चित रूप से होगी, सफलता के साथ साथ आदरमान की दृष्टि से भी यह वर्ष उत्तम रहेगा, आप परिश्रम कीजिये ग्रह आप के सहायक हैं। यदि आप व्योपारी हैं आपका व्योपार यदि खाद्य पदार्थों से सम्बन्धित है तो उत्तम लाभ की आशा रखें, यदि आप कपड़े सम्बन्धित काम करते हैं तो लाभ की आशा न रखें, किरयाना लोहा मशीनरी सम्बन्धित काम करने वाले व्योपारी लाभ में रहेंगे, यदि आप का काम फलों बागों से सम्बन्धित है तो दौड़-धूप अधिक परन्तु अन्त में जाकर आपने खसारा में ही रहना होगा। नौकरी पेशा

होने पर नौकरी सम्बन्धित कोई समस्या क्यों न हो जरा सी सावधानी से कदम उठाने पर हर समस्या का समाधान होगा, हर पहलू से उत्तम समय होने पर भी शरीर के विषय में सावधान रहना चाहिये, शरीर को स्वस्थ रखने के लिये उपाय के रूप में किसी भी मादक द्रव्य का सेवन न करें रविवार को निश्चित रूप से वैष्णव रहें।

(3) तीन बाकी बचे:- तो यह वर्ष संघर्ष को होगा, कोई भी कार्य उलझनों व रुकावटों का सामना किये बिना सफल नहीं होगा, घरेलू परेशानियां भी आप को घेरी रखेंगी केवल परिवार में सन्तान पक्ष से शन्ति रहेगी घर में कोई महोत्सव रचाने का प्रोग्राम बनेगा जिस में अधिक से अधिक धन राशि का व्यय होगा शरीर के विषय में सावधान रहिये चोट आदि लगने का भी अन्देशा है, किसी रिश्तेदार मित्र अथवा किसी विश्वासपात्र से धोखा लगने का योग है, उपाय के रूप में 'हनुमान चालिसा' अथवा 'बहुरूपगर्भ' का पाठ नियम से करें किसी भी दिन नागा न करें, यदि किसी दिन पाठ न कर सकोगे तो दूसरे दिन भी उस दिन का पाठ करें, यदि आप विद्यार्थी हैं आप को इस वर्ष सावधान रहना चाहिये रात दिन परश्रिम करने पर ही सफलता की आशा रखें, वह सफलता भी इच्छानुसार नहीं होगी, यदि आप इस वर्ष सफलता चाहते हैं तो नियम से घर के किसी वृद्ध सदस्य अथवा माता-पिता के चरणों को प्रातः प्रणाम करके नित्य उन से आर्शिवाद प्राप्त करें।

(4) यदि चार बाकी बचे:- तो यह वर्ष संघर्ष तथा दौड़-धूप में ही गुजरेगा हर एक कार्य में कोई न कोई उलझन खड़ी होगी, यदि आप नौकरी पेशा है तो मर्जी के उलट स्थान परिवर्तन होगा, गृहस्थी होने पर घरेलू परेशानियां आप को घेरी रखेंगी, आमदनी इस वर्ष ज्यों की त्यों बनी रहेगी परन्तु खर्च के नये-नये रास्ते निकल आयेंगे यदि आप व्योपारी हैं, तो लेनदेन के विषय में सावधान रहें अचानक धोखा लगने का अन्देशा है, लेनदेन अथवा धन के सम्बन्ध में किसी गैर का विश्वास न कीजिये बाद में पछताना पडेगा, जायदाद सम्बन्धित कोई झगडा खड़ा होने का अन्देशा है, जायदाद सम्बन्धित किसी झगड़े का आरम्भ दिख पड़ते ही आपस में सुलह करने में दिलचस्पी रखें नहीं तो अन्त में हानि उठानी पड़ेगी। यदि आप विद्यार्थी हैं इस वर्ष पठनपाठन के विषय में सावधान रहें ज़रा सी ढील करने पर पास होने की आशा न रखें उपाय के रूप में नित्य प्रातःकाल उठ कर घर के किसी वृद्ध विशेषतया माता-पिता के

चरणों का स्पर्श करके आशीर्वाद प्राप्त करें निश्चय रखिये वह आशीर्वाद रामबाण का काम करेगा।
5 शेष बचे:- तो वर्ष भर मानसिक अशान्ति बनी रहेगी, कोई भी कार्य बिना रुकावट के सफल नहीं होगा, वर्षभर घरेलू परेशानियों से छुटकारा नहीं मिलेगा, धन की दशा भी डांवा डोल रहेगी, कभी धन आवश्यकता अनुसार मिलता रहेगा कभी तंगदस्ती से भी दुचार होना पडेगा, कभी अचानक लाभ की भी सम्भावना है। उस लाभ की आशा में अधिक विश्वास न रखें, उपाय के रूप में, घर में कोई महोत्सव या मकान आदि बनाने का प्रोग्राम बनाये ऐसे शुभकामों में लगे रहना आपके लिये शान्ति का कारण बनेगा, यदि यात्रा का प्रोग्राम बनें अवश्य बनायें घर की अपेक्षा आप यात्रा में सुखी रहेंगे, विद्यार्थी वर्ग को चेतावनी है कि आप पढ़ाई में आलस्य न करें परिश्रम करने पर आप अच्छी पोजिशन में सफल होंगे।
6. शेष बचना:- आपके वर्ष भर की शान्ति की सूचना है, आपको किसी महापुरुष से संयाग होगा जो आप की मानसिक शान्ति का कारण बनेगा, कोई भी कार्य जो आप हाथ में लेंगे उस में अवश्य सफलता होगी, आर्थिक स्थिति में वृद्धि होगी, मान की दृष्टि से यह वर्ष उत्तम रहेगा, सामाजिक तथा धार्मिक कामों से दिलचस्पी बनी रहेंगी, नौकरी पेशा वर्ग के लिये यद्यपि यह वर्ष दौड़-धूप तथा संघर्ष का ही होगा परन्तु मान प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी, व्योपारी वर्ग भी लाभ में रहेगा, विद्यार्थियों के लिये, यह वर्ष सफलता का है, धन लाभ के साथ-साथ खर्च का योग भी बलवाम है, प्रायः खर्च शुभकामों में ही होगा घर में विवाह आदि महोत्सव रचाने का प्रोग्राम बनेगा।
7 शेष बचें:- तो इस वर्ष आपका भाग्योदय होगा, आप केवल प्रोग्राम ही न बनायें अपितु हर प्रोग्राम को अमली रूप देने का प्रयत्न कीजिये, इस वर्ष ग्रह अनुकूल हैं आपके कठिन से कठिन काम को सफल बनाने में सहायक होंगे, यदि आप गृहस्थी हैं तो घर में कोई महोत्सव रचाने का प्रोग्राम अवश्य बनेगा, यदि आप मकान या जायदाद बनाने का विचार रखते हैं तो इस वर्ष इस शुभ अवसर को हाथ से न जाने दें यदि आप व्यापार करते हैं, या नौकरी अथवा विद्यार्थी हैं आप का हर काम जरा सा ध्यान देने से अवश्य सफल होगा, सम्भव है आपको यात्रा का प्रोग्राम बने इसमें भी सन्तोषजनक सफलता होगी, आपका स्वास्थ भी इस वर्ष ठीक रहेगा, धन लाभ के साथ-साथ खर्च का भी योग है।

8 शेष बचें:- अर्थात यदि कुछ न बचे तो वर्ष भर संघर्ष तथा दौड़ धूप का माहोल रहेगा है, गृहस्थी होने पर घरेलू परेशानियां आप का पीछा छोडेंगी नहीं, यदि आप नौकरी करते हैं, तो दफ्तर में प्रायः मन अशान्त रहेगा सम्बन्धित अफसरों से अनबन रहेगी, नौकरी सम्बन्धित तरर्की की कोई आशा न रखें, हर एक कार्य ज्यों का त्यों लटकता रहेगा, यदि आप व्योपार करते हैं परश्रिम बहुत करना होगा परन्तु पल्ले कुछ नहीं पडेगा। यदि आप विद्यार्थी हैं परिश्रम करने पर भी सन्तोषजनक सफलता नहीं होगी, यद्यपि यह वर्ष हर पहलू से ढीला ही रहेगा ऐसा होने पर भी धार्मिक प्रवृत्ति, सामाजिक कामों से दिलचस्पी बनी रहेगी, उपाय के रूप में आप हर सोमवार को भगवान् शंकर पर जल चढाया करें।

जातक मिलाप–प्रकरण

बल देखने की विधिः- लग्न और चन्द्रमा से वर वधू की जन्माकुण्डली के पहले चौथे, 7वें, 8वें, 12वें घर में जितने पापग्रह होगें उतने बल मानिये, एक पाप ग्रह का एक बल माना जाता है। बृहस्पति और शुक्र एक घर में इकट्ठे हों तो उसका भी एक बल मानिये यदि लड़के के जन्म कुण्डली में शुक्र से चौथे, 8वें, घर में कोई पाप ग्रह हों तो उतने बल लड़के के और मान लीजिए, राक्षस जाति का भी एक बल मानिये।

नक्षत्रः- अश्विनी, भरणी, कृत्तिका, रोहिणी, मृगशिरा, आर्द्रा, पुनर्वसु तिष्या आश्लेषा, मघा, पूर्वाफाल्गुनी, उत्तराफाल्गुनी, हस्त, चित्रा, स्वाती, विशाखा, अनूराधा ज्येष्ठा, मूल, पूर्वषाढा, उत्तराषाढा, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषक् पूर्वाभाद्रपद, उत्तराभाद्रपद्, रेवती।

षष्टाष्टकः- लड़के अथवा लड़की की राशि से आठवीं और छठी राशि षष्टाष्टक कहलाती है, जैसे मिथुन, मकर।

नवपंचकः- लड़के अथवा लड़की की राशि से नवीं और पाँचवी राशि नवपंचक कहलाती है। जैसे मेष और सिंह।

द्विर्द्वादशीः- लड़के अथवा लड़की की राशि से दूसरी या बारहवीं हो तो द्विर्द्वादशी कहलाती है। जैसे मेष और मीन।

जातक मिलाप सारिणी

वधू ↓	वर →	मेष			वृष			मिथुन			कर्क			सिंह			कन्या		
		अशि.	भर.	कृत्ति.	कृत्ति.	रोहि.	मृग.	मृग.	आद्र.	पुन.	पुन.	ति.	आश्ले.	मघ	पूफा	उफा.	उफा.	हस्त	चि.
मेष	अश्विन	28	33	28	18	24	23	26	17	18	23	31	27	20	24	15	11	11	13
	भरण	33	28	29	18	27	15	18	26	26	31	24	25	19	17	24	19	19	6
	कृत्तिका	27	28	28	18	10	17	20	20	20	25	27	23	16	19	20	15	15	19
वृष	कृत्तिका	19	19	19	28	19	27	17	17	17	21	23	19	19	22	22	20	21	23
	रोहिणी	24	24	11	20	28	36	27	23	22	26	27	13	11	25	27	26	26	19
	मृगशिरा	24	15	19	27	35	29	19	24	23	26	19	12	20	16	25	23	26	12
मिथुन	मृगशिरा	27	18	23	19	26	20	28	33	31	20	11	15	24	21	29	31	34	20
	आर्द्रा	19	27	22	19	25	26	34	28	25	12	21	13	22	28	21	25	25	27
	पुनर्वसु	19	26	22	19	22	23	32	24	28	14	21	16	22	26	20	24	25	27
कर्क	पुनर्वसु	22	29	25	21	24	25	18	10	13	28	34	29	17	21	15	17	18	20
	तिष्या	30	21	27	23	25	18	11	19	24	34	28	29	19	15	24	26	26	12
	आश्लेषा	25	23	22	19	12	21	13	12	15	29	29	28	15	16	18	21	20	26
सिंह	मघा	19	19	16	17	11	18	21	21	20	17	19	16	28	30	27	15	15	20
	पूफा	25	17	19	20	24	16	19	27	26	23	17	17	30	28	34	24	21	6
	उफा	19	27	22	23	27	26	29	22	22	17	26	20	27	34	28	18	17	15
कन्या	उफा	11	21	16	21	26	24	32	22	24	18	28	21	16	23	17	28	27	25
	हस्त	11	19	16	21	24	25	32	19	24	18	27	22	16	21	15	26	28	28
	चित्रा	13	5	19	23	19	11	19	26	25	20	12	26	22	7	14	25	27	28

जातक मिलाप सारिणी

वधू ↓	वर →	तुला			वृश्चिक			धनु			मकर			कुम्भ			मीन		
		चि.	स्वा.	विशा.	विशा.	अनू.	ज्ये.	मूल.	पूषा	उषा	उषा.	श्रव.	धनि.	धनि.	शत.	पूभा.	पूभा.	उभा.	रेव.
मेष	अश्विन	23	27	28	19	25	15	13	28	23	25	26	21	21	15	16	15	24	26
	भरण	15	28	29	19	18	20	20	18	26	28	26	10	10	20	24	23	17	26
	कृत्तिका	28	14	28	17	20	26	25	19	12	14	14	25	25	26	18	18	20	13
वृष	कृत्तिका	22	9	19	22	25	30	22	15	7	12	11	25	29	30	23	20	22	13
	रोहिणी	18	15	11	15	30	24	14	20	11	16	18	19	25	24	29	26	27	19
	मृगशिरा	11	25	19	24	22	25	15	11	17	22	26	12	18	26	28	25	18	27
मिथुन	मृगशिरा	13	27	23	13	13	14	23	19	25	20	24	10	12	21	23	24	17	26
	आर्द्रा	20	27	22	14	19	5	15	28	27	22	23	17	19	12	17	19	26	26
	पुनर्वसु	20	27	22	15	21	6	14	27	27	22	23	17	19	13	16	18	27	26
कर्क	पुनर्वसु	19	27	25	19	25	11	8	21	21	26	27	21	12	6	10	16	25	25
	तिष्या	11	25	27	19	17	21	18	13	21	26	27	13	4	13	18	26	18	26
	आश्लेषा	26	12	22	16	19	26	23	16	8	13	13	26	17	18	11	18	20	12
सिंह	मघा	24	11	16	25	25	32	24	19	9	4	5	18	24	25	18	18	19	12
	पूफा	10	25	19	24	23	25	20	17	24	19	19	6	11	19	24	24	17	25
	उफा	18	27	22	25	31	17	9	25	25	20	20	12	18	11	16	16	27	25
कन्या	उफा	17	26	16	18	26	12	14	30	30	24	24	24	17	10	15	17	28	26
	हस्त	20	27	16	20	26	14	15	27	29	23	24	20	19	11	14	16	26	26
	चित्रा	19	19	19	27	11	25	27	13	21	16	17	16	16	24	17	19	10	19

जातक मिलाप सारिणी

वधू ↓	वर →	मेष			वृष			मिथुन			कर्क			सिंह			कन्या		
		अश्वि.	भर.	कृत्ति.	कृत्ति.	रोहि.	मृग.	मृग.	आर्द्र.	पुन.	पुन.	ति.	आश्ले.	मघ.	पूफा	उफा.	उफा.	हस्त	चि.
तुला	चित्रा	22	14	28	23	19	11	12	20	19	19	11	25	25	11	18	18	20	20
	स्वाती	28	30	18	13	17	27	27	26	27	28	28	16	14	26	26	26	28	21
	विशाखा	21	22	20	15	9	17	19	20	20	21	2	17	17	19	18	18	19	26
वृश्चिक	विशाखा	17	17	15	20	14	22	11	13	10	18	18	15	25	23	22	17	18	26
	अनूराधा	24	15	19	24	28	21	10	15	20	25	17	20	25	21	29	24	25	11
	ज्येष्ठा	10	18	23	29	23	30	12	2	4	10	20	25	31	24	16	11	11	24
धनु	मूला	12	19	25	20	13	13	21	14	12	8	18	23	24	18	20	13	13	26
	पूषा	26	19	18	13	19	11	19	27	27	23	15	17	19	17	25	29	27	12
	उषा	24	26	12	6	10	17	25	26	27	23	23	9	9	24	25	29	29	20
मकर	उषा	27	29	15	12	16	23	19	25	22	28	28	14	5	20	21	24	24	16
	श्रवण	28	27	15	12	17	26	23	20	22	28	28	14	6	19	20	23	24	17
	धनिष्ठ	20	11	26	24	19	11	8	16	15	21	13	27	19	5	11	16	17	15
कुम्भ	धनिष्ठ	20	11	25	30	26	18	11	18	17	12	4	18	25	11	19	18	19	17
	शतभि	15	21	27	31	25	27	20	12	12	7	13	19	26	20	12	11	11	25
	पूभा	18	25	20	24	30	30	24	17	17	12	20	12	19	25	17	16	16	18
मीन	पूभा	15	21	17	19	26	26	24	18	18	17	25	18	17	23	15	16	16	18
	उभा	24	16	19	21	26	18	17	25	27	26	19	20	18	15	26	27	26	9
	रेवती	25	26	11	13	17	26	25	24	25	25	26	13	12	23	23	24	25	19

जातक मिलाप सारिणी

वधू ↓	वर →	तुला			वृश्चिक			धनु			मकर			कुम्भ			मीन		
		वि.	स्वा.	विशा.	विशा.	अनू.	ज्ये.	मूल.	पूषा	उषा.	उषा.	श्रव.	धनि.	धनि.	शत.	पूभा.	पूभा.	उभा.	रेव.
तुला	चित्रा	28	27	34	23	7	21	27	13	21	24	25	23	18	26	19	12	3	12
	स्वाती	28	28	20	10	20	19	23	27	19	23	23	28	21	22	25	19	19	11
	विशाखा	34	19	28	18	18	22	28	21	13	16	16	30	26	26	30	14	13	4
वृश्चिक	विशाखा	27	7	15	28	27	32	22	16	8	11	11	25	24	26	20	29	18	10
	अनूराधा	7	21	16	28	28	31	16	14	22	25	26	12	11	20	25	24	18	26
	ज्येष्ठा	20	15	19	32	30	28	14	17	17	20	20	25	26	19	10	10	20	20
धनु	मूला	26	21	26	23	17	16	28	28	26	14	15	19	29	22	15	17	15	26
	पूषा	12	27	20	17	16	18	27	28	34	22	23	6	15	24	29	30	23	31
	उषा	20	19	12	9	24	18	25	35	28	18	15	14	23	24	29	30	31	23
मकर	उषा	23	22	15	12	17	27	15	24	17	28	27	26	16	17	22	30	31	23
	श्रवण	24	22	15	12	27	21	14	23	15	26	28	27	17	18	21	29	30	24
	धनिष्ठ	29	24	29	26	12	26	21	7	15	26	27	28	17	23	18	25	15	23
कुम्भ	धनिष्ठ	18	20	25	25	11	25	30	16	25	17	18	18	28	33	28	17	7	14
	शतभि	26	21	21	27	20	18	25	25	25	17	18	24	23	28	29	8	15	16
	पूभा	19	26	20	21	27	11	15	30	30	23	23	18	27	29	28	16	22	20
मीन	पूभा	11	19	13	19	25	10	14	29	29	29	23	25	16	7	15	28	33	31
	उभा	2	19	12	18	18	20	24	22	30	30	30	15	6	15	21	33	28	33
	रेवती	12	10	4	11	26	21	26	29	21	24	22	23	14	16	18	30	33	28

राशि कूट चक्र

मित्र षष्टाष्टक	मेष+वृश्चिक	मिथुन+मकर	सिंह+मीन	तुला+वृष	धनु+कर्क	कुम्भ+कन्या
शत्रु षष्टाष्टक	वृष+धनु	कर्क+कुम्भ	कन्या+मेष	वृश्चिक+मिथुन	मकर+सिंह	मीन+तुला
मित्र नवपंचक	मेष+सिंह	मिथुन+तुला	सिंह+धनु	तुला+कुम्भ	धनु+मेष	कुम्भ+मिथुन
शत्रु नवपंचक	वृष+कन्या	कर्क+वृश्चिक	कन्या+मकर	वृश्चिक+मीन	मकर+वृष	मीन+कर्क
मित्र द्विर्द्वादशी	मेष+मीन	मिथुन+वृष	सिंह+कर्क	तुला+कन्या	धनु+वृश्चिक	कुम्भ+मकर
शत्रु द्विर्द्वादशी	वृष+मेष	कर्क+मिथुन	कन्या+सिंह	वृश्चिक+तुला	मकर+धनु	मीन+कुम्भ

देखने की विधिः- मेष राशि की वृश्चिक राशि के साथ मित्र षष्टाष्क है जो शुभ है इसी प्रकार वृष राशि का धनु राशि के साथ शत्रु षष्टाष्टक है जो मिलाप के लिए अशुभ है।

नोटः- मित्रषाष्टाष्टक, मित्रनवपंचक, मित्रद्विर्द्वादशी निषेध नहीं-अपितु शुभफलदायक है।

नाड़ी देखने का चित्र

आद्य नाड़ी	अश्वि	आर्द्रा	पुन	उफा	हस्त	ज्येष्ठा	मूला	शत	पूभा
मध्य नाड़ी	भर	मृग	तिष्या	पूफा	चित्रा	अनू	पूषा	धनि	उभा
अन्त्य नाड़ी	कृति	रोहि	आश्ले	मघा	स्वाति	विशा	उषा	श्रव	रेव

नाड़ी देखने की विधिः- जन्मपत्री मिलाने के लिए दोनों वधू-वर का नक्षत्र अवश्य मालूम होना चाहिए यदि दोनों का नक्षत्र आद्य नाडी की पंक्ति में हो तो आद्य नाड़ी दोष होता है, ऐसे ही यदि दोनों का नक्षत्र मध्यनाड़ी की पंक्ति

में हो तो मध्य नाड़ी दोष होता है, यदि दोनों वर-वधू का नक्षत्र अन्त्य नाड़ी की पंक्ति में हो तो अन्त्य नाड़ी दोष होता है। नाड़ी दोष विशेष हानिकारक माना जाता है।

जाती देखने का चित्र

देव जाति	अनू	मृग	श्रवण	पुनर्व.	रेवती	स्वाति	हस्त	तिष्या	अश्वि
मनुष्य जाति	पूषा	पूफा	पूभा.	उफा.	उषा	रोहि	भर	आद्रा	उभा
राक्षस जाति	मघा	आश्ले	धनि	कृति	ज्येष्ठा	मूला	शत	चित्रा	विशा

देखने की विधिः- अनूराधा नक्षत्र होने पर देवजाति, ऐसे ही पूर्व फाल्गुनी नक्षत्र के लिए मनुष्य जाति, मघा नक्षत्र की राक्षस जातिः-

देव जाति ÷ राक्षस जाति = मध्यम
राक्षस जाति ÷ देव जाति = मध्यम
राक्षस जाति ÷ मनुष्य जाति = अशुभ

मनुष्य जाति ÷ देव जाति = शुभ
देव जाति ÷ मनुष्य जाति = शुभ
मनुष्य जाति ÷ राक्षस जाति = अशुभ

दोनों लड़के तथा लड़की की एक ही जाति का होना शुभफल होता है, विशेषतया यदि लड़की की जाति राक्षस हो और लड़के की मनुष्य जाति हो तो विशेष हानिकारक होती है।

वधू-वर मिलाप सारिणी देखने की विधिः-

जन्मपत्री मिलान के लिए वर्ण, वश्य, तारा, योनि, ग्रहमैत्री, गण, भकूट, नाड़ी यह आठ मानिये पर्चे होते हैं यदि वर्ण आपस में (वधू वर का) मिले तो एक गुण मानिये। 1 अंक मिलता है, जब वश्य का आपस में मिलान होगा, तो

के दो अंक यानी 2 गुण मिलते हैं ऐसी ही क्रमशः तारा के मिलान में 3 गुण योनि के मिलान में 4 गुण होते हैं अर्थात् 8 पर्चो में क्रमशः 1+2+3+4+5+6+7+8 कुल मिलाकर 36 गुण होते हैं, वधू वर के मिलान में 36 में से 18 गुण मिले तो विवाह शुभफलदायक होगा।

सारिणी देखने के लिये दोनों लड़के, लड़की की जन्मराशि का ज्ञान होना आवश्यक है, मानिये लड़के की राशि है मेष और लड़की की राशि है मिथुन। मेष राशि वाले का नक्षत्र होगा अश्विनी, भरणी अथवा कृतिका ओर मिथुन राशि वाले का नक्षत्र होगा मृगशिर, आद्री पुनर्वसु, सारिणी में देखिये हर राशि के नीचे नक्षत्र लिखे हैं। उदाहरण के रूप में मानिये लड़के की राशि है मेष और नक्षत्र है भरणी, ऐसे ही लड़की की राशि है मिथुन मानिये नक्षत्र है **मृगशिर-सारिणी में देखियेः-** भरणी नक्षत्र की खड़ी पंक्ति और मृगशिर की पड़ी पंक्ति जहां आपस में मिलती है वहां सारिणी में 18 दर्ज हैं, यानी वधू-वर के मिलान में 18 गुण हैं, इसलिये यह मिलान शुभ है। दूसरा उदाहरण देखिये, लड़के की राशि है सिंह और नक्षत्र है मघा, लड़की की राशि है कन्या और नक्षत्र है "हस्त" सारिणी में देखिये "मघा" नक्षत्र की खड़ी पंक्ति और हस्त की पड़ी पंक्ति में केवल 16 गुण मिलते हैं अतः मिलाप शुभ नहीं होगा।

मंगल दोष विचार

1. शनि भौमोथवा कश्चित् पापोवा तादृशोभवेत्।
तेष्वेव भवनेषु भौम दोष विनाशकृत्।।

जिस जन्म कुण्डली में वह लड़की की हो या लड़के की 1, 4, 7, 8, 12वें घर में यदि मंगल हो उसी के जवाब में, जन्मचक्र से अथवा राशि चक्र से कोई क्रूरग्रह (यह आवश्यक नहीं मंगल ही हो) सूर्य, भौम, शनि, राहु इन्हीं घरों में यानी 1, 4, 7, 8, 12वाँ हों तो मंगल का दोष नहीं होता है।

2. "अजे लग्ने व्यये चापे पाताले वृश्चिके कुजे,
द्यूने मृगे कर्किचाष्टे भौम दोषो न विद्यते।।"

लड़के अथवा लड़की की कुण्डली में, लग्न में मेष राशि का मंगल हो, वृश्चिक का मंगल चौथा हो,

मकर राशि में सातवाँ हो, कर्क का आठवां हो, धनु का बारहवाँ हो तो भौम का यानी मंगल का दोष नहीं होता है।

3. सप्तमस्थो यदा भौमो गुरुणा च निरीक्षितः
तदातु सर्वसौरण्यं स्यात् मंगलीदोष नाशकृत्।।
यदि सातवाँ मंगल हो, उस पर बृहस्पति की दृष्टि हो तो मंगल का दोष नहीं होता है।

4. भौम यदि वक्री, नीच, अस्त अथवा शत्रु के घर में हो तो मंगल का दोष नहीं होता है।

नाड़ी दोष अपवाद

1. लड़के अथवा लड़की का नक्षत्र यदि रेवती, रोहिणी, मृगशिर, तिष्या, कृतिका, उत्तराभाद्रपद्, श्रवणी, आर्द्रा तथा ज्येष्ठा हो तो नाड़ी दोष नहीं होता है।
2. यदि लड़के-लड़की में से एक की राशि कन्या और दूसरे की मिथुन, एक ही धनु, दूसरे की मीन, एक की तुला, दूसरे की राशि वृष हो तो नाड़ी दोष नहीं होता है।
3. वर तथा कन्या की राशि एक हो परन्तु नक्षत्र अलग-अलग हो तो नाड़ी दोष नहीं होता है अथवा वर तथा कन्या का नक्षत्र एक हो और राशि अलग-अलग हों तो नाडी दोष नहीं होता है।
4. नाड़ी दोष होने पर यदि पाद भेद हो तो भी नाड़ी दोष नहीं होता है।
5. वर और वधू के राशि स्वामियों अथवा नवांश स्वामियों की यदि आपस में मित्रता हो-तो राक्षस जाति तथा षष्ठाष्टक आदि का दोष नहीं होता है।

यात्रा प्रकरण

यात्रा के लिए उत्तम नक्षत्रः- अश्विनी, पुनर्वसु, अनुराधा, तिष्या, मृगशिर, रेवती हस्त धनिष्ठा।

यात्रा के लिए निषेध नक्षत्रः- भरणी, कृतिका, आर्द्रा, आश्लेषा, मघा, चित्रा, स्वाति, विशाखा।

यात्रा के लिये मध्यम नक्षत्रः- रोहिणी, उत्तराफा०, उत्तराषाढ़ा, उत्तरभा०, पूर्वाफा, पूर्वाषा, ज्येष्ठा, मूला, शतभिषक्।

यात्रा के लिये अशुभ योगः- कालदण्डः धौम्यः, ध्वांक्षः, उन्मूलम्, मुस्लम्, मुद्रगरम्, काण्डः, क्षयः, शूलम्।

यात्रा के लिये अशुभ चन्द्रमाः- अपनी राशि से चौथा, आठवाँ, बारहवाँ।

यदि यात्रा को जाना आवश्यक हो तोः- बृहस्पतिवार, शुक्रवार, रविवार को रात्रि में यात्रा को जाने में कोई दोष न मानिये, ऐसी ही सोमवार, शनिवार और मंगलवार-इन तीन वारों का दोष दिन को न मानिये।

वार दोष निवारण के लियेः- रविवार को सुपारी खाकर यात्रा को जायें, सोमवार को दूध अथवा खीर, मंगलवार को आँवला अथवा कांजी, खट्टी पदार्थ, बुधवार को मीठा, बृहस्पतिवार को दही, शुक्रवार को कच्चा दूध, शनिवार को उड़द अथवा तहर।

घातचन्द्र—घातवार

मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	राशि
1	5	9	2	6	10	3	7	4	8	11	12	चन्द्र
रवि	शनि	सोम	बुध	शनि	शनि	गुरु	शुक्र	शुक्र	भौम	गुरु	शुक्र	वार

मेष राशि वालों के लिए पहला घात चन्द्रमा है, ऐसे ही रविवार भी घातवार है, घातचन्द्रमा केवल यात्रा के लिये निषेध है।

यात्रा के लिए उत्तम योगिनी तथा चन्द्रमा

दिशा	वार	बायें योगिनी	पीछे योगिनी	सन्मुख चन्द्रमा	दायां चन्द्रमा
पूर्व	रवि, भौम, बुध, गुरु, शुक्र	द्वितीया दशमी,	षष्ठी चतुर्द,	मेष, सिंह, धनु,	मकर, कन्या, वृष,
पश्चिम	सोम, बुध, गुरु, शनि,	पंचमी, त्रायो,	प्रतिपदा, नवमी,	मिथुन, तुला, कुंभ	कर्क, वृश्चि, मीन
दक्षिण	सोम, भौम, बुध, शुक्र	प्रतिपद् नवमी	द्वितीया, दशमी	मकर, कन्या, वृष,	मिथुन, तुला, कुम्भ
उत्तर	सोम, शुक्र, शनि, रवि	षष्ठी, चतुर्द	पंचमी, त्रयोदशी	कक, वृश्चिक, मीन	मेष, सिंह, धनु

देखने की विधिः

शत्रु मित्र चक्रम्

सूर्य का चन्द्रमा, भौम और गुरु मित्र है, शुक्र, शनि, राहु शत्रु है, बुध सूर्य का न शत्रु न मित्र हैं।

ग्रह	सूर्य	चन्द्र	भौम	बुध	बृहस्पति	शुक्र	शनि	राहु
मित्र	चन्द्र भौम गुरु	सूर्य बुध	सूर्य चन्द्र गुरु	सूर्य शुक्र राहु	सूर्य चन्द्र भौम	बुध शुक्र राहु	बुध शुक्र राहु	बुध शुक्र शनि
शत्रु	शुक्र शनि राहु	राहु	बुध राहु	चन्द्र	बुध शुक्र	सूर्य	सूर्य चन्द्र भौम	सूर्य चन्द्र भौम
सम	बुध	भौम शुक्र गुरु, शनि	शुक्र शनि	भौम गुरु शनि	शनि राहु	भौम गुरु	गुरु	गुरु

जन्म राशि की प्रधानता

विवाहे सर्वमांगल्ये यात्रादौ ग्रह गोचरे। जन्म राशेः प्रधानत्वं नाम राशि न चिन्तयेत्।। विवाहादि समस्त मंगल कार्य, यात्रा ग्रह दशा इत्यादि में जन्म राशि की ही प्रधानता है नाम राशि की नहीं। इस कारण जन्म राशि को ही देखना चाहिये।

ॐ

पाठ प्रकरण

इस पाठ प्रकरण में मैंने संस्कृत श्लोकों का इस प्रकार सन्धिछेद किया है जो व्याकरण के अनुसार अशुद्ध है परन्तु यह पाठ प्रकरण उन महानुभावों के लिए है जो संस्कृत अच्छी प्रकार से पढ़ नहीं सकते हैं यह जनता जर्नादन की मांग है तथा समय की आवश्यकता है इस लिये किसी प्रकार की आलोचना की जरूरत नहीं है

सम्पादक

नित्य नियम विधि

प्रातः काल ब्राह्मी मुहूर्त में नीन्द से उठते ही, दोनों हाथों की हथेलियों को देखते हुये पढ़ें:-

कराग्रे वसते लक्ष्मीः कर मध्ये सरस्वती । करमूले स्थितो ब्रह्मा प्रभाते कर दर्शनम्।।

अर्थः- हाथ के अग्रभाग में लक्ष्मी, हाथ के मध्य भाग में सरस्वती और हाथ के मूलभाग में ब्रह्माजी निवास करते हैं।

विस्तरे से उठने पर यह श्लोक पढ़ें:-

समुद्र वसने देवि पर्वतस्तनं मण्डिते । विष्णु पत्नि नमस्तुभ्यं पादस्पर्शं क्षमस्व मे।।

अर्थः- समुद्ररूपी वस्त्रों को धरण करने वाली, पर्वत रूपस्तनों से शोभायमान भगवान् विष्णु की पत्नी पृथ्वी देवी! आप मेरे पाद-स्पर्श को क्षमा करें।

शौच आदि से निवृत होकर बायां पैर धोते हुए पढ़ें:- **नमोस्त्वनन्ताय सहस्रमूर्तये सहस्रपादाक्षि-शिरोरु बाहवे। सहस्र-नाम्ने पुरुषाय शाश्वते, सहस्रकोटी-युगधारिणे नमः।**

दायां पैर धोते हुए पढ़ें:- **ॐ नमः कमलनाभाय-नमस्ते जल शायिने। नमस्ते केशवानन्त-वासुदेव नमोस्तुते।**

मुंह धोते हुए पढ़ें:- **गंगा, प्रयाग, गयनै मिष पुष्करादि-तीर्थानि, यानि भुवि सन्ति-हरिप्रसादात् आयान्तु तानि करपद्मपुटे मदीये प्रक्षालयन्तु वदनस्य निशाकलंकम्। तीर्थे स्नेयं तीर्थमेव समानानां भवति मा नः शंस्यो अररुषो धूर्ति प्राणङ् मर्त्यस्य रक्षाणो ब्रह्मणस्पते।**

मुंह धोकर यज्ञोपवीत धोते हुए तीन बार पढ़ें:- **ॐ गायत्र्यै नमः। ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्-वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।।**

यज्ञोपवीत गले में फिर से धरण करते हुए पढ़ें:- **यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत् सहजं पुरस्तात्-आयुष्यम्-अग्र्यं प्रतिमुंच शुभ्रं, यज्ञोपवीतं बलम्-अस्तु तेजः। यज्ञोपवीतम्-असि यज्ञस्यत्वा-उपवीतेन- उपनह्यामि।।**

स्नान इत्यादि करके पूर्व दिशा की ओर मुंह करके धूप, दीप जला कर शुद्ध आसन पर बैठ कर आदि देव-भगवान् गणेश का ध्यान करते हुए पढ़ें:-

प्रातः-स्मरामि-गणनाथम्-अनाथ बन्धुं, सिन्दूर-पूरपरि-शोभित-गण्ड-युग्मम्।
उद्दण्ड-विघ्न-परि-खण्डन-चण्ड-दण्डम्, आखण्ड-लादि-सुरनायक-वृन्द-वन्द्यम्।।

अर्थः- अनाथों के बन्धु, सिन्दूर से शोभायमान दोनों गण्ड-मुकट वाले, प्रबल विघ्न का नाश करने में समर्थ एवं इन्द्रादि देवों से नमस्कार किये हुये श्री गणेश का मैं प्रातः काल स्मरण करता हूँ।

प्रातः-स्मरामि-भवभीति-महार्ति-नाशं, नारायणं-गरुड-वाहनम्-अब्जनाभम्।
ग्राहाभिभूत-वर-वारण-मुक्ति-हेतुं, चक्रायुधं-तरुण-वारिज-पत्र-नेत्रम्।।

अर्थः- संसार के भयरूपी महान् दुःख को नष्ट करने वाले, मगरमच्छ से गजराज को मुक्त करने वाले, चक्रधारी एवं कमलदल के समान नेत्र वाले, पद्मनाभ गरुडवाहन् भगवान् श्री विष्णु का मैं प्रातः काल स्मरण करता हूँ।

प्रातः स्मरामि भव-भीतिहरं-सुरेशं, गङ्गाधारं वृषभ-वाहनम्-अम्बिकेशम्।
खट्वाङ्ग-शूल-वरदा-भय-हस्तम्-ईशं, संसार-रोगहरम्-औषधम्-अद्वितीयम्।।

अर्थः- संसार के भय को नष्ट करने वाले, सुरेश गङ्गाधर, वृषभवाहन, पार्वतीपति हाथ में खट्वाङ्ग एवं त्रिशूल लिये हुये और संसार के रोगों का नाश करने के लिये अद्वितीय औषध-स्वरूप अभय एवं वरद मुद्रा युक्त हस्त वाले भगवान् शिव का मैं प्रातः काल स्मरण करता हूँ।

ब्रह्मा-मुरारिः-त्रिपुरान्तकारी, भानुः-शशी-भूमिसुतो-बुधश्च।
गुरुश्च-शुक्रः-शनि-राहु-केतवः, कुर्वन्तु-सर्वे-मम-सु प्रभातम्।।

अर्थः- ब्रह्मा, विष्णु, शिव, सूर्य, चन्द्रमा, मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनि, राहु और केतु ये सभी मेरे प्रातः काल को मंगलमय करे।

भृगुः वसिष्ठः क्रतुः, अङ्गिगराश्च, मनुः पुलस्त्यः पुलहश्च गौतमः।
रैभ्यो मरीचिः-च्यवनश्च दक्षः, कुर्वन्तु सर्वे मम सुप्रभातम्।।

अर्थः-भृगु, वसिष्ठ, क्रतु, अगिरा, मनु, पुलस्त्य, पुलह, गौतम, रैभ्य, मरीचि, च्यवन और दक्ष-ये सभी मुनिगण मेरे प्रातः काल को मंगलमय करें।

शुक्लाम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतु-र्भुजम्, प्रसन्न वदनं ध्याये, सर्वविघ्नोप-शान्तये।
अभिप्रीतार्थ-सिद्ध्यर्थं पूजितो यः सुरैर्-अपि, सर्वविघ्नच्छिदे तस्मै, गणा-धिपतये नमः।

बिभ्रत्-दक्षिण-हस्तपद्म-युगले, दन्ताक्षसूत्रे शुभे,
वामे मोदक-पूर्णपात्र, परशु नागो-पवीति त्रिदृक्।
श्रीमान्-सिंहयुगासनः श्रुतियुगे, शंखौ वहन् मौलिमान्,
दिश्यात्-ईश्वरपुत्र-ईश भगवान् लम्बोदरः-शर्म-नः।।

सिन्दूर-कुंकुम-हुताशन-विद्रुमार्क, रक्ताब्ज-दाडिम-निभाय-चतु-भुंजाय।
हेरम्ब-भैरव गणेश्वर-नायकाय, सर्वार्थसिद्धि-फलदाय गणेश्वराय।।
मुख्यं द्वादश-नामानि गणेशस्य महात्मनः। यः पठेत्-तु शिवोक्तानि स लभेत्-सिद्धिम्-उत्तमाम्। प्रथमं वक्रतुण्डं तु, चैकदन्तं द्वितीयकम्, तृतीयं कृष्णपिंगं तु, चतुर्थं च कपर्दिनम्, लम्बोदरं पंचमं तु, षष्ठं विकटम्-एव च, सप्तमं विघ्नराजेन्द्रं, धूम्रवर्णं तथाष्टमं। नवमं भालचन्द्रं तु, दशमं तु विनायकम्, एकादशं गणपतिं, द्वादशं मन्त्र-नायकम्। पठते शृणुते यस्तु, गणेश-स्तवम्-उत्तमं, भार्यार्थी लभते भार्या, धनार्थी विपुलं धनम्। पुत्रार्थी लभते पुत्रम्, मोक्षार्थी परमं पदम्, इच्छाकामं तु कामार्थी, धर्मार्थी धर्मम्-अक्षयम्।। सुमुखैश्चैक-दन्तश्च, कपिलो गजकर्णकः, लम्बोदरश्च विकटो, विघ्नराजो गणाधिपः। धूम्र-केतु-गणाध्यक्षो, भालचन्द्रो गजाननः, द्वादशै-स्तानि-नामानि, गणेशस्य महात्मनः, य पठेत्-शृणुयात्-वापि स लभेत् सिद्धिम्-उत्तमाम्। विद्यारम्भे, विवाहे च, प्रवेशे निर्गमे तथा संग्रामे संकटे चैव, विघ्नस्तस्य न जायते।।

गणपति स्तोत्रम्

जेतुं यस्त्रिपुरं हरेण हरिणा व्याजाद्बलिं बध्नता
स्रष्टुं वारिभवोद्भवेन भुवनं शेषेण धर्तुं धराम्।
पार्वत्या महिषासुर प्रमथने सिद्धाधिपैः सिद्धये।
ध्यातः पंचशरेण विश्वजितये पायात्स नागाननः।।

अर्थः त्रिपुरासुर को जीतने के लिये शिव ने, बलि को छल से बाँधते समय विष्णु ने, जगत् को रचने के लिये ब्रह्मा ने, पृथ्वी धारण करने के लिए शेषनाग ने, महिषासुर को मारने के समय पार्वती ने, सिद्धि पाने के लिए सिद्धों के अधिपतियों (सपकादि ऋषियों) ने और सब संसार को जीतने के लिये कामदेव ने जिन गणेश जी का ध्यान किया है, वे हम लोगों को पालन करें।

विघ्न ध्वान्त निवारर्णै कतरणिर्विघ्नाट वीह व्यवाड्
विघ्न व्यालकुलाभिमान गरुडो विघ्नेभ पंचाननः।
विघ्नोतुङ्ग गिरि प्रभेदनम विर्विघ्नाम्बु धेर्वाडवो
विघ्नाघोघ घनप्रचण्ड, पवनो विघ्नेश्वरः पातु नः।।

अर्थः विघ्नरूप अन्धकार का नाश करने वाले एकमात्र सूर्य, विघ्नरूप वन के जलाने वाले अग्नि, विघ्नरूप सर्पकुल का दर्प नष्ट करने के लिये गरुड, निघ्नरूप हाथी को मारने वाले सिंह, विघ्नरूप ऊँचे पहाड़ के तोड़ने वाले वज्र, विघ्नरूप महासागर के वडवानल, विघ्नरूपी मेघ-समूह को उड़ा देने वाले प्रचण्ड वायुसदृश गणेश जी हम लोगों का

पालन करें।

खर्वं स्थूलतनुं गजेन्द्रवदनं लम्बोदरं सुन्दरं, प्रस्यन्दन-मदगन्धलुब्ध-मधुप-व्यालोल-गण्डस्थलम्।
दन्ताघात विदारितारि रुधिरैः सिन्दूर शोभाकरं, वन्दे शैलसुतासुतं गणपतिं सिद्धिप्रदं कामदम्।।

अर्थः जो नाटे और मोटे शरीर वाले हैं, जिनका गजराज के सम्मान मुँह और लंबा उदर है, जो सुन्दर हैं तथा बहते हुए मद की सुगंन्ध के लोभी भौंरों के चाटने से जिनका गण्डस्थल चपल हो रहा है, दाँतों की चोट से विदीर्ण हुए शत्रुओं के खून से जो सिन्दूर की सी शोभा धारण करते हैं, कामनाओं के दाता और सिद्धि देने वाले उन पार्वती के पुत्र, गणेश जी की मैं वन्दना करता हूँ।

श्वेताङ्ग श्वेतवस्त्रं सितकुसुमगणैः पूजितं श्वेतगन्धैः, क्षीराब्धौ रत्नदीपैः सुरनरतिलकं रत्नसिंहासनस्थम्।
दोर्भिः पाशाङ्कुशब्जा भयवरमनसं चन्द्रमौलिं त्रिनेत्रं, ध्ययायत्-शान्त्यर्थमीशं गणपतिम्-अमलं श्रीसमेतं प्रसन्नम्।।

अर्थः जिनका शरीर श्वेत है, कपड़े श्वेत हैं, श्वेत फूल, चन्दन और रत्नदीपों से क्षीर समुद्र के तट पर जिनकी पूजा हुई हैं, देवता और मनुष्य जिनको अपना प्रधान पूज्य समझते हैं, जो रत्न के सिंहासन पर बैठे हैं, जिनके हाथों में पाश (एक प्रकार की डोरी), अंकुश और कमल के फूल हैं, जो अभयदान और वरदान देने वाले हैं, जिनके सिर में चन्द्रमा रहते हैं और जिनके तीन नेत्र हैं, निर्मल लक्ष्मी के साथ रहने वाले उन प्रसन्न प्रभु गणेश जी का, अपनी शान्ति के लिये ध्यान करें।

आवाहये तं गणराजदेवं रक्तोत्पलाभासम् अशेषवन्द्यम्।,
विघ्नान्तकं विघ्नहरं गणेशं भजामि रौद्रं सहितं च सिद्ध्या।।

अर्थः जो देवताओं के गण के राजा हैं, लाल कमल के समान जिनके देह की शोभा है, जो सबके वन्दनीय हैं, विघ्न के काल हैं, विघ्न के हरने वाले हैं, शिवजी के पुत्र हैं, उन गणेश जी का मैं सिद्धि के साथ आवाहन और भजन करता हूँ।

यं ब्रह्म वेदान्तविदो वदन्ति परं प्रधानं पुरुषं तथान्ये।
विश्वोद्गतेः कारणमीश्वरं वा तस्मै नमो विघ्नविनाशनाय।।

अर्थः जिनको वेदान्ती लोग ब्रह्म कहते हैं और दूसरे लोग परम प्रधान पुरुष अथवा संसार की सृष्टि के कारण या ईश्वर कहते हैं, उन विघ्नविनाशक गणेश जी को नमस्कार है।

विघ्नेश वीर्याणि विचित्रकाणि वन्दीजनैर्मागधकैः स्मृतानि।
श्रुत्वा समुत्तिष्ठ गजानन त्वं ब्राह्मे जगन्मङ्गलकं कुरुष्व।।

अर्थः हे विघ्नेश! हे गजानन ! मागध और वन्दीजनों के मुख से गाये जाते हुए अपने विचित्र पराक्रमों को सुनकर, ब्राह्ममुहूर्त में उठो और जगत् का कल्याण करो।

गणेश हेरम्ब गजाननेति महोदर स्वानुभवप्रकाशिन्।
वरिष्ठ सिद्धिप्रिय बुद्धिनाथ वदन्त एवं त्यजत प्रभीतीः।।

अर्थः हे गणेश! हे हेरम्ब ! हे गजानन ! हे लम्बोदर! हे अपने अनुभव से प्रकाशित होने वाले। हे श्रेष्ठ ! हे सिद्धि के प्रियतम ! हे बुद्धिनाथ! ऐसा कहते हुए, हे मनुष्यो ! अपना भय छोड़ दो।

अनेकविघ्नान्तक वक्रतुण्ड स्वसंज्ञवासिंश्च चतुर्भुजेति।
कवीश देवान्तक नाशकारिन् वदन्त एवं त्यजत प्रभीतीः।।

अर्थः 'हे अनेक विघ्नों का नाश करने वाले! हे वक्रतुण्ड ! हे गणेश आदि अपने नाम वालों में भी निवास करने वाले! हे चतुर्भुज! हे कवियों के नाथ! हे दैत्यों का नाश करने वाले!' ऐसा कहते हुए, हे मनुष्यों! अपने भय को भगा दो।

अनन्तचित्-रूपमयं गणेशं ह्यभेदभेदादि विहीनम्-आद्यम्।
हृदि प्रकाशस्य धरं स्वधीस्थं तमेकदन्तं शरणं व्रजामः।।

अर्थः जो गणेश अनन्त हैं, चेतनरूप हैं, अभेद और भेद आदि से रहित और सृष्टि के आदि कारण हैं, अपने हृदय में जो सदा प्रकाश धरण करते हैं तथा अपनी ही बुद्धि में स्थित रहते हैं, उन एकदन्त गणेश जी की शरण में हम जाते हैं।

विश्वादिभूतं हृदि योगिनां वै प्रत्यक्षरूपेण विभान्तमेकम्।
सदा निरालम्ब समाधिगम्य तमेकदन्तं शरणं व्रजामः।।

अर्थः जो संसार के आदि कारण हैं, योगियों के हृदय में अद्वितीय रूप से साक्षात् प्रकाशित होते हैं और निरालम्ब समाधि के द्वारा ही जानने योग्य हैं, उन एकदन्त गणेश की शरण में हम जाते हैं।

यदीयवीर्येण समर्थभूता माया तया संरचितं च विश्वम्।
नागात्मकं ह्यात्मतया प्रतीतं तमेकदन्तं शरणं व्रजामः।।

अर्थः जिनके बल से माया समर्थ हुई है और उसके द्वारा यह संसार रचा गया है, उन नागस्वरूप तथा आत्मरूप से प्रतीत होने वाल एकदन्त गणेश जी की शरण में हम जाते हैं।

सर्वान्तरे संस्थितम्-एक मूढं यदाज्ञया सर्वमिदं विभाति।
अनन्तरूपं हृदि बोधकं वै तमेकदन्तं शरणं व्रजामः।।

अर्थः जो सब लोगों के अन्तःकरण में अकेले गूढ़भाव से स्थित रहते हैं, जिनकी आज्ञा से यह जगत् विराजमान है, जो अनन्तरूप हैं और हृदय में ज्ञान देने वाले हैं, उन एकदन्त गणेश की शरण में हम जाते हैं।

यं योगिनो योगबलेन साध्यं कुर्वन्ति तं कः स्तवनेन नौति।
अतः प्रणामेन सुसिद्धिदोऽस्तु तमेकदन्तं शरणं व्रजामः।।

अर्थः जिनको योगीजन योगबल से साध्य करते (जान पाते) हैं, स्तुति से उनका वर्णन कौन कर सकता है? इसलिये हम उनको केवल प्रणाम करते हैं कि हमें सिद्धि दें, उन प्रसिद्ध एकदन्त की शरण में हम जाते हैं।

देवेन्द्र मौलिमन्दार मकरन्द कणारुणाः, विघ्नान् हरन्तु हेरम्ब चरणाम्बु जरेणवः।।

अर्थः जो इन्द्र के मुकुट में गुँथे हुए मन्दार कुसुमों के मकरन्द कणों से लाल हो रही है, वह गणेश जी के चरण-कमलों की रज विघ्नों का हरण करे।

एकदन्तं महाकायं लम्बोदर गजाननम्।, विघ्ननाशकरं देवं हेरम्बं प्रणमाम्यहम्।।

अर्थः एक दाँत वाले, बड़े शरीर स्थूल उदर वाले, हाथी के समान मुख़ वाले और विघ्नों का नाश करने वाले गणेश देव को मैं प्रणाम करता हूँ।

यदक्षरं पदं भ्रष्टं मात्राहीनं च यद्भवेत्।, तत्सर्वं क्षम्यतां देव प्रसीद परमेश्वर।।

अर्थः हे देव! जो अक्षर, पद अथवा मात्रा छूट गयी हो, उसके लिये क्षमा करो और हे परमेश्वर! प्रसन्न होओ।

गणेश स्तुतिः

आयसय शरण करतम क्षमा, ओं श्री गणेशाये नमः।
गणपत गणेश्वर हे प्रभो, कलिराज़ राज़न हुन्द विभो।।

पज़ि लोलु पादन तल नमः, ओं श्री गणेशाये नमः।
गुडनी च्यय छुय आधिकार, कलिकालकुय चुय ताजदार।

पजि़ लोल पादन तल प्यमा, ओं श्री गणेशाये नमः।
मूषक च़्य वाहन शूभवुन, त्रन लूकनय मंज फेरवुन,
सहायक म्य रोज़तम हर दमः, ओं श्री गणेशाये नमः।
यज्ञस ज़पस व्यवहारसय, गुडु छिय सुरान प्रथकारसय,
कारस अनान छुख चय जमः, ओं श्री गणेशाये नमः।
सुन्दर लम्बोदर एक दन्त, स्मरन चाञ वंतिन म्ये अन्द।
रति वेल, सुन्दर छुम समः, ओं श्री गणेशाये नमः।
स्मरन यि चोनी यिम़ करान, भवुसागरस अपोर तरान,
रट्अ सानि नावे चुय नमा, ओं श्री गणेशाये नमः।
स्मरन यि चानी भक्ति जन, पूरण गछान तम्यसुन्द छु प्रन,
चरणोदकुक अमृत चमा, ओं श्री गणेशाये नमः।

ज़गतुक महेश्वर च्य पिता, सति रूप सीति धर्मुच सत्ता,
माता च़्य गौरी श्री वुमा, ओं श्री गणेशाये नमः।
बाह नाव सुन्दर शूभुवुञ, स्वर्गस गछान तिम बोलुवुञ,
पूरण करुम पूरण तमा, ओं श्री गणेशाये नमः।
आमुत भक्त च़्येय छुय शरण, प्योमुत खोरन तल छुय परण,
वर दिय कास्तम चुय गमा, ओं श्री गणेशाये नमः।
सुबह प्यठ भखत, छिय लारान, प्रेम पोश ह्यय छिय प्रारान,
छुयख च्यानि पूजि लागनुक तमा, ओं श्री गणेशाये नमः।
गणिशबल प्यठ आख चलिथय, अंग़ अंग स्यंदरा मलिथय,
गोअड़ बोअज म्यन प्रार्थना, ओं श्री गणेशाये नमः।

आरती गणेश जी

जय गणेश, जय गणेश, जय गणेश देवा। माता जाकी पार्वती, पिता महादेवा।।
एक दंत दयावंत, चार भुजा धारी। मस्तक पर सन्दूर सोहे, मूसे की सवारी।।
जय गणेश, जय गणेश, जय गणेश देवा। माता जाकी पार्वती, पिता महादेवा।।

अंधन को आंख देत, कोढ़िन को काया। बांझन को पुत्र देत निर्धन को माया।
जय गणेश, जय गणेश, जय गणेश देवा। माता जाकी पार्वती, पिता महादेवा।।
हार चढ़े, फूल चढ़े और चढ़े मेवा। लड्डुअन का भोग लगे, संत करे सेवा।।
जय गणेश, जय गणेश, जय गणेश देवा। माता जाकी पार्वती, पिता महादेवा।।

गणेश स्तुति

हेमजा सुतं भजे गणेशं ईश नन्दनम्। एकदन्त वक्र तुण्ड नाग यज्ञ सूत्रकम्।।
रक्त गात्र धूम्र नेत्र शुक्ल वस्त्र मण्डितम्। कल्पवृक्ष भक्त रक्ष नमोस्तुते गजाननम्।।
पाशपाणि चक्रपाणि मूषकाधि रोहिणम्। अग्निकोटि सूर्य ज्योति वज्रकोटि पर्वतम्।।
चित्रमाल भक्तिज़ाल भालचन्द्र शोभितम्। कल्पवृक्ष भक्तरक्ष नमोस्तुतेगजाननम्।।
विश्ववीर्य विश्वसूर्य विश्वकर्म निर्मलम्। विश्वहर्ता विश्वकर्ता यत्र तत्र पूजितम्।।
चतुर्मुखं चतुर्भुजं सेवितं चतुर्युगम्। कल्पवृक्ष भक्तरक्ष नमोस्तुतेगजाननम्।।
भूत भव्य हव्य कव्य भर्गो भार्गव वन्दितम्। देव वह्नि काल जाल लोकपाल वन्दितम्।।
पूर्ण ब्रह्म सूर्यवर्ण पुरुषं पुरान्तकम्। कल्पवृक्ष भक्तरक्ष नमोस्तुतेगजाननम्।।

ऋद्धि बुद्धि अष्टसिद्धि नव निधान दायकम्। यज्ञकर्म सर्वधर्म सर्व वर्ण अर्चितम्।।
भूतधूत दुष्ट मुष्ट दान्वै सर्दार्चितम्। कल्पवृक्ष भक्तरक्ष नमोस्तुतेगजाननम्।।
हर्ष रूप वर्ष रूप पुरुष रूप वन्दितम्। शोर्प कर्ण रक्त वर्ण रक्त चन्दन लेपितम्।।
योग इष्ट योग सृष्ट योग दृष्टि दायकम्। कल्पवृक्ष भक्तरक्ष नमोस्तुतेगजाननम्।।

शंकर पूजन

भगवान् शंकर पर जल चढ़ाते हुए पढ़ें:- असंख्याताः सहस्राणि ये रुद्रा अधि-भूम्याम्। तेषां सहस्रयोजनेव धन्वानि तन्मसि ।1। यो रुद्रो अग्नौ य अप्सु य औषधीषु यो वनस्पतिषु। यो रुद्रो विश्वा भुवना विवेश तस्मै रुद्राय नमो अस्तु देवाः ।2। भवायदेवाय शर्वायदेवाय रुद्रायदेवाय पशुपतयेदेवाय उग्रायदेवाय महादेवाय भीमायदेवाय ईशानायदेवाय पार्वती-सहिताय परमेश्वराय जलं समर्पयामि नमः।

नेत्र स्पर्श करते हुए पढ़ें:- तेजोरूप ! महेशान ! सोमसूर्याग्निलोचन प्रकाशय परंतेजो नेत्रस्पर्शेन शंकर ! भवायदेवाय उमा-सहिताय शिवाय पार्वती-सहिताय परमेश्वराय नेत्रस्पर्शं परिगृहणामि नमः।

तिलक लगाते हुये पढ़ें:- **सर्वेश्वर जगद्वन्द्य** दिव्यासनसुसंस्थित। गन्धं गृहाण देवेश दिव्यगन्धोपशोभितम्। भवाय देवाय उमा-सहिताय शिवाय पार्वती-सहिताय परमेश्वराय समालभनं गन्धो नमः।

फूल चढ़ाते हुए पढ़ें:- सदाशिव शिवानन्द प्रधान करणेश्वर। पुष्पाणि बिल्वपत्राणि विचित्राणि गृहाण मे। भवाय देवाय उमा सहिताय शिवाय पार्वती सहिताय परमेश्वराय पुष्प समर्पयामि नमः।

रत्नदीप कपूर चढ़ाते हुए पढ़ें:- हिरण्यबाहो सेनानीः औषधीनां पते शिव। दीपं गृहाण कर्पूर कपिलाज्य त्रिवर्तिकम्। भवाय देवाय उमा-सहिताय शिवाय पार्वती-सहिताय परमेश्वराय रत्नदीपं कर्पूरं परिकल्पयामि नमः।

दोनों हाथों में पुष्पांजलि पकड़ते हुए निम्नलिखित तीन श्लोक पढ़कर फूल चढ़ावें-

आत्मा त्वं गिरिजामतिः सहचराः प्राणः शरीरं गृहं,
पूजा ते विषयोपभोगरचना निद्रा समाधि स्थितिः।
संचारः पदयोः प्रदक्षिणविधि स्तोत्राणि सर्वा गिरो,
यत् यत् कर्म करोमि तत्तदखिलं शम्भो तवाराधनम् ।।1।।

अर्थः *हे शम्भो ! मेरी आत्मा तुम ही हो, मेरी बुद्धि तुम्हारी शक्तिरूपिणी पार्वती है, मेरे प्राण (अपान समान आदि) तुम्हारे साथी है, मेरा शरीर तुम्हारा घर या मन्दिर है, विषय भोग के लिये जो मेरे व्यापार होते हैं वही तुम्हारी पूजा है, मेरी जो निद्रा है वही तुम्हारी समाधि की स्थिति है, मेरे पाँवों का चलना तुम्हारी प्रदक्षिणा है, मैं जो कुछ बोलता हूँ सब तुम्हारा स्तोत्र है, सारांश यह है कि मैं कोई कर्म करता हूँ सभी तुम्हारी आराधना है।*

पुष्पाणि सन्तु तव देव ममेन्द्रियाणि, धूपो गुरु र्वपुरिदं हृदयं प्रदीपः।
प्राणान् हविषि करणानि नवाक्षतानि, पूजाफलं व्रजतु साम्प्रतमेष जीवः ।।2।।

अर्थः- *हे शम्भो ! मेरे सभी ज्ञानेन्द्रिय आपके पूजा के फूल बनें, यह मेरा शरीर धूप का काम दे, मेरा हृदय तुम्हारी पूजा में दीप का स्थान ले, मेरे प्राण तुम्हारे पूजा रूपी यज्ञ में आहुति का काम दें, मेरे कर्मेन्द्रिय अक्षत (पूजा के लिये बिना किसी जखम के चावल) का काम दें, हे भगवन् ! मेरा यह जीवात्मा अभी उत्तम पूजा के फल को प्राप्त हो।*

जन्मानि सन्तु मम देव शताधिकानि, माया च मे विशतु चित्तमऽबोध हेतु।
किन्तु क्षणार्धमपि त्वच्चरणारबिन्दात्, मा पैतु मे हृदयमीश नमो नमस्ते ।।3।।

अर्थः *इस स्तुति में भक्त भगवान् शंकर से पूजा का फल यह नहीं माँगता है कि मेरा आवामगन छूट जाये, अपितु बार-बार जन्म लेने की मुझे परवाह नहीं, मेरे सैकड़ों जन्म होने दीजिये, मैं यह नहीं माँगता हूँ तेरे चित्त से अज्ञान के कारण बना हुआ माया का पर्दा छिन्न-भिन्न हो जाये, बल्कि वह माया बिना किसी रोक-टोक के मेरे चित्त में प्रवेश करे, केवल आपसे प्रार्थना है आपके चरण कमल आधे क्षण के लिये भी मेरे चित्त से न निकले, हे भगवान् शंकर ! आपको बार-बार नमस्कार हो।*

अभिनवगुप्त कृत शिवस्तुतिः

ॐ व्याप्त-चराचर-भाव-विंशेषं, चिन्मयम्-एकम्-अनन्तम्-अनादिम्।
भैर-व-नाथम्-अनाथ-शरण्यम्- तन्मय-चित्ततया-हृदि वन्दे ।।1।।

अर्थः- *मैं अभिनवगुप्त मन की एकाग्रता से उस शंकर की हृदय में वन्दना करता हूँ जो शंकर अखिल चराचर सृष्टि से ओत प्रोत है। जो ज्ञान रूप है, अनन्त है भैरवों का स्वामी है और अनाथों को शरण देने वाला है।*

त्वन्मयम्-एतत्-अशेषम्-इदानीं, भाति मम त्वत्-अनुग्रह शक्त्या,
त्वं च महेश सदैव ममात्मा, स्वात्ममयं मम तेन समस्तम् ।।2।।

अर्थः- यह चराचर सृष्टि आप का ही रूप है, ऐसा मुझे आप की अनुग्रहशक्ति से प्रतीत होता है, परन्तु हे शंकर मेरी आत्मा ही आप हैं, अतः यह सारा जगत् मेरा ही रूप है, ऐसा भी मैं अनुभव करता हूँ।

स्वात्मनि-विश्वगते त्वयि नाथे, तेन न संसृति-भीतेः कथास्ति।
सत्-स्वपि दुर्धर-दुःख विमोह, त्रास-विधायिषु कर्म-गणेषु ।।3।।

अर्थः- हे नाथ! भयंकर दुःख मोह उत्पन्न करने वाले कर्मों के जाल में फंसे हुये, आप के भक्त इस भावना से कि विश्व आप का ही रूप है अतः वे संसार के क्षणिक दुःखों से डरते नहीं हैं, क्योंकि डर अथवा भय तब होता है ज़ब दूसरा हो, जब आप के बिना कोई दूसरा है ही नहीं तो डर कहाँ "भयं द्वितीयात्"।

अन्तक मां प्रति मा दृशम्-एनां, क्रोध-कराल-तमां विदधीहि।
शंकर-सेवन-चिन्तन-धीरो, भीषण-भैरव-शक्ति-मयोस्मि।।4।।

अर्थः- हे यमराज! क्रोध से कराल भयंकर दृष्टि से मेरी ओर न देख, जबकि मैं हर समय शंकर सेवन के चिन्तन में लगा रहता हूँ जिस सेवा चिन्तन से मैं भैरवशक्ति का पुंज बना हूँ अतः आप की यह कराल क्रोधभरी दृष्टि मेरा कुछ बिगाड़ नहीं सकती है।

इत्थम्-उपोढ-भवन्मय-संवित्, दीधिति-दारित-भूरि-तमिस्रः।
मृत्यु-यमान्तक कर्म-पिशाचैः, नाथ ! नमोस्तु न जातु बिभेमि ।।5।।

अर्थः- हे शंकर सब कुछ आप का ही रूप है ऐसी संवित् के जागृत होने से मेरा अज्ञानरूपी अन्धकार नष्ट हो चुका है, अतः मैं यमराज के परिवार भूत पिशाच आदि से डरता नहीं हूँ, हे नाथ मेरा आप को बार-बार नमस्कार हो।

प्रोदित-सत्य-विबोध-मरीचि, प्रोक्षित-विश्व-पदार्थ-सतत्वः।
भाव-परामृत-निर्भरपूर्णे, त्वय्यहम्-आत्मनि निर्वृतिम्-एमि ।।6।।

अर्थः- हे शंकर! आप के सत्यज्ञानरूप किरणों से विश्व के पदार्थ तथा सभी तत्वे सिंचित अथवा हरकत में है। ऐसे ही इस ज्ञान के प्रकट होने पर मैं श्रद्धा के अमृत से परिपूर्ण आप के ही स्वरूप भूत अपने ही आत्मा में परमानन्द का अनुभव करने लगता हूँ।

मानस-गोचरम्-एति-यदैव, क्लेश-तनु-ताप-विधात्री।
नाथ ! तदैव मम-त्वत्-अभेद, स्तोत्र-परामृत-वृष्टिर्-उदेति ।।7।।

अर्थः- शरीर के ताप को उत्पन्न करने वाली कष्ट की दशा को जब मैं मन से महसूस करने लगता हूँ, उसी समय मेरे अन्दर आप के अनुग्रह से प्राप्त अभेद वृष्टि का उदय होता है, जिस के प्रभाव से मैं किसी प्रकार का कष्ट अनुभव नहीं करता हूँ।

शंकर ! सत्यम्-इदं व्रत-दान, स्नान-तपो-भव-ताप-विनाशि।
तावक-शास्त्र-परामृत-चिन्ता, सिध्यति चेतसि-निर्वृति-धारा।।8।।

अर्थः- हे शंकर ! यद्यपि व्रत-दान-तप से संसार के दुःखों का नाश होता है, शैवशास्त्र के चिन्तनमात्र से ही मन में अमृत की धारायें प्रवाहित होने लगती हैं।

नृत्यति गायति हृष्यति गाढं, संवित्-इयं मम भैरवनाथ।
त्वां प्रियं आंप्य सुदर्शनम्-एकं, दुर्लभम्-अन्यजनैः समयज्ञम्।।9।।

अर्थः- हे मेरे भैरवनाथ ! मेरी दृढ़ संवित् यज्ञादिकों से अप्राप्य आप के अलौकिक दर्शन प्राप्त करके कभी नाचती है, कभी गायन करती है, कभी हर्ष का अभिनय करती है।

वसु-रस-पौषे कृष्ण-दशम्यां, अभिनव-गुप्तः स्तवम्-इमम्-अकरोत्।
येन विभु-भव-मरु-सन्तापं, शमयति झटिति जनस्य दयालुः ।।10।।

अर्थः- भक्तों पर दयालु आध्यात्मिक बलवाले अभिनवगुप्त ने सम्वत् 68 पौष कृष्ण दशमी को यह शंकर स्तुति की है जिस के उच्चारण, श्रवण, मनन से क्षणमात्र में दयालु शंकर संसार रूपी मरुस्थल के दुःखों का नाश करता है।

शिव संकल्प (यजुर्वेद से)

यत्-जाग्रतो-दूरम्-उदेति दैवं, तदु सुप्तस्य तथैव्-ऐति।
दूरं-गमं ज्योतिषां ज्योतिर्-एकं, तन्मे मनः शिव-संकल्पम्-अस्तु ।।1।।

अर्थः- जो मन जागते हुये मनुष्य का दूर चला जाता है, और सोते हुये का निकट आ जाता है, जो परमात्मा के साक्षात्कार का एकमात्र साधन है, जो ज्ञानेन्द्रियों का प्रकाशक और प्रवर्तक है, मेरा वह मन शिव, (कल्याणकारी) संकल्प वाला हो।

येन कर्मा-ण्यपसो मनीषिणो, यज्ञे कृण्वन्ति विदथेषु धीराः।
यत्-अपूर्वं यक्षम्-अन्तः प्रजानां, तन्मे मनः शिव संकल्पम्-अस्तु ।।2।।

अर्थः- कर्मयोगी विद्वान् जिस मन के द्वारा हर कर्म को यज्ञ के ढाँचे में डालते हैं, जो इन्द्रियों का अध्यक्ष है, जो समस्त प्रजा के हृदय में निवास करता है, वह मेरा मन शिव संकल्प वाला हो।

यत्-प्रज्ञानम्-उत चेतो धृतिश्च, यत्-ज्योतिर्-अन्तर्-अमृतं प्रजासु।
यस्मात्-न ऋते किंचन कर्म क्रियते, तन्मे मनः शिवसंकल्पम्-अस्तु ।।3।।

अर्थः- जो मन ज्ञान का कारण है जो धैर्यरूप है, जो समस्त प्रजा के हृदय में रह कर उन की इन्द्रियों को प्रकाशित करता है, जो मृत्यु होने पर भी अमर रहता है, जिस के बिना कोई भी कर्म किया नहीं जाता है वह मेरा मन शिवसंकल्प वाला हो।

येनेदं भूतं भुवनं भविष्यत्, परिगृहीतम्-अमृतेन सर्वम्।
येन यज्ञस्तायते सप्तहोता, तन्मे मनः शिव-संकल्पम्-अस्तु ।।4।।

अर्थः- जिस अमृतरूप मन के द्वारा भूत-भविष्य वर्तमान की सभी वस्तुयें जानी जाती हैं जिस के द्वारा सात होता वाला शरीर रूपी यज्ञ सम्पन्न होता है मेरा वह मन शिवसंकल्प वाला हो (सात होताः- पांच ज्ञानेन्द्रिय मन और बुद्धि)।

यस्मिन्-ऋचः साम यजूँषि यस्मिन्, प्रतिष्ठिता-रथनाभौ-इवाराः।
यस्मिन्-चितं सर्वम्-ओतं प्रजानां, तन्मे मनः शिव-संकल्पम्-अस्तु ।।5।।

अर्थः- जिस मन में रथचक्र की नाभि में अरियों के समान वेद प्रतिष्ठित है, जिस में सब पदार्थों से सम्बन्ध रखने वाला सम्पूर्ण ज्ञान ओत प्रोत है, मेरा वह मन शिवसंकल्प वाला हो।

सुषा-रथिर्-अश्वान्-इव, यन्मनुष्यान्, नेनीयते-अभीशुभिर्-वाजिनः इव।
हृत्प्रतिष्ठं यत्-अजिरं जविष्ठं, तन्मे मनः शिव-संकल्पम्-अस्तु ।।6।।

अर्थः- योग्य सारथि जैसे घोड़ों का संचालन करता है और लगाम के द्वारा घोड़ों का नियन्त्रण करता है, वैसे ही प्राणियों का संचालन तथा नियन्त्रण करने वाला हृदय में रहने वाला कभी बूढा-न होने वाला, अधिक तेज भागने वाला मेरा मन शिव संकल्प वाला हो।

शिवाष्टकम्

शीतांशु-शुभ्र कलया कलितो-त्तमाङ्गं, ध्यान स्थितं धरणिभृत्-तनयार्चितं तम्।
काला-नलोप-महला हल-कृष्ण कण्ठं, श्री शंकरं कलिमलापहरं नमामि।।

अर्थः- सुन्दर चन्द्रमा की शुभ्रकला से आप का शिरो भाग शोभित है, पर्वतराज हिमालय की कन्या पार्वती जी स्वयं ही आप की पूजा अर्चा करती है, संसार को जलन से बचाने के लिये कालानल के समान महा भीषण हलाल पी जाने से आप का कण्ठ काला हो गया है, इस कलिकाल का मल दूर करने में आप अपना सानी नहीं रखते, ऐसे ध्यान में मग्न आप शंकर को मेरा प्रणाम्।

गायन्ति यस्य चरितानि महात्-भुतानि, पद्मोद्-भवोद्-भवमुखाः सततं मुनीन्द्राः।
ध्यायन्ति यं यमिनम्-इन्दु-कलावतं सं, सन्तः समाधि-निरतास्तम् अहं नमामि।।

अर्थः- आप के अत्यन्त अद्भुत चरितों का गान ऐसे-वैसे नहीं, नारदादि बड़े-बड़े महामुनि तक किया करते हैं, साधु शिरोमणि योगीश्वर भी समाधि लगा कर आप ही का ध्यान करते रहते हैं ऐसे आप शंकर को पुनरपि मेरा प्रणाम्।

त्रैलोक्यम्-एतत्-अखिलं ससुरासुरंच, भस्मीभवेत्-यदि न यो दययार्द्र देहः।
पीत्वाऽहरद्गरलम्-आशु भयं तदुत्थं, विश्वा-वनैक-निरताय-नमोस्तु-तस्मै।।

अर्थः- हे शंकर! आप बड़े ही दयालु हैं, आप की दया सीमा रहित है, जब समुद्र मन्थन से हलाहल निकलने पर उस की आग असह्य हो गई, तव उस कालकूट का पांन स्वयं करके तीनों लोकों को जल जाने से बचा लिया, संसार की रक्षा का इतना ख्याल रखने वाले आप के चरणों में मैं अपना सिर रखता हूँ।

नो शक्यम्-उग्र तपसापि युगान्तरेण, प्राप्तुं यद्-अन्य सुर पुङ्गवतस्तदेव।
भक्त्या सकृत्प्रणम्-अनेन-सदा-ददाति, यो नौमि नम्रशिरसा च तमाशुतोषम्।।

अर्थः- युग-युगान्त-पर्यन्त तपस्या करने पर भी जो फल प्राप्ति भक्तों को अन्य सुर पुङ्गयों से भी नहीं हो सकती, वही आप को भक्ति भावपर्वूक प्रणाम मात्र करने से आप के सच्चे भक्तों को सुलभ हो जाती है, क्योंकि आप आशुतोष हैं (अर्थात् थोड़ी सेवा से प्रसन्न होने वाले) मैं आप के सामने अपना सिर झुकाता हूँ।

भूति प्रियोऽपि वितरत्यनिशं विभूतिं, भक्ताय यः फणिगणानपि धारयन् सन्।
हन्ति प्रचण्ड भव भीम भुजङ्ग भीतिं, तस्मै नमोस्तु सततं मम शंकराय।।

अर्थः- आप स्वयं ही विभूति-प्रिय हैं, वह प्यारी वस्तु विभूति अपने भक्तों को रोज ही लुटाया करते है, स्वयं आप महा भंयकर नागों के कण्ठे और मालायें आदि धारण करते है उधर आप ही जन्म-मरण रूपी भीम भुजङ्ग के भय से अपने सेवकों की रक्षा करते हैं हे मेरे शंकर! आप को मेरा नमस्कार।

येषां भयेन विबुधा रजनी चराणां, नो तत्यजुर्हिम-महीध्र-गुहा गृहाणि।
हत्वा ददौ गिरिश तानपि शैव धाम, त्वत्तः परोऽस्ति परमेश्वर को दयालुः।।

अर्थः- हे शंकर! जरा उन राक्षसों का स्मरण कर जो इतने पराक्रमी हो गये थे कि वह देवों का तरह-तरह से उत्पीड़न करने लगे थे यहां तक कि देवता उन के भय से हिमालय की गुफाओं में छिपे रहते थे। ऐसे अत्याचारी और पापी राक्षसों को भी मार कर आप ने पुण्य लोक भेज दिया, क्या आप से कोई अधिक दयालु देवता कहीं है? आप यथार्थ में परमेश्वर हैं।

पाप प्रसाधनरता दितिजा अपीन्द्रं, सद्यो विजित्य सुरधाम-धराधिपत्यम्।
यस्य प्रसादलवलेश-वशादवाप्ताः, तस्मै ममास्तु विनतिः परमेश्वराय।।

अर्थः- लंकेश्वरादि राक्षस पुण्यात्मा नहीं थे वे महा उत्पातकारी और पापिष्ठ थे परन्तु आप का सच्चा सेवक होने के कारण महेन्द्र को जीतकर देव लोक के अधीश्वर बन बैठे, आप से बढकर मुझे कोई परम ऐश्वर्यशाली और कोई देवता दिख नहीं पड़ता, मेरी विनती स्वीकार कर।

अर्चा कृता न तव नाम हर स्मृतन्न, नो भक्तवत्सल कृतं तव किंचिदन्यत्।
वीक्ष्य स्वपादकमलोपनतं तथापि, माम् पाहि कारुणिक-मौलिमणे महेश।।

अर्थः- मैं पापी आप से किस मुंह से कुछ याचना करूं, मैंने कभी भूल कर भी आप की अर्चना नहीं की है, कभी भूल से भी आप का नाम नहीं लिया है, कभी भूल कर भी आप की कोई सेवा नहीं की है, फिर भी यह देख कर कि मैं आप के चरणों पर पड़ा हूँ और नाक रगड़ रहा हूँ आशा है आप मुझ पर भी कृपा करेंगे, क्योंकि आप आशुतोष होकर परम भक्त वत्सल भी हैं।

शंकर प्रार्थना

प्रणतोस्मि महादेव, प्रपन्नोस्मि सदाशिव, निवारय महामृत्युं, मृत्युंजय नमोस्तुते।
मृत्युंजय महादेव, पाहि मां शरणागतम्, जन्ममृत्यु-जरारोगैः, पीडितं भवबन्धनात्।।
कर्पूर-गौरं करुणावतारं, संसार-सारं भुजगेन्द्र-हारम्।
सदा रमन्तं हृदयारबिन्दं, भवं भवानी सहितं नमामि।।
हर शम्भो महादेव, विश्वेशामरवल्लभ। शिव शंकर सर्वात्मन्, नीलकण्ठ नमोस्तुते।
तव तत्त्वं न जानामि, कीदृशोसि महेश्वर, यादृशोसि महादेव, तादृशाय नमो नमः।।
आधीनाम्-अगदं दिव्यं, व्याधीनां मूलकृन्तनम्, उपद्रवाणां दलनं, महादेवम्-उपास्महे।
आत्मा त्वं गिरजा मतिः, परिजनाः प्राणाः शरीरं गृहं ।
पूजा ते विषयो-पभोगरचना निद्रा समाधि स्थितिः।

संचारोऽपि परिक्रमः पशुपते, स्तोत्राणि सर्वा गिरो।

यत्यत् कर्म करोमि देव भगवन् तत् तत् तवाराधनम्।।

लिंगाष्टकम्

ब्रह्मा मुरारिः सुरार्चित लिंगं, निर्मल-भासित-शोभित-लिंगम्।

जन्मज-दुःख-विनाशक-लिंगं, तत्प्रणमामि सदा शिव-लिंगम् ।।1।।

देव-मुनि-प्रवरा-र्चितलिंगं, कामदहं करुणाकर-लिंगम्।

रावण-दर्प-विनाशित-लिंगं, तत्प्रणमामि सदाशिवलिंगम् ।।2।।

सर्व-सुगन्धि सुलेपित-लिंगं, बुद्धिविवर्धन-कारण-लिंगम्।

सिद्ध-सुरासर-वंदित-लिंगं, तत्प्रणमामि सदाशिव-लिंगम् ।।3।।

कनक-महामणि-भूषित-लिंगं, फणिपति-वेष्टित-शोभित-लिंगम्।

दक्ष-सुयज्ञ-विनाशक लिंगं, तत्प्रणमामि सदाशिव-लिंगम् ।।4।।

कुंकम-चंदन-लेपितलिंगं, पंकज-हार-सुशोभित-लिंगम्।

संचित-पाप-विनाशन-लिंगं, तत्प्रणमामि-सदाशिव लिंगम् ।।5।।

देव-गणार्चित सेवित लिंगम्, भावेर्भक्तिभिरेव च लिंगम्।
दिन-कर-कोटि-प्रभा-कर लिंगम्, तत्प्रणमामि सदाशिव लिंगम् ।।6।।
अष्ट-दलोपरि वेष्टित-लिंगं, सर्व-समुद्-भव-कारण-लिंगम्।
अष्ट-दरिद्र-विनाशित-लिंगम्, तत्प्रणमामि सदाशिवलिंगम् ।।7।।
सुरगुरु-सुरवर-पूजित-लिंगम्, सुरवन-पुष्प-सदा-र्चित-लिंगम्।
परात्परं-परमात्मक-लिंगम्, तत्प्रणमामि सदाशिव-लिंगम् ।।8।।

शिवोऽहं शिवोऽहं शिवोऽहं शिवोऽहं

मनो बुद्धय-हंकार-चित्तानि नाहं, न च श्रोत्र-जिह्वे न च घ्राण-नेत्रे।
न च व्योम-भूमि-र्न तेजो न वायुः, चिदानन्द-रूपः शिवोऽहं शिवोऽहं।
नच प्राण-संज्ञो न वै पंचवायुः, न-वा सप्त-धतु-र्न वा पंचकोशः।
न वाक्-पाणिपादं न चोपस्थ-पायुः, चिदानन्द-रूपः शिवोऽहं शिवोऽहम्।
नमे द्वेषरागौ न मे लोभ मोहौ, मदो नैव मे नैव मात्सर्य-भावः।

न धर्मो न चार्थो न कामो न मोक्षः, चिदानन्द रूपः शिवोऽहं शिवोहम्।
न पुण्यं न पापं न सौख्यं न दुःखं, न मन्त्रो न तीर्थं न वेदा न यज्ञः।
अहं भोजनं नैव भोज्यं न भोक्ता, चिदानन्दरूपः शिवोऽहं शिवोऽहम्।
न मृत्यु-र्न शंका न मे जातिभेदः, पिता नैव मे नैव माता च जन्म।
न बन्धु-र्न मित्रं गुरु-नैव शिष्यः चिदानन्दरूपः शिवोऽहं शिवोऽहम्।
अहं निर्विकल्पी निराकाररूपो, लघुत्वात्-च सर्वत्र सर्वेन्द्रियाणाम्।
न चा संगतं नैव मुक्ति-र्न मेयः, चिदानन्दरूपः शिवोऽहं शिवोऽहम्

शिवपञ्चाक्षरस्तोत्रम्

नागेन्द्र हाराय त्रिलोचनाय, भस्माङ्गरागाय महेश्वराय।
नित्याय शुद्धाय दिगम्बराय, तस्मै 'न'काराय नमः शिवाय।1।

अर्थः जिस के गले में सांपों का हार है, जिंस के तीन नेत्र है, भस्म ही जिस का अनुलेपन है, दिशायें जिस के वस्त्र हैं (अर्थात् जो नग्न है) उस शुद्ध 'न' कार स्वरूप शिव को नमस्कार हो।

मन्दाकिनी-सलिल-चन्दन-चर्चिताय, नन्दीश्वर-प्रमथनाथ-महेश्वराय।
मन्दारपुष्प-बहुपुष्प-सुपूजिताय, तस्मै 'म'काराय नमः शिवाय।2।

अर्थः गंगा जल और चन्दन से जिस की पूजा हुई है, मन्दार पुष्प तथा नाना प्रकार के फूलों से जिस की पूजा हुई है उन नन्दी के अधिपति, शिव के गणों के स्वामी 'मकर' स्वरूप शिव को नमस्कार हो।

शिवाय-गौरी-वन्दनाब्ज-वृन्द, सूर्याय-दक्षाऽध्वर-नाशकाय।

श्रीनीकलण्ठाय वृषध्वजाय, तस्मै 'शि'काराय नमः शिवाय।3।

अर्थः पार्वती जी के मुख कमल को प्रसन्न करने के लिये जो सूर्य स्वरूप है जो दक्ष के यज्ञ का नाश करने वाले हैं जिन की ध्वजा में बैल का चिन्ह है उस 'शि'कार स्वरूप शिव को नमस्कार हो।

वसिष्ठ-कुम्भोद्भव-गौतमार्य, मुनीन्द्र-देवाऽर्चित-शेखराय।

चन्द्रार्क-वैश्वानर-लोचनाय, तस्मै 'व'काराय नमः शिवाय।4।

अर्थः वसिष्ठ, अगस्त्य और गौतम आदि श्रेष्ठ मुनियों तथा इन्द्रादि देवताओं ने जिन की मस्तक की पूजा की है चन्द्रमा, सूर्य और अग्नि जिन के नेत्र हैं उन 'व' कार स्वरूप शिव को नमस्कार है।

यक्षस्वरूपाय जटाधराय, पिनाकहस्ताय सनातनाय।

दिव्याय देवाय दिगम्बराय, तस्मै 'य'काराय नमः शिवाय।5।

अर्थः जिन्होंने यक्षरूप धारण किया है, जो जटाधारी हैं जिन के हाथ में पिनाक हैं जो दिव्य सनातन पुरुष हैं उस 'य' कार स्वरूप शिव को नमस्कार है।

पंचाक्षरम्-इदिं पुण्यं यः पठेत्-शिव-सन्निधौ।

शिवलोकम्-अवाप्नोति-शिवेन-सह-मोदते।।

शिव षडक्षरस्तोत्रम्

ॐकारं बिन्दुसंयुक्त नित्यं ध्यायन्ति योगिनः। कामदं मोक्षदं चैव ॐकाराय नमो नमः।1।
नमन्ति ऋषयो देवा, नमन्ति-अप्सरसां गणाः। नरा नमन्ति देवेश 'न'काराय नमो नमः।2।
महादेवं महात्मानं महाध्यानं परायणम्। महापापहरं देवं 'म'काराय नमो नमः।3।
शिवं-शान्तं-जगन्नाथं, लोका-नुग्रह-कारकम्। शिवमेकपदं नित्यं 'शि'काराय नमो नमः।4।
वाहनं वृषभो यस्य वासुकिः कण्ठभूषणम्। वामे शक्तिधरं देवं 'व'काराय नमो नमः।5।
यत्र यत्र स्थितो देवः सर्वव्यापी महेश्वरः। यो गुरुः सर्वदेवानां 'य'काराय नमो नमः।6।
षड्-अक्षरं-इदं-स्तोत्रं-यः-पठेत्-शिव-सन्निधौ। शिव-लोकं-अवाप्नोति, शिवेन-सह-मोदते।7।

श्री रुद्राष्टकम्

नमामि-ईशं-ईशान-निर्वाण-रूपं, विभुं-व्यापकं-ब्रह्म-वेद-स्वरूपम्।
अजं-निर्गुणं-निर्विकल्पं-निरीहं, चिदा-कारम्-आकाशवासं-भजेऽहम्।।

निराकारं-ओंकार-मूलं-तुरीयं, गिरा-ज्ञान-गोतीतं-ईशं-गिरीशम्।
करालं-महाकाल-कालं-कृपालं, गुणा-गार-संसार-पारं-नतोऽहम्।।
तुषाराद्रि-सङ्काश-गौरं-गभीरं, मनो-भूत-कोटि-प्रभाश्री-शरीरम्।
स्फुरन्-मौलि-कल्लोलिनी-चारु-गङ्गा, लसत्-भाल-बालेन्दु-कण्ठे-भुजङ्गा।।
चलत्-कुण्डलं-भुसुनेत्रं-विशालं-प्रसन्नाननं-नीलकण्ठं-दयालम्।
मृगाधीश-चर्माम्बर-मुण्डमालं, प्रियं-शङ्करं-सर्वनाथं-भजामि।।
प्रचण्डं-प्रकृष्टं-प्रगल्भं-परेशं, अखण्डं-अजं-भानु-कोटि-प्रकाशम्।
त्रयः-शूल-निर्मूलनं-शूल-पाणिं, भजेऽहं-भवानीपतिं-भाव-गम्यम्।।
कलातीत-कल्याण-कल्पान्त-कारी, सदा-सज्जना-नन्ददाता-पुरारिः।
चिदानन्द-सन्दोह-मोहाप-हारी, प्रसीद-प्रसीद-प्रभो-मन्मथारिः।।
न-यावत्-उमानाथ-पादार-विन्दं, भजन्तीह-लोके-परे-वा-नराणाम्।
न-तावत्-सुखं-शान्ति-सन्ताप-नाशं, प्रसीद-प्रभो-सर्व-भूताधिवासं।।
न जानामि-योगं-जपं-नैव-पूजां, नतोऽहं-सदा-सर्वदा-देव-तुभ्यम्।

जरा-जन्म दुखौघ तातप्यमानं, प्रभो-पाहि-शापात्-नमामीश-शम्भो।।
रुद्राष्टकं-इदं प्रोक्तं, विप्रेण हर तुष्टये।
ये पठन्ति नरा-भक्त्या, तेषां शम्भुः प्रसीदति।।

शिव स्तुतिः

असित गिरि सम स्यात् कज्जलं सिन्धुपात्रे,
सुरतरुवर-शाखा-लेखिनी-पत्रम्-ऊर्वी।
लिखति यदि गृहीत्वा शारदा सर्व कालं,
तदपि तव गुणानाम् ईश पारं न याति।। ।।1।।
वन्दे देवम् उमापतिं सुरगुरुं, वन्दे जगत् कारणम्,
वन्दे पन्नगभूषणं मृगधरं, वन्दे पशूनाम् पतिम्।
वन्दे सूर्य्यशशांक-वह्नि नयनम्-वन्दे मुकुन्द-प्रियम्।
वन्दे भक्तजनाश्रयं च वरदं वन्दे शिवं शंकरम्।।2।।

शान्तं पद्मासनस्थं शशधर-मुकुटं, च वक्त्रं त्रिनेत्रं,
शूलं वज्रं च खड्गपरशुमभयदं, दक्षिणाङ्गे वहन्तम्।
नागं पाश च घण्टां डमरुक सहितं, सां कुशं वामभागे,
नानालंकार युक्तं स्फटिक-मणिनिभं, पार्वतीशं नमामि। ।।3।।
श्मशानेष्वा क्रीडा स्मरहर पिशाचाः सहचराः,
चिताभस्मालेपः स्त्रगपि नृकरोटी परिकरः।
अमङ्गल्यं शीलं तव भवतु नामैवम् अखिलम्,
तथापि स्मर्तृणां वरद परमं मङ्गलमसि। ।।4।।
पापोऽहं पाप कर्माहं पापात्मा पाप सम्भवः,
त्राहि मां पार्वती नाथ सर्व पाप हरो भव। ।।5।।

शिव-चामर-स्तुतिः

ॐ अतिभीषण कटुभाषण यमकिङ्कर पटली, कृत-ताडन-परिपीडन-मरणागम-समये।
उमया सह मम चेतसि यमशासन निवसन्, शिवशङ्कर शिवशङ्कर हर से हर दुरितम्।।1।।

अतिदुर्नय चटुलेन्द्रिय रिपु-सञ्चय दलिते, पविकर्कश कटुजल्पित खलगर्हण-चलिते।
शिवया सह ममचेतसि शशिशेखर निवसन्, शिवशङ्कर शिवशङ्कर हर में हर दुरितम्।।2।।
भव भञ्जन सुर-रञ्जन खलवञ्चन पुरहन्, दनुजान्तक मदनान्तक रतिजान्तक भगवन्।
गिरिजावर करुणाकर परमेश्वर भयहन्, शिवशङ्कर शिव शङ्कर हर में हर दुरितम्।।3।।
शक्रशासन कृतशासन चतुराश्रम विषये, कलिविग्रह भवदुर्ग्रह रिपुदुर्बल समये।
द्विज-क्षत्रिय-वनिता शिशुदर कम्पित हृदये, शिवशङ्कर शिवशङ्कर हर में हर दुरितम्।।4।।
भवसम्भव विविधामय परिपी-डितवपुषं, दयितात्मज ममताभर-कलुषी-कृत-हृदयम्।
करु मां निजचरणार्चन निरतं भव सततं, शिवशङ्कर शिवशङ्कर हर में हर दुरितम्।।5।।

आरती शंकर जी

जय शिव ओंकारा, भज जय शिव ओंकारा।
ब्रह्मा विष्णु सदाशिव, अर्द्धंगी धारा, ओ३म् हर हर महादेव।।
एकानन चतुरानन पंचानन राजे, स्वामी पंचानन राजे।
हंसानन गरुड़ासन वृषवाहन साजे, ओ३म् हर हर महादेव।।

दो भुज चारु चतुर्भुज दश भुज अति सोहे, स्वामी दस भुज अति सोहे।
तीनों रूप निखरत, त्रिभुवन-जन मोहे, ओ३म् हर हर महादेव।।
अक्षमाला वनमाला मुण्डमाला धारी, स्वामी मुण्डमाला धारी।
त्रिपुरारी कंसारी करमाला धारी, ओ३म् हर हर महादेव।।
श्वेताम्बर पीताम्बर बाघाम्बर अंगे, स्वामी बाघाम्बर अंगे।
सनकादिक गरुड़ादिक भूतादिक संगे, ओ३म् हर हर महादेव।।
कर मध्ये सुकमण्डलु चक्र त्रिशूल धारी, स्वामी चक्र त्रिशूल धारी।
सुखकारी दुखहारी जग-पालन कारी, ओ3म् हर हर महादेव।।
ब्रह्मा विष्णु सदाशिव जानत अविवेका, स्वामी जानत अविवेका।
प्रणवाक्षर में शोभित ये तीनों एका, ओ३म् हर हर महादेव।।
त्रिगुण स्वामी की आरती जो कोई नर गावे, स्वामी जो कोई नर गावे।
कहत शिवानन्द स्वामी मनवांछित फल पावे, ओ३म् हर हर महादेव।।

शिवाय नमः ओं नमः शिवाय

आधार ज़गतुक कुनुय छु मन्त्र, शिवाय नमः ओं नमः शिवाये।।
त्रिपंच नयनो ही आदि दीवो, जटा मुकट छुय गंडिथ च्य़ दीवो।
चन्द्र-अर्द्ध शेखर, त्रिलोचनाय, शिवाय नमः ओं, नमः शिवाय।।
च्य़ नील कंठो जटन छय-गंगा, च मोक्षदायक गुसोज्य नंगा।
अलक्ष अगोचर छ्यपन गुफाये, शिवाय नमः ओं नमः शिवाये।।
बिहिथ छय गौरी च्य़ सूत्य नालय, वलिथ छुय सर्पन हुंदुय दुशालै।
सहस्त्र सूर्यि तीज च्य मंज़ जटाये, शिवाय नमः ओं नमः शिवाये।।
अथस च्य़ डाबर चू बीन वायान, कपाल-माल त्रिशूल धारान।
भक्तयन अभय छुख दिवान यछ़ाये, शिवाय नमः ओं नमः शिवाये।।
रटिथ चू अंकुश खडगधारिथ, धनुर धनन मंज पिनाक चारिथ।
वुदनि बू डंड्वथ करय हा माये, शिवाय नमः ओं नमः शिवाये।।

भवाय दीवो शर्वाय दीवो, भस्माय दीवो सुरान च्य जीवो।
च्य जीव पूजान छिय भावनाये, शिवाय नमः ओं नमः शिवाये।।
संसार सुदरस, म्य तार तारुम, अमर बनावुम शिव मार्ग हावुम।
वोलुस कुकर्मव कुवासनाये, शिवाय नमः ओं नमः शिवाये।।
अनाथ बन्धो दयायि सागर, संसार की दुःख म्य यिम छि, तिम च़्ठ।
ज़्गतस दया कर च ह्यथ ओमाये, शिवाय नमः ओं नमः शिवाये।।

भवसर कुस तरि

आदि प्रभातन युस दय नाव स्वरि, सुय हा यमि भवसर तरि लो लो।।
भावनाइ सान सुस तस पूजा करि, सुयहा यमि भवसर तरि लो लो।।
सुलि प्रभातन श्रान ध्यान करि, गरि गरि हर हर परि लो लो।।
द्रुख त संकट तस पान भगवान् हरि, सुयहा यमि भवसर तरि लो लो।।
गृहस्थ आश्रम कुय युस व्रत दरि, लूक सीवाई प्यठ मरि लो लो।।

निष्काम कर्मन लोला युस बरि, सुयहा यमि भवसर तरि लो लो।।
सन्तोष व्रच प्यठ मन युस थ्यर करि, हर सात सुय व्रत दरि लो लो।
सुख त शान्ती हुंद युस हलमा बरि, सुयहा यमि भवसर तरि लो लो।
श्वास उश्वासस दय नाव युस स्वरि, दय सुन्द ध्याना दरि लो लो।
लय रोजि तथ मंज कारुबारा करि, सुयहा यमि भवसर तरि लो लो।।
पऽछय सीवाय प्यठ पान अर्पण करि, बेलूस बऽग रावि घरि लो लो।
ड्यक मुचरिथ युस दान धर्मा करि, सुयहा यमि भवसर तरि लो लो।।
हु त ब्ह मशरावि सारिनीय लोल भरि, लोलुक सोदा करि लो लो।
जीव जाचन सूत लो लुच माय बरि, सुयहा यमि भवसर तरि लो लो।।
काम क्रूध लूभ मोह अहंकार यस खरि, सत-असत वार सर करि लो लो।
अपजिस दुय करि पजरस लोल बरि, सुयहा यमि भवसर तरि लो लो।।
तरवुन करनोव आलव दिवान तरि, कंसि मा छु तरुन घर लो लो।
आलुस त्राविथ उद्यूग युस करि, सुयहा यमि भवसर तरि लो लो।।
प्रथ शायि मंज़ जानुन कुस वास करि, सोरुय कस मंज! स्वरि लो लो।
बेबस जानिथ देह अद त्याग करि, सुयहा यमि भवसर तरि लो लो।।

तेरे पूजन को भगवान्

तेरे पूजन को भगवान, बना मन मन्दिर आलीशान।
किसने जानी तेरी माया, किसने भेद तुम्हारा पाया।।
हारे ऋषि-मुनि कर ध्यान, बना मन मन्दिर आलीशान।
तू ही जल में तू ही थल में, तू ही मन में तू ही वन में।
तेरा रूप अनूप महान, बना मन मन्दिर आलीशान।
तू हर गुल में, तु बुलबुल में, तू हर डाल के पातन में।
तू हर दिल में है मुर्तिमान, बना मन मन्दिर आलीशान।
तूने राजा रंक बनाये, तूने भिक्षुक राज बिठाये।।
तेरी लीला ऐसी महान, बना मन मन्दिर आलीशान।
झूठे जग की झूठी माया, मूर्ख इस में क्यों भरमाया।।
कर कुछ जीवन का कल्याण, बना मन मन्दिर आलीशान।।

शिवजी की आरती

शिवोहं शिवोहं शिवोहं शिवोहं सर्व विश्व का जो परमात्मा है,
सभी प्राणियों की वही आत्मा है। वही आत्मा सच्चिदानन्द में हूँ,
शिवोहं शिवोहं शिवोहं शिवोहं जिसे शस्त्र कोटे न अग्नि जलावे
न पानी गलावे न मृत्यु मिटावे। वही आत्मा सच्चिदानन्द में हूँ
शिवोहं शिवोहं शिवोहं शिवोहं अजर और अमर जिस को वेदों ने गाया
यही ज्ञान अजुर्नन को हरि ने सुनाया।
अमर आत्मा है मरण शील काया, सभी प्राणियों के जो घट में समाया।
वही आत्मा सच्चिदानन्द में हूँ, शिवोहं शिवोहं शिवोहं शिवोहं
है तारी से तारों में प्रकाश जिस का, है चन्द्र व सूर्य में है वास जिस का
वही आत्मा सच्चिदानन्द में हूँ, शिवोहं शिवोहं शिवोहं शिवोहं।
शिवोहं शिवोहं शिवोहं शिवोहं, शिवोहं शिवोहं शिवोहं शिवोहं।।

ब्राह्मी-विद्या

ॐ ॐ ॐ त्रिगुणपुरुष क्षेत्रचर, मोहं भिन्धि, रजस्तमसी भिन्धि, प्राकृत-पाशजालं-सावरणं परिहर, सत्वं ग्रहाण-पुरुषोत्तमोसि, सोम-सूर्यानल, प्रवर, परमधामन् ब्रह्म विष्णुमहेश्वरस्वरूप,, सृष्टिस्थिति-संहारकारक, भ्रू-मध्य-निलय, तेजोसि-धामासि-अमृतात्मन् ॐ तत्सत् हँसः, शुचिषत्, वसुरन्त-होता वेदिषत् अतिथि-दुरोणसत्, नृषत्-वरसत्-ऋतसत्-व्योमसत्, अब्जा गोजा ऋतजा अद्रिजा ऋतं, परंब्रह्म-स्वरूप, सर्वगत सर्वशक्ते, सर्वेश्वर, सर्वेन्द्रिय-ग्रन्थि भेदं कुरु, परमं-पदं परामर्शय परमार्ग ब्रह्म-द्वारं सर, कुमार्गं-जहि-षट्-कोशिकं शरीरं-त्यज, शुद्धोसि बुद्धोसि विमलोसि क्षमस्व स्वपदम्-आस्वादय स्वाहा।

ब्राह्मी विद्या

ॐ ॐ ॐ = तीन प्रकार के दुःखों का निवारण करने के लिए मंगलरूप में तीन बार आरम्भ में 'ॐ' का उच्चारण किया गया है, त्रिगुण पुरुष = तुम त्रिगुण पुरुष हो अर्थात् तीन गुणों में तेरा ही निवास है, क्षेत्र चर = शरीर रूपी क्षेत्र में फिरने से तुम ही क्षेत्रचर हो, मोहं = मोह रूपी ग्रन्थि को, भिन्धि= काटो, रजस्तमसी = रजो गुण, तमो गुण रूपी ग्रथियों को काटो, प्राकृत= बनावटी, पाशजालं = बन्धनों का जाल, सावरणं = आवरण सहित, परिहर = फैंक दो, सत्वं ग्रहाण = तत्व को जान, पुरुषोत्तमोसि = तुम स्वयं ही पुरुषोत्तम हो, सोम = चन्द्रमा, सूर्य = सूरज, अनल = अग्नि, प्रवर = तेजोमय

रूप, **परमधामन्** = उत्तम स्थान वाले, ब्रह्म, विष्णु, महेश्वर, **स्वरूप** = तुम ही ब्रह्मा, विष्णु, महेश रूप हो, **सृष्टि स्थिति** = तुम ही सृष्टि को बनाने वाले हो, **संहार कारक** = नाश करने वाले हो, **भ्रू-मध्य-निलय** = भ्रुवों के मध्य में ध्यान टिकाने से तुम जाने जाते हो, **तेजोसि** = तुम तेज रूप हो, **धामासि** = तुम उत्तम धाम वाले हो, **अमृतात्मन्** = तुम अमृत रूप हो, **ॐ तत्सत्** = तुम सत् रूप हो, **हंस** = तुम स्वयं प्रकाश हो, **शुचिषत्** = तुम निर्मल स्थान पर रहने वाले हो, **वसुरन्त-रिक्षसत्** = तुम आकाश में रहने वाले वस नाम के देवता हो, **होता** = तुम ही अग्नि में आहुति डालने वाले हो, **वेदिषत्** = तुम ही यज्ञ की वेदी पर ठहरे हुये अग्नि हो, **अतिथिर्दराणसत्** = तुम ही गृहस्थों में अतिथि रूप देवता हो, **नृषत्** = तुम मनुषयों में रहने वाले हो, **वरसत** = तुम देवताओं में रहने वाले हो, **ऋत ऋत्** = तुम सत्य में रहने वाले हो, **व्योम सत्** = तुम आकाश में ओत प्रोत हो, **अब्जः** = तुम जल में उत्पन्न होने वाले रत्न शंक आदि हो, **गोजा** = तुम पर्वतों तथा पृथ्वी से प्रकट होने वाले अन्न औषधि रूप हो, **अद्रिजा** = तुम पर्वतों से प्रकट होने वाले नदी-नाले रूप हो, **ऋतुजा** = तुम सब से महान् और परम सत्य हो, **परम-ब्रह्म-स्वरूप** = तुम परम ब्रह्म स्वरूप हो, **सर्वगत** = तुम सब मे गए हो, **सर्व शक्ते** = तुम सर्व शक्तिमान् हो, **सर्वेश्वर** = तुम सबों के स्वामी हो, **सर्वेन्द्रिय** = सब इन्द्रियों से, **ग्रन्थि भेदं कुरु** = आसक्ति छोड़ो, **परमं-पदं** = उस परमपद का, **पर-मार्ग** = उस उत्तम मार्ग का, **परामर्शय** = विचार कर, **ब्रह्म-द्वारं सर** = ब्रह्मद्वार की ओर चल अर्थात् अपने स्वरूप को जान, **कुमार्ग जहि** = अज्ञान के मार्ग को छोड़, **षट-कौशिकं शरीरं** = इस षट् कोशिक शरीर अर्थात् रोम, रक्त, मांस, मज्जा, हड्डियों और वीर्य से बने हुये शरीर को, **त्यज** = छोड़ो, **शुद्धोसि** = तुम शुद्ध रूप हो, **बुद्धोसि** = तुम बुद्धि रूप हो, **विमलोसि** = तुम निर्मल हो, **स्वपदम्-आस्वादय स्वाहा** = अपने स्वरूप का अनुभव कर इस ज्ञान को तू अच्छी प्रकार स्वीकार कर।

हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे। हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे।

विष्णु प्रार्थना

शान्ताकारं भुजगशयनं पद्मनाभं सुरेशं। विश्वाधारं गगनसद्रश्यं मेघवर्णं शुभाङ्गम्।
लक्ष्मी कान्तं कमलनयनं योगिभिर्ध्यान गम्यं। वन्दे विष्णुं भवभयहरं सर्वलोकैकनाथम् ।1।
यस्य हस्ते गदा चक्रं गुरुडो यस्य वाहनं। शंखः करतले यस्य स मे विष्णुः प्रसीदतु ।2।
यद्बल्ये यश्च कौमारे यत् यौवने कृतं मया, वयः परिणतौ यश्च यक्ष्च जन्मात्तरेषुच।
कर्मणा मनसा वाचा यापापं समुवर्जितं तन्नारायण गोविन्द क्षमस्व गुरुडध्वज।3।
त्वमेव माता च पिता त्वमेव, त्वमेव बन्धुश्च सखस्त्वमेव
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव, त्वमेव सर्वं मम देव देव ।4।
तत्रैव गंगा यमुना चवेणी, गोदावरी सिंधु सरस्वती च,
सर्वाणि तीर्थानि वसन्ति तत्र, यत्रेच्युतोदार कथा प्रसंगा।5।
नमामि नारायण पादपंकजं करोमि नारायण पूजनं सदा।
वदामि नारायण नाम निर्मलं, स्मरामि नारायण तत्वम् अव्ययम।6।
गो कोटिदानं ग्रहणेषु, काशी, प्रयागं गंगाऽयुतकल्पवासः।
यज्ञायतं मेरु सुवर्णदानं, गोविंदनाम्ना न कदापि तुल्यम्।।

ध्येयः सदा सवितृमण्डल मध्यवर्ती नारायणः सरसिजासन-सन्निविष्ठः।
केयूरवान-कनक-कुण्डलवान्-किरीटी हारी हिरण्य-वपुर्धृत शङ्खचक्रः।8।
करार बिन्देन पदारबिन्दं मुखारबिन्दं विनिवेशययन्तं।
अश्वत्थपत्रस्य पुटेशन, बालं मुकन्दं मनसा स्मारामि।9।
गोविन्द गोविन्द हरे मुरारे, गोविन्द गोविन्द रथांगपाणे।
गोविन्द गोविन्द मुकुंद कृष्ण, गोविन्द गोविन्द नमो नमस्ते।10।

विष्णु स्तुतिः

जय नारायण, जय पुरुषोत्तम, जय वामन कंसारे।
उद्धर मामसुरेशविनाशिन् पतितोहं संसारे।।
घोरं हर मम नरक रिपो, केशव कल्मषभारं।
माम्-अनुकम्पय दीनम्-अनाथं, कुरु भव-सागरपारम्।। घोरं हर मम०।।1।।
जय जय देव जया-सुरसूदन, जय केशव जय विष्णो।
जय लक्ष्मीमुख-कमल-मधुव्रत, जय दशकन्धर जिष्णो। घोरं हर मम० ।।2।।
यद्यपि सकलम्-अहं कलयामि हरे, नहि किम्-अपि स सत्वम्।तत्-अपि न मुञ्चति

मम्-इदम्-अच्युत, पुत्रकलत्र-ममत्वं। घोरं हर मम० ।।3।।

पुनर्-अपि जननं पुनर्-अपि मरणं, पुनर्-अपि गर्भ-निवासम्।
सोढुम्-अलं-पुनर्-अस्मिन्-माधव, माम्-उद्धर निजदासम्। घोरं हर मम० ।।4।।

त्वं जननी जनकः प्रभुर्-अच्युत, त्वं सुहृत्-कुलमित्रम्।
त्वं शरणं शरणा-गतवत्सल, त्वं भव-जलधि-वहित्रं घोरं हर मम० ।।5।।

जनक-सुता-पति-चरण-परायण, शंकर-मुनिवर-गीतं।
धारय मनसि कृष्ण-पुरुषोतम, वारय संसृति-भीतिम्।। घोरं हर मम० ।।6।।

कृष्णं वन्देजगत्-गुरुम्

भगवत् गीता के आरम्भ में भगवान् कृष्ण ने यद्यपि कोई मंगल श्लोक कहा नहीं है परन्तु निम्नलिखित 9 श्लोक किसी कृष्ण भक्त ने बनाए हैं। किसी-किसी भगवद्गीता में यह 9 श्लोक छपे हुए मिलते हैं परन्तु कश्मीरी पण्डित परम्परा से प्रायः यह श्लोक गीता के आरम्भ में पढ़ते हैं इसी कारण हमने यह श्लोक अर्थ सहित इस पाठ प्रकरण में जोड़े हैं।

ॐ पार्थाय प्रतिबोधितां भगवता नारायणेन स्वयं,
व्यासेन ग्रथितां पुराण-मुनिना मध्ये महाभारतम्।

अद्वैतामृत-वर्षिणीं भगवतीम्-अष्टादशा-ध्यायिनीम्,
अम्बत्वाम्-अनुसन्दधामि भगवत्-गीते भव-द्वेषिणीम्।।1।।

अर्थः भगवान् कृष्ण से अर्जुन को समझाई गई, वेदव्यास से महाभारत में ग्रथित की गई, अद्वैत-अमृत की वर्षा करने वाली, अठारह अध्याय वाली, ऐसी ही माता भगवद्गीते, तुम्हारा मैं मन से ध्यान करता हूँ।

नमोस्तु ते व्यास विशालबुद्धे फुल्लारविंदा-यतपत्र-नेत्र।
येन त्वया भारत-तैल-पूर्णः प्रज्वालितो ज्ञानमयः प्रदीपः।।2।।

अर्थः हे विशाल बुद्धि वाले, हे प्रफुल्लित कमल नेत्र वाले वेदव्यास जी! आप ने महाभारत रूप तैल से पूर्ण ज्ञानमय दीपक जलाया, ऐसे आपको नमस्कार हो।

प्रपन्न-पारिजाताय तोत्र-वेत्रैक-पाणये।
ज्ञानमुद्राय कृष्णाय गीतामृत-दुहे नमः।।3।।

अर्थः शरणागत के कल्पवृक्ष, हाथ में चाबुक लिए हुए, ज्ञान मुद्रा युक्त (ज्ञानरूप) गीता अमृत के दुहने वाले भगवान् कृष्ण को नमस्कार हो।

सर्वोपनिषदो गावो दोग्धा गोपालनन्दनः।
पार्थो वत्सः सुधीर्भोक्ता दुग्धं गीतामृतं महत्।।4।।

अर्थः सभी उपनिषद् मानिए गौ हैं, इस उपनिषद रूपी गौवों को दुहने वाला गोपाल नन्दन भगवान् कृष्ण हैं, अर्जुन बछड़ा है, जो स्वयं दूध गाय के स्तनों से पीकर अपना पेट भरता है और दूसरों के लिए भी निकलवाता है। जिन गौओं से दूध निकलवाता है वही गीता अमृत है, जिस अमृत को पीने वाले बुद्धिमान पुरुष हैं।

वसुदेव सुतं देवं कंसचाणूर-मर्दनम्।
देवकी परमानन्दं कृष्णं वन्दे जगत्-गुरुम्।।5।।

अर्थः *वसुदेव के पुत्र, कंस और चाणूर को मारने वाले, देवकी को परमानन्द देने वाले जगत् गुरु भगवान् कृष्ण को मैं प्रणाम करता हूँ।*

भीष्मद्रोणतटा जयत्रथ-जला गान्धर-नीलोत्पला,
शल्य-ग्राहवती कृपेण वहनी कर्णेन वेलाकुला।
अश्वत्थाम-विकर्ण-घोर-मकरा दुर्योधना-वर्तिनी,
सोत्तीर्णा खलुपाण्डवैः रणनदी कैवर्तके केशवः।।6।।

अर्थः *जिस युद्धरूपी नदी के भीष्म और द्रोण दोनों तट हैं, जिसमें जयत् रथ जल हैं, गान्धार नील कमल हैं, शल्य ग्रह (ग्रसने वाला) जलचर है, कृप प्रवाह है, कर्ण लहरे हैं, अश्वत्थामा और विकर्ण घोरमकर हैं, दुर्योधन भंवर है, ऐसी युद्धरूपी नदी निश्चय करके पाण्डवों से मल्लाह भगवान् कृष्ण द्वारा उत्तीर्ण की गई हैं।*

पाराशर्यवचः सरोजं-अमलं, गीतार्थ-गन्धोत्कटं
नानाख्यानक-केशरं-हरिकथा, सम्बोधना बोधितम्।
लोके सज्जन-षट्पदैर्-अहर्-अहः पेपीयमानं मुदा,
भूयात्-भारत-पंकजं, कलिमल-प्रध्वंसिनः श्रेयसे।।7।।

अर्थः *पाराशर्य (वेदव्यास) के वचनरूपी सर में उत्पन्न हुए निर्मल गीता-अर्थ रूप उत्कट गन्धवाला, नाना प्रकार के प्रसंगरूप सुगन्धित फूलवाला, हरिकथा (ज्ञान की कथाओं) से जो प्रफुल्लित है, संसार में सत्यपुरुष भ्रमरों से आनन्दपूर्वक प्रतिदिन पिया जाने वाला, कलियुग के पापों का नाश करने वाला ऐसा यह महाभारत रूप कमल हमारा कल्याण करे।*

मूकं करोति वाचालं पङ्गुं लङ्घयते गिरिं।
यत्कृपा तमहं वन्दे परमानन्द-माधवम्।।8।।

अर्थः मैं उस परमानन्द लक्ष्मीपति को नमस्कार करता हूँ, जिनकी कृपा गूंगे को वाचाल और लंगडे को पर्वत उलंघन करने वाला बना देता है।

यं ब्रह्मा वरुणेन्द्र रुद्रमरुतः स्तुन्वन्ति दिव्यैः स्तवै-
र्वेदैः साँगपद-क्रमोप-निषदै-र्गायन्ति यं सामगाः।
ध्यानावस्थित-तद्गतेन मनसा पश्यन्ति यं योगिनो,
यस्यान्तं न विदुः सुरा-सुर-गणा देवाय तस्मै नमः।।

अर्थः जिनका ब्रह्मा, वरुण, इन्द्र और मरुद्गण दिव्य स्तोत्रों द्वारा स्तुति करते हैं, सामवेद के गाने वाले अंग, पद, क्रम और उपनिषदों के सहित वेदों द्वारा जिनका गान करते हैं, योगीजन ध्यान में स्थित तद्गत हुए मनसे जिनका दर्शन करते हैं, देवता और असुरगण (कोई भी) जिनके अन्त को नहीं जानते, उन (परमपुरुष नारायण) देव के लिए मेरा नमस्कार हो।

अष्टादश श्लोकी गीता

निमित्तानि च पश्यामि-विपरीतानि केशव,
न च श्रेयो-नुपश्यामि हत्वा स्वजनम्-आहवे।।1।।

अर्थः अर्जुन भगवान् से कहता है, कि अब मुझे सब लक्षण उल्टे दिखाई देते हैं, ऐसे मुझे प्रतीत नहीं होता है कि अपने

सम्बन्धियों को युद्ध में मारकर कुछ कल्याण हो सकेगा।

योगस्थः कुरु कर्माणि संगं त्यक्त्वा धनंजय।
सिद्ध्य-सिद्ध्-योः समो भूत्वा समत्वं योग उच्यते।।2।।

अर्थः फल की आशा छोड़ कर सिद्धि हो या न हो फिर भी अपने मन की वृत्ति समान रखनी चाहिये, इस प्रकार की चित्त की समवृत्ति को योग कहते हैं, इस योग से युक्त होकर मनुष्य अपने सब कर्म करे।

कर्मेन्द्रियाणि संयम्य य आस्ते मनसा स्मरन्,
इद्रियार्थान्-विमूढात्मा मिथ्याचारः स उच्यते।।3।।

अर्थः जो हठ से कर्मेन्द्रियों को रोकता है परन्तु अन्दर ही अन्दर मन से विषयों का चिन्तन करता है उस मूर्ख को मिथ्याचारी कहते हैं।

श्रद्धावान्-लभते ज्ञानं तत्-परः संयतेन्द्रियः,
ज्ञानं लब्ध्वा परां शान्तिम्-अचिरेणाधिगच्छति।।4।।

अर्थः ईश्वर गुरु और धर्म शास्त्रों में श्रद्धा रखने वाला मनुष्य ज्ञान को प्राप्त करता है और ज्ञान होने पर उसको शान्ति प्राप्त होती है।

यतेन्द्रिय मनो बुद्धि-र्मुनि-मोक्ष-परायणः,
विगतेच्छा-भय क्रोधो-यः सदा मुक्त एव सः।।5।।

अर्थः जो मनुष्य इन्द्रियो, मन और बुद्धि को वश में रखता है और केवल ब्रह्मशन्ति प्राप्त करने में लगा रहता है वह सदा मुक्त है।

युक्ताहार-विहारस्य युक्त-चेष्टस्य कुर्मसु,

युक्त-स्वप्ना-व बोधस्य योगो भवति दुःखहा।।6।।

अर्थः यथायोग्य आहार विहार करने वाला कर्मों को यथा योग्य ढंग से करने वाला यथायोग्य निंद्रा करने और योग्य समय पर उठने वाले साधक का योग दुःख को दूर करने वाला होता है।

दैवी ह्येषा गुणमयी मम माया दुरत्यया,
मामेव ये प्रपद्यन्ते मायाम्-एतां-तरन्ति-ते।।7।।

अर्थः परमात्मा की सत्वरज तमोगुणमयी माया को पार करना कठिन है जो मुझ ईश्वर को प्राप्त करते हैं वह इस माया से पार हो जाते हैं।

अग्निर्-ज्योतिर्-अहः शुक्लः षण्मासा उत्तरायणम्,
तत्रो प्रयाता गच्छन्ति ब्रह्म ब्रह्मविदो जनाः।।8।।

अर्थः उत्तरायण काल के छः मास के शुक्ल पक्ष में दिन के प्रकाश में प्रदीप्त अग्नि के समय जो ब्रह्मज्ञानी इस शरीर को छोड़कर चले जाते हैं वे ब्रह्म को प्राप्त होते हैं।

अपि चेत्-सुदुराचारो भजते माम्-अनन्यभाक्,
साधुर्-एव स मन्तव्यः सम्यक्-व्यव-सितोहि-सः।

अर्थः बड़े से बड़ा दुराचारी यदि अनन्यभाव से मेरा भजन करेगा तो यह समझ लेना चाहिये कि वह साधु हो जायेगा।

यो माम्-अजम्-अनादिम्-च वेत्ति-लोक महेश्वरम्,
असंमूढः स मर्त्येषु सर्वपापैः प्रमुच्यते।।

अर्थः जो मुझे जन्म रहित, आदि रहित सब लोकों का स्वामी समझता है वह संसार में अज्ञान से छूटकर ज्ञानी बनकर सब पापों से मुक्त होता है।

मत्कर्म कृत्-मत्परमो मत्-भक्तः संघ-वर्जितः,
निर्वैरः, सर्व-भूतेषु यः स मामेति पाण्डव।।

अर्थः हे अर्जुन! जो मेरे लिये कर्म करता है, जो मुझे परमश्रेष्ठ मानता है जो भोगों का संग छोड़ता है और सब प्राणियों के विषय में वैर रहित होता है मेरा वही भक्त मुझे प्राप्त करता है।

श्रेयो हि ज्ञानम्-अभ्यासात्, ज्ञानात्-ध्यानं विशिष्यते,
ध्यानात्-कर्म-पलत्याग, स्त्यागात्-शान्तिर्-अनन्तरम्।।

अर्थः अभ्यास योग से ज्ञान श्रेष्ठ है, ज्ञान योग से ध्यान योग की विशेषता अधिक है, ध्यान योग से कर्मफल का त्याग उत्तम है, कर्मफल का त्याग करने से शीघ्र ही शान्ति मिलती है।

क्षेत्रज्ञं चापि मां विद्धि सर्व-क्षेत्रेषु भारत,
क्षेत्र-क्षेत्र ज्ञयोर्ज्ञानं-तत्-यत्-ज्ञानं मतं मम।।

अर्थः हे भारत! सब क्षेत्र में रहने वाले मुझे तू क्षेत्रज्ञ समझ जो क्षेत्र और क्षेत्रज्ञ का ज्ञान है वही मेरा ज्ञान है।

मां च यो-व्यभिचारेण भक्तियोगेन सेवते,
स गुणान्-सम्-अतीत्य-तान्-ब्रह्म्-भूयाय कल्पते।।

अर्थः जो एक निष्ठ भक्ति भाव से मेरी सेवा करता है वह इन गुणों को लांघ कर ब्रह्म के महत्व को प्राप्त करने योग्य बन जाता है।

निर्मान-मोहा जितसंग-दोषा अध्यात्म-नित्या विनि-वृत्तकामाः,
द्वन्द्वै-र्विमुक्ता सुख दुःख संज्ञैर्गच्छन्त्य मूढाः पदम्-अव्ययं तत्।।

अर्थः *जो अभिमान रहित, मोह रहित, अनासक्त आत्मनिष्ठ भोगवासना रहित, द्वन्द्वभाव से दूर और ज्ञानी है, वह उस अविनाशी परम पद को प्राप्त होते हैं।*

यः शास्त्र-विधिम्-उत्सृज्य वर्तते काम-कारतः।
न स सिद्धिम्-अवाप्नोति न सुखं न परां गतिम्।।

अर्थः *जो शास्त्र विधि को त्याग कर मनमाना आचरण करता है उसे न सिद्धि मिलती है न सुख मिलता है और न श्रेष्ठ गति ही प्राप्त होती है।*

मनः प्रसादः सौम्यत्वं मौनम्-आत्म-विनिग्रहः,
भाव-संशुद्धिर्-इत्येतत्-तपो मानसम् उच्यते।।

अर्थः *मन को प्रसन्न रखना, शान्ति का अवलम्बन करना, मौन धारण करना, संयम करना और आत्मशुद्धि करना मानसिक तप है।*

सर्व-धर्मान् परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज,
अहं त्वा सर्व-पापेभ्यो मोक्ष-यिष्यामि मा-शुचः।।

अर्थः *सब धर्मों को छोड़कर मुझ अकेले (ईश्वर) की शरण आये मैं तुम्हें सब पापों से मुक्त करूँगा, तू शोक मत कर।*

सप्तश्लोकी गीता

ॐ इत्येकाक्षरं ब्रह्म, व्याहरन्-माम्-अनुस्मरन्,

यः प्रयाति त्यजन् देहं, स याति परमां गतिम्।

अर्थः योग धारण में स्थित ओंकार रूपी एकाक्षर ब्रह्म का उच्चारण करता हुआ और मेरा (परमेश्वर) का चिन्तन करता हुआ जो साधक देह त्यागता है वह निःसन्देह श्रेष्ठगति को प्राप्त होता है।

स्थाने हृषीकेश तव प्रकीर्त्या। जगत्-प्रहृष्य-त्यनुरज्यते च।।

रक्षांसि भीतानि दिशो द्रवन्ति। सर्वे नमस्यन्ति च सिद्धसंघाः।।1-2।।

अर्थः हे हृषीकेश यह ठीक है आपका कीर्तन करने से जगत् प्रसन्न होता है और उसमें उसकी प्रीति होती है, राक्षस तुम से डर कर दिशाओं में भाग जाते हैं और सभी पुरुषों के समुदाय आपको प्रणाम करते हैं।

सर्वतः पाणिपादं तत्-सर्वतोक्षि-शिरोमुखम्,

सर्वतः श्रुतिमत्-लोके सर्वम्-आवृत्य-तिष्ठाति।।3।।

अर्थः इस लोक में उसके सर्वत्र हाथ, पांव सब ओर आँख, सिर, मुख और सब ओर कान हैं वह सर्वत्र व्यापत कर रह रहा है।

कविं पुराणम्-अनुशासितारम्। अणोरणीयांसम्-अनु-स्मरेत्-यः।।

सर्वस्य धातारम्-अचिन्त्यरूपम्। आदित्यवर्णं तमसः परस्तात्।।4।।

अर्थः जो अन्तकाल में सर्वज्ञ पुरातन नियन्ता अणु से भी सूक्ष्म, सब के धारण कर्ता अचिन्त्य स्वरूप अन्धकार से परे रहने वाले सूर्य के समान तेजस्वी ईश्वर का स्मरण करता है- वह उसी दिव्य परमात्मा को प्राप्त होता है।

उर्ध्वमूलम्-अधः-शाखम्-अश्व-त्थं प्राहुर्-अव्ययम्।
छन्दांसि-यस्य पर्णानि यस्तं वेद स वेदवित्।।5।।

अर्थः संसार का वृक्ष अनादि चारों और फैला है, इसके ज्ञान रूपी पत्ते सबको शीतल छाया देने वाले हैं, शाखायें ऊपर नीचे फैली है, इनमें तत्व-रज तुम गुणों का रस भरपूर भरा है, शब्द स्पर्श रूप रस गंध विषयों के सुखदायी कोमल अंकुर लगे हैं और इनकी कर्मों से सम्बन्ध जोड़ने वाली जड़े चारों और फैली हुई है।

सर्वस्य चाहं हृदि संनिविष्टो मत्तः स्मृतिर्-ज्ञानम्-अपोहनं च।
वेदैश्च सर्वैर्-अहमेव वेद्यो वेदान्त-कृत्-वेद विदेव-चाहम्।।6।।

अर्थः मैं ईश्वर सबके हृदयों में रहता हूँ, मुझसे ही सब को स्मरण, ज्ञान विस्मरण और अज्ञान होता है मैं ही सब वेदों के द्वारा जानने योग्य हूँ और मैं ही वेदान्त शास्त्र का निर्माण करने वाला और वेद का ज्ञाता हूँ।

मन्मना-भव-मत्-भक्तो मत्-याजी मां नमस्कुरु।
मामे-वैष्यसि युक्त्वैवम्-आत्मानं मत्-परायणः।। 7।।

अर्थः मुझ में मन लगा, मेरा भक्त बन, मेरे निमित्त भजन कर, मुझे नमस्कार कर, इस तरह मुझमें परायण होकर मेरे साथ आत्मा का योग करने से तू मुझे प्राप्त कर लेगा।

वन्दे महापुरुष ते चरणारबिन्दम्

ध्येयं सदा परिभवघ्नं-अभीष्टदोहं, तीर्थास्पदं शिव-विरिञ्चि-नुतं शरण्यम्।
भृत्यार्तिहं प्रणतपाल ! भवाब्धिपोतं, वन्दे-महापुरुष ! ते चरणारबिन्दम्।।1।।

अर्थः हे महापुरुष- हे प्रणतपाल भगवान् कृष्ण ! मैं आपके उस चरण कमल को प्रणाम करता हूँ, जो चरण कमल ध्यान करने योग्य है, जो दुःखों का नाश करने वाला है, जो इच्छित पदार्थों का देने वाला है, जिस में सभी तीर्थ टिके हुये हैं, शंकर और ब्रह्मा जिस को झुकते है, जो रक्षा करने वाला है, जो भक्तों के दुःख का नाश करने वाला है, जो भवसागर से पार करने के लिए जहाज है।

त्यक्त्वा सुदुस्त्यज-सुरेप्सित-राज्यलक्ष्मीं, धर्मिष्ठ-आर्य-वचसा यत्-अगात्-अरण्यम्।
मायामृगं दयित-येप्सितं-अनुधावत्, वन्दे महापुरुष ! ते चरणारबिन्दम्।।2।।

अर्थः धर्मात्मा राजा दशरथ के कहने से (ऐसी राज्य लक्ष्मी) ऐसा राजपाठ जिस का त्याग करना बहुत ही कठिन है, जिस को देवता चाहते हैं-ऐसे राज्य पाठ को छोड़कर (ठुकराकर) जो चरणार-बिन्द जंगल में गया, सीता से चाहे हुये, माया शरीरधारी मृग के पीछे जो चरण कमल दौड़ पड़ा, ऐसे ही प्रशंसनीय कार्य रामावतार में जिस चरण कमल ने किया था उसको मैं नमस्कार करता हूँ।

श्रीमत्-सरोरुह-यवाँकुश-चक्रचाप, मत्स्या-ङ्कितं नव-विल्लोहित-पल्लवाभम्।।
लक्ष्म्यालयं परममंगलं-आत्मरूपं, वन्दे महापुरुष ! ते चरणारबिन्दम्।।3।।

अर्थः मैं आप के उस चरण कमल को प्रणाम करता हूँ, जो शोभायुक्त है, जो चरणारबिन्द कमल, जव, अंकुश, चक्र, धनु, मछली

इन सामुद्रिक राज योग वाले चिन्हों से युक्त हैं जो लाल बालपत्र की जैसा शोभावाला है जो लक्ष्मी का घर है, जो परमात्मा को ही प्रत्यक्षरूप हैं।

वृन्दावनान्तरं-अगात्-अनुगोकुलानां, संचार्य सर्वपशुभिः स्वविवृद्ध-कामी।
संचिन्तयत्-अगगुरो-र्मृगपक्षिणां यत्, वन्दे महापुरुष ! ते चरणार बिन्दम्।।4।।

अर्थः जो भगवान् कृष्ण अपने कुल की वृद्धि का इच्छुक था, गोकुल के सभी पशुओं के साथ दौड़-धूप करके जो चरण कमल वृन्दावन में गया, जिस चरणारबिन्द ने सभी मृगपक्षी गोओं को गोवर्धन पर्वत के नीचे एकत्रित किया था, हे महापुरुष भगवान् आप के उसी चरणारबिन्द को मैं प्रणाम करता हूँ।

यत्-गोपिका-विरह-जाग्नि परीतदेहाः, तप्तस्तनेषु विजहुः परिरभ्य तापम्।
रासे तदीय कुच-कुँकम-पङ्कलिप्तं, वन्दे महापुरुष ! ते चरणारबिन्दम्।।5।।

अर्थः रामलीला में गोपिकाओं के स्तनों के केसरलेप से लिप्त जिस चरणारबिन्द को (आलिंगन) स्पर्श करके, विरह की अग्नि से घेरे हुये गोपिकाओं के जलन से पीड़ित स्तनों का ताप दूर हुआ था हे महापुरुष कृष्ण! मैं उस चरणारबिन्द को प्रणाम करता हूँ।

कालीय-मस्तक-विघटन-दक्षम्-अस्य, मोक्षेप्सुभि-र्विरहदीन-मुखाभिर्-आरात्।
तत्-पत्निभिः स्तुतम्-शेष-निकामरूपं, वन्दे महापुरुष ! ते चरणारबिन्दम्।।6।।

अर्थः पति के विरह से दुःखित, पति के मुक्ति की इच्छावाली, कालीनाग की स्त्रियों ने, कालीनाग के समीप बैठकर जिस चरणारबिन्द की अनन्य भक्ति से स्तुति की थी, जो चरणारबिन्द कालीनाग के मस्तक फोड़ने में (नष्ट करने में) निपुण था, हे महापुरुष, मैं आप के उस चरणारबिन्द को नमस्कार करता हूँ।

ज्ञानालयं श्रुतिविमृग्यं-अनादिम्-अर्च्यम्, ब्रह्मादिभि र्हृदि-विचन्त्यं-अगाध-बोधैः।
संसार-कूप-पतितो-त्तरणाव-लम्बम्, वन्दे महापुरुष ! ते चरणारबिन्दम्।।7।।

अर्थः जो ज्ञान का घर है, वेद जिस को ढूँढते हैं, जो आद्यन्त रहित है, जो पूजा के योग्य है, जो ज्ञान का भण्डार हैं। ब्रह्मादि देवता हृदय में जिस का चिन्तन करते हैं, संसाररूपी कुएँ में गिरे हुओं को पार करने में जो सहारा बना है- हे महापुरुष कृष्ण मैं आपके उस चरणारबिन्द को नमस्कार करता हूँ।

येनाङ्क-बालवपुषः स्तनपान-बुद्धेः, त्वत्-अँघ्रिणा-हृतमऽनो विपरीत चक्रम्।
विध्वस्त-भाण्डम्-अपतत् भुवि गोपमूर्ते, वन्दे महापुरुष ! ते चरणारबिन्दम्।।7।।

अर्थः गोद में उठाने योग्य छोटे शरीर वाले, दूध पीने के इच्छुक श्री कृष्ण के पाँवों से लात मारा हुआ, तोड़े हुये दूध के बर्तनों से भरा हुआ उल्टा दिया हुआ छकडा नन्दगोप के आँगन में जिस चरणारबिन्द ने गिराया उस आपके चरण कमल को हे महापुरुष मैं नमस्कार करता हूँ।

इत्यष्टकं पठति यः परमस्य पुंसो, नारायणस्य निरयार्णव-तारणस्य।
सर्वाप्तिमाशु-हृदये कुरुते मनुष्यः, संप्राप्य-देहविलयं लभते च मोक्षम्।।8।।

अर्थः सृष्टि के बनाने तथा लय करने वाले, कष्टों से भरे सागर से पार करने वाले, भगवान् कृष्ण के यह आठ श्लोक जो मनुष्य हृदय में धारण करता है, भक्ति से पढ़ता है, वह मनुष्य सभी ऐश्वर्य प्राप्त करके, आवागमन के चक्र से मुक्त हो जाता है।

प्रातः स्मरण मंगलस्तोत्रम्

उत्तिष्ठो-त्तिष्ठ गोविन्द, उत्तिष्ठ गरुड़-ध्वज, उत्तिष्ठ-कमलाकान्त, त्रैलोक्ये मंगलं कुरु ।।1।।
मंगलं भगवान् विष्णुः, मंगलं गरुड-ध्वजः, मंगलं पुण्डरीकाक्षः मंगलायतनं हरिः ।।2।।

मूकं करोति वाचालं पंगुं लंघयते गिरिम्, यत् कृपा तम्-अहं वन्दे, परमानन्द-माधवम् ।।3।।
नमो ब्रह्मण्य-देवाय, ग्रोब्रह्मण-हिताय च, जगत्-हिताय कृष्णाय, गोविन्दाय नमोनमः ।।4।।
कृष्णाय वासुदेवाय, देवकी-नन्दनाय च, नन्द गोपकुमाराय, गोविन्दाय नमो नमः ।।5।।
त्वमेव माता च पिता त्वमेव, त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वम्-एव,
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव, त्वमेव सर्वं मम देव देव ।।6।।

अच्युताष्टकम्

अच्युतं केशवं रामनारायणं, कृष्णदामोदरं वासुदेवं हरिम्।
श्रीधरं माधवं गोपिका वल्लभं, जानकी नायकं रामचन्द्रं भजे।।
अच्युतं केशवं सत्य-भा-माधवं, माधवं, श्रीधरं राधिकाऽराधितम्।
इन्दिरा मन्दिरं चेतसा सुन्दरं, देवकी नन्दनं नन्दनं सन्दधे।।
विष्णवे जिष्णवे शंखिने चक्रिणे, रुक्मिणी रागिणे जानकी जानये।
वल्लवी-वल्लभा-याऽर्चिता-यात्मने, कंस-विध्वंसिने-वंशिने-ते-नमः।।

कृष्ण गोविन्द हे राम नारायण, श्रीपते वासुदेवाजित श्रीनिधे।
अच्युतानन्त हे माध्वाधोक्षज, द्वारका नायक द्रौपदी रक्षक।।
राक्षस-क्षोभितः-सीतया-शोभितो, दण्डकारण्य-भू-पुण्यता-कारणः।
लक्ष्मणेनाऽन्वितो-वानरैः-सेवितो-गस्त्य-सम्पूजितो-राघवः-पातु-माम्।।
धेनुकारिष्टको-ऽनिष्टकृत्-द्वेषिणां, केशिहा-कंसहृत्-वंशिका-वादिकः।
पूतना कोपकः सूरजा खेलनो, बाल गोपालकः पातु मां सर्वदा।।
विद्युत-द्योतवान्-प्रस्फुरत्-वाससं, प्रावृडम्-भोदवत्-प्रोल्लसत्-विग्रहम्।
वन्यया मालया शोभितोरः स्थल, लोहितांघ्रिद्वयं वारिजाक्षं भजे।।
कुञ्चितैः-कुन्तलैः-भाजमा-नानं, रत्न-मौलिं-लसत्-कुण्डले-गण्डयोः।
हारकेयूरकं-कंकण-प्रोज्जवलं, किंकिणीं-अंजुलं-श्यामलं-तं-भजे।।
अच्युतस्याष्टकं-यः-पठेत्-इष्टदं, प्रेमतः-प्रत्यहं-पूरुषः-सस्पृहम्।
वृत्ततः सुन्दरं कर्तृं विश्वम्भरं तस्य वश्यो हरिर्जायते सत्त्वरम्।।

भज गोविन्दं भज गोविन्दं

दिनमपि रजनी सायं प्रातः शिशिरवसन्तौ पुनर् आयातः।
कालः क्रीडति गच्छति-आयु-तदपि न मुञ्चति-आशावायुः।।

भज गोविन्दं, भज गोविन्दं, भज गोविन्दं मूढमते।

प्राप्ते सन्निहिते मरणे नहि नहि रक्षति डुकृञ-करणे।
अग्रे वह्निः पृष्ठे भानू रात्रौ चिबुक-समर्पित जानुः
करतल भिक्षा तरु तल वासः, तदपि न मुञ्चति-आशा-पाशः।।

भज गोविन्दं, भज गोविन्दं, भज गोविन्दं मूढमते।

यावत्-वित्तोपार्जन-सक्तः तावत् निज-परिवारो रक्तः।
पश्चात्-धावति-जर्जर-देहे वार्ता पृच्छति कोऽपि न गेहे।।

भज गोविन्दं, भज गोविन्दं, भज गोविन्दं, मूढमते।

जटिलो मुण्डी लुञ्चित-केशः, काषायाम्बर-बहु कृत वेषः।
पश्यन्नपि च न पश्यति मूढ, उदर-निमितं-बहु कृत वेषः।

भज गोविन्दं, भज गोविन्दं, भज गोविन्दं, मूढमते।

भगवत्-गीता-किञ्चित्-अधीता, गङ्गा-जल-लव-कणिका पीता।
सकृदपि यस्य मुरारि-समर्चा, तस्य यमः किं कुरुते चर्चा।

भज गोविन्दं, भज गोविन्दं, भज गोविन्दं, मूढमते।

अङ्गं गलितं पलितं मुण्डं, दशनविहिनं-जातं-तुण्डम्।
वृद्धो याति गृहीत्वा दण्डं, तदपि न मुञ्चति-आशा-पिण्डम्।

भज गोविन्दं, भज गोविन्दं, भज गोविन्दं, मूढमते।

बालः-तावत्-क्रीडा-सक्तः, तरुणःतावत्-तरुणी-रक्तः।
वृद्धः-तावत्-चिन्ता-मग्नः, परमे-ब्रह्मणि-कोऽपि-न-लग्नः।

भज गोविन्दं, भज गोविन्दं, भज गोविन्दं, मूढमते।

पुनरपि-जननं-पुनरपि-मरणं, पुनरपि-जननी-जठरे-शयनम्।
इह संसारे-खलु-दुस्तारे, कृपयाऽ पारे-पाहि-मुरारे।

भज गोविन्दं, भज गोविन्दं, भज गोविन्दं मूढमते।

पुनरपि-रजनी-पुनरपि-दिवसः, पुनरपि-पक्षः-पुनरपि-मासः।

पुनरपि-अयनं-पुनरपि-वर्षं, तदपि-न-मुञ्चति-आशा-मर्षम्।

भज गोविन्दं, भज गोविन्दं, भज गोविन्दं मूढमते।

वयसि-गते-कः-कामविकारः, शुष्के-नीरे-कः-कासारः।

नष्टे-द्रव्ये-कः-परिवारो, ज्ञाते-तत्वे-कः-संसारः।

भज गोविन्दं, भज गोविन्दं, भज गोविन्दं मूढमते।

नारीस्तन भर-नाभि निवेशं, मिथ्या-माया-मोहा-वेशम्।

एतत्-मांस-वसादि-विकारं, मनसि-विचारय-बारम्-बारम्।

भज गोविन्दं, भज गोविन्दं, भज गोविन्दं मूढमते।

कः-त्वं-कोऽहं-कुत-आयातः, का-मे-जननी-को-मे-तातः।

इति-परि-भावय-सर्वम्-असारं, विश्वं-त्यक्त्वा-स्वप्न-विचारम्।

भज गोविन्दं, भज गोविन्दं, भज गोविन्दं मूढमते।

गेयं-गीता-नाम-सहस्त्रं, ध्येयं-श्री-पति-रूपं-अजस्त्रम्।

नेयं-सज्जन-सङ्गे-चितं, देयं-दीन-जनाय-च-वित्तम्।

भज गोविन्दं, भज गोविन्दं, भज गोविन्दं मूढमते।

यावत्-जीवो-निवसति-देहे, कुशलं-तावत्-पृच्छति-गेहे।
गत-वति-वायौ-देहापाये, भार्या-बिभ्यति-तस्मिन्-काये।

भज गोविन्दं, भज गोविन्दं, भज गोविन्दं मूढमते।

सुखतः-क्रियते-रामा-भोगः, पश्चात्-हन्त-शरीरे-रोगः।
यद्यपि-लोके-मरणं-शरणं, तदपि-न-मुञ्चति-पापा-चरणम्

भज गोविन्दं, भज गोविन्दं, भज गोविन्दं मूढमते।

कुरुते-गङ्गा-सागर- गमनं, व्रत-परि-पालनम्-अथवा-दानम्।
ज्ञान-विहीनः-सर्व मतेन, मुक्तिः-न-भवति-जन्मशतेन

भज गोविन्दं भज गोविन्दं, भज गोविन्दं मूढमते।

श्रीराम स्तुतिः

श्रीरामचन्द्रं सततं नमामि, सुग्रीवमित्रं परमं पवित्रं, सीताकलत्रं नवमेघ-गात्रम्।
कारुण्य-पात्रं शतपत्र-नेत्रं, श्रीराम-चन्द्रं सततं नमामि।।1।।

अर्थः- सुग्रीव के मित्र, परमपावन, सीता के पति नवीन मेघ के समान शरीर वाले, करुणा के सिन्धु, कमल के समान नेत्रवाले श्रीरामचन्द्र की मैं निरन्तर वन्दना करता हूँ।

संसार-सारं निगम-प्रचारं-धर्मावतारं हृतभूमि-भारम्।
सदाविकारं सुखसिन्धु-सारं-श्रीराम-चन्द्रं सततंनमामि।।2।।

अर्थः- असार संसार का सारवस्तु, वेदों का प्रचार करने वाले, धर्म के अवतार, भू-भार हरण करने वाले, सदा विकार रहित, आनन्द सिन्धु के सारभूत, श्रीरामचन्द्र की मैं निरन्तर वन्दना करता हूँ।

लक्ष्मो-विलासं जगतां निवासं-लंकाविनाशं भुवन-प्रकाशम्।
भू-देव-वासं शरत्-इन्दुहासं-श्रीरामचन्द्रं सततं नमामि।।3।।

अर्थः- लक्ष्मी से विलास करने वाला, जगत् का निवास, लंकनाश करने वाला, भुवनों को प्रकाशित करने वाला, ब्राह्मणों को शरण देने वाला, शरत् चन्द्र हास्यवाला, श्रीरामचन्द्र का मैं निरन्तर नमन करता हूँ।

मन्दार-मालं-वचने रसालं-गुणैर्विशालं हत-सप्त-तालम्
क्रव्याद-कालं सुर-लोकपालं-श्रीरामचन्द्रं सततं नमामि।।4।।

अर्थः- मन्दारपुष्प माला वाले, रसीले वचन बोलने वाले, गुणों में महान, साततल वृक्ष भेदने वाले, राक्षसों के काल, देवलोक पालक, श्रीरामचन्द्र की मैं निरन्तर वन्दना करता हूँ।

वेदान्त-गानं सकलैः समानं - हतारि-मानं-त्रिदश-प्रधानम्।
गजेन्द्र-यानं विगतावसानं-श्रीरामचन्द्रं सततं नमामि।।5।।

अर्थः- वेदान्त द्वारा गेय, सबके साथ एक जैसा, शत्रुओं का नाम मर्दन करने वाला, देवताओं में गजेन्द्र सवारी करने वाले, अन्त-रहित-श्रीरामचन्द्र की मैं निरन्तर वन्दना करता हूँ।

श्यामाभि-रामं नयना-भिरामं, गुणाभिरामं, वचनाभिरामम्।

विश्व-प्रणामं कृतभक्तकामं, श्रीरामचन्द्रं सततं नमामि।।6।।

अर्थः- श्याम सुन्दर, नेत्रों को आनन्द देने वाला, गुणों से मनोहर, मधुर वचन बोलने वाले विश्व वन्दनीय, भक्तजनों की कामनायें पूर्ण करने वाले, श्रीरामचन्द्र की मैं निरन्तर वन्दरना करता हूँ।

लीलाशरीरं रणरंगधीरं, विश्वैकसारं रघुवंश-हारम्।

गम्भीरनादं जितसर्व-वादं, श्रीरामचन्द्र सततं नमामि।।7।।

अर्थः- लीला के लिये शरीर धारण करने वाले रणस्थली में धीर, रघुवंश में श्रेष्ठ, गम्भीरवाणी बोलने वाले, समस्तवादों को जीतने वाले, श्रीरामचन्द्र को मैं प्रतिक्षण प्रणाम करता हूँ।

खले कृतान्तं स्वजने विनीतं-सामोपगीतं मनसाऽप्रीततम्।

रोगणगीतं वचनात्-अतीतं-श्रीरामचन्द्रं सततं नमामि।।8।।

अर्थः- दुष्टों के लिये मृत्युरूप, अपने भक्तों के लिये नम्रभाव वाले, सामवेद के द्वारा स्तुत, मन के अगोचर प्रेम से गान करने वाले योग्य, वचनों से अग्राहय, श्रीरामचन्द्र को मैं सर्वदा नमस्कार करता हूँ।

हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे। हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे।

बच्चियों में बाल काटने की आदत न डाले। यह हमारी संस्कृति का अपमान है।

मस छुय वस

श्री हनूमते नमः

श्री हनुमान चालीसा

दोहा

श्री गुरु चरन सरोज रज, निज मन मुकुरू सुधारि।
बरनऊँ रघुबर बिमल जसु, जो दायकु फल चारि।।
बुद्धिहीन तनु जानिके, सुमिरौं पवन-कुमार।
बल बुद्धि बिद्या देहु मोहिं, हरहु कलेस बिकार।।

चौपाई

जय हनुमान ज्ञान गुन सागर।
जय कपीस तिहुँ लोक उजागर।।
राम दूत अतुलित बल धामा।
अंजनि - पुत्र पवन सुत नामा।।
महाबीर बिक्रम बजरंगी ।
कुमति निवार सुमति के संगी ।।
कंचन बरन बिराज सुबेसा ।
कानन कुण्डल कुंचित केसा ।।
हाथ बज्र और ध्वजा बिराजै ।
काँधे मूँज जनेऊ साजै ।।
संकर सुवन केसरी नन्दन ।
तेज प्रताप महा जग बन्दन ।।
बिद्यावान गुनी अति चातुर ।
राज काज करिबे को आतुर ।।
प्रभु चरित्र सुनिबे को रसिया ।
राम लखन सीता मन बसिया ।।
सूक्ष्म रूप धरि सियहिं दिखावा ।
बिकट रूप धरि लंक जरावा ।।

भीम रूप धरि असुर सँहारे ।
रामचन्द्र के काज सँवारे ।।
लाय सजीवन लखन जियाये ।
श्री रघुबीर हरषि उर लाये ।।
रघुपति कीन्ही बहुत बड़ाई ।
तुम मम प्रिय भरतहि सम भाई ।।
सहस बदन तुम्हरो जस गावैं ।
अस कहि श्रीपति कंठ लगावैं ।।
सनकादिक ब्रह्मादि मुनीसा ।
नारद सारद सहित अहीसा ।।
जम कुबेर दिगपाल जहाँ ते ।
कबि कोबिद कहि सके कहाँ ते ।।
तुम उपकार सुग्रीवहिं कीन्हा ।
राम मिलाय राज पद दीन्हा ।।

तुम्हरो मंत्र बिभीषन माना ।
लंकेस्वर भए सब जग जाना ।।
जुग सहस्र जोजन पर भानू ।
लील्यो ताहि मधुर फल जानू ।।
प्रभु मुद्रिका मेलि मुख माहीं ।
जलधि लाँघि गये अचरज नाहीं ।।
दुर्गम काज जगत के जेते ।
सुगम अनुग्रह तुम्हरे तेते ।।
राम दुआरे तुम रखवारे ।
होत न आज्ञा बिनु पैसारे ।।
सब सुख लहै तुम्हारी सरना ।
तुम रच्छक काहू को डर ना ।।
आपन तेज सम्हारो आपै ।
तीनों लोक हाँक तें काँपै ।।

भूत पिसाच निकट नहिं आवै ।
महाबीर जब नाम सुनावै ।।
नासै रोग हरै सब पीरा ।
जपत निरंतर हनुमत बीरा ।।
संकट तें हनुमान छुड़ावै ।
मन क्रम बचन ध्यान जो लावै ।।
सब पर राम तपस्वी राजा ।
तिन के काज सकल तुम साजा ।।
और मनोरथ जो कोइ लावै ।
सोइ अमित जीवन फल पावै ।।
चारों जुग परताप तुम्हारा ।
है परसिद्ध जगत उजियारा ।।
साधु संत के तुम रखवारे ।
असुर निकंदन राम दुलारे ।।

अष्ट सिद्धि नौ निधि के दाता ।
अस बर दीन जानकी माता ।।
राम रसायन तुम्हरे पासा ।
सदा रहो रघुपति के दासा ।।
तुम्हरे भजन राम को पावै ।
जनम जनम के दुख बिसरावै ।।
अंत काल रघुबर पुर जाई ।
जहाँ जन्म हरि-भक्त कहाई ।।
और देवता चित्त न धरई ।
हनुमत सेइ सर्ब सुख करई ।।
संकट कटै मिटै सब पीरा ।
जो सुमिरै हनुमत बलबीरा ।।
जै जै जै हनुमान गोसाई ।
कृपा करहु गुरु देव की नाईं ।।

जो सत बार पाठ कर कोई ।
छूटहि बंदि महा सुख होई ।।
जो यह पढ़ै हनुमान चलीसा ।
होय सिद्धि साखी गौरीसा ।।
तुलसीदास सदा हरि चेरा ।
कीजै नाथ हृदय महँ डेरा ।।

दोहा

पवनतनय संकट हरन, मंगल मूरति रूप ।
राम लखन सीता सहित, हृदय बसहु सुर भूप।।

संकटमोचन हनुमानाष्टक

बाल समय रबि भक्षि लियो तब तीनहुँ लोक भयो अँधियारो ।
ताहि सों त्रास भयो जग को यह संकट काहु सों जात न टारो।
देवन आनि करी बिनती तब छाँड़ि दियो रबि कष्ट निवारो।
को नहिं जानत है जगमें कपि संकटमोचन नाम तिहारो।

बालि की त्रास कपीस बसै गिरि जात महाप्रभु पंथ निहारो ।
चौंकि महा मुनि साप दियो तब चाहिय कौन बिचार बिचारो।
कै द्विज रूप लिवाय महाप्रभु सो तुम दास के सोक निवारो।
अंगद के सँग लेन गये सिय खोज कपीस यह बैन उचारो ।
जीवत ना बचिहौ हम सो जु बिना सुधि लाए इहाँ पगु धारो।
हेरि थके तट सिंधु सबै तब लाय सिया-सुधि प्रान उबारो।
रावण त्रास दई सिय को सब राक्षसि सों कहि सोक निवारो।
ताहि समय हनुमान महाप्रभु जाय महा रजनीचर मारो।
चाहत सीय असोक सों आगि सु दै प्रभु मुद्रिका सोक निवारो।
बान लग्यो उर लछिमन के तब प्रान तजे सुत रावन मारो ।
लै गृह बैद्य सुषेन समेत तबै गिरि द्रोन सु बीर उपारो ।।
आनि सजीवन हाथ दई तब लछिमन के तुम प्रान उबारो।
रावन जुद्ध अजान कियो तब नाग कि फाँस सबै सिर डारो ।
श्रीरघुनाथ समेत सबै दल मोह भयो यह संकट भारो ।

आनि खगेस तबै हनुमान जु बंधन काटि सुत्रास निवारो।
बंधु समेत जबै अहिरावन लै रघुनाथ पताल सिधारो ।
देबिहिं पूजि भली बिधि सों बलि देउ सबै मिलि मंत्र बिचारो ।
जाय सहाय भयो तब ही अहिरावन सैन्य समेत सँहारो।
काज किये बड़ देवन के तुम बीर महाप्रभु देखि बिचारो ।
कौन सो संकट मोर गरीब को जो तुमसों नहिं जात है टारो ।
बेगि हरो हनुमान महाप्रभु जो कछु संकट होय हमारो ।।

दोहा

लाल देह लाली लसे, अरु धरि लाल लँगूर।
बज्र देह दानव दलन, जय जय जय कपि सूर।।

श्री हनुमान जी की आरती

आरती कीजै हनुमान लला की,
दुष्टदलन रघुनाथ कला की।
जाके बल से गिरिवर काँपै,
रोग-दोष जाके निकट न झाँकै।
अंजनि पुत्र महा बलदाई,
संतन के प्रभु सदा सहाई।
दे बीरा रघुनाथ पठाये,
लंका जारि सिया सुधि लाये।
लंका सो कोट समुद्र सी खाई,
जात पवनसुत बार न लाई।
लंका जारि असुर संहारे,
सीयारामजी के काज सँवारे।
लक्ष्मण मूर्छित पड़े सकारे,
आनि सजीवन प्रान उबारे।
पैठि पताल तोरि जमकारे,
अहिरावन की भुजा उखारे।

बायें भुजा असुर दल मारे,
दहिने भुजा संतजन तारे।
सुर नर मुनि आरती उतारें,
जै जै जै हनुमान उचारें।
कंचन थार कपूर लौ छाई,
आरती करत अंजना माई।
जो हनुमान जी की आरति गावै।
बसि बैकुंठ परमपद पावै।
लंक विध्वंस कीन्ह रघुराई,
तुलसीदास प्रभु कीरति गाई।

श्री राम वन्दना

आपदामपहर्तारं दातारं सर्वसम्पदाम्।
लोकाभिरामं श्री रामं भूयो भूयो नमाम्यहम्।।
रामाय रामभद्राय रामचन्द्राय मानसे।
रघुनाथाय नाथाय सीतायाः पतये नमः।।
नीलाम्बुजश्यामलकोमलाङ्ग।
सीतासमारोपितवामभागम्।।
पाणौ महासायकचारुचापं।
नमामि रामं रघुवंशनाथम्।।

श्री राम स्तुति

श्रीरामचन्द्र कृपालु भजु मन हरण भवभय दारु णं।
नवकंज-लोचन, कंज-मुख, कर-कंज पद कंजारुणं।।
कंदर्ष अगणित अमित छबि, नवनील-नीरद सुंदरं।
पट पीत मानहु तड़ित रुचि शुचि नौमि जनक सुताबरं।।
भजु दीनबंधु दिनेश दानव-दैत्यवंश-निकंदनं।
रघुनंद आनँदकंद कौशलचंद दशरथ-नंदनं।।
सिर मुकुट कंडल तिलक चारु उदारु अंग विभूषणं।

आजानुभुज शर-चाप-धर, संग्राम-जिल-खरदूषणं।।
इति वदति तुलसीदास शंकर-शेष-मुनि-मन-रंजनं।
मम हृदय-कंज निवास कुरु, कामादि खलदल-गंजनं।
मनु जाहिं राचेउ मिलिहि सो बरु सहज सुंदर साँवरो।
करुना निधान सुजान सीलु सनेहु जानत रावरो।।
एति भाँति गौरि असीम सुनि सिय सहित हियँ हरषीं अली।
तुलसी भवानिहि पूजि पुनि पुनि मुदित मन मंदिर चली।।

श्री रामावतार

भए प्रगट कृपाला दीनदयाला कौसल्या हितकारी।
हरिषत महतारी मुनि मन हारी अद्‌भुत रूप बिचारी।।
लोचन अभिरामा तनु घनस्यामा निज आयुध भुज चारी।
भूषन बनमाला नयन बिसाला सोभासिंधु खरारी।।
कह दुइ कर जोरी अस्तुति तोरी केहि बिधि करौं अतंता।
माया गुन ग्यानातीत अमाना बेद पुरान भनंता।।
करुना सुखसागर सब गुन आगर जेहि गावहिं श्रुति संता।
सो मम हित लागी जन अनुरागी भयउ प्रगट श्रीकंता।।
ब्रह्मांड निकाया निर्मित माया रोम रोम प्रति बेद कहै।
मम उर सो बासी यह उपहासी सुनत धीर मति थिर न रहै।
उपजा जब ग्याना प्रभु मुसुकाना चरित बहुत बिधि कीन्ह चहै।
कहि कथा सुहाई मातु बुझाई जेहि प्रकार सुत प्रेम लहै।।
माता पुनि बोली सो मति डोली तजहु तात यह रूपा।
कीजै सिसुलीला अति प्रियसीला यह सुख परम अनूपा।।
सुनि बचन सुजाना रोदन ठाना होइ बालक सुरभूपा।
यह चरित जे गावहिं हरिपद पावहिं ते न परहिं भवकूपा।।
हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे
हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे

गौरी स्तुतिः

ॐ लीलारब्ध-स्थापित-लुप्ताखिल-लोकां, लोकातीतै-र्योगिभिर्-अन्तर्-हृदि-मृग्याम्।
बालादित्य-श्रेणि-समान-द्युति-पुंजां, गौरीम्-अम्बाम्-अम्बु-रुहा-क्षीम्-अहम्-ईड्ये।।

अर्थः *जो जगदम्बा बिना किसी परिश्रम के सृष्टि को बनाती है पालन करती है और नाश करती है, योग के अन्तिम अवस्था पर पहुंचे हुये योगी जिस शक्ति रूपी मां को हृदय से ढूंढते हैं, उदित होते हुये असंख्य सूर्यों जैसी प्रकाश वाली, कमल जैसे नेत्रों वाली माता गौरी (योगाग्नि से जलाये हुये शरीर के कारण गौर वर्ण वाली) की मैं स्तुति करता हूँ।*

आशा-पाश-क्लेश-विनाशं विदधानां, पादाम्भोज-ध्यान-पराणां पुरुषाणाम्।
ईशीम्-ईशाङ् गार्ध हरां तां तनुमध्यां, गौरीम्-अम्बाम्-अम्बु-रुहा-क्षीम्-अहम्-ईड्ये।।

अर्थः *जो भक्त जन उस शक्ति रूपी माता के चरण कमलों के ध्यान में लगे हुए हैं, उन के आशा के बन्धनों से पैदा हुए कष्टों को नाश करने वाली, शक्तिशाली, शंकर के आधे शरीर पर अधिकार वाली, सूक्ष्म कमर वाली, कमल जैसे नेत्रों वाली, माता गौरी की मैं स्तुति करता हूँ।*

प्रत्याहार-ध्यान-समाधि-स्थितिभाजां, नित्यं चित्ते निर्वृत्तिकाष्ठां कलयन्तीम्।
सत्य-ज्ञाना-नन्दमयीं तां तडित्-आभां, गौरीम्-अम्बाम्-अम्बु-रुहा-क्षीम्-अहम् ईड्ये।।

अर्थः *प्रत्याहार, ध्यान तथा समाधि के साधना में लगे हुये भक्तों के चित्त में आनन्द उत्पन्न करने वाली, सत्य ज्ञान तथा आनन्द स्वरूप वाली, बिजली की जैसी प्रकाशवाली, कमल जैसे नेत्रों वाली गौरी माता की मैं स्तुति करता हूँ।*

चन्द्रापीडा-नन्दितमन्द-स्मितवक्त्रां, चन्द्रापीडा-लंकृत-लोला-लकभाराम्।
इन्द्रोपेन्द्रा-द्यर्चित पादाम्बुजयुग्मां, गौरीम्-अम्बाम्-अम्बु-रुहा-क्षीम्-अहम्-ईड्ये।।

अर्थः भगवान् शंकर को आनन्दित करने वाले मुस्कराहट से युक्त मुख वाली, भगवान् शंकर के निमित सजाये हुये घूंघट वाले वालों की भार वाली, इन्द्र तथा नारायण जिसके चरणों की पूजा करते हैं उस कमल जैसे नेत्रों वाली गौरी माता की मैं स्तुति करता हूँ।

नाना कारैः शक्ति-कदम्बै-र्भुवनानि, व्याप्त स्वैरं क्रीडति यासौ स्वयमेका।
कल्याणीं तां कल्पलताम्-आनतिभाजां, गौरीम्-अम्बाम्-अम्बु-रुहा-क्षीम्-अहम्-ईड्ये।।

अर्थः भिन्न-भिन्न शक्तियों से भूः भुवः स्वः लोकों में व्याप्त होकर जो मां अकेली स्वतंत्र रूप से खेलती रहती है, जो कल्याण रूप से शरण में आये हुए के लिए कल्पलता है अर्थात् हर कामना को पूर्ण करने वाली है ऐसी ही कमल जैसी नेत्रों वाली मां की मैं स्तुति करता हूँ।

मूलाधारात्-उत्थित-वन्तीं विधिरन्ध्रं, सौरं-चान्द्रं धाम विहाय ज्वलिताङ्गीम्।
स्थूलां सूक्ष्मां सूक्ष्मतरां ताम्-अभिवन्द्यां, गौरीम् अम्बाम्-अम्बु-रुहा-क्षीम्-अहम्-ईड्ये।।

अर्थः सूर्य लोक और चन्द्रमा लोक से गुजर कर मूलाधर से उठी हुई ब्रह्म रन्ध्र तक पहुंची हुई प्रकाश रूप, स्थूल, सूक्ष्म तथा कारण शरीर में व्याप्त, प्रणाम के योग्य, कमलों जैसी नेत्रों वाली माता गौरी की मैं स्तुति करता हूँ।

आदि-क्षान्ताम्-अक्षर मूर्त्या, विलसन्तीं, भूते भूते भूत-कदम्बं प्रसवित्रीम्।
शब्द-ब्रह्मा-नन्द-मयीं ताम्-अभिरामां, गौरीम्-अम्बाम्-अम्ब-रुहा-क्षीम्-अहम्-ईड्ये।।

अर्थः 'अ' से लेकर 'क्ष' तक अक्षर रूप में विलास करने वाली, युग-युग में प्राणियों को उत्पन्न करने वाली, शब्द ब्रह्मस्वरूप

आनन्दमई उस सुन्दर मां का, जिस के नेत्र कमल के समान हैं मैं स्तुति करता हूँ।

यस्याः कुक्षौ लीनम्-अखण्ड़ं, जगत्-अण्डं, भूयो भूयः प्रादुर्-अभूत्-अक्षतमेव।
भर्त्रा सार्धं तां स्फटिकाद्रौ, विहरन्तीम्, गौरीम्-अम्बाम्-अम्बु-रुहा-क्षीम्-अहम्-ईड्ये।।

अर्थः *जिस जगदम्बा की गोद में यह सब सृष्टि लय हो जाती है फिर बार-बार किसी खण्डन के बिना फिर से उत्पन्न होती है प्रकाश के केन्द्र ब्रह्मरन्ध्र में सदाशिव के साथ विहार करती हुई अथवा बर्फ से ढक्के हुए सफेद हिमालय पर्वत पर विहार करने वाली कमल जैसे नेत्रों वाली गौरी माता की मैं स्तुति करता हूँ।*

यस्याम्-एतत्प्रोतम्-अशेषं मणिमाला, सूत्रे यत्-वत् क्वापि चरं चाप्यचरं च।
ताम्-अध्यात्म-ज्ञानपदव्या-गमनीयां, गौरीम् अम्बां -अम्बु-रुहा-क्षीम्-अहम्-ईड्ये।।

अर्थः *जिस शक्ति में यह सारी चराचर सृष्टि ऐसे पिरोई हुई है जैसे सूत्र में रत्न गुथे हुये होते हैं उसी शक्ति रूपी मां को जो आध्यात्मज्ञान से जानी जाती है। जिस के नेत्र कमलों के समान हैं उसी मां की मैं स्तुति करता हूँ।*

नित्यः सत्यो निष्कल एको जगदीशः साक्षी यस्याः सर्गविधौ सहंरणे च।
विश्वत्राण-क्रीडन शीलां शिवपत्नीं, गौरीम् अम्बाम्-अम्बु-रुहा-क्षीम्-अहम्-ईड्ये।।

अर्थः *जिस महामाया के सृष्टि बनाते समय अथवा संहार करते समय सदा शिव जो नित्य, सत्य, सजातीय इत्यादि तीन भेदों से रहित हैं जो आप के बनाने के काम में केवल साक्षी रूप में रहते हैं, जगत की रक्षा करना जिन का एक खेल है उसी कमल जैसी नेत्रों वाली गौरी माता की मैं स्तुति करता हूँ।*

प्रातः काले भावविशुद्धिं विदधानो, भक्त्या नित्यं जल्पति गौरीदशकं यः।
वाचां सिद्धिं सम्पतिम्-उच्चैः शिवभक्तिं, तस्या-वश्यं पर्वत-पुत्री विदधाति।।

अर्थः जो प्रातः काल शुद्ध हृदय से युक्त और संकल्प विकल्प रहित होकर भक्ति से नित्य इन दस गौरी माता के श्लोकों का उच्चारण करता है उस भक्त को सिद्धि, ऐश्वर्य, भगवान् शंकर की भक्ति पार्वती माता अवश्य देती है।

देवीसूक्तम्

नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः। नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्म ताम्।
रौद्रायै नमो नित्यायै गौर्यै धात्र्यै नमो नमः। ज्योत्स्नायै चेन्दुरूपिण्यै सुखायै सततं नमः।
कल्याण्यै प्रणतां वृद्ध्यै सिद्धयै कुर्मो नमो नमः। नैर्ऋत्यै भूभृतां लक्ष्म्यै शर्वाण्यै ते नमो नमः।
दुर्गायै दुर्गपारायै सारायै सर्वकारिण्यै। ख्यात्यै तथैव कृष्णायै धूम्रायै सततं नमः।
अतिसौम्यातिरौद्रायै नतास्तस्यै नमो नमः। नमो जगत्प्रतिष्ठायै देव्यै कृत्यै नमो नमः।
या देवी सर्वभूतेषु विष्णुमायेति शब्दिता, नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः।।
या देवी सर्वभूतेषु चेतनेत्य-भिधीयते, नमस्तस्यै, नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः।
या देवी सर्वभूतेषु बुद्धिरूपेण संस्थिता, नमस्तस्यै, नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः।।
या देवी सर्वभूतेषु निद्रारूपेण संस्थिता, नमस्तस्यै, नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः।
या देवी सर्वभूतेषु क्षुधारूपेण संस्थिता, नमस्तस्यै, नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः।।
या देवी सर्वभूतेषु तृष्णारूपेण संस्थिता, नमस्तस्यै, नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः।

या देवी सर्वभूतेषु क्षान्तिरूपेण संस्थिता, नमस्तस्यै, नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः।।
या देवी सर्वभूतेषु जातिरूपेण संस्थिता, नमस्तस्यै, नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः।
या देवी सर्वभूतेषु लज्जारूपेण संस्थिता, नमस्तस्यै, नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः।।
या देवी सर्वभूतेषु शान्तिरूपेण संस्थिता, नमस्तस्यै, नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः।।
या देवी सर्वभूतेषु श्रद्धारूपेण संस्थिता, नमस्तस्यै, नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः।।
या देवी सर्वभूतेषु कान्तिरूपेण संस्थिता, नमस्तस्यै, नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः।।
या देवी सर्वभूतेषु लक्ष्मीरूपेण संस्थिता, नमस्तंस्यै, नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः।।
या देवी सर्वभूतेषु स्मृतिरूपेण संस्थिता, नमस्तस्यै, नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः।।
या देवी सर्वभूतेषु दयारूपेण संस्थिता, नमस्तस्यै, नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः।।
या देवी सर्वभूतेषु तुष्टिरूपेण संस्थिता, नमस्तस्यै, नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः।।
या देवी सर्वभूतेषु मातृरूपेण संस्थिता, नमस्तस्यै, नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः।।
या देवी सर्वभूतेषु भ्रांतिरूपेण संस्थिता, नमस्तस्यै, नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः।।
इन्द्रियाणामधिष्ठात्री भूतानां चाखिलेषु या। भूतेषु सततं तस्यै व्याप्तिदेव्यै नमो नमः।।
चितिरूपेण या कृत्स्नमेतद्व्याप्य स्थिता जगत्। नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः।

स्तुता सुरैः पूर्वमभीष्टसंश्रया- त्तथा सुरेन्द्रेण दिनेषु सेविता।
करोतु सा नः शुभहेतुरीश्वरी, शुभानि भद्राण्यभिहन्तु चापदः।।
या साम्प्रतं चोद्धतदैत्यतापितै, रस्माभिरीशा च सुरैर्नमस्यते।
या च स्मृता तत्क्षणमेव हन्ति नः, सर्वापदो भक्तिविनम्रमूर्तिभिः।।

दुर्गा सिद्ध मन्त्र स्तोत्र

देवि प्रपन्नार्तिहरे प्रसीद, प्रसीद मातर् जगतोऽखिलस्य।
प्रसीद विश्वेश्वरि पाहि विश्वं, त्वमीश्वरी देवि चराचरस्य।।

अर्थः- शरणागत की पीड़ा को दूर करने वाली देवी! हम पर प्रसन्न होओ। पूरे विश्व की जननी! प्रसन्न होवो। हे विश्वेश्वरि! विश्व की रक्षा करो। हे देवी! तुम चराचर जगत् की अधीश्वरी (स्वामी) हो।

त्वं वैष्णवी शक्तिरनन्तवीर्या, विश्वस्य बीजं परमासि माया।
सम्मोहितं देवि समस्तमेतत, त्वं वै प्रसन्ना भुवि मुक्ति हेतुः।।

अर्थः- हे देवी! तुम अनन्त बलयुक्त वैष्णवी शक्ति हो, इस विश्व की बीजरूपा परा माया हो, आप ने इस पूरे विश्व को मोहित कर रखा है, आप ही प्रसन्न होने पर इस पृथ्वी पर मोक्ष की प्राप्ति कराती हो।

विद्याः समस्तास्तव देवि भेदाः, स्त्रियः समस्ताः सकला जगत्सु।

त्वयैकया पूरितम् अम्बयैतत्, का ते स्तुतिः स्तव्यपरा परोक्तिः।।

अर्थः- हे देवी! समस्त विद्यायें आप के ही अलग-अलग रूप हैं संसार में जितनी भी स्त्रियां हैं सब आप की ही मूर्तियां है, हे जगत् अम्बा! एक मात्र आपने इस पूरे विश्व को व्याप्त कर रखा है आप की स्तुति क्या हो सकती है आप स्तवन करने योग्य पदार्थों से परे हो।

विश्वेश्वरि त्वं परिपासि विश्वं, विश्वात्मिका धारयसीति विश्वम्।
विश्वेशवन्ध्या भवती भवन्ति, विश्वाश्रया ये त्वयि भक्ति नम्राः।।

अर्थः- हे विश्वेश्वरि! आप विश्व का पालन करती हो, आप विश्व रूपा हो, इस कारण आप समस्त विश्व को धारण करती हो आप भगवान् विश्वनाथ की भी वन्दनीया हो, जो लोग भक्तिपूर्वक आप के सामने सिर झुकाते हैं वे सम्पूर्ण विश्व को आश्रय देने वाले होते हैं।

दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेष जन्तोः, स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव शुभां ददासि।
द्रारिद्र्य-दुःख भय-हारिणि का त्वदन्या, सर्वोपकार करणाय सदार्द्रचित्ता।।

अर्थः- मां दुर्गे! आप स्मरण करने पर सब प्राणियों का भय दूर करती है और स्वस्थ पुरुषों द्वारा चिन्तन करने पर उन्हें कल्याणमयी बुद्धि प्रदान करती है। दुःख दरिद्रता और भय हरने वाली देवी! आप के सिवा दूसरी कौन है जिस का चित सबका उपकार करने के लिये हमेशा दयार्द्र रहता है।

सर्वमङ्गल-मङ्गल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके। शरण्ये त्रम्बके गौरि नारायणि नमोऽस्तु ते।।

अर्थः- सभी शुभकामनाओं को सिद्ध करने से सुन्दर अथवा कल्याणकारी धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष को देने वाली दुःखों से रक्षा करने वाली, अग्नि, चन्द्रमा, सूर्य रूपी तीन नेत्रों वाली, दक्ष प्रजापत के यज्ञ में योग अग्नि में भस्म बनी हुई अतः गौर वर्ण वाली, विष्णु की लक्ष्मी रूपा शक्ति वाली माता तुम्हें नमस्कार हो।

शरणागत दीनार्त परित्राण परायणे। सर्वस्यार्तिहरे देवि नारायणि नमोस्तु ते।।

अर्थः- शरण में आये हुये दीनों एवं पीडितों की रक्षा में संलग्न रहने वाली तथा सब की पीडा दूर करने वाली नारायणी देवी! आप को नमस्कार है।

सप्तश्लोकी दुर्गा

ज्ञानि-नाम्-अपि चेतांसि देवी भगवती हि सा। बलात्-आकृष्य मोहाय महामाया प्रयच्छति।।1।।

अर्थः- भगवती माहमाया देवी ज्ञानियों के भी चित को बलपूर्वक खींच कर मोह में डाल देती है।।1।।

दुर्गे स्मृता हरसि भीतिम्-अशेष-जन्तोः स्वस्थैः स्मृता मतिम्-अतीव शुभां ददासि।
दारि-द्र्य-दुःख-भय-हारिणि का त्वत्-अन्या सर्वोप-कार-करणाय दयार्द्र-चिता।।2।।

अर्थः माँ दुर्गे ! आप स्मरण करने पर सब प्राणियों का भय हर लेती है, और स्वस्थ पुरुषों द्वारा चिन्तन करने पर उन्हें परम कल्याण रूपी बुद्धि देती है, दुःख दरिद्रता हरने वाली देवी आप के बिना कौन है जिस का चित्त सब का उपकार करने के लिये सदा ही दयार्द्र रहता है।।2।।

सर्व-मंगल-मंगल्ये शिवे सर्वार्थ-साधिके, शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोस्तुते।।3।।

अर्थः- हे माँ ! तुम सब प्रकार का मंगल करने वाली मंगलमयी हो, कल्याण करने वाली शिवा हो, सब पुरुषार्थों को सिद्ध करने वाली, शरणागत-वत्सला, तीन नेत्रों वाली तथा सब की पीड़ा, दूर करने वाली, नारायणी देवी, तुम्हें नमस्कार है।

शरणागत-दीनार्त-परित्राण-परायणे सर्वस्यार्ति-हरे देवि नारायणि नमोस्तु ते ।।4।।

अर्थः- शरण में आये हुये, दीनों एवं पीड़ितों की रक्षा में लगी रहने वाली, तथा सब की पीड़ा दूर करने वाली, नारायणी देवी तुम्हें नमस्कार है।

सर्व-स्वरूपे सर्वेशे सर्व-शक्ति-समन्विते, भयेभ्यस्त्राहि-नो देवि दुर्गे देवि नमोस्तुते।।5।।

अर्थः- सर्वरूपा, सर्वेश्वरी तथा सब प्रकार की शक्तियों से सम्पन्न, दिव्यरूपा दुर्गे सब भयों से हमारी रक्षा करो, तुम्हें नमस्कार है।

रोगान्-अशेषान्-अपहंसि तुष्टा रुष्टा-तु कामान् सकलान्-अभीष्टान्
त्वाम्-आश्रितानां न विपत्-नराणां त्वाम्-आश्रिता ह्या श्रयतां प्रयान्ति।।6।।

अर्थः- हे देवी! तुम प्रसन्न होने पर सब रोगों को नष्ट करने वाली, और कुपित होने पर मनोवांछित सभी कामनाओं का नाश कर देती हो। जो लोग तुम्हारी शरण में जा चुके हैं, उन पर विपत्ति आती ही नहीं है, तुम्हारी शरण में गये हुये मनुष्य दूसरों को शरण देने वाले हो जाते है।।6।।

सर्वा-बाधा-प्रशमनं त्रैलोक्य-स्याखिलेश्वरि एवम्-एव त्वया कार्यम्-अस्मत्-वैरि-विनाशनम्।।7।।

अर्थः- हे सर्वेश्वरि ! जिस प्रकार तुम ने मधुकैटभ का नाश किया तुम उसी प्रकार तीनों लोकों की सभी बाधाओं को शान्त करो और

गायत्री चालीसा

ॐ भूभवः स्वः ॐ युतजननी, गायत्री नितकलिमल दहनी।
अक्षर चौबीस परम पुनिता, इनमें बसे शास्त्र श्रुति गीता।
शाश्वत सतोगुणी सत् रूपा, सत्य सनातन सुधा अनूपा।
हंसारूढ सितम्बर धारी, स्वर्णकान्ति, शुचि गगन बिहारी।

पुस्तक पुष्प कमण्डलु माला, शुभ्र वर्ण तनु नयन विशाला।
ध्यान धरत पुलकित हियहोई, सुख उपजल दुख दुरमति खोई।
कामधेनु तुम सुर तरु छाया, निराकर ही अद्भुत माया।
तुम्हरी शरण गहै जो कोई, तरै सकल संकट सो सोई।
सरस्वती लक्ष्मी तुम काली, दिपै तुम्हारी ज्योति निराली।
तुम्हरी महिमा पार न पावै, जो शारद शत मुख गुन गावै।
चार वेद की मातु पुनीता, तुम ब्रह्माणी गौरी सीता।
महा मन्त्र जितने जग माहीं, कोऊ गायत्री सम नाहीं।
सुमरत हिय में ज्ञान प्रकासै, आलस्य पाप अविद्या नासै।
सृष्टि बीज जग जननि भवानी, कालरात्रि वरदा कल्याणी।
ब्रह्मा विष्णु रुद्र सुर जेते, तुमसों पावें सुरता तेते।
तुम भक्तन की भक्त तुम्हारे, जननि हिं पुत्र प्राण ते प्यारे।
महिमा अपरम्पार तुम्हारी, जै जै जै त्रिपदा भय हारी।
पूरित सकल ज्ञान-विज्ञाना, तुम सम अधिक न जग में आना।
तुमहि जानि कछू रहे न शेषा, तुमहिं पाय कछू रहै न कलेषा।

जानत तुमहिं तुमहिं है जाई, पारस परसि कुधातु सुहाई

तुम्हरी शक्ति दिपै सब ठाईं, माता तुम सब ठौर समाई।

ग्रह नक्षत्र ब्रह्माण्ड घनेरे, सब गतिवान् तुम्हारे प्रेरे।

सकल सृष्टि की प्राण विधाता, पालक पोषक नाशक त्राता।

मातेश्वरी दया व्रतधारी, तुम सम तेर पालकी भारी।

जा कर कृपा तुम्हारी होई, ता पर कृपा करे सब कोई।

मन्द बुद्धि ते बुद्धि बल पावें, रोगी रोग रहित है जावें।

दारिद्र मिटै कटै सब पीरा, नासै दुख्ख हर भव भीरा।

गृह क्लेश चित चिन्ता भारी, नासै गायत्री भय हारी।

सन्तति हीन सुसन्तति पावें, सुख सम्पत्ति युत मोद मनावें।

भूत पिशाच सबै भय खावें, यम के दूत निकट नहीं आवें।

जो सधवा सुमिरें चितलाई, अछत सुहाग सदा सुखदाई।

घर बर सुख प्रबल हैं कुमारी, विधवा रहें सत्य व्रत धारी।

जयति जयति जगदम्ब भवानी, तुम सम और दयालु न दानी।

जो सद्गुरु से दीक्षा पावैं, सो साधन को सफल बनावें।
सुमिरन करै सुरुचि बडभागी, लहैं मनोरथ गृही विरागी।
अष्ट सिधि नव निधि की दाता, सब समर्थ गायत्री माता।
ऋषि मुनि तपस्वी योगी, आरत अर्थी चिन्तित भोगी।
जो जो शरण तुम्हारी आवैं, सो सो निज वांछित फल पावैं।
बल विद्या शील सुभाऊ, धन वैभव यश तेज उछाहू।
सकल बढ़ें सुख नाना, जो यह पाठ करै धर ध्याना।
यह चालीसा भक्तियुत, पाठ करै जो कोय,
तापर कृपा प्रसन्नता, गायत्री की होय।हमारे शत्रुओं का नाश करती रहो।

दुर्गास्तुति

नमस्ते शरण्ये शिवे सानुकम्पे, नमस्ते जगद्व्यापिके विश्वरूपे।
नमस्ते जगद्वन्द्य-पादारविन्दे, नमस्ते जगत्तारिणि त्राहि दुर्गे।।

नमस्ते जगच्चिन्त्यमानस्वरूपे, नमस्ते महायोगिनि ज्ञानरूपे।
नमस्ते नमस्ते सदानन्दरूपे, नमस्ते जगत्तारिणि त्राहि दुर्गे।।
अनाथस्य दीनस्य तृष्णातुरस्य, भयार्तस्य भीतस्य बद्धस्य जन्तोः।
त्वमेका गतिर्देवि निस्तारकर्त्री, नमस्ते जगत्तारिणि त्राहि दुर्गे।।
अरण्ये रणे दारुणे शत्रुमध्ये, ऽनले सागरे प्रान्तरे राजगेहे।
त्वमेका गतिर्देवि निस्तारनौका, नमस्ते जगत्तारिणि त्राहि दुर्गे।।
अपारे महादुस्तरेऽत्यन्तघोरे, विपत्सागरे मज्जतां देहभाजाम्।
त्वमेका गतिर्देवि निस्तारहेतुः, नमस्ते जगत्तारिणि त्राहि दुर्गे।।
नमश्चण्डिके चण्डदुर्दण्डलीला, समुत्खण्डिताखण्डिताशेषशत्रो।
त्वमेका गतिर्दव निस्तारबीजं, नमस्ते जगत्तारिणि त्राहि दुर्गे।।
त्वमेवाघभावाधृतासत्यवादीर्न, जाताजितक्रोधनात् क्रोधनिष्ठा।
इडा पिङ्गला त्वं सुषुम्णा च नाडी, नमस्ते जगत्तारिणि त्राहि दुर्गे।।
नमो देवि दुर्गे शिवे भीमनादे, सरस्वत्यरुन्धत्यमोघस्वरूपे।
विभूतिः शची कालरात्रिः सतिः त्वं, नमस्ते जगत्तारिणि त्राहि दुर्गे।।

सरस्वती वंदना

श्वेत-पद्मासना देवी श्वेत-पुष्पोप-शोभिता। श्वेताम्बर-धरा नित्या श्वेत-गन्धानु लेपना।।
श्वेताक्षी शुक्ल वस्त्रा च श्वेत-चन्दन-चर्चिता। वरदा सिन्धु-गन्धर्वैः ऋषिभिः स्तूयते सदा।।
स्तोत्रेणाऽनेन तां देवीं जगद्धात्रीं सरस्वतीम्। ये स्तुवन्ति त्रिकालेषु सर्वविद्या लभन्ति ते।।
या देवी स्तूयते नित्यं ब्रह्मेन्द्र-सुर-किन्नरैः। सा ममैवाऽस्तु जिह्वाग्रे पद्महस्ता सरस्वती।।

अपराध क्षमा स्तोत्रम्

न मन्त्रं नो यन्त्रं तदपि च न जाने स्तुतिमहो, न चाह्वानं ध्यानं तदपि च न जाने स्तुतिकथाः।
न जाने मुद्रास्ते तदपि च न जाने विलपनं, परं जाने मातस्त्वत्नुसरणं क्लेशहरणम्।।1।।
विधेर्-अज्ञानेन द्रविणे विरहेणा लसतया, विधेयाशक्यत्वात्-त चरणयो र्या च्युतिरभूत्।
तदेतत् क्षन्तव्यं जननि सकलोद्धारिणि शिवे कुपुत्रो जायेत क्वचिदपि कुमाता न भवति।।2।।
पृथिव्यां पुत्रास्ते जननि बहवः सन्ति सरलाः परं तेषां मध्ये विरलतरलोऽहं तव सुतः।
मदीयोऽयं त्यागः समुचितमिदं नो तव शिवे कुपुत्रो जायेत क्वचिदपि कुमाता न भवति।।3।।

जगन्मातर्मातस्तव चरणसेवा न रचिता न वा दत्तं देवि द्रविणमपि भूयस्तव मया।
तथापि त्वं स्नेहं मयि निरुपमं यत्प्रकुरुषे कुपुत्रो जायेत क्वचिदपि कुमाता न भवति।।4।।
परित्यक्ता देवा विविधविधसेवाकुलतया, मया पञ्चाशीतेर् धिकमपनीते तु वयसि।
इदानीं चेन्मातस्तव यदि कृपा नापि भविता, निरालम्बो लम्बोदरजननि कं यामि शरणम्।।5।।
श्वपाको जल्पाको भवति मधुपाकोपमगिरा, निरातङ्को रङ्को विहरति चिरं कोटिकनकैः।
तवापर्णे कर्णे विशति मनुवर्णे फलमिदं, जनः को जानीते जननि जपनीयं जपविधौ।।6।।
चिताभस्मालेपो गरलमशनं दिक्पटधरो, जटाधारी कण्ठे भुजगपतिहारी पशुपतिः।
कपाली भूतेशो भजति जगदीशैकपदवीं, भवानि त्वत्पाणि ग्रहण परिपाटी फलमिदम्।।7।।
न मोक्षस्याकाङ्क्षा भवविभव वाञ्छापि च न मे, न विज्ञानापेक्षा शशिमुखि सुखेच्छापि न पुनः।
अतस्त्वां संयाचे जननि जननं यातु मम वै, मृडानी रुद्राणी शिव शिव भवानीति जपतः।।8।।
नाराधितासि विधिना विविधोपचारैः, किं रुक्षचिन्तनपरैर्न कृतं वचोभिः।
श्यामे त्वमेव यदि किञ्चन मय्यनाथे, धत्से कृपाम् उचितम् अम्ब परं तवैव।।9।।
आपत्सु मग्नः स्मरणं त्वदीयं, करोमि दुर्गे करुणार्णवेशि।
नैतच्छठत्वं मम भावयेथाः, क्षुधातृषार्ता जननीं स्मरन्ति।।10।।

जगदम्ब विचित्रमत्र किं, परिपूर्णा करुणास्ति चेन्मयि। अपराध परं परा व्रतं न हि माता समुपेक्षते सूतम्।।11।।
मत्समः पातकी नास्ति पापघ्नी त्वत्समा न हि। एवं ज्ञात्वा महादेवि यथायोग्यं तथा कुरु।।12।।

आरती लक्ष्मी जी

ओ3म् जय लक्ष्मी माता, मैया जय लक्ष्मी माता।
तुमको निशदिन सेवत, हर विष्णु दाता, ओ3म् जय लक्ष्मी माता।।
उमा, रमा, ब्रह्माणी, तु ही जग माता, मैया तु ही जग माता।
सूर्य-चन्द्रमा ध्यावत, नारद ऋषि गाता, ओ3म् जय लक्ष्मी माता।।
दुर्गा रूप निरंजनि, सुख-सम्पति दाता। मैया तु ही सुख-सम्पति दाता।
जो कोई तुमको ध्यावत, ऋद्धि-सिद्धि धन पाता, ओ3म् जय लक्ष्मी माता।।
तुम पाताल-निवासिनि, तुम ही शुभदाता, मैया तु ही शुभदाता।
कर्म-प्रभाव-प्रकाशिनि, भवनिधि की त्राता, ओ3म् जय लक्ष्मी माता।।
जिस घर में तुम रहती, सब सद्गुण आता, मैया सब सद्गुण आता।
सब सम्भव हो जाता, मन नहीं घबराता, ओ3म् जय लक्ष्मी माता।।

तुम बिन यज्ञ न होते, वस्त्र न हो पाता, मैया वस्त्र न हो पाता।
खान-पान का वैभव, सब तुमसे आता, ओ3म् जय लक्ष्मी माता।।
शुभ-गुण मंदिर सुन्दर, क्षीरोदधि-जाता, मैया क्षीरोदधि-जाता।
रत्न चतुर्दश तुम बिन, कोई नहीं पाता, ओ3म् जय लक्ष्मी माता।।
महालक्ष्मी जी की आरती, जो कोई जन गाता, मैया जो कोई जन गाता।
उर आनन्द समाता, पाप उतर जाता, ओ3म् जय लक्ष्मी माता।।

गंगा माँ

ओ3म् जय गंगे माता, मैया जय गंगे माता।
जो नर तुमको ध्याता, मनवांछित फल पाता, ओ3म् जय गंगे माता।
चन्द्र सी ज्योति तुम्हारी, जल निर्मल आता, मैया जल निर्मल आता।
शरण पड़े जो तेरी, सो नर तर जाता, ओ3म् जय गंगे माता।
पुत्र सागर के तारे, सब जग को ज्ञाता, मैया सब जग को ज्ञाता।
कृपा दृष्टि हो तुम्हारी, त्रिभुवन सुख दाता, ओ3म् जय गंगे माता।

एक बार जो प्राणी, शरण तेरी आता, मैया शरण जो तेरी आता।
यम की त्रास मिटाकर, परमगति पाता, ओ3म् जय गंगे माता।
आरती मातु तुम्हारी, जो नर नित गाता, मैया जो नर नित गाता।
सेवक वही सहज में, मुक्ति को पाता, ओ3म् जय गंगे माता।

आरती

दुर्गति-नाशिनि दुर्गा जय-जय, काल-विनाशिनि काली जय-जय।
उमा-रमा-ब्रह्माणी जय-जय, राधा-सीता-रुक्मिणि जय-जय।।
साम्ब सदाशिव, साम्ब सदाशिव, साम्ब सदाशिव जय शंकर।
हर-हर शंकर दुःखहर सुख कर, अघ-तम-हर हर हर शंकर।।
हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे, हरे कृष्ण, हरे कृष्ण, कृष्ण-कृष्ण हरे हरे।।
जय-जय दुर्गा, जय मा तारा, जय गणेश जय शुभ-आगारा।
जयति शिवाशिव जानकि राम, गौरी शंकर सीताराम।।
जय रघुनन्दन जय सियाराम, व्रज-गोपी-प्रिय राधे श्याम।
रघुपति राघव राजा राम, पतितपावन सीताराम।।

गुरु स्तुति:

गुरु ब्रह्मः गुरु विष्णो गुरु साक्षात् महेश्वरः गुरु एवं जगत् सर्वं तस्मै श्री गुरवे-नमः।

वन्देहं सच्चिदानन्दं भेदातीतं जगद् गुरुम्, नित्यं पूर्णं निराकारं निर्गुणं सर्व-संस्थितम् ।1।

परात्परतरं ध्येयं नित्यम्-आनन्दकारणम्, हृदयाकाश-मध्यस्थं शुद्धस्फटिक-सन्निभम् ।2।

नमामि सद् गुरुं शान्तं प्रत्यक्षं शिवरूपिणम्, शिरसा योगपीठस्थं धर्मकार्मार्थ-सिद्धये ।3।

अखण्ड-मण्डलाकारं व्याप्तं येन चराचरम्, तत्पदं दर्शितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः ।4।

अज्ञानतिमरान्धस्य ज्ञानञ्जन-शलाकया, चक्षुर्-उन्मीलितं येन तस्मै श्री-गुरवे नमः ।5।

हरौ रुष्टे गुरु-स्त्राता गुरौ रुष्ठे न कश्चन, सर्वदेव-स्वरूपाय तस्मै श्री-गुरवे-नमः ।6।

चैतन्यं शाश्वतं शान्तं व्योमातीतं निरञ्जनम्, बिन्दु-नादकलातीतं तस्मै श्री-गुरवे-नमः ।7।

शिष्यानां मोक्षदानाय लीलया-देहधारिणे, सदेहेपि विदेहाय तस्मै श्री-गुरवे नमः ।8।

ज्ञानिनां ज्ञानरूपाय प्रकाशाय प्रकाशिनाम्, विवेकिनां विवेकाय विमर्शाय विमर्शिनाम् ।9।

पुरस्तात्-पार्श्वयोः पृष्ठे नमस्कुर्याम्-उपर्यधः, सदामत्-चित्तिरूपेण विधेहि भवदासनम् ।10।

नवग्रहपीडाहर स्तोत्रम्

सूर्य	ग्रहाणाम्-आदिर्-आदित्यो-लोकरक्षण-कारकः, विषमस्थान-सम्भूतां-पीडा-हरतु-मे रविः।
चन्द्र	रोहिणीशः सुधामूर्तिः सुधागात्रः सुधाशनः, विषम-स्थान सम्भूतां पीडां हरतु मे विधुः।
भौम	भूमिपुत्रो महातेजो जगतां भयकृतृ सदा, वृष्टिकृद्-वृष्टि-हर्ता च पीडां हरतु मे कुजः।
बुधा	उत्पातरूपो जगतां चन्द्र पुत्रो महाद्युतिः, सूर्यप्रिय करो विद्वान, पीडां हरतु मे बुधः।
बृहस्पति	देवमन्त्री विशालाक्षः सदा लोकहिते रतः, अनेक शिष्यसम्पूर्णः पीडां हरतु मे गुरुः।
शुक्र	दैत्यमन्त्री गुरुस्तेषां प्राणदश्च महामतिः, प्रभुस्तारा ग्रहाणां च पीडां हरतु मे भृगुः।
शनि	सूर्यपुत्रो दीर्घदेहो विशालाक्षः शिवप्रियः, मन्दाचारः प्रसन्नात्मा पीडां हरतु मे शनिः।
राहु	महाशिरो महावक्त्रो दीर्घदंष्ट्रो महाबलः, अतनुश्चोर्ध्वकेशश्च पीडां हरतु मे शिखी।
केतु	अनेक-रूप-वर्णश्च शतशोथ सहस्रशः, उत्पादरूपो जगतां पीडां हरतु मे तमः।

नोटः- आप नवग्रहों का पुष्पार्चन या नवग्रह पूजा करना चाहते हैं तो 'विजशेयवर पंचांग कार्यालय' से नवग्रह पूजा पुस्तक तथा कैस्ट आपको मिल सकता हैं।

काँह, मास, तरि-व, अपोर (श्री मास्टर जिन्द कौल)

तार-वुन, छुह, करनव - हक, दित, छुह वनन्, काँह मास, तरि-व अपोर
पत तर-वन्यव, - आलुस म करि-व, उद्यम तरि-व अपोर, काँह ...।
करनावि, तार छुनॅह, गरि-गरि बनन वुन्य क्यन-छॅह, वीला जान
न्यशतुर त्यथ साथ, मॅह रावु-रिवु, बुज़िव त तॅरि-व अपोर, काँह ...।
घर वेठ सुँभरान, छिव मार गॅमत, छॅयनिथ त थकित प्यमित,
घर रोज़ि यतिय -त, कथक्युत भरि-व छॅरिय तॅरि-व अपोर, काँह ...।
अन अन वननस्, - कन मॅह थविव, गुॅब रॉ-विव क्याज़िह पान,
गुबॅ बोर ह्यथ - वॅति प्यठ क्या कॅरि-वु, लुतिय तॅरि-वु अपोर, काँह ...।
चूर युस करि-वु, सुय पानॅस फरि-वु, कुर्सुक छुह अटल नियम,
स्वन, रुफ छॅ-रिथ,-गुॅड करि-मु, ग-रि-वु, सन्तोष त-रि-वु अपोर - काँह ...।
प्र-च्छ गॅ-र-यलि लगि, भर दिथु ख्यनसु, इस बात गॅ-छिवि चूर,
थर थर मा, हॅरद-थरि जन हरि-वु, औदार्य त-रि-वु, अपोर - काँह ...।

पॅज्य पान होवु, -रॅ-षि रस-त्यन ऋष्यन् पशन ति बॅग-रुख प्रेम,
अथ्य ऋष्य-धर्मस् प्यॅठ, तुहि ति धॅ-विवु, समदृष्टि तॅरि-वु अपोर - कहाँ ...।
रॅ-ति भाव थ-विवु, रुतय वनिव, रतिय करि-वु-कार,
यिय यति करि-वु, तिय तति सुरि-वु, सॅत् कर्म त-रि-वु, अपोर-काँह ...।
अपारि बदलय छह विद्या परन्य, योगचु छिह तति बोल चाल,
पॅरि-व-त-यति, श्री गीता परि-वु, योगयु त-रि-वु, अपोर - काँह ...।

प्रभात आव पोशनूलो वन, सुन्दर वॅनी प्रसन्न कर मन्

न्यँदर मो त्राव अथ वखतसु सत्यायुग ब्यूठ मुत छुह तखतस्,
मँगुन इय छुय चॅह मंग वुन्यक्य्न्-सुन्दर वॅनी प्रसन्न कर मन्।1।
त्रेतायुग द्वापर कलियुग-तिहुन्द स्वामी छुह सत्यायुग,
ॲमिस निश फल बन्यम् वुन्य-क्यन्-सुन्दर वॅनी प्रसन्न कर मन् ।2।
मंग्यस् युस यिय दिवान् तस तिय अमिस सूति ऑसि शिवजी
गुडन्यु बोजन-तुता भक्त्यन, सुन्दर वॅनी प्रसन्न कर मन् ।3।

शुँगिथ युस रोज़िह अथ वखतस-दियस आराम ब्ययि मोह-मस,
तिमन कति छुय ज़न्मन छ्यन-सुन्दर वॅनी प्रसन्न कर मन् ।4।
करि युस न्यँदरि वुन्यक्यन नाश-अछव् वुछि ऑत्म-सूर्युक गाश,
बन्ॅयस अदह साध सम्बन्धन्-सुन्दर वॅनी प्रसन्न कर मन् ।5।
ग्यवान् कस्तूर बागन मंज्-करान लीली वनन् छि संज़
परान श्रीराम रुघनन्दन्-सुन्दर-वॅनी प्रसन्न कर मन् ।6।
छुह बुल बुल बोलि मंज़ दिथ ताल-ग्यवान गोविन्द हे गोपाल,
दपान जीवन छुह वुज़नावन्-सुन्दर वॅनी प्रसन्न कर मन् ।7।
समिॅथ लग्य परनि गोविन्द गू, कुकिल लजि वनन्य हे शम्भू
म्य ब्रोंठ कॅर बूलि पोशनूलन, सुन्दर वॅनी प्रसन्न कर मन् ।8।
पनन्ॅय सुमरन फिरनि द्रामुत्-दुहस ओसुस न अथि आमुत
तवय् द्राव् सुलि रॅटनि वुन्य क्यन्-सुन्दर वॅनी प्रसन्न कर मन् ।9।
छह वुन्य क्यन् देव लोकन मज़ करान पूज़ायि वननय मंज़
यियुय् नय् पॅछ दिह् कन् वुन्यक्यन्-सुन्दर वॅनी प्रसन्न कर मन् ।10।

वज़ान सेतार मुरली नय्-परान शेव शेव शम्भू जय
यिहय वनी छह वनान् देवगण-सुन्दर वॅनी प्रसन्न कर मन् ।11।
मन्दॅछ मॅह यिय नय-च्य बूज़िथ यिय्-शरण गच्छ परम शिवस चॅय,
परन् प्यस अरविन्द चरनन्-सुन्दर वॅनी प्रसन्न कर मन् ।12।
चॅह-आलुस त्राव-गॅछ़ हुशयार-बनॅख धर्मचि सभायि मुखतार,
करख रुत भूग मंज़ सुरगॅन्-सुन्दरवॅनी प्रसन्न कर मन् ।13।
फुलनि लॅजि वुन्य-संगरमालय-ज़गत प्रज़लान छु कमि हालय,
सुन्दरमन्दर-छुह क्याह ज़ोतन्-सुन्दर वॅनी प्रसन्न कर मन् ।14।
हतो ज़ीवो ईथिस आनस-गुमुत छुक न्यन्दरि अज्ञानस
यिह आलुस छुय इमन् ज़न्दन्-सुन्दर वॅनी प्रसन्न कर मन् ।15।
उद्योगुक् जाम नॅलिय छुन्-सपुन चेर फेर होशस् कुन,
उदॅय ह्योत् करुन् वोन्य सूरयन्-सुन्दर वॅनी प्रसन्न कर मन् ।16।
मुचर धर्म लॅरि कर्मुक बर-ज्ञान प्रकाश ग्वड सरकर।
प्रियमह्नु सॅति अदह चह कर-च्यनतन्-सुन्दर वॅनी प्रसन्न करमन् ।17।

पंचनाग रादॅह मंजह श्राण-सतचि म्यचि़ सूति नावुन-पान,
वंन्दुन-गछि़ कल गुर पादन्-सुन्दर वॅनी प्रसन्न कर मन् ।18।
नवन नदियन उद्योगुक ज़ल-तिमन आगुर छुह मन यारबल,
सुज़ल बगरान तिमन नदियन-सुन्दर वॅनी प्रसन्न कर मन् ।19।
न्यन्दर-ज़ीवस छुह बुड संहार-करान् छुस कार निश बेकार,
फरान छुस चूर, छुस मोहन्-सुन्दर वॅनी प्रसन्न कर मन् ।20।
स्वप्नस् मंज़ बनान् रा़ज़ाह-छिह लक्ष्मी दाय इस्तादह
हुशयार यलि गुव बन्योव निर्धन-सुन्दर वॅनी प्रसन्न कर मन् ।21।
इत्थॅय पॅठिन समय सुप्नाह-सुह रातुक जशनह अज़ बन्य माह,
अज़युक माह बनि पगाह सुबहन-सुन्दर वॅनी प्रसन्न कर मन् ।22।
छः हत बंद रंग़ दुहस बदलान्-छह असि मूर्खमा क्यँह जानान,
अपुज करि करि बरान चन्दन-सुन्दरवॅनी प्रसन्न क मन् ।23।
शुँगिथ युस रोजि़ दुपहरस तान्य-वनान् छस अस स्यठा कर्मवान्
सु छुई चण्डाल बनान्-ब्रह्मुन्-सुन्दर वॅनी प्रसन्न कर मन् ।24।

इह ब्रॉह्मन् ज़न्म सुलि सुरिज़्यॅह-मरॅन ब्रोंठय् ज़िंदय मरि ज़्येह
बनिय छ़यन् अदह अपराधन्-सुंदर वॅनी प्रसन्न कर मन् ।25।
छुह जी़वस ज़न्म मंज़ व्यस्तार-दियस अदह-भव सर मंज़तार
कर सीव पादनय् सन्तन्-सुन्दर वॅनी प्रसन्न कर मन् ।26।
मूर्ख युस आसि क्यँह ज़्याद हन-न्यन्दरि मंज़ प्ययि पुश ह्युव् ज़न्
सु कथ पठि वुथि प्रभात समयन-सुन्दर वॅनी प्रसन्न कर मन् ।27।
करुन अभ्यास सुलि वुथनॅस-बे ह्यसी रोज़िह व्यवहारस्
अभ्यासी बन आनन्दगण-सुन्दर वॅनी प्रसन्न कर मन् ।28।
छि भक्ति रात्रोद्यन-म्य-गछ़ि रोज़न सतिच सुमरन्
तवय द्यव बनि जन्मन् छ्यन्। सुन्दर वॅनी प्रसन्न कर मन् ।29।
हतो-मन पोशनूलो-बोज़, रटितु वन हर गोशस् रोज़
सदा गोविन्द गोवर्धन-सुन्दरवॅनी प्रसन्न कर मन् ।30।

बच्चियों में बाल काटने की आदत न डाले। यह हमारी संस्कृति का अपमान है।

मस छुय वस

जमींदारी वेदान्त के ढांचे में

श्री परमानन्द जी (मार्तण्ड निवासी)

कर्म भूमिकाय दिजि धर्मुक बल, सन्तोष ब्यालि बुवि आनन्द फल ।
दुयि प्राण दांद जूरि द्यन त राथ वा़य, कुम्भ कुरह ज़ोर तिमनय लाय ।
हल कर युथ न रोज़ि बीठ कांह रेल, सन्तोष ब्यालि बुवि आनन्द फल ।।1।।

लोल के आल फाल तुल नविथ, वैर्च यट फुरि दत्त फुट रविथ ।
वहरुक स्नेह युथ न रोज्यस तल, सन्तोष ब्यालि बुवि आनन्द फल ।।2।।

विचार बठि त बेरह, लदिथ क्यथ श्रुच यन द्यव शुजरविथ वथ ।
सम दृष्टिपात-जन अद फेरि जल, सन्तोष ब्यालि बुवि आनन्द फल ।।3।।

सोन्थ दोह तारह मुत यावुन, लजि पजि साथा राव रावुन ।
क्व ब्योल मव-प्रार करु मंगल, सन्तोष ब्यालि बुवि आनन्द फल ।।4।।

त्रपुरिथ फुरनायि नाम वुधुर, सुर के रवि चक सूतिन भर ।
इन्द्रिय गगरन करु वठल, सन्तोष ब्यालि बुवि आनन्द फल ।।5।।

भक्ति हंजि न्यन्दि फेरि साधनायि खेत, ह्यलि नेरिह तप के पप सग सूत।
सम भाव-नायि फलि पम्पोश डल, सन्तोष ब्यालि बुवि आनन्द फल ।।6।।
इन्द्रिय पशि वारह रछनावुक, तिमनय अथि यथ न खेत ख्यावक ।
बावच रावच नेर निष्कल, सन्तोष ब्यालि बुवि आनन्द फल ।।7।।
ह्यलि यलि नेरिह त्यलि सप्यस क्राव, वैराग द्राति सूति लून्य लून्य त्राव ।
समबंध सस्त मावि लाव्यन वल, सन्तोष ब्यालि बुवि आनन्द फल ।।8।।
मटि खस नचि रजि मठि मठि सार, साधनि अनत भाई-बंध त यार ।
नित्य नियम सुमरन अद समि खल, सन्तोष ब्यालि बुवि आनन्द फल ।।9।।
त्रिगुन त्याग नोम अख गुनि लद, निर्मान पावख निर्वान पद ।
शमिथ तम दिथ करु कुशल, सन्तोष ब्यालि बुवि आनन्द फल ।।10।।
ध्यानधारणायि धान्य मुँड विस्तार, ज्ञान धान्य खास गाश गाश चार ।
मन के अनुभव वार दिस छल, संतोष ब्यालि बुवि आनन्द फल ।।11।।
त्याग के अथ वार छुन नाव, प्रोन त-जग फुटजन ब्योन ब्योन थाव ।
जागि रोज लागिथ त्रविय जुल, संतोष ब्यालि बुवि आनन्द फल ।।12।।
तुलिथ अद थव अंबरन माल, सो-हं हायिक सति नख अदवाल ।
लुति बार वात नविथ खनबल संतोष ब्यालि बुवि आनन्द फल ।।13।।

शम दम यम नियम घाठ वातनाव, शान्त श्रद्धायि जल पकनाव नाव ।
शिहलिथ पानस मानस बल, संतोष ब्यालि बुवि आनन्द फल ।।14।।

लाग नखवाल माल आगस तार, खालि यथ न रोज़िय जेगिरदार ।
वाकय त फाजिल रोजि कस तल, संतोष ब्यालि बुवि आनन्द फल ।।15।।

चरिथ ब्यय ब्योल संच्चय थव, सोन्त यलि यिय त्यलि फलि फलि वव ।
उपकार उपनय नव्य नव्य फल, संतोष ब्यालि बुवि आनंद फल ।।16।।

योग मायायि हन्द भूगी आस, इय छय दुय तिय पानस कास ।
साध नाव प्ययि नय अद साध भो डल, संतोष ब्यालि बुवि आनंद फल ।।17।।

कर्मफल सोरनय गुर् शब्दय, सँच्यथ कर्मदान प्रारब्धय ।
कर्मकाण्ड ग्यान नेरि नार वुज़मल, संतोष ब्यालि बुवि आनंद फल ।।18।।

स्वयं प्रकाश के विज्ञानय, त्रविथ मान ब्ययि अभिमानय ।
त्रवथि रोजि द्वादशांत–मण्डल, संतोष ब्यालि बुवि आनंद फल ।।19।।

परमांनद ओस ज़मीदार, हूरिथ माल़ तस रोज़्यस न लार ।
वांगज वारिच चज़िश गागंल, संतोष ब्यालि बुवि आनंद फल ।।20।।

चन्द्रशेखराष्टकस्तोत्रम्

चन्द्रशेखर चन्द्रशेखर चन्द्रशेखर पाहि माम्।
चन्द्रशेखर चन्द्रशेखर चन्द्रशेखर रक्ष माम्।। 1 ।।
रत्नसानु-शरासनं रजताद्रि-शृङ्गनिकेतनं
सिञ्जिनीकृत-पन्नगेशवरम्-अच्युतानन-सायकम्।
क्षिप्र-दग्ध-पुरत्र्यं त्रिदिवालयैर-भिवन्दितं
चन्द्रशेखरमाश्रये मम किं करिष्यति वै यमः।। 2 ।।
पञ्चपादप-पुष्पगन्ध-पदाम्बुजद्वय-शोभितं
भाललोचन-जातपावक-दग्धमन्मथ-विग्रहम्।
भस्मदिग्ध-कलेवरं भव-नाशनं भवम्-अव्ययं

चन्द्रशेखर चन्द्रशेखर चन्द्रशेखर रक्ष माम्।। 3 ।।

मत्तवारण-मुख्यचर्म-कृतोत्तरीय-मनोहरं

पङ्कजासन-पद्मलोचन-पूजिताङ्घ्रि-सरोरुहम्।

देवसिन्धु-तरङ्गसीकर-सिक्त-शुभ्रजटाधरं

चन्द्रशेखर चन्द्रशेखर चन्द्रशेखर रक्ष माम्।। 4 ।।

यक्ष-राजसखं भगाक्ष-हरं भुजङ्ग-विभूषणं

शैल-राजसुता-परिष्कृत-चारुवाम-कलेवरम्।

क्ष्वेडनालगलं परश्वध-धारिणं मृगधारिणं

चन्द्रशेखर चन्द्रशेखर चन्द्रशेखर रक्ष माम् ।। 5 ।।

कुण्डलीकृत-कुण्डलेश्वर-कुण्डल वृषवाहनं

नारददि–मुनीश्वर–स्तुत–वैभवं–भुवनेश्वरम्।
अन्धकान्धक–माश्रिता–ऽमरपादपं–शमनान्तकं
चन्द्रशेखर चन्द्रशेखर चन्द्रशेखर रक्ष माम् ॥ 6 ॥
भेषजं भसरोगिणाम–खिलापदाम–पहारिणं
दक्षयज्ञ–विनाशनं त्रिगुणात्मकं–त्रि–विलोचनम्।
भुक्ति–मुक्ति–फलप्रदं सकलाघ–सङ्घनिर्बहं
चन्द्रशेखर चन्द्रशेखर चन्द्रशेखर रक्ष माम् ॥ 7 ॥
भक्त–वत्सलमु–र्चितं निधिम–क्षयं–हरिदम्बरं
सर्वभूत–पतिं–परात्परम–प्रमेयम–नुत्तमम्।
सोमवारिद–भूहुताशन–सोमपा–निलखाकृतिं

चन्द्रशेखर चन्द्रशेखर चन्द्रशेखर रक्ष माम् ॥ 8 ॥

विश्वसृष्टि-विधायिनं पुनरेव पालन-तत्परं

संहरन्तमपि प्रपञ्चम-शेषलोक-निवासिनम्।

क्रीडयन्तम-हर्निशं गणनाथयूथ-समन्वितं

चन्द्रशेखर चन्द्रशेखर चन्द्रशेखर रक्ष माम् ॥ 9 ॥

मृत्युभीत-मृकण्डसूनु-कृतस्तवं-शिवसन्निधौ

यत्र कुत्र च यः पठेन्न हि तस्य मृत्युभयं भवेत्।

पूर्णमा-युर-रोगिताम-खिलार्थसम्पदमा-दरं

चन्द्रशेखर चन्द्रशेखर चन्द्रशेखर रक्ष माम् ॥ 10 ॥

इति श्री चन्द्रशेखराष्टकस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

बिल्वाष्टकम्

त्रिदलं त्रिगुणाकारं त्रिनेत्रं च त्रयायुधम्।
त्रिजन्मपाप-संहारमेकबिल्वं शिवार्पणम्।। 1 ।।
त्रिशाखैर्बिल्वपत्रैश्च ह्यच्छिद्रः कोमलैः शुभैः।
शिवपूजां करिष्यामि ह्येकबिल्वं शिवार्पणम्।। 2 ।।
अखण्डबिल्वपत्रेण पूजिते नन्दिकेश्वरे।
शुद्धयन्ति सर्वपापेभ्यो ह्येकबिल्वं शिवार्पणम्।। 3 ।।
शालिग्रामशिलामेकां विप्राणां जातु अर्पयेत्।
सोमयज्ञ-महापुण्यमेकबिल्वं शिवार्पणम्।। 4 ।।
दन्तिकोटिसहस्राणि वाजपेयशतानि च।

कोटिकन्या-महादानमेकबिल्वं शिवार्पणम्।। 5 ।।

लक्ष्म्याः स्तनत उत्पन्नं महादेवस्य च प्रियम्।

बिल्ववृक्षं प्रयच्छामि ह्येकबिल्वं शिवार्पणम्।। 6 ।।

दर्शनं बिल्ववृक्षस्य स्पर्शनं पापनाशनम्।

अघोरपापसंहारमेकबिल्वं शिवार्पणम्।। 7 ।।

मूलतो ब्रह्मरूपाय मध्यतो विष्णुरूपिणे।

अग्रतः शिवरूपाय ह्येकबिल्वं शिवार्पणम्।। 8 ।।

बिल्वाष्टकमिदं पुण्यं यः पठेच्छिवसन्निधौ।

सर्वपापविनिर्मुक्तः शिवलोकमवाप्नुयात्।। 9 ।।

इति बिल्वाष्टकं सम्पूर्णम्।।

शंकरा चंद्रशेखरा गंगाधरा सुमनोहरा,
पाहिमाम् अभयंकरा मृत्युंजया विश्वेश्वरा

शंकरा चंद्रशेखरा गंगाधरा सुमनोहरा,
पाहिमाम् अभयंकरा मृत्युंजया विश्वेश्वरा

नीलकंठ भालनेत्र भस्मभूषित सुन्दरा,
पाहिमाम् करुणाकरा परमेश्वरा सर्वेश्वरा

नीलकंठ भालनेत्र भस्मभूषित सुन्दरा,
पाहिमाम् करुणाकरा परमेश्वरा सर्वेश्वरा

शंकरा चंद्रशेखरा गंगाधरा सुमनोहरा,
पाहिमाम् करुणाकरा परमेश्वरा सर्वेश्वरा

शंकरा चंद्रशेखरा गंगाधरा सुमनोहरा,
पाहिमाम् करुणाकरा परमेश्वरा सर्वेश्वरा

इन्द्राक्षी

अस्य श्री इंद्राक्षी स्तोत्रमन्त्रस्य, पुरंदर-ऋषिः, अनुष्टप्-छन्दः, इन्द्राक्षी देवता, ह्रीं बीजम्, श्रीं शक्तिः, क्लीं कीलकम्। सकलकामना-सिद्धयर्थे पाठे विनियोगः।

अथ-ध्यानम्

इन्द्राक्षीं द्विभुजां देवीं पीत-वस्त्राधरां शुभाम् वामे हस्ते वज्रधरां दक्षिणे चाभय-प्रदाम्।
सहस्त्र नेत्रां सूर्याभां नानालंकार-भूषिताम्, प्रसन्न वदनां नित्यम्-अप्सरो-गणसेविताम्।
श्री-दुर्गां सौम्य-वदनां पाशांकुशधरां परां, त्रौलोक्य-मोहिनीं देवीं भवानीं प्रणमाम्यहम।
ॐ ह्रीं श्रीं इन्द्राक्षीं श्रीं प्रीं स्वाहा।

इन्द्र-उवाच

इन्द्राक्षी नाम सा देवी देवतैः समुदाहृता, गौरी शाकंभरी देवी दुर्गा-नाम्नीति-विश्रुता।
कात्यायनी महादेवी चन्द्र-घण्टा-महातपः, गायत्री सा च सावित्री ब्रह्माणी ब्रह्मवादिनी।
नारायणी भद्रकाली रुद्राणी कृष्णपिंगला, अग्निज्वाला रौद्रमुखी कालरात्री-स्तपस्विनी।

मेघ-श्यामा सहस्राक्षी, विष्णुमाया जलोदरी, महोदरी मुक्त-केशी घोररूपा महाबला।
आनन्दा-भद्रजा नंदा रोगहंत्री शिवप्रिया, शिवदूती कराली च प्रत्यक्षा परमेश्वरी।
इन्द्राणी चन्द्ररूपा च इन्द्र-शक्ति-परायणा, महिषा-सुर-संहर्त्री चामुण्डा गर्भदवेता।
वाराही नारसिंही च भीमा भैरव नादिनी, श्रुतिः स्मृति-धृति-मेधा विद्या लक्ष्मीः सरस्वती।
आनंदा विजया पूर्णा मानस्तोकाऽ पराजिता, भवानी पार्वती दुर्गा हैमवत्यंबिका शिवा।
शिवा भवानी रुद्राणी शंकरार्ध-शरीरिणी, एतै-नीम-पदै-र्दिव्यैः स्तुता शक्रेण धीमता।
आयुर्-आरोग्यम्-ऐश्वर्यं सुख-संपत्तिकारकम्, क्षय-पस्मार कुष्ठादि-ताप - ज्वर - निवारणम्।

आरती

ॐ जय जगदीश हरे, स्वामी जय जगदीश हरे।
भक्तजनों के संकट क्षण में दूर करे, ओ३म् जय जगदीश हरे।।
जो ध्यावे फल पावे दुःखविनशे मन का, स्वामी दुःखविनशे मन का।
सुख सम्पत्ति घर आवे कष्ट मिटे तन का, ओ३म् जय जगदीश हरे।।

मात-पिता तुम मेरे शरण पड़ूँ में किसकी, स्वामी शरण पड़ूँ में किसकी।
तुम बिन और ना दूजा आस करूँ में जिसकी, ओ३म् जय जगदीश हरे।।

तुम-पूरण-परमात्म तुम अन्तर्यामी, स्वामी तुम अन्तर्यामी।
पारब्रह्म परमेश्वर तुम सबके स्वामी, ओ३म् जय जगदीश हरे।।

तुम-करुणा के सागर तुम पालन कर्त्ता, स्वामी तुम पालन कर्त्ता।
मैं सेवक तुम स्वामी कृपा करो भर्त्ता, ओ३म् जय जगदीश हरे।।

तुम हो एक अगोचर सबके प्राणपति, स्वामी तुम सबके प्राणपति।
किस विधि मिलों दयामय तुमको मैं कुमति, ओ३म् जय जगदीश हरे।।

दीन बन्धु दुःख हर्ता रक्षक तुम मेरे, स्वामी रक्षक तुम मेरे।
अपने चरण लगावो द्वार पड़ा में तेरे, ओ३म् जय जगदीश हरे।।

विषय विकार मिटाओ पाप हरो देवा, स्वामी पाप हरो देवा।
श्रद्धा भक्ति बढ़ाओ सन्तन की सेवा, ओ३म् जय जगदीश हरे।।

प्रातः स्मरणीय स्तोत्र

एक-श्लोकी-नवग्रहस्तोत्रम्

ब्रह्मा-मुरारिः-त्रिपुरान्त-कारी,
भानुः शशी भूमिसुतो बुधश्च,
गुरुश्च शुक्रः शनि-राहु केतवः
कुर्वन्तु सर्वे मम सुप्रभातम्।।

एक श्लोकी रामायण

आदौ राम-तपोवनादि-गमनं, हत्वा मृगं कांचनं
वैदेही-हरणं जटायु-मरणं सुग्रीव सम्भाषणम्।
बाली निर्दलनं समुद्र तरणं लंकापुरी-दाहनं
पश्चात् रावण कुम्भकर्ण-हननं चैतत्-हि-रामायणम्।

अर्थः पहले राम का वनवास, सुवर्णमृग का मारना, रावण द्वारा सीता का हरण, जटायु का मरण, सुग्रीव के साथ प्रेम का वार्तालाप, बाली का मारना, समुद्र का लंघन, लंकापुरी का जलाना, अन्त में रावण कुम्भकर्ण का हनन।

एकश्लोकी भागवत्

आदौ देवकि-देवगर्भ जननं गोपीगृहे-वर्धनम्
माया-पूतनि-जीवितापहरणं गोवर्द्धनो-द्धारणम्
कंस-च्छेदन कौरवादि-हननं कुन्ती सुता-पालनम्।
एतत्-भागवतं पुराण कथितं श्रीकृष्ण-लीलामृतम्।

अर्थः- पहले देवकी के गर्भ से भगवान् का जन्म, गोकुल में बाल कृष्ण का पालन पोषण, पूतना का मारना, गोवर्द्धन का उद्धार, कंस का मारना, कौरवों की विजय - यही है संक्षिप्त में भागवत् की कथा।

सप्तर्षि - स्मरणम्

कश्यपो-अत्रिः-भरद्वाजः, विश्वामित्रोऽथ गौतमः
जमदग्नि-र्वसिष्ठश्च सप्त-ते ऋषयः स्मृताः।

सप्तचिर-जीवि स्तुतिः

अश्वत्थामा बलि व्यासः, हनुमान् च विभीषणः
कृपः परशुरामश्च, सप्त-ते चिरजीविनः

पंचदेवी स्तुतिः

उमा उषा च वैदेही, रमा गंगेति पंचकम्
प्रातर्-एव स्मरेत्-नित्यं घोर-संकट-नाशनम्।।

पंचकन्या स्तुतिः

अहल्या द्रौपदी तारा, कुन्ती मन्दोदरी तथा
पंचकन्या स्मरेत्-नित्यं महापातक-नाशनम्।

सप्तपुरी स्तुतिः

अयोध्या मथुरा माया काशी कांची ह्यवन्तिकाः।
पुरी द्वारवती चैव सप्तता मोक्षदायिकाः।।

हकारादि-पञ्चदेव स्तुतिः

हरं हरिं हरिश्चन्द्रं हनुमन्तं हलायुध्म
पंचकं हं स्मरेत्-नित्यं घोर-संकटनाशनम्

प्रातर्वन्दनीय स्तुतिः

प्रातः काले पिता-माता, ज्येष्ठा-भ्राता तथैवच
आचार्याः स्थाविराः चैव, वन्दनीया दिने दिने।

अर्थः- पिता, माता, ज्येष्ठ भाई, आचार्य तथा सभी वृद्ध। इन को प्रातःकाल प्रणाम करना चाहिए।

मातृतीर्थम्

नास्ति मातृसमं तीर्थं पुत्राणां तारणाय च
हितायात्र परत्रार्थं यैस्तु माता प्रपूजिता।

अर्थः- माता के समान कोई तीर्थ नहीं है-जो पुत्र माता का आदर करता है उस के इहलोक तथा परलोक का सुधार होता है।

पितृ तीर्थम्

वेदैर्-अपि च किं पुत्र ! पिता येन प्रपूजितः
एष पुत्रस्य वै धर्म-स्तथा तीर्थं नरेष्विह।।

अर्थः- हे पुत्र जो पिता का आदर करता है, उस को वेद पढ़ने की आवश्यकता नहीं, पिता ही पुत्र का धर्म है, पिता ही पुत्र का तीर्थ हैं।

मृतसंजीवनी मंत्र

इस मन्त्र से शिलिंग पर दूध सहित जल चढ़ाने से रोगी को शीघ्र आराम मिलता है।

ॐ हौं जूं सः, ॐ भूभुर्वः स्वः, ॐ त्र्यम्बकं यजामहे, ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं, ॐसुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्, ॐ भर्गो देवस्य धीमहि, ॐ उर्वारुकमिव बन्धनाद्, ॐ धियो यो नः प्रचोदयात्, ॐ मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्, ॐ स्वः भुवः भूः ॐ सः जूं हौ ॐ।

सूर्य उपासना

शास्त्रों में दर्ज है सूर्य की उपासना से आरोग्य की प्राप्ति होती है। अतः नहाने तथा मुख प्रक्षालन के पश्चात् सूर्य की ओर मुख करके प्रणाम करते हुये पढ़ें:-

ॐ मित्राय नमः। ॐ रवये नमः। ॐ सूर्याय नमः। ॐ भानवे नमः। ॐ खगाय नमः। ॐ पूष्णे नमः। ॐ हिरण्यगर्भाय नमः। ॐ मरीचये-नमः। ॐ आदित्याय नमः। ॐ सवित्रे नमः। ॐ अर्काय नमः। ॐ भास्कराय नमः। ॐ मित्र-रवि-सूर्य-भानु-खग-पुष्प-हिरण्यगर्भ-मरीच्यादित्य सवित्रार्क-भास्करेभ्यो नमः।

असाध्य रोग निवृत्ति मंत्र

रोगान्-अशेषान्-अपहंसि-तृष्टा
रुष्टा तु कामन्-सकलान्-अभीष्टान्।
त्वाम्-आश्रितानां न विपत्-नराणाम्
त्वाम्-आश्रिता ह्यश्रियतां प्रयान्ति।।

दुर्गा सप्तशती का सारभूत मंत्र

जिस घर में इस मंत्र की गूंज होगी उस घर में लक्ष्मी, सतबुद्धि श्रद्धा, लज्जा, हर समय विद्यमान रहती है।

या श्रीः स्वयं सुकृतिनां भवनेष्वलक्ष्मीः
पापात्मनां कृतधियां हृदयेषु बुद्धिः,
श्रद्धा सतां कुलजन-प्रभवस्य लज्जा,
तां त्वां नताःस्म परिपालय देवि! विश्वम्।

नवग्रहों के छोटे तथा आसान मन्त्र

"सूर्य" ओ३म् रं रवये नमः।
"चन्द्र" ओ३म् सौं सोमाय नमः।

"भौम" ओ३म् भौं भौमाय नमः।
"बुध" ओ३म् बं बुधाय नमः।
"गुरु" ओ३म् गुं गुरवे नमः।
"शुक्र" ओ३म् शुं शुक्राय नमः।
"शनि" ओ३म् शं शनैश्चराय नमः।
"राहु" ओ३म् राम् राहवे नमः।
"केतु" ओ३म् कैं केतवे नमः।

बारह राशियों के मन्त्र

मेषः- ओ३म् ह्रीं श्रीं श्रीलक्ष्मीनारायाणाय नमः।
वृषः- ओ३म् गोपालाय उत्तरध्वजाय नमः।
मिथुनः- ओ३म् क्लीं कृष्णाय नमः।
कर्कः- ओ३म् ह्रीं हिरण्यगर्भाय अव्यक्तरूपिणे नमः।
सिंहः- ओ३म क्लीं ब्रह्मणे जगदाधाराय नमः।
कन्याः- ओ३म् पीं पीताम्बराय नमः।
तुलाः- ओ३म् तत्त्वनिरंजनाय तारक रामाय नमः।
वृश्चिकः- ओ३म नारायणाय सूरसिंहाय नमः।
धनुः- ओ३म् श्रीं देवकृष्णाय ऊर्ध्वजाय नमः।
मकरः- ओ३म् श्रीं-वत्सलाय नमः।
कुम्भः- ओ३म् श्रीं उपेन्द्राय अच्युताय नमः।
मीनः- ओ३म् क्लीं उद्धृताय उद्धारिणे नमः।

हर प्रकार के मंगल प्राप्ति का मन्त्र

सर्व मंगल मंगल्ये, शिवे सर्वार्थ साधिके,
शरण्ये त्रयम्बके, गौरि नारायणि नमोस्तुते।

विपित्ति नाश का मंत्र

शरणागत दीनार्त-परित्राण परायणे,
सर्वस्यार्ति हरे देवि नारायणि नमोस्तुते।

सभी उलझनों से छुटकारा पाने का मंत्र

सर्वाबाधा-विर्निमुक्तो-धन धान्य-समन्विताः
मनुष्यो मत्प्रसादेन, भविष्यति-न संशयः।

भय नाश का मन्त्र

सर्वस्वरुपे-सर्वेशे सर्वशक्ति-समन्विते
भयेभ्यः त्राहि नो देवि ! दुर्गे देवि नमोस्तुते।

आरोग्य तथा सौभाग्य मंत्र

देहि सौभाग्यम् आरोग्यं देहि मे परमं सुखम्,
रूपं देहि जयं-देहि यशो देहि द्विषो जहि।

विद्या प्राप्ति का मन्त्र

कृष्ण कृष्ण महाकृष्ण सर्वज्ञ त्वं प्रसीद मे,
रमा-रमण विश्वेश, विद्याम्-आशु प्रयच्छ मे।।

हर प्रकार के उलझनों से मुक्त होने के लिए शीघ्र सिद्धि देने वाला शिव मंत्रः-

भगवान् शंकर के डमरु से प्राप्त 14 सूत्रों का एक ही श्वास में बोलने का अभ्यास करें-शरीर को स्वस्थ रखने के लिए इस मन्त्र का उच्चारण किया जाता है, बुखार मृगी आदि बेहोशी के रोग के समय इस मन्त्र का उच्चारण करते हुये छींटे दिये जाने से रोग की निवृति होती हैः-

मन्त्रः- अ इ उण्। ऋ लृक्। ए ओङ। ऐ औच्। ह य व र ट्। लण्। ञ, म, ङ ण नम्। झ भ ङ् घ ड ध श। ज ब ग ड् - द श। ख फ छठ थ - च ट, तव्। क, प, य्। शष सर्। हल्।

संतान प्राप्ति का मंत्र

देवकी सुत गोविन्द ! वासुदेव जगत्पते
देहि से तनयं कृष्ण। त्वाम् - अहं शरणं गतः।

सामूहिक कल्याण मंत्र

देव्या यया ततमिदं जगदात्म शक्त्या,
निश्शेष देव गण शक्तिसमूह मूर्त्या।
तामम्बिकाम खिलदेव महर्षि पूज्यां,
भक्त्या नताः स्म विदधातु शुभानि सा नः।।

शुभ फल की प्राप्ति का मंत्र

करोतु सा नः शुभहेतुरीश्वरी।
शुभानि भद्राण्यभिहन्तु चापदः।।

पाप नाश का मंत्र

हिनस्ति दैत्यतेजांसि स्वनेनापूर्य या जगत्।
सा घण्टा पातु नो देवि पापेभ्योऽनः सुतानिव।।

महामारी नाश का मंत्र

जयन्ती मङ्गला काली भद्रकाली कपालिनी।
दुर्गा क्षमा शिवा धात्री स्वाहा स्वधा नमोऽस्तु ते।।

दारिद्र्यदुःखादिनाश का मंत्र

दुर्गे स्मृता हरसि भीतिम् शेषजन्तोः
स्वस्थैः स्मृता मतिम् अतीव शुभां ददासि।
दारिद्र्यदुःखभयहारिणि का त्वदन्या
सर्वोपकार करणाय सदाऽऽर्द्रचित्ता।।

रक्षा पाने का मंत्र

शूलेन पाहि नो देवि पाहि खड्गेन चाम्बिके।
घण्टास्वनेन नः पाहि चापज्यानिःस्वनेन च।।

प्रसन्नता प्राप्ति का मंत्र

प्रणातानां प्रसीद त्वं देवि विश्वोर्तिहारिणि।
त्रैलोक्य वासिनाम् ईड्ये लोकानां वरदा भव।।

पापनाश तथा भक्ति प्राप्ति का मंत्र

नतेभ्यः सर्वदा भक्त्या चण्डिके दुरितापहे।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि।।

मोक्ष प्राप्ति का मंत्र

त्वं वैष्णवी शक्तिर् अनन्तवीर्या
विश्वस्य बीजं परमासि माया।
सम्मोहित देवि समस्तमेतत्
त्वं वै प्रसन्ना भुवि मुक्तिहेतुः।।

अन्नपूर्णा स्तुतिः

ज्योहि अन्न की थाली आप के सामने आये। तो इस श्लोक का उच्चारण करना चाहिये।

अन्नपूर्णे सदापूर्णे शंकर प्राण वल्लभे।
ज्ञान वैराग्य सिद्ध्यर्थं भिक्षां देहि च पार्वति।।

अर्थः- जो सदा पूर्ण शंकर की प्राण प्रिया पार्वती है वह अन्न पूर्णा है उससे मैं ज्ञान वैरागय और शुभ कामनाओं के सिद्धि के लिंये अन्नरूपी भिक्षा मांगता हूँ।

पुरुष-सूक्तम्

पुरुषमेधाः पुरुषस्य नारायणस्यार्षम्।
ॐ सहस्रशीर्षा, पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात्।
सभूमिं विश्वतो वृत्वा त्यतिष्ठत् दशाङ्गुलम्।।
पुरुष एवेदं सर्वं यत् भूतं चत् च भव्यम्।
उत्तामृत त्वस्ये शानो, यत् अन्नेनाति रोहति।।
एतावानस्य महिमातो ज्यायान-च, पुरुषः।
पादोस्य, विश्वा भूतानि त्रिपाद् अस्या मृतं दिबि।।
त्रिपात् ऊर्ध्वं उदैत्पुरुषः पादोऽस्येहा भवत् पुनः।
ततो विश्वं व्याक्रामत् साशना नशने अभि।।
तस्मात् विराड् अजायत विराजो अधिपुरुषः।
स जातो अत्यरिच्यत, पश्चात् भूमिम्-अथो पुरः।।
यत् पुरुषेण हबिषा देवा यज्ञम्-अतन्वत।
वसन्तो अस्यासीत्-आज्यं ग्रीष्म इध्मः शरत् हविः।।
तं यज्ञं बर्हिषि प्रोक्षन् पुरुषं जातम्-अग्रतः।
तेन देवा अयजन्त साध्या ऋषयश्च ये।।
तस्मात् यज्ञात् सर्वहुतः सम्भृतं पृषत् आज्यम्।
पशून् तान् चक्रे वायव्यान् आरण्यान् ग्राम्यांश्चये।।
तस्मात् यज्ञात् सर्वहुतः ऋचः सामानि जज्ञिरे।
छन्दांसि जज्ञिरे तस्मात् यजु तस्मात् अजायत।।
तस्मात्-अश्वा-अजायन्त ये के चोभयादतः।
गावो ह जज्ञिरे तस्मात् तस्मात् जाता अजावयः।।
यत् पुरुषं व्यदधुः कतिधा व्यकल्पयन्।
मुखं किमस्य कौ बाहू का उरू पादा उच्यते।।
ब्रह्माणोस्य मुखं-आसीत्-बाहू राजन्यः कृतः।

ऊरू तदस्य यत् वैश्यः पद्भ्यां शूद्रो अजायत।।
चन्द्रमः मनसो जातश्चक्षोः सूर्यो अजायत।
मुखात् इन्द्रश्चाग्निश्च प्राणात् वायुः अजायत।।
नाभ्या आसीत् अन्तरिक्षं शीर्ष्णो द्यौः समवर्तत।
पद्भ्यां भूमि र्दिशः श्रोत्रात् तथा लोकान्-अकल्पयन्।।
सप्तास्या सन् परिधयः त्रिः सप्त समिधः कृताः।
देवा यत् यज्ञं तन्वाना आबध्नन् पुरुषं पशुम्।।
यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमा न्यासन् ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्या सन्ति देवाः।।

सूर्याष्टकम्

आदिदेव नमस्तुभ्यं प्रसीद मम भास्कर।
दिवाकर नमस्तुभ्यं प्रभाकर नमोऽस्तु ते।।

सप्ताश्वरथमारूढं प्रचण्डं कश्यपात्मजम्।
श्वेतपद्मधरं देवं तं सूर्यं प्रणमाम्यहम्।।

लोहितं रथमारूढं सर्वलोकपितामहम्।
महापापहरं देवं तं सूर्यं प्रणमाम्यहम्।।

त्रैगुण्यं च महाशूरं ब्रह्मविष्णुमहेश्वरम्।
महापापहरं देवं तं सूर्यं प्रणमाम्यहम्।।

बृंहितं तेजःपुञ्जं च वायुमाकाशमेव च।
प्रभुं च सर्वलोकानां तं सूर्यं प्रणमाम्यहम्।।

बन्धूकपुष्पसङ्काशं हारकुण्डलभूषितम्।
एकचक्रधरं देवं तं सूर्यं प्रणमाम्यहम्।।

तं सूर्यं जगत्कर्तारं महातेजःप्रदीपनम्।
महापापहरं देवं तं सूर्यं प्रणमाम्यहम्।

संस्कृत पढ़ें

शांतिपाठ

भद्रंकर्णेभिः शृणुयाम देवाः, भद्रं पंश्येमाक्षिभिर्यजत्राः। स्थिरैरंगैः तष्टुवांसस्तनूभि र्व्यशेम देवहित यदायुः, स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः
स्वस्तिनः ताक्ष्यों अरिष्टनेमीः स्वस्ति नो बृहस्पतिः दधातु।।1।।

स्वस्तिप्रजाभ्यः परिपालयन्तां, न्यायेन मार्गेण महीं महीपाः।
गोब्राह्मणेभ्यः शुभमस्तु नित्यं, लोकाः समस्तः सुखिनो भवन्तु।।2।।

काले वर्षतु पर्जन्यः पृथिवी सस्यशालिनी। देशोयं क्षोभरहितो ब्राह्मणाः सन्तु निर्भयाः ।।3।।

दुर्जनः सज्जनो भूयात् सज्जनः शान्तिम् आप्नुयात्। शान्तिम् उच्येत बन्धेभ्यो मुक्तश्चान्यान् विमोचयेत्।।4।।

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः, सर्वे भद्राणि पश्यन्तु, मा कश्चिद् दुःखभाग्भवेत्।।5।।

राजस्वस्ति प्रजास्वस्ति देशस्वस्ति तथैव च। यजमान गृहे स्वस्ति, स्वस्ति गोब्राह्मणेषु च ।।6।।

विधेहि देवि कल्याणं विधेहि परमां श्रियं रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि।।7।।

शन्नो मित्रः, शं वरुणः, शन्नो भवत्वर्यमा, शन्नो इन्द्रो बृहस्पतिः, शन्नो विष्णुरुरुक्रमः, नमो ब्रह्मणे, नमो वायवे, नमस्ते वायो, त्वमेव प्रत्यक्षं ब्रह्मासि, त्वामेव प्रत्यक्षं ब्रह्म वदिष्यामि, ऋतं वदिष्यामि, सत्यं वदिष्यामि, तन्मामवतु, तद्वक्तारमवतु, अवतु मामवतु वक्तारं, शान्तिः शान्तिः शान्तिः।।8।।

सह नौ अवतु, सह नौ भुनक्तु, सहवीर्य करवावहै,
तेजस्विनाम् अधीतमस्तु माद्विषावहै शान्तिः शान्तिः शान्तिः।।9।।

गायत्री मन्त्र का महत्व

गायत्री की महिमा सभी वेदों तथा पुराणशास्त्रों में सविस्तार दर्ज है—अथर्व-वेद में स्वयं वेद्भगवान का कहना है-
"स्तुता मया वरदा वेदमाता प्रचोदयन्तां पावमानी द्विजानाम्, आयुः प्राणं प्रजां पशुं कीर्तिं द्रविणं ब्रह्मवर्चसम्"।

अर्थः— मेरे द्वारा स्तुति की गई द्विजों को पवित्र करने वाली वेदमाता गायत्री आयु प्राण सन्तति पशु कीर्ति धन ब्रह्मतेज देने वाली है।

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्-सवितुर् वरेण्यं, भर्गो-देवस्य धीमहि, धियो यो-नः प्रचोदयात्।

अर्थः— मैं उस शक्ति का चिन्तन करता हूँ जो शक्ति ॐ ब्रह्मरूप हैं, भूर्भुवः स्वः जो शक्ति तीनों लोकों में व्याप्त है, तत्-जिस को वेदों ने तत् नाम से पुकारा है सविता-जो शक्ति इस सृष्टि को बनाती है, पालन करती है, नाश करती है, "वरेण्यम्" जो वरण करने के योग्य है, भर्गः- जो तेजो रूप है, देवः जो द्योतनशील है, अथवा ऐश्वर्य वाली है, ऐसी उस महान् शक्ति का धीमहि-चिन्तन करता हूँ, वह शक्ति 'धियः' मेरी बुद्धि को, प्रचोदयात्- सत् कर्मों में प्रेरित करे।

गायत्री मन्त्र का महत्व क्यों? *शब्द नित्य है (शब्द ब्रह्म) वर्तमान विज्ञान भी यही मानता है, आज जो बातें हम करते हैं, अथवा हमारे मन की लहरें आकाश में अथवा सृष्टि के अन्तराल में किसी न किसी रूप में विद्यमान रहती है, सृष्टि के आरम्भ से ही ऋषि मुनि साधक गायत्री मन्त्र के अनुष्ठान करते आये हैं, उन ऋषियों मुनियों साधकों की साधनायें भावनायें तपश्चर्यायें इस छोटे से गायत्री मन्त्र के पीछे तेजोपुंज के रूप में एकत्रित है, जो व्यक्ति इस गायत्री मन्त्र का उच्चारण अथवा जप करता है उस साधक की सफलता में वह तेजोपुंज*

अवश्य सहायक बनता है, साधक ज्यों ही इस मन्त्रराज का जप अथवा उच्चारण करने लगता है तो उसी क्षण मंत्र के प्रभाव का अनुभव करने लगता है, यही है इस गायत्री मन्त्र के महत्व का रहस्य।

गायत्री जप विधिः

शुद्ध आसन पर पद्मासन में पूर्व की ओर मुख कर के पानी का एक लौटा और एक थाली तर्पण के लिये रख कर नमस्कार करते हुए पढ़े (यदि नदी के तट पर करना हो तो थाली की आवश्यकता नहीं):-

प्रणवस्य ऋषि ब्रह्मा गायत्रं छन्द एवच, देवोग्नि-व्याहृतिषु च विनियोगः प्रकीर्तितः, प्रजापते-व्याहृतयः पूर्वस्य परमेष्ठिनः। व्यस्ताश्चैव समस्ताश्च ब्राह्मम्-अक्षरम्- ओम्-इति। व्याहृतीनां समस्तानां दैवतं तु प्रजापतिः, व्यस्तानाम्-अयम्-अग्निश्च वायुः सूर्यश्च-देवताः। छन्दश्च व्यहृतीनाम्-एकाक्षराणाम्-उक्ताख्यम्-द्वयक्षराणाम्- अत्युक्-ताख्यम् विश्वामित्रा-ऋषि-श्छन्दो, गायत्रं सविता तथा, देवतो-पनये जप्ये गायत्र्यै योग उच्यते आवाहयामि गायत्रीं, सर्व-पाप-प्रणाशि-नीम्। न गायत्र्याः परं जप्यं, नव्याहृति-समं हुतम्, आगच्छ वरदे देवि, जप्ये मे सन्निधौ भव। गायन्तं त्रायसे यस्मात्-गायत्री त्वं ततःस्मृता, अग्नि- र्वायुश्च सूर्यश्च बृहस्पत्याप-एव-च, इन्द्रश्च-विश्वे-देवाश्च देवताः सम्-उदाहृताः। एवम्-आर्ष-छन्दो दैवतं विनियोगं चानुस्मृत्य। गायत्र्या शिखाम्-अवद्ध्य गायत्र्यैव समन्ततः, आत्मन-श्चापः वरिक्षिप्य, प्राणायामं कुर्यात्, ओजोसीति गायत्रीम्-आवह्य देवानाम्-आर्षम् (अपने आप को पानी छिड़कें अंजलि धारण करते हुये पढ़े:- ओजोसी सहोसि बलम्-असि भ्राजोसि देवानां धाम

नामासि, विश्वम्-असि-विश्वायुः सर्वम्-असि-सर्वायुः, अभि-भूः-अंगन्यास-कीजिये दोनों हाथों की ऊँगलियों से स्पर्श करते हुये पढ़ें: "अ" नाभौ (नाभिको) "उ" हृदि (हृदय को) "म" शिरसि (सिरको)।। ॐ "भू"-अंगुष्ठाभ्यां नमः (दोनों अंगूठों को) भुवः तर्जनीभ्यां नमः (अंगूठे के साथ वाली ऊँगलियों को), "स्वः" मध्यमाभ्यां नमः (बीच वाली ऊँगलियों को) "महः" अनामिकाभ्यां नमः, (सब से छोटी की साथ वाली ऊँगलियों को "जनः" कनिष्ठकाभ्यां नमः (छोटी ऊँगलियों को "तपः सत्य" करतल पृष्ठाभ्यां नमः (दोनों हाथ के तलवों को आपस में स्पर्श करें। "भू" पादयोः (पावों को) "भुवः" जान्वोः (गुठनों को) "स्वः" गुह्ये (गुह्यस्थान को) "महः नाभौ" (नाभि को) "जनः" हृदि (हृदय को) "तपः" कण्ठे (गले को) "सत्यं" शिरसि (सिर को), ॐ "भूः" हृदयाय नमः "भुवः" शिरसि स्वाहा, "स्वः" शिखायै वौषट् (चोटी को) महः कवचाय हूँ, (वस्त्रों को) जनः नेत्राभ्यां वौषट् (नेत्रों को) "तपः" सत्यम्-अस्त्राय "फट्" चुटकी मारे।। "तत्-सवितुर्" अंगुष्ठाभ्यां नमः, "वरेण्यं" तर्जनीभ्यां नमः, "भर्गो-देवस्य मध्यमाभ्यां नमः", "धीमहि" अनामिकाभ्यां नमः, "धियो योनः" कनिष्ठकाभ्यां नमः, "प्रचोदयात्" करतल करपृष्ठाभ्यां नमः तत् "पादयोः सवितुर्" जान्वोः (गुठनों को) "वरेण्यं" कट्यां कमर को, भर्गो नाभौ "देवस्य" हृदये "धीमहि" कण्ठे "धियोः" नासिकायां "यो" चक्षुषोः (नेत्रों को) "नः ललाटे" (माथे को) "प्रचोदयात्" शिरसि,। "तत् सवितुर्" हृदयाय नमः, "वरेण्यं" शिर-से स्वाहा, "भर्गो देवः" शिखायै वौषट् 'धीमहि' कवचाय हूँ (वस्त्रों को "धियो योनः "नेत्राभ्यां वौषट् "प्रचोदयात् अस्त्राय फट्" (चुटकी मारिये) "आपः" स्तनयोः (स्तनों को) "ज्योतिः" नेत्रयोः,

"रसो" मुखे "अमृतं" ललाटे "ब्रह्म-भूभूर्वः स्वरों (शिसि) प्राणायाम करके तर्पण कीजिये:-
"ॐ अस्य गायत्री शापविमोचन-मन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषि गायत्री छन्दः वरुणो देवता ब्रह्मशाप-विमोचने विनियोगः।

शाप विमोचन

ओ३म्-यत्-ब्रह्मेति ब्रह्मविदो विदुः-त्वां पश्यन्ति धीराः।
सुमनसो-वा गायत्री त्वं ब्रह्मशापात्-विमुक्ता भव ।।1।।
ओ३म्-अर्क-ज्योतिर् अहं ब्रह्मा ब्रह्म ज्योतिर्-अहं शिवः।
शिव-ज्योतिर्:अहं विष्णुः शिव-ज्योतिः शिवः परम् ।।2।।
गायत्री त्वं वशिष्ठ शापात्-विमुक्ता भव।
ॐ अहो देवि महादेवि दिव्ये सन्ध्ये सरस्वति।
अजरे अमरे चैव ब्रह्मयोनि नमोस्तुते।
गायत्री त्वं विश्वामित्रा-शपात्-विमुक्ता भव ।।3।।

गायत्री का ध्यान करते हुये पढ़े:-

मुक्ता-विद्रुम-हेम-नील-धवल, छाये-र्मूखैः-त्रीक्षणैः

युक्ताम्-इन्दु-निबद्ध-रत्न-मुकटां, तत्त्वात्म-वर्णत्मिकाम्
गायत्रीं वरदा-भया-ङ्कुश-करां शूलं कपालं गुणं
शंखं चक्रम्-अथार-बिन्दु-युगलं हस्तै-र्वहन्तीं भजे ।।1।।
आगच्छ वरदे देवि त्र्यक्षरे ब्रह्मवादिनि।
गायत्री छन्दसां-मात-र्ब्रह्म-योने नमोस्तुते ।।2।।

यह मन्त्र तीन बार पढ़ कर गायत्री मन्त्र का जप करें।

"ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्-वरेण्यं भर्गोदेवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् ॐ

यदि माला से जप करना है तो जप समाप्त करके माला सिर पर रख कर प्राणायाम करके तर्पण करते हुये पढ़ेः-

देवा-गातु-श्रोत्रियाः देवा गातुविदो, गातुं वित्वा-गातु-मित मनसस्-पत-इमं देवयज्ञं स्वाहा, वाचे स्वाहा वातेघाः नमोः धर्मनिधनाय नमः सुकृत-साक्षिणे। नमः प्रत्यक्षदेवाय भास्कराय नमो नमः।

जप करने का स्थानः घर के उस कमरे में जप करें जहां आप की एकाग्रता में किसी प्रकार का विघ्न न पड़े, नदी के तट करना अधिक लाभदायक रहता है।

क्या महिलाओं को गायत्री साधना जप अनुष्ठान आदि करने का अधिकार हैं?

वेदों शास्त्रों पुराणों के स्वाध्याय से यह स्पष्ट होता है कि पुरुष हो या स्त्री उपासना के अधिकारी हैं, प्राचीनकाल में गार्गी, मैत्रोयी देवयानी, लोपामुद्रा आदि महिलाओं ने गायत्री शक्ति की उपासना से ही आत्मा को समुन्नत बनाया था सावित्री ने एक वर्ष तक गायत्री मंत्रा की साधना की थी जिस साधना से ही वह अपने पति को

यमराज से लौटा सकी। स्त्री और पुरुष दोनों ही गायत्री माता की सन्तान है, स्त्री सधवा हो या विधवा अपने जीवन को सफल बनाने के लिये गायत्री मन्त्र का जप किया करें।

कन्याओं को भी यज्ञोपवीत संस्कार का अधिकार है (धर्मशास्त्र)

शास्त्रों में दरज है कि वैदिक संस्कृति में कन्याओं को यज्ञोपवीत ग्रहण करने का वैसी ही अधिकार है जैसा बालकों को, वैदिक काल में स्त्रियां वेद-शास्त्र पढ़ा करती थी। गोभिलीय गृह्य सूत्र में लिखा हैः-

प्रावृतां यज्ञोपवीतिनीम अभ्युदानयन् जपेत् सोमोऽददत् गन्धर्वाय इति

अर्थातः- कन्या को कपड़ा पहने हुये, यज्ञोपवीत धारण किये हुये पति के निकट लाये तथा यह मन्त्र पढें। इस मन्त्र से स्पष्ट है कि कन्या यज्ञोपवीत किये हुये हो। यह श्लोक भी इसकी पुष्टि करता है।

पुराकल्पे हि नारीणां मौञ्जीबन्धन मिष्यते। अध्यापनं च वेदानां सावित्री वाचनं तथा।।

अर्थातः- प्राचीन काल में स्त्रियों का मौञ्जीबन्धन-संस्कार होता था, वे वेदादि शास्त्रों का अध्ययन भी करती थी। हारीत संहिता तथा पराशर संहिता में कहा है।

"द्विविधा स्त्रियां ब्रह्मावादिन्यः, सद्योवध्वश्च। तत्र ब्रह्मवादिनीनाम् उपनयनम्, अग्निबन्धनम्, वेदाध्ययनम् स्व-गृहे भिक्षा इति, वधूनाम तु उपस्थिते विवाह कथंचित उपनयनं कृत्वा विवाहः कार्यः"।

अर्थात्ः- दो प्रकार की स्त्रियां होती हैं एक 'ब्रह्मवादिनी' जिन का उपनयन होता है, जो अग्निहोत्र करती है, वेदाध्ययन करती है अपने परिवार में ही भिक्षावृति से रहती है और दूसरी वे जिन का उपनयन संस्कार करके विवाह होता है। इसकी पुष्टी 'निर्णय सिन्धुकार' ने भी अपने पुस्तक के पृष्ट 414 पर की है।

वेद मन्त्रों के अर्थों को स्पष्ट करने वालों को 'ऋषि' कहा जाता है "ऋषयो मन्त्र द्रष्टारः' कई वेद मन्त्रों के अर्थ खोलने वाली 'ऋषिकार्ये' भी हुई है ऋग्वेद में इस प्रकार की लगभग 30 ऋषिकाओं के नाम आते हैं जैसे गार्गी, मैत्रेयी, मदालसा, अनुसूय्या, देवयानी, अहिल्या, कुन्ती, द्रोपदी इत्यादि गायत्री की उपासक रही है।
इसके अतिरिक्त मनु महाराज प्रत्येक धर्म कार्य में स्त्री-पुरुष का समान अधिकार मानते है। मनु ने घर में अग्निहोत्र आदि धर्मकार्यों के आयोजन की मुख्य जिम्मेदारी स्त्री को ही सौंपी है और यह आदेश दिया है कि पुरुष को प्रत्येक धर्म कार्य स्त्री को साथ लेकर करना चाहिये जैसे "शोचे धर्म अन्नपक्त्यां" अर्थात् घर की शुद्धि, धर्मकार्यों का आयोजन और भोजन बनाना आदि स्त्री को सौंपा है मनु ने संस्कारों को सभी के लिये समान रूप दिया है वहां पर स्त्री-पुरुष का कोई भेद नहीं है सभी संस्कार मन्त्रपूर्ववती करने चाहिये वह स्त्री का हो या पुरुष का संस्कार ब्रह्मण वर्ग के लिये ज़रूरी है चाहे वह स्त्री हो अथवा पुरुष।
काश्मीरी पण्डित लौगाक्ष के 24 संस्कारों को ही मानते हैं हम लड़की के केवल 9 संस्कार करते है। और लड़के के 24 संस्कार। मनु स्मृति में लिखा है 'जन्मना जायते शूद्रः संस्कारात् द्विज उच्चते' अर्थात् संस्कार करने पर ही हम अपने आप को ब्रह्मण कहला सकते हैं। शास्त्रों में लिखा है कि लड़की माता-पिता का क्रिया कर्म कर सकती है तथा लड़की अपने माता-पिता का दाह संस्कार भी कर सकती है परन्तु धर्म शास्त्र में यह भी लिखा है कि यज्ञोपवीत के बिना हम कोई भी धार्मिक कार्य अथवा क्रिया कर्म नहीं कर सकते हैं। इससे स्पष्ट होता है कि वैदिक काल में कन्याओं का यज्ञोपवीत संस्कार होता था। यह बात भी है कि जब हम अपने लड़के का विवाह करते हैं तो लग्न के समय लड़के को छः धागों वाला यज्ञोपवीत पहनाते है और लड़के से कहता है कि पहले आप को तीन धागों वाला यज्ञोपवीत था अब छः धागों वाला यज्ञोपवीत है इसमें से तीन धागे आप को अपनी स्त्री के हैं अर्थात् आप को आज से अपनी स्त्री के धार्मिक कार्यों का चार्ज भी लेना है क्योंकि उसको गृहस्थ का पूरा कार्य है तथा बच्चों की देखभाल करनी है इस से स्पष्ट होता है कि लड़की को भी यज्ञोपवती धारण करने का अधिकार था परन्तु समय बीतने के साथ-साथ यह संस्कार केवल लड़कों तक ही सीमित रहा है जैसे कर्ण वेध का संस्कार पहले पहले दोनों

लड़कों तथा लड़कियों को करते थे परन्तु समय बीत जाने के साथ-साथ यह संस्कार केवल लड़कियों तक ही सीमित रहा। आप किसी वृद्ध माता जी से भी पूछें कि पहले पहल स्त्रियां भी लंगोट तथा आटींपन लगाती थी, आटीपन को मेखला कहते है जो कि यज्ञोपवती संस्कार पर ही कमर में बांधा जाता है इससे भी स्पष्ट होता है कि पहले पहल लड़कियों को भी यज्ञोपवीत संस्कार किया जाता था।

सम्पादकः

यज्ञोपवीत कब?

काश्मीरी पण्डित यज्ञोपवीत को विशेष महत्वपूर्ण स्थान देते आये हैं जबकि काश्मीरी पण्डितों का गायत्री मन्त्र सामूहिक गुरुमन्त्र है, यह संस्कार काश्मीरी पण्डितों की संस्कृति का अंग बन चुका है। धर्म शास्त्र की आज्ञा है यह संस्कार ब्राह्मण को 7वें वर्ष से 16 वर्ष तक करना चाहिये, प्राचीनकाल में यह संस्कार गुरुकुल में किया जाता था फिर तब से ब्रह्मचारी गुरुकुल में ही ठहरता था-चूँकि विद्यार्थी गुरुकुल में वेदों का पठन पाठन शास्त्र विद्या तथा शस्त्र विद्या यहां तक कि प्रत्येक प्रकार की विद्या को प्राप्त करता था तथा ब्रह्मचर्य का पालन 25 वर्ष तक करता था इसलिये उन विद्यार्थियों को ब्रह्मचारी कहते थे, जब ब्रह्मचारी गुरुकुल से विद्या सम्पूर्ण करके घर वापस आता था उसको समावर्तन कहते थे-गर्भ से लेकर यज्ञोपवती तक के 8 संस्कार बालक को घर में ही किये जाते थे। यज्ञोपवीत से लेकर 16 संस्कार काश्मीरी पण्डित ब्रह्मचारी को गुरुकुल में ही करते थे जो सभी संस्कार वेदों के पठन-पाठन से सम्बन्धित होते थे-"वेद" कहते हैं ज्ञान को, वह इंजीनरी हो या साईंस अथवा डाक्टरी आदि। समय बदलता है तो समय के साथ मनुष्य को भी बदनले पर विवश होना पड़ता है। अब हम यज्ञोपवीत संस्कार गुरुकुल के बदले घर में की करते हैं, केवल यज्ञोपवती ही नहीं बल्कि गर्भ से लेकर समावर्तन तक के सभी 24 संस्कार एक ही दिन में यज्ञोपवती के दिन ही करते हैं, मानिये अब यह संस्कार हम केवल अपनी प्राचीन संस्कृति को स्मारक रूप में जीवित रखने के लिये ही करते हैं।

आप के युग में गुरुकुलों का स्थान लिया है कॉलिजों और यूनिवर्सिटियों ने, वर्तमानकाल में जब तक एक विद्यार्थी वेदाभ्यास यानी ईंजीनरी, डाक्टरी व साईंस आदि कोई ट्रेनिंग कर रहा है वह विद्यार्थी तब तक ब्रह्मचारी ही कहलायेगा यदि दैवयोग से किसी कारण वश इस अवस्था तक विद्यार्थी का यज्ञोपवती न किया हो अवश्य कीजिये।

धर्मशास्त्र

धर्मिक रीति रिवाज संस्कृति के ही अंग माने ज़ाते हैं, परन्तु जब वे रीति रिवाज धर्मशास्त्र के आधार पर हों। कहीं-कहीं धर्मशास्त्रों में मतभेद पाया जाता है, ऐसी दशा में देशाचार की भी प्रामाण्यता होती है-इन बातों को ध्यान में रखकर ही धर्मशास्त्र की चन्द बातें समय-समय पर काम आने वाली निम्नलिखित हैं।

सगोत्रः- जिन का आपस में एक ही गोत्र हो सगोत्री कहलाते हैं- सगोत्रियों का आपस में विवाह करना निषेध हैं, मातृपक्ष से चार पीढी तक पितृपक्ष से पांच पीढी तक विवाह नहीं कर सकते हैं।

दत्तकः- (मंगत लाना) अपने खानदान से दत्तक लाना धर्मशास्त्र के अनुसार उत्तम माना जाता है, दूसरे वंश का भी दत्तक लाया जा सकता है, साला (पत्नी का भाई) दत्तक लाना धर्मशास्त्र से निषेध है।

मुण्डनः- माता अथवा पिता के मरने पर मुण्डन करना पुत्र के लिये आवश्यक है, यदि बड़ा लड़का घर में न हो अथवा किसी कारण से क्रिया कर्म दाह संस्कार आदि न कर सके तो कोई भी पुत्र कर सकता है।

क्रिया कर्म का अधिकारी पुत्र, दाह संस्कार पर घर में न होने पर बाहरवें दिन तक जिस दिन भी घर पहुँचे उस दिन से ही व्रतधारी रह कर क्रिया कर्म कर सकता है, परन्तु क्रिया कर्म आरम्भ करने से पहले मुण्डन करना आवश्यक है।

अशौचः- दो प्रकार का होता है, जन्म का अशौच जिसे सूतक कहते हैं और दूसरा मरने का अशौच, जिस

को मृतक कहते हैं, अशौच दस दिन तक रहता है, बिना विवाह के कन्या का पिता के घर में मृत्यु हो तो तीन दिन का अशौच होता है विवाहित लड़की को 10 दिन के अन्दर जिस दिन भी माता-पिता के मृत्यु का सन्देश मिले तो उस दिन से लड़की को तीन दिन का अशौच होता है।

दो अशौचः- एक साथ दो अशौच होने पर पहले अशौच के समाप्त होने पर ही दूसरे अशौच की भी शुद्धि होती है, उदाहरण के रूप में, किसी के पिता की मृत्यु होती है उस के दसवें दिन से पहले किसी दिन (पैतृव्य) चाचा की मृत्यु हो ऐसी दशा में जिस दिन पहला अशौच समाप्त होता है उसी दिन दूसरा अशौच भी समाप्त होता है, यदि जन्म के अशौच पर मरने का अशौच पड़े तो मरने का अशोच समाप्त होने पर ही शुद्धि होती है यदि दसवें दिन मरने के अशौच पर फिर से मरने का अशौच पड़े तो दूसरा अशौच समाप्त होने पर ही शुद्धि होती है, ऐसी स्थिति में दूसरा अशौच समाप्त होने पर दो दिन के लिये अधिक अशौच रहता है, यदि 11वें दिन मरने के अशौच पर फिर से मरने का अशौच पड़े तो अशौच समाप्त होने के बाद अधिक तीन दिन तक अशौच रहता है। सूतक का अशौच हो या मृतक का अशौच 11वां दिन करना आवश्यक है, 12वां दिन अशौच समाप्त होने के पश्चात् भी किया जाता है, षड्मासिक पर भी किया जा सकता है।

छलुनः- दसवें दिन तक छलुन आवश्यक है, यदि लड़की दसवें दिन तक छलुन का कार्य न करे तो उस को ग्याहरवें, बाहरवें दिन के क्रियाकर्म में सम्मिलित होने का अधिकार नहीं है, छलुन के लिये शुभवार होनी चाहिये, यह बात याद रखिये हिन्दू संस्कृति के अनुसार एक सूर्योदय से दूसरे सूर्योदय तक वार होती है जिस समय छलुन हो शुभवार होनी चाहिये, शुभवार है सोमवार, बुधवार, शुक्रवार और बृहस्पतिवार पंचक छलुन के लिये निषेध है।

अस्थि संचयः- अस्थियां मृत्यु के पश्चात् दस दिन के अन्दर ही गंगा में प्रवाहित करें यदि ऐसा न कर सके तो एक वर्ष के अन्दर किसी भी दिन प्रवाहित करें। यदि बच्चा मरा हुआ उत्पन्न हो अथवा उत्पन्न होते ही मरे उस बच्चे को लट्टठे में लपेट कर पृथ्वी को अर्पण करें, घर से गोद में उठाकर गड्ढा खोदने तथा पृथ्वी में अर्पण

करने के समय तक लगातार "ॐ नमः शिवाय" मन्त्र का बार-बार उच्चारण करें, दाँत निकलने तक जिस बच्चे का मृत्यु हो जाये उसका दाह संस्कार न करें अपितु उस को भी पृथ्वी अर्पण करें, दान्त निकलने के पश्चात् जो बच्चा मरे उस का दाह संस्कार करें, यज्ञोपवीत संस्कार के बिना कोई भी लड़का किसी भी आयु का हो उस की मृत्यु होने पर दाह संस्कार के पश्चात् दसवाँ दिन अवश्य करें, 11वां और बारहवां दिन न करें, उस बालक के निमित आने वाले किसी शुभवार पर बालकों को भी पूरी भोजनादि से तृप्त करें, उस मृतक बालक को जिन वस्तुओं पाठ्य पुस्तकों की ओर प्रवृति हो किसी निर्धन-विद्यार्थी को ऐसी वस्तुयें पुस्तकें वस्त्रादि दानरूप में दीजिये, या कोई आर्थिक सहायता कीजिये ताकि उसकी पढ़ाई आगे चल सके। "श्रद्धया-देयम्-अश्रद्धया-देयम्" देना ही शान्ति का मार्ग है।

श्राद्धः- श्राद्ध की जो तिथि हो, पंचांग में उस मास की वह तिथि देखें, यदि उस तिथि के साथ "दि" का चिन्ह हो तो श्राद्ध एक दिन पहले होता है, यदि "प्र" की निशानी हो तो श्राद्ध अपने ही दिन होगा, दिवा-प्रविष्ठ के आधार से पंचांग में, श्राद्ध और मध्याह्न" दर्ज है वहीं से देखिये। श्राद्ध के दिन अधिक भोजन न खायें, दिन को न सोये, ब्रह्मचर्य का पालन करें, दूसरे घर में खाना न खाइये, शराब अथवा किसी मादक द्रव्य का प्रयोग न कीजिये।

मासिक श्राद्ध (मासवार):- मासवार की जो तिथि हो उस तिथि का मध्याह्न देखना आवश्यक है मध्याह्न श्राद्ध किस दिन का कब होगा विजेयश्वर पंचांग में दर्ज है यदि श्राद्ध करने में आप असमर्थ हैं तो विधि अनुसार संकल्प करें। (श्राद्ध संकल्प विधि पंचांग में दर्ज है। तथा अपने गुरुदेव को भोजन दक्षिण आदि से तृप्त करें।

षठ् मासिक श्राद्धः- (षडमोस) मृतक के श्राद्ध की जो तिथि हो, मध्याह्न के आधार से उस तिथि का श्राद्ध कब होगा उस एक दिन पहले षठ्-मासिक श्राद्ध (षडमोस) करें और निश्चित मध्याह्न के दिन मासवार करें। जब किसी के षडमोस (षठ्-मासिक-श्राद्ध) में किसी प्रकार का विध्न पड़े तो षडमोस वार्षिक श्राद्ध (वहरवर) तक

किसी भी निश्चित मासवार तिथि पर किया जा सकता है।

वार्षिक श्राद्धः- (वहरव्र) देखते समय इस बात का ख्याल रखें यदि आप हर श्राद्ध में मध्याह्न देखते हैं तो वार्षिक श्राद्ध की तिथि में भी मध्याह्न देखिये यदि आप मध्याह्न देखते नहीं हैं तो निश्चित श्राद्ध की तिथि को 'दि' 'प्र' के आधार से देखिये, मध्याह्न के आधार से अथवा 'दि' 'प्र' के आधार से जिस दिन निश्चित तिथि का श्राद्ध आयेगा उस दिन से एक दिन पहले मासवार होगी। जब किसी के वार्षिक श्राद्धः- (वहरवर) में किसी प्रकार का विध्न आ पडे अर्थात् वह निश्चित तिथि पर वार्षिक श्राद्ध कर न सके तो वार्षिक श्राद्ध पितृपक्ष में निश्चित तिथि पर कर सकता है अथवा अगले वर्ष में जब वार्षिक श्राद्ध होगा तो उसी दिन वहरवर भी कर सकता है।

जब किसी अविवाहित लड़की की मृत्यु हो तो क्या करें?:- अविवाहित लड़की के मृत्यु पर तीन दिन का आशौच होता है उस की आत्मा को शान्ति दिलाने के लिये इन तीन दिनों तक आपके घर में भगवत्-गीता अथवा राम गीता की गूंज रहनी चाहिये, तीसरे दिन इस के निमित गरीब बच्चों में पुस्तकें अथवा किसी अनाथालय में दान के रूप में कुछ दे सकते हैं, उस का दसवां दिन इत्यादि नहीं होता है।

श्राद्ध करने न करने के सम्बन्ध में:- विवाह यज्ञोपवीत आदि संस्कार के पश्चात् छः मास तक श्राद्ध न करें, परन्तु इस बात को भूलिये मत, वह धर्माशास्त्र की आज्ञा माता-पिता के श्राद्ध पर लागू नहीं है, बल्कि माता-पिता का श्राद्ध अवश्य करना चाहिये, यदि किसी पितर का श्राद्ध करना हो परन्तु तिथि मास का ज्ञान न हो तो ऐसी स्थिति में मार्ग कृष्ण पक्ष अमावसी के दिन श्राद्ध करें, यदि श्राद्ध करने में आप असमर्थ हैं तो विध्यनुसार संकल्प करें, किसी योग्य पात्र को भोजन दक्षिणा आदि से तृप्त करें और स्वयं व्रतधारी रहिये, एक समय शुद्ध भोजन खाइये, श्राद्ध के दिन मांस का प्रयोग न करें, भगवान् व्यास का कहना है "देवयज्ञे पितृश्राद्धे तथा मांगल्य कर्मणे, तस्यैव नरके वासो यो कुर्यात् जीवघातनम्" जो गृहस्थी पितृ श्राद्ध विवाहादि मंगल कर्म में जन्मोत्सव आदि में मांस का प्रयोग करता है, वह नर्क में जाता है।

ज्येष्ठ महीनाः- यदि कन्या और वर दोनों की ज्येष्ठ अर्थात् प्रथम गर्भ के हूँ तो उन का विवाह ज्येष्ठ मास में नहीं करना चाहिये परन्तु दोनों में से यदि केवल एक ही ज्येष्ठ हो तो ज्येष्ठ मास में विवाह कर सकते हैं, यदि ज्येष्ठ मास में विवाह करना जरूरी हो तो ज्येष्ठ महीना में जब तक सूर्य कृतिका नक्षत्र में रहेगा कृतिका नक्षत्र में सूर्य कब तक रहेगा? (विजयेश्वर पंचांग में देखिये) तब तक विवाह करने में कोई दोष नहीं है। यज्ञोपवीत संस्कार के लिये ज्येष्ठ महीना तथा ज्येष्ठ लड़का होना निषेध नहीं है।

पंचकः- धनिष्ठा नक्षत्र के उत्तरार्ध से रेवती नक्षत्र के अन्त तक पांच नक्षत्र (धनिष्ठा, शतभिषा, पूर्वाभाद्रपदा, उत्तराभाद्रपदा, रेवती) पंचक कहलाता है। पंचक में कौन-कौन काम करना निषेध है? दाह संस्कार, छलुन, दक्षिण की ओर जाना, मिट्टी, तेल, मिट्टी के बरतन, लकड़ी काटनी अथवा घर लानी, छत ल्यण्टर आदि डालना तथा विवाह संस्कार में मस मूचरून निषेध है, शेष सभी कामों के लिये पंचक शुभ माना जाता है।

देव गौणः- देवगौण के लिये कोई मुहूर्त, वार, तिथि इत्यादि देखने की कोई जरूरत नहीं हैं, विवाह तथा यज्ञोपवीत का देवगौण सात दिन पहले भी हो सकता है। देवगौण करके विवाह अथवा यज्ञोपवीत संस्कार के दिन तक यदि जन्म का अशौच पडे तो अशौच का दोष नहीं होता है, यदि यज्ञोपवती अथवा विवाह संस्कार का दिन निश्चित किया हो और जन्म अशौच पड़े तो यज्ञोपवीत अथवा विवाह संस्कार का दिन बदल लेना चाहिये यदि ऐसी न हो सके तो संस्कार के समय "कूष्माण्ड" की ऋचाओं से अग्नि में घी की आहुतियां डालने से शुद्धि होती है परन्तु मृतक के अशौच पर धर्मशास्त्र की यह आज्ञा लागू नहीं है अर्थात् मृतक अशौच पड़ने पर यज्ञोपवीत तथा विवाह संस्कार न करें।

त्र्यहः- जब किसी तिथि का क्षय होता है अर्थात् जब तिथि गुम होती है उस दिन हम पंचांग में त्र्यहः लिखते है जैसे विक्रमी 2060 में चैत्र शुक्ल पक्ष त्रयोदशी भौमवार 15 अप्रैल को हम ने त्र्यहः लिखा है उस दिन त्रयोदशी तिथि प्रातः 8 बजे 23 मिनट (त्रयोदशी 8-23) प्रातः तक ही है फिर चतुर्दशी तिथि आरम्भ हो कर

रात के 4 बजे 51 मिनट पर समाप्त होती है जैसे (चतु. प्र. 4-51) अर्थात् वह दूसरे दिन प्रातः सूर्य उदय से पहले ही समाप्त होती है उसी कारण इस प्रकार की तिथि को हम गुम होना मानते है यदि इस गुम तिथि (त्र्यहः) पर किसी का जन्म दिन होगा तो उसे अपना जन्म दिन (पहली तिथि) त्रयोदशी को ही मनाना चाहिये क्योंकि चतुर्दशी तिथि गुम है इसी प्रकार कभी-कभी शुक्ल पक्ष अष्टमी भी गुम होती है तो वह व्रत भी सप्तमी को ही रखना चाहिये इसी प्रकार यदि किसी का श्राद्ध इत्यादि हो वह भी पहली तिथि पर ही करना चाहिये।

त्रिस्पृकः- जिस दिन अधिक तिथि होती है हम उस दिन त्रिस्पृक् अथवा (दिन अधिक) पंचांग में लिखते हैं अर्थात् उस दिन एक ही तिथि दो दिन रहती है जैसे 2060 में वैशाख कृष्ण पक्ष नवमी 24 अप्रैल तथा 25 अप्रैल को है यदि इस प्रकार की तिथि पर आप का जन्म दिन अथवा कोई देवव्रत (अष्टमी इत्यादि) आये तो यह दूसरी तिथि पर (25 अप्रैल) पर मनाना चाहिये, यदि श्राद्ध अथवा कोई भी पितृ कार्य ऐसी तिथि पर आये तो वह पहली तिथि (24 अप्रैल) के दिन ही मनाना चाहिये।

नोटः यदि आप माता अथवा पिता का श्राद्ध करना चाहते है तथा आप को श्राद्ध कराने के लिये गुरुजी मिलता नहीं है तो आप 'विजयेश्वर पंचांग कार्यालय' द्वारा प्रकाशित श्राद्ध पुस्तक तथा कैस्ट से अपने माता-पिता का श्राद्ध कर सकते हैं।

श्राद्ध

श्राद्ध का क्या अर्थ हैं?

शास्त्रों में लिखा हैः- 'श्रद्धया दीयते' इति श्राद्धः 'श्रद्धया क्रियते यस्मात् श्राद्धं तेन प्रकीर्तितम्'।

अर्थातः श्रद्धा से किया जाने वाला वह कार्य जो पितरों के निमित किया जाता है अथवा पितरों के निमित श्रद्धा से जो कुछ भी दिया जाता

है श्राद्ध कहलाता है शास्त्रों में मनुष्य के लिये तीन ऋण बताये गये हैं देव ऋण, ऋषि ऋण, पितृ ऋण। इनमें से मनुष्य श्राद्ध के द्वारा पितृ ऋण चुका सकता है, विष्णु पुराण में कहा गया है कि श्राद्ध से तृप्त होकर पितृ गण समस्त कामनाओं को पूर्ण करता है। हमारे सनातन धर्म में एक वर्ष मे एक सम्पूर्ण पक्ष पूज्य पितरों के निमित शास्त्रीय कर्मादि द्वारा अपनी श्रद्धा प्रकट करने के लिये नियत है। अपने माता-पिता जिन से हमें शरीर प्राप्त हुआ है हमारा पालण पोषण हुआ है यदि हम उन के नाम से विशेष सत्कार न करें उस से बढ कर कोई कृतघ्नता नहीं है, उन के नाम से दान करने पर उन की आत्मा तृप्त हो जाती हैं तथा शान्ति प्राप्त करती है पिण्ड दान से कष्ट मुक्ति होती है। चन्द्रमा मन का अधिष्ठाता है वह हमारे मन में संकल्प से की हुई क्रिया तथा मन द्वारा दिये हुये अन्न व जल को सूक्ष्म रूप से आकृष्ण करता है और पितरों तक पहुचाने में मदद करता है। आश्विन मास के कृष्ण पक्ष में सभी मृतक पितरों के श्राद्ध किये जाते हैं उन दिनों चन्द्रमा अन्य मासों की अपेक्षा पृथ्वी के निकटतर हो जाता है इस कारण उस की आकर्षण शक्ति का प्रभाव पृथ्वी तथा उसमें अधिष्ठित प्राणियों पर विशेष रूप से पडता है तथा तृप्त जितने भी जीव या पितर पितृ लोक में होते हैं उन के निमित दिया हुआ पिण्ड दान उन पितरों को तृप्त करता है। इस बात में कोई शंका नहीं है कि मृतक पिण्डदान को नहीं पाता है विज्ञान ने यह सिद्ध किया है कि तपर्ण के जल या श्राद्ध के अन्न को मृतक सूक्ष्म शरीर को प्राप्त करके आकाश में सूक्ष्मता से उस को खींच सकता है जैसे रेडियों में वह यन्त्र है जो इंग्लैण्ड, जर्मनी, रूस तथा दूर देशों के शब्दों को खींच सकता है इसी प्रकार मृतकों में पितृ लोक में जाने से उनके पास वह शक्ति सूक्ष्मता वश प्राप्त हो जाती है जो पिण्ड दान तर्पण इत्यादि प्राप्त कर सकती है।

श्राद्ध संकल्प विधि:

पितृ ऋण चुकाने के निमित्त श्राद्ध अवश्य करें, यदि आप श्राद्ध करने में असमर्थ है तो संकल्प करें, ऐसी धर्मशास्त्र की आज्ञा है। श्राद्ध संकल्प के लिये पहले सामग्री एकत्रित करें, एक थाली में चावल, थोड़ा सा नमक, फल दक्षिणा आदि रखें, थोड़ा सा तिल, धूप, दीप, फूल, अर्घ, पवित्र तिलक, केसर या चन्दन का तिलक जिस पितर का श्राद्ध हो उस का फोटो, तिलक, फूल की मालादि से सजा कर सामने रखें, यदि फोटो न हो तो

भगवान् विष्णु का अथवा भगवान् कृष्ण का फोटो रखें। पद्मासन में शुद्ध आसन पर पूर्व की ओर मुख करके बैठिये, संकल्प करने से पहले श्रीमद्भगवद्गीता का कम से कम एक अध्याय का पाठ करें, यदि ऐसा न हो सके, तो पंचांग के पाठ प्रकरण से अष्टादशश्लोकी गीता का पाठ अवश्य करें।

ॐ तत्-सत्-ब्रह्म, अद्य-तावत्-तिथौ-अद्य (मास पक्ष वार का नाम लेकर) जैसे वैशाख-मासस्य कृष्णपक्षस्य, (अथवा) शुक्लपक्षस्य तृतीयस्यां तिथौ-भौम-वासरा-न्वितायां-विष्णु-प्रीत्यर्थम्-दीप-धूप संकल्पात् सिद्धिर्-अस्तु-दीपो नमः धूपोनमः।

बायाँ यज्ञोपवीत रख कर तिल सहित जल से तर्पण करते हुये पढ़ेः- नमः पितृभ्यः-प्रेतेभ्यः, नमो धर्माय विष्णवे नमो यमाय रुद्राय कान्तार पतये नमः।

ॐ तत् सत्-ब्रह्म-अद्य-तावत्-तिथौ-अद्य (मास-पक्ष तिथि वार का नाम लेकर) पित्रो.... प्रपिताम-हाय। मात्रे पिता-मह्यै प्रपितामह्यै। माता महाय, प्रमाता-महाय, वृद्ध प्रमाता-महाय, प्रमातामह्यै वृद्ध-प्रमातामह्यै समस्तमाता-पितृभ्यो द्वादश-दैवतेभ्यः पितृभ्यः नित्यकर्म निमितं दीपः स्वधाः, धूपः, स्वधः, जिस पितर का श्राद्ध हो उसी का नाम गोत्रसहित लेकर संकल्प का पानी जो आपने हाथ में लिया होगा चावल आदि पर छिड़कते हुये पढ़े- ॐ तत्-सत्-ब्रह्म-अद्य तावत्-तिथौ-अद्य मास-पक्ष-तिथि-वार का नाम लेकर पढेः- सांवत्सरिके श्राद्धे (यदि काम्बर पक्ष (पितृपक्ष) का श्राद्ध हो) कन्यार्कगत आपरि-पाके श्राद्धे परलोके वैकुण्ठ पदवीप्राप्त्यर्थं आत्मनः पुण्य वृद्धयर्थं इदं-अन्नं दक्षिणा सहितं-फल- मूलवस्त्रादि-सहितं संकल्पयामि संकल्पयमि संकल्पयामि (दायाँ यज्ञोपवीत) रखकर फिर से तर्पण करते हुये पढ़ेः-

नमो-ब्रह्मणे-नमो-अस्तु-अग्नये-नमः पृथिव्यै-नमः औषधीभ्यः नमो वाचस्पतये-नमो-विष्णवे-बृहते कणोमि। इति-एतासाम्-एव-देवतानां-सारिष्टिं-सायुज्यं सलोकतां सामीप्यम्-आप्नोति य एवं विद्वान्-स्वाध्यायम्-अधीते ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः।

जन्म दिन पूजा

जन्म दिन पूजा आरम्भ करने से पहले कमरे में एक कम्बल अथवा कोई शुची तौलिया बिछायें फिर पूजा का सामग्री लायें:- रत्न दीप, धूप, नारीवन उस को सात गांठ लगायें, एक थाली, थोड़ा सा दूध, दही, फूल, जंग के लिये चावल उस पर थोड़ा सा नमक तथा कुछ पैसे रखें, अर्घ्य के लिये थोड़ा सा धोया हुआ चावल, यज्ञोपवीत पवित्र अथवा थोड़ा सा द्रमन घास या सोने की अंगूठी, छोटे बाल्टी में पानी उस में दूध तथा दही डालें, पानी छोड़ने के लिये एक कवली। पूजा आरम्भ करने से पहले यज्ञोपवीत धरण करें और पढें।

यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापर्तेयत् सहजं पुरस्तात् आयुष्यं अग्रयं प्रतिमुञ्च शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः।।

शुक्लाम्बरधरं विष्णुं शशि-वर्णं चतुर्भुजम्। प्रसन्नवदनं ध्याये सर्व-विघ्नोपशान्तये।
अभिप्रेतार्थ-सिद्धयर्थं पूजितो यः सुरैर्-अपि। सर्व-विघ्नच्छिदे तस्मै गणाधिपतये नमः।।1।।

हृदय और मुख को जल छिड़कते हुए पढें।

तीर्थे स्नेयं तीर्थ-मेव समानानां भवति। मा नः शंस्योर्-अरुरुषो धूर्तिः प्राणङ् मर्त्यस्य रक्षा-णो ब्रह्मणस्पते।

अनामिका उंगली में पवित्र धारण करके अपने आप को तिलक, अर्ध, फूल लगाते हुये पढें।

परमात्मने पुरुषोत्तमाय पंचभूतात्मकाय विश्वात्मने मंत्रानाथाय आत्मने नारायणाय आधारशक्त्यै समालभनं गन्धो नमः अर्घो नमः पुष्पं नमः।।

रत्न दीप, धूप को तिलक, अर्घ, पुष्प अपर्ण करके सूर्य भगवान् को थाली में तिलक तथा अर्घ, पुष्प अर्पण करते हुये पढें:-

नमो धर्म-निधनाय नमः स्व तसाक्षिणे। नमः प्रत्यक्षदेवाय भास्कराय नमो नमः।।

खोसू से थाली में रखे हुये नारीवण के ऊपर अर्घ सहित जल की धारा डालते हुये पढें:-

यत्रास्ति-माता न पिता न बन्धु-र्भ्रातापि नो यत्र सुहृत्-जनश्च न ज्ञायते यत्र दिनं न रात्रि-स्तत्रात्मदीपं शरणं प्रपद्ये। आत्मने नारायणाय-आधरशक्त्यै धूपदीपस-ङ्कल्पात् सिद्धिर्-अस्तु धूपो नमः दीपो नमः।।

जल सहित खोसू में थोड़ा सा तिलक और तीन पुष्प डालते हुये पढें:-

सं वः सृजामि हृदयं संसृष्टं मनो अस्तु वः। संसृष्टास्तन्वः सन्तु वः संसृष्टः प्राणो अस्तु वः, संयावः प्रियास्तन्वः, सं प्रिया, हृदयानि वः। आत्मा वो अस्तु, सं प्रियः सं प्रियस्तन्वो मम।

इसी जल की धारा को नारीवण पर डालते हुये पढें:-

अश्विनोः प्राणस्तौ ते प्राणं दत्तां तेन जीव। मित्रा-वरुणयोः प्राणस्तौ ते प्राणं दत्तां तेन जीव। बृहस्पतेः प्राणः सं ते प्राणं ददातु तेन जीव, जन्मोत्सव-देताभ्यो जीवादानं परिकल्पयामि नमः।

चावल सहित दो दर्भ सीधे हाथ में लेकर तीन बार गायत्री मन्त्र पढें:-

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्-वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि, धियो योनः प्रचोदयात् '3' जन्मोत्सव-देवतानां- अर्चाम्-अहं करिष्ये उों कुरुष्व।।

हाथ में पकडें हुये दो दर्भ निर्माल में डालकर फिर से दो दर्भ आसन के रूप में नारीवण के सामने डालते हुये पढें:- सप्त-जन्मोत्सव देवतानां आसनं नमः। चावल सहित दो दर्भ हाथ में पकड कर केवल चावल को कन्धे से फैकते हुये पढें:- सप्त-जन्मोत्सवदेताभ्यः युष्मान्-पूजयामि। उों-पूजय।। दो दर्भ इसी तरह पकड़ते हुये पढें:- सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात्। सभूमिं विश्वतो वृत्वात्यतिष्ठत्-दशांगुलम् जन्मोत्सवदेवता आवाहयिष्यामि। उों-आवाहय।।

पहले पकड़े हुये दो दर्भ निर्माल में ढाल कर तीन बार फूल नारीवण पर डालते हुए पढें:-

भगवन् ! पुण्डरीकाक्ष ! भक्तानु-ग्रहकारक-अस्मत् दयानु-रोधेन सन्निधानं कुरु प्रभो ।।3।।

दोनों कन्धो के ऊपर चावल फैंक कर प्राणायाम करके खोसू में जल डालते हुये पढें:-

पाद्यार्थम्-उदकं नमः। शन्नो देवीरभिष्टय-आपो भवन्तु पीतये। शंयोर्-अभिस्रवन्तु नः।

लाय, केसर, सर्वौषधि, दर्भ, जल, सब चीजें खोसू में डालकर नारीवण पर जल छोड़ते हुए पढें।

अश्व-त्थामने, बलये, व्यासाय, हनुमते, कृपाचार्याय, मार्काण्डेयाय, परशुरामाय, सप्तचिरजीवेभ्यः पाद्यं नमः।।

पाद्य का बचा हुआ पानी निर्माल में डालकर फिर से खोसू में पानी डालते हुये पढें:-

शन्नो देवीर्-अभीष्टये-आपो भवन्तु पीतये। शंयोर्-अभिस्रवन्तु नः।
जल, केसर, दर्भ, घी, चावल, जौ, सर्वोषधि, दूध ये आठ चीजें खोसू में डालकर नारीवण पर डालते हुये पढ़ें:-
अश्वत्थामन्, बले, व्यास, हनुमन्, कृपाचार्य, मार्कण्डेय, परशुराम, सप्त-चिर्, जीव इदं वो ऽर्घ्यं नमः। शुद्ध जल डालते हुये पढ़ें:- प्रजापति-जन्मोत्सवदेवताभ्यः आचमनीयं नमः। दूध वगैरह जल डालते हुये पढ़ें:- तद्विष्णोः परमं पदं सदा पश्यन्ति सूरयः। दिवीव चक्षुराततं तद्विप्रासो विपण्यवो जागृवांसः समिन्धते विष्णो-र्यत्परमं पदम्। प्रजापति जन्मोत्सवदेवताभ्यः स्नाने नमः। किसी कटोरी में फूलों का आसन बनाते हुये पढ़ें:-

आसनाय नमः गरुडासनाय नमः पद्मा-सनाय नमः शतदल-पद्मा-सनाय नमः, सहस्रदल-पद्मासनाय नमः। किमासनं ते गरुढासनाय, किं भूषणं कौस्तुभ-भूषणाय, लक्ष्मीकलत्राय, किम्-अस्ति, देयं-वागीश किं ते वचनीयम्-अस्ति।।

नारीवण को आसन पर बिठाते हुये पढ़ें:- उत्तिष्ठ भगवन् विष्णो उत्तिष्ठ कमलापते ! उत्तिष्ठ त्रिजगन्नाथ ! त्रैलोकी मंगलं कुरु।। नारीवण को सात तिलक लगाते हुये पढ़ें:-
अश्वत्थाम्ने, बलये, व्यासाय, हनुमते, कृपाचार्याय मार्काण्डेयाय परशुरामाय सप्तचिर-जीवेभ्यः समालभनं गन्धो नमः। इन्हीं सात नामों का उच्चारण करते हुये नारीवण पर अर्घ और पुष्प चढ़ाते हुये पढ़ें:-

अश्वत्थाम्ने, बलये व्यासाय, हनुमते, कृपाचार्याय, मृार्काण्डेयाय, परशुरामाय, सप्तचिर

जीवेभ्य अर्घो नमः पुष्पं नमः।। धूप रत्नीदीप, कपूर उठाकर घुमायें। यह मंत्र पढ़ें:-

तेजोसि शुक्रमसि ज्योतिर्सि धामासि, प्रियं देवानामंऽनादृष्टं देवयजनं देवाताभ्यस्त्वा देवताभ्यो गृहणामि, यज्ञेभ्यस्त्वा यज्ञिभ्यो, गृहणामि, जन्मोत्सवदेवताभ्यः धूपं रत्नदीपं कर्पूरं च परिकल्पयामि नमः।

नमस्कार करते हुये पढे:-

जय नारायण, जय पुरुषोत्तम, जय वामन कंसारे। उद्धर माम्ऽसुरेश-विनाशन्, पति-तोऽहं संसारे। घोरं हर मम नरकरिपो, केशव कल्मषाभारम्। माम्-अनुकम्पय दीनम्-अनाथं कुरु भवसागरपारम्। भगवते वासुदेवाय लक्ष्मीसहिताय नारायणाय। सप्त-जन्मोत्सव-देवताभ्यः चामरं छत्रं परिकल्पयामि नमः।

फूल चढ़ाते हुये पढ़ें:-

ध्येयं सदा परिभवघ्नम्अभीष्टदोहं तीर्थास्पदं शिव-विरिंच-नुतं शरण्यम्।
भृत्यार्तिहं प्रणतपाल भवाब्धिपोतं वन्दे महापुरुष ते चरणार-बिन्दम्। नमस्कार करते हुये पढ़ें:-

उभाभ्यां जानुभ्यां पाणिभ्यां शिरसा उरसा वचसा च अष्टांग-नमस्कारं करोमि नमः।

कटोरी में थोड़ा दूध, शहद या क्षीर रख कर अर्पण करते हुये पढ़ें:-

वासुदेवाय लक्ष्मीसहिताय नारायणाय प्रजापति-जन्मोत्सवदेवताभ्यः मात्रामधुपर्कं ॐ नमो नैवेद्यं निवेदयामि नमः।

दक्षिणा डालते हुये पढें:- जन्मोत्सव-देवाताभ्यः दक्षिणायै तिल-हिरण्य रजत निष्कर्ण ददानि।

फिर से दक्षिणा अर्पण करते हुये पढें:- एता देवताः सदक्षिणान्नेन प्रीयन्तां प्रीताः सन्तु।।

फूल चढाते हुये पढें:-

उों तद्विष्णोः परम पदं सदापश्यन्ति-सूरयः दिवीव चक्षुर्-आततम्। तद्विप्रासो विपण्यवो जागृवांसः समिन्धते विष्णोर्यत्परमं पदम्। अब नैवेद्य तहर या क्षीर थाली में लाकर एक पात्र में अलग चटू और पांच म्यचियाँ रखें, नैवेद्य के साथ ही मिश्री भी रखें। नैवेद्य की थाली को दोनों हाथों से पकड़कर सारा प्रोप्युन पढें। (प्रोप्युन विजयेश्वर पंचांग में अलग से लिखा है)

आज्ञा मांगते हुये पढें:-

आज्ञा मे दीयतां नाथ नैवेद्यस्यास्य भक्षणे। शरीर यात्रा सिद्धयर्थं भगवन् क्षन्तुम्-अर्हसि।।

पुष्प चढ़ाते हुये पढें:-

आपन्नोस्मि शरण्योस्मि सर्वावस्थासु सर्वदा। भगवंस्त्वां प्रपन्नोस्मि रक्ष मां शरणा-गतम्। पवित्र निकालकर, हाथ में नारीवण बांधकर, चटू कहीं बाहर रखकर, निर्माल नदी में डालकर नैवेद्य के साथ शकर दायें हथेली में रखकर मुंह में डालते हु पढें:-

र्माकाडण्डेय नमस्तुभ्यं सप्तकल्पान्त जीवन, आयुर्-आरोग्यं सिद्धर्यथं प्रसीद भगवन्मुने। मार्काण्डेय महाभाग सप्तकल्पान्त-जीवन, चिरऽजीवी यथा त्वं तु मुनीनां प्रवरद्विज, कुरुष्व मुनिशार्दूल, तथा मां चिरजीविनम्।।

प्रेन्युन

एक थाली में नैवेद्य तथा दूसरी में चटू और पांच म्यचियां या टुकड़े रख कर गणेश जी का ध्यान करके शुद्ध पानी अपने आप पर छिडकते हुये पढ़ें:-

तीर्थे स्नेयं तीर्थम्-एव, समानानां भवति, मानः शंसो अररुषो धूर्तिः प्राणड्-मर्त्यस्य रक्षाणो ब्रह्मणस्पते। अपने आप को तिलक लगाते हुये पढ़ें:-

परमात्मने पुरुषोत्तमाय पंच-भूतात्मकाय विश्वात्मने मन्त्रनाथाय, आत्मने नारायणाय-आधर-शक्त्यै-समालभनं गन्धो नमः अर्घो नमः, पुष्पं नमः। दीप को तिलक लगाते हुये तथा पुष्प चढाते हुये पढें:-

स्वप्रकाशो महादीपः सर्वत-स्तिमि-रापहः प्रसीद मम गोविन्द दीपोयं परिकल्पितः।

धूप को तिलक लगाते हुये पढे:-

वनस्पति रसो दिव्यो गन्धाढ्यो गन्धवत्-तमः आधरः सर्वदेवानां धूपोयं परिकल्पितः।

सूर्य भगवान् का ध्यान करके थाली में तिलक पुष्प डालते हुये पढें:- नमो धर्म-निधानाय, नमः स्वकृत-साक्षिणे, नमः प्रत्यक्ष-देवाय भास्कराय नमो नमः।

कवली से थाल में जल डालते हुये पढें:- यत्रास्ति माता न पिता न बन्धुः, भ्रातापि नो यत्र सुहृत जनश्च, न ज्ञायते यत्र दिनं न रात्रिः तत्रात्म-दीपं शरणं प्रपद्ये। आत्मने नारायणाय-आधर-शक्तयै, दीप-धूप-संकल्पात् सिद्धिर्-अस्तु, दीपो नमः, धूपो नमः।

(नैवेद्य को दोनों हाथों से पकड़ते हुये पढ़ें)

अमृतेश-मुद्रया-अमृती त्य अमृतम्-अस्तु अमृतायतां नैवेद्यम्। सावित्राणि सावित्रस्य देवस्यत्वा सवितुः प्रसवेऽशिवनो-र्बाहुभ्यां-पूष्णो हस्ताभ्याम्-आददे महागणपतये कुमाराय श्रियै सरस्वत्यै लक्ष्म्यै विश्वकर्मणे द्वार्देवताभ्यः प्रजापतये ब्रह्मणे कलश-देवताभ्यः ब्रह्मविष्णु महेश्वर-देवताभ्यः चतुर्वेदेश्वराय सानुचराय ऋतु-पतये नारायणाय दुर्गायै त्रयम्बकाय वरुणाय यज्ञपुरुषाय अग्नि-ष्वात्तादिभ्यंः पितृ-गणदेवताभ्यः। भगवते वासुदेवाय संकर्षणाय प्रद्युम्नाय अनिरुद्धाय सत्याय-पुरुषाय अच्युताय माधवाय गोविन्दाय-सहस्रनाम्ने विष्णवे लक्ष्मीसिहताय नारायणाय भवायदेवाय-शर्वाय-देवाय-रुद्राय-देवाय पशुपतये देवाय उग्राय-देवाय भीमायदेवाय महा-देवाय ईशानाय-देवाय ईश्वराय-देवाय उमासहिताय शिवाय पार्वती सहिताय परमेश्वराय विनायकाय एकदन्ताय कृष्णपिंगलाय गजाननाय लम्बोदराय भालचन्द्राय हेरम्बाय आखुरथाय विघ्नेशाय विघ्नभक्षाय वल्लभा-सहिताय श्रीमहागणेशाय क्लीं कां कुमाराय षण्मुखाय मयूरवाहनाय सेनाधिपतये कुमाराय। भगवते ह्रां ह्री सः सूर्याय सप्ताश्वाय अनश्वाय एकाश्वाय नीलाश्वाय प्रत्यक्षदेवाय परमार्थ-साराय तेजोरूपाय प्रभासहिताय आदित्याय। भगवत्यै अमायै कामायै चार्वङ्ग्यै टंकधरिण्यै तारायै पार्वत्यै यक्षिण्यै श्री शारिका-भगवत्यै श्री शारदा-भगवत्यै श्री महाराज्ञीभगवत्यै श्री ज्वाला भगवत्यै, व्रीडाभगवत्यै वैखरीभगवत्यै वितस्ताभगवत्यै गंगाभगवत्यै

यमुनाभगवत्यै कालिकाभगवत्यै सिद्धलक्ष्म्यै महालक्ष्म्यै महात्रिपुरसुन्दर्यै सहस्रनाम्न्यै देव्यै भवान्यै अभयंकरीदेव्यै क्षेमंकरीभगवत्यै सर्वशत्रुघातिण्यै इहराष्ट्राधिपतये आनन्देश्वर भैरवाय इन्द्राय वज्रहस्ताय अग्नये शक्तिहस्ताय यमाय दण्डहस्ताय नैऋतये खड्ग-हस्ताय वरुणाय पाशहस्ताय वायवे ध्वजहस्ताय कुवेराय-गदा-हस्ताय विष्णवे-चक्रहस्ताय, अनन्तादिभ्योऽष्टाभ्यः कुलनागदेवताभ्यः अग्न्या-दित्याभ्यां वरुण-चन्द्रमोभ्यां कुमार-भौमाभ्यां विष्णु-बुधाभ्यां इन्द्रा-बृहस्पतिभ्यां सरस्वती-शुक्राभ्यां, प्रजापति-शनैश्चराभ्यां गणपति-राहुभ्यां, रुद्रकेतुभ्यां ब्रह्मध्रुवाभ्यां, अनन्ता-गस्त्याभ्यां ब्रह्मणे कूर्माय ध्रुवाय अनन्ताय हरये लक्ष्म्यै कमलायै शिखायादिभ्यः पंच-चत्वारिंशत्-वास्तोष्पति-याग- देवताभ्यः ब्राह्मादिभ्यो मातृभ्यः गौर्यादिभ्यो मातृभ्यः ललितादिभ्यो मातृभ्यः दुर्गा-क्षेत्रा-गणेश्वर-देवताभ्यः राकादेवताभ्यः त्रिका-देवताभ्यः सिनीवाली-देवताभ्यः यामी-देवताभ्यः रौद्री-देवताभ्यः वारुणी-देवताभ्यः बार्हस्पत्य-देवताभ्यः ॐ भू र्देवताभ्यः ॐ भुवो देवताभ्यः ॐ स्व र्देवताभ्यः ॐ भूर्भुवः स्व र्देवताभ्यः अखण्ड-ब्रह्माण्ड- यागदेवताभ्यः धूर्भ्यः उपधूर्भ्याः महागायत्र्यै सावित्र्यै-सरस्वत्यै हेरकादिभ्यो वदुकादिभ्यः, उत्पन्नम्-अमृतं दिव्यं प्राक्-क्षीरो-दधि-मन्थनात्-अन्नम्-अमृतरूपेण नैवेद्यं प्रति-गृह्यताम्।

ईष्ट देवता का ध्यान करते हुये पढे:- उो तत्सत्-ब्रह्म-अद्य तावत् तिथौ अद्य अमुक-मासस्य अमुक-पक्षस्य अमुक-तिथौ- आत्मनो वाङ्मनः कार्योपार्जित-पापनि-वारणार्थम्, उों नमो नैवेद्यं निवेदयामि नमः। "चुटू" को स्पर्श करते हुये पढे:- या काचित्-योगिनी-रौद्रा-सौम्या घोरतरा परा।

खेचरी भूचरी रामा तुष्टा भवन्तु मे सदा। चुटू को अंगूठे से तिलक लगाकर अर्घफूल डालते हुये पढ़ें:- आकाश मातृभ्योऽन्नं नमः, आकाशमातृभ्यः समालभनं गन्धो नमः, अर्घो नमः पुष्पं नमः। चुटू के सात (7) म्यचियां अथवा सात छोटे प्रसाद के भाग रखे हुये होते हैं- पहली म्यची को स्पर्श करते हुये पढ़ें:- भगवते वासुदेवाय अन्नं क्षीरं मोदकादीन् समर्पयामि नमः। (2) दूसरी को स्पर्श करते हुये पढ़ें:- भगवते भवाय देवाय अन्नं समर्पयामि नमः (3) तीसरी को स्पर्श करते हुये पढ़े:- भगवते विनायकाय अन्नंसमर्पयामि नमः चौथी को स्पर्श करते हुये पढ़े:- (4) ह्रां ह्रीं सूर्याय अन्नं समर्पयामि नमः। पांचवी को स्पर्श करते हुऐ पढ़े: (5) इष्टदेवी भगवत्यै अन्नं मोदकान्-मिष्ठानं-क्षीरं समर्पयामि नमः। अंतिम दो भागों या दो म्यचियों पर अर्घ पानी डालते हुये पढें-यस्मिन्-निवसति क्षेत्रो क्षेत्रापालाः सकिंकराः। तस्मै नि-वेदयाम्यद्य बलिं पानीय सुयंतम्, क्षां-क्षेत्राधिपतये अन्नं नमः रां राष्ट्राधिपतये अन्नं नमः- सर्वाभय-वरप्रदो मयि पुष्टिं पुष्टिपति-दधातु। दोनों हाथ में फूल लेते हुये प्रणाम करते हुये पढ़ें:- आपन्नोस्मि शरण्योस्मि सर्वावस्थासु सर्वदा। भगवन्-त्वां-प्रपन्नोस्मि रक्ष मां शरणागतम्। उभाम्यां जानुभ्यां पाणिभ्यां शिरसा वचसा चोरसा मनसा च नमस्कारं करोमि नमः।

तर्पणः- सीधा हाथ रखते हुये पढ़े:- नमो ब्रह्मणे, नमो अस्त्वग्नये, नमः पृथिव्यै, नमः औषिधिभ्यः, नमो वाचे नमो वाचस्पतये, नमो विष्णवे, बृहते, कृणोमि, इत्येतासाम्-एव-देवतानां-सा-रि-ष्टिं-सायुज्यं सलोकतां सामीप्यम्-आप्नोति-य एवं विद्वान्-स्वाध्यायम्-अधीते।

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः।

प्राणायाम

श्वास प्रश्वास की गति को रोकना प्राणायाम कहलाता हैं। प्राणायाम के तीन भाग हैं:-
(1) पूरक, (2) कुम्भक तथा (3) रेचक।

पूरकः- पूरक का अर्थ है श्वास का आकर्षण। प्राणायाम द्वारा गायत्री मन्त्र से बोलते हुये शुद्ध वायु को बाहर से खींच कर फेफडों में फैकना 'पूरक' कहलाता है।

कुम्भकः- अन्दर लिये हुए वायु को कुछ क्षण के लिये रोका जाता है ताकि फेफडों की सम्पूर्ण ग्रन्थियों में यह वायु प्रवेश करे और फेफड़े बलवान हो जायें इस समय भी गायत्री मन्त्र का उच्चारण करना होता है।

रेचकः- रेचक का तात्पर्य है रुकी हुई वायु का निःसरण। रेचक विधि से फेफड़ों में रुकी हुई वायु को धीरे-धीरे गायत्री मन्त्र पढते हुये बाहर छोड़ते है। इस प्रकार अशुद्ध वायु बाहर आ जाती है और फेफड़ों को विश्राम मिलता है और व्यक्ति की मानसिक शक्ति बढती है और व्यक्ति से ओज व तेज प्रकट होता है, प्राणायाम करने से सभी प्रकार की चिन्ता, कष्ट इत्यादि मिट जाते हैं।

प्राणायाम मन्त्रः- ॐ भूः, ॐ भुवः, ॐ स्वः, ॐ महः, ॐ जनः, ॐ तपः, ॐ सत्यम्। ॐ तत्सवितुवरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि, धियो यो नः प्रचोदयात्। ॐ आपो ज्योति रसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भुवः स्वरोम्।

शास्त्रों में लिखा है:-

यथा पर्वतधातूनां दोषान् हरति पावकः एवम् अन्तर्गतं पापं प्राणायामेन दुह्यते।।

अर्थः-पर्वत से निकले धातुओं का मल जैसे अग्नि से जल जाता है वैसे प्राणायाम् से आन्तरिक पाप जल जाते हैं।

प्राणायम करने की विधिः-

पूरकः अगूंठे से नाक के दाहिने छिद्र को दबा कर बायें छिद्र से श्वास को धीरे-धीरे खींचे, तथा गायत्री मन्त्र भी अन्दर से पढते जाये।

कुम्भकः- जब श्वास खींचना रुक जाये तब अनामिका तथा कनिष्ठिका अंगुलि से नाक के बाये छिद्र को भी दबा दे और गायत्री मन्त्र पढते जायें।

रेचकः- अंगूठे को हटा कर दाहिने छिद्र से श्वास को धीरे-धीरे छोडें और गायत्री मन्त्र पढते जाये।

आचमनः- हमारे प्रत्येक धार्मिक कार्य में तथा दैनिक जीवन में आचमन का बहुत महत्व है, हथेली को मोड़ कर, कनिष्ठिका (सबसे छोटी अंगुली) और अंगूठे को अलग कर ले शेष अंगुलियों को सटा कर आचमन करें आचमन तीन मन्त्रों से तीन बार की जाती है:-

1. ॐ केशवाय नमः, 2, ॐ नारायणाय नमः, 3, ॐ माधवाय नमः।

आचमन के विषय में शास्त्रों में लिखा है:-

यः क्रियां कुरुते मोहाद् अनाचम्यैव नास्तिकः। भवन्ति हि वृथा तस्य क्रिया सर्वा न संशयः।।

अर्थः- आचमन न करने पर हमारे सब कार्य व्यर्थ हो जाते हैं।

वैज्ञानिक आधार से आचमन कण्ठ शोधन करने के लिये किया जाता है तथा आचमन करने से कफ के निःस्त्रित हो जाने के कारण श्वास-प्रश्वास क्रिया में और मन्त्रादि के शुद्ध उच्चारण में मदद मिलता है, तीन बार आचमन करने की क्रिया धर्म ग्रन्थों द्वारा निर्दिष्ट है, इस से कामिक, मानसिक, तथा वाचिक त्रिविधि पापों की निवृत्ति होती है।

भोजन खाने से पूर्व आचमन का मन्त्रः-

अन्तः चरसि भूतेषु गुहायां विश्वतोमुखः त्वंयज्ञः, त्वं वष्टकारः, आपो ज्योति

रसोमृतं ब्रह्म भूर्भुवः स्वरोम्।। अमृतोपस तरणमसि। अर्थात् : जलरूपी अमृत से ढक्कन खोलता हूँ।
भोजन खाने के पश्चात् आजमन का मन्त्रः अन्तः चरसि भूतेषु गुहायां विश्वतोमुखः त्वंयज्ञः, त्वं वष्टकारः, आपो ज्योति रसोमृतं ब्रह्म भूर्भुवः स्वरोम्।। अमृतोपिधानमसि अर्थात्: इस जलरूपी ढक्कन को बन्द करता हूँ।

पवित्री = पव्यथर

हमारे प्रत्येक धार्मिक कार्य में 'पवित्री' धारण करने का बहुत महत्त्व है। यह कुशा से बनाई जाती है। कुशा को पवित्र माना जाता है इस विषय में शास्त्रों में लिखा है:-

कुशमूले स्थितो ब्रह्मा-कुशमध्ये जनार्दनः। कुशाग्रे शंकरो देवः त्रयो देवाः कुशे स्थिताः।।

अर्थात्:- कुशा में तीनो देवता ब्रह्मा, विष्णु और शंकर विद्यमान है।

पवित्री कुशा के दो तिनकों से बनाई जाती है पवित्री पहन कर आचम करने से 'कुशा' झूठी नहीं होती है। पवित्री दाहिने हाथ की अनामिका उंगली में लगाई जाती है। पवित्री उंगली में लगाते समय 'ॐ भूर्भुवः स्वः' मन्त्र पढना चाहिये।

सन्ध्योपासन, पूजन, जप, पितृ कर्म यज्ञादि पर पवित्रि धारण की जाती है लिखा भी है:-

स्नाने होमे जपे दाने, स्वध्याये, पितृकमर्णि करो सदर्भौ कुर्वीत तथा सन्ध्याभिवादने।

माता-पिता के चरणों में स्वर्ग है

जप

नृसिंहपुराण में लिखा है :-

वाचिकश्च उपांशुश्च मानसस्त्रिविधः स्मृतः।
त्रयाणां जप यज्ञानां श्रेयान् स्यात् उत्तरोत्तरम्॥

जप तीन प्रकार का होता है :- वाचिक, उपांशु और मानसिक

वाचिक जप :- धीरे धीरे बोल कर होता है।

उपांशु जप :- इस प्रकार किया जाता है जिससे दूसरा न सुन सकें।

मानसिक जपः- इस में जीभ और ओष्ठ नहीं हिलते हैं।

मन्त्र जपने की करमाला विधि:-

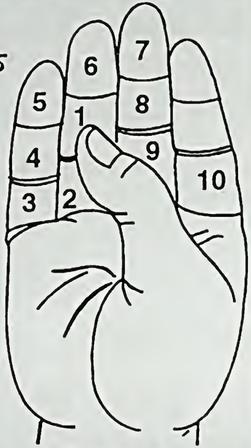

चित्र नं॰ A

अंगलियों के पर्वो (गांठो) पर भी जप किया जाता है उसे करमाला जप कहते हैं।

चित्र न० A के अनुसार 1 अंक से आरम्भ होकर 10 अंक तक अंगूठे के जप करने से एक करमाला होती है इसी प्रकार दस करमाला जप करके चित्र नम्बर B के अनुसार 1 अंक से आरम्भ करके 8 अंक तक जप करने से 108 संख्या की माला होती है।

चित्र नं॰ B

करमाला जप के कुछ नियम :-

1. जप के समय अंगुलियों को अलग अलग न रखें।
2. जप करते समय पर्व को अंगूठे से न छुयें अंगूठा नीचे रखा करें।
3. जप करते समय हाथ को वस्त्र से ढक कर रखना चाहिये।
4. जप आरम्भ करने से पूर्व सुचा आसन बिछाना चाहिये।
5. जप पूर्व दिशा की ओर मुंह करके किया करें।
6. जप आरम्भ करने से पहले उसी मन्त्र का प्राणायाम करना चाहिये जिस मन्त्र का जप करना हो।
7. जप पद्मासन में बैठ कर करे ।

8. जप रात्रि के अन्तिम चौथे भाग में करें वही समय ब्राह्मी मुहूर्त कहलाता है।
9. जप सिद्धि के लिये शुद्ध भोजन का सेवन करना चाहिये।

जपमाला :- यदि आप जपमाला का प्रयोग करेंगे तो वह 108 मनकों की होनी चाहिये, एक मनका बड़ा होना चाहिये जिसे सुमेरू कहते हैं, मालाके मनकों के बीच मे गाँठ लगी होनी चाहिये।

माला जपने की विधि :- माला को मध्यमा अंगुली के मध्यपर्व पर अथवा अनामिका के मध्यपर्व पर रखें, अंगूठे के सिरे से एक एक माला के दाने को घुमाते जायें और मन्त्र बोलते जायें। तर्जनी को इस ढंग से रखें कि वह माला का स्पर्श न करें, माला फेरते समय 'सुमेरू' को ऊपर से नही लांघना चाहिये, उसी मनके से वापस घुमा कर फिर से जप करना चाहिये।

गायत्री जप का विधान :- यदि आप ने गायत्री मन्त्र का जप करना हो तो जप के पूर्व षडङ्गन्यास करें। अङ्गन्यास करने की विधिः-

1. दाहिने हाथ की पाँचों अंगुलियों से हृदय का स्पर्श करें और पढ़ें 'ॐ हृदयाय नमः'।

2. मस्तक का स्पर्श करें:-
ॐ भुः शिरसे स्वाहा।

3. शिखा का अंगूठे से स्पर्श करें:-
ॐ भुवः शिखायै वषट्।

4. दाहिने हाथ की अंगुलियों से बायें कंधे का और बायें हाथ की अंगुलियों से दायें कन्धे का स्पर्श करें और पढ़ें:- ॐ स्वः कवचाय हुम्।

5. नेत्रों का स्पर्श करते हुये पढ़ें:-
'ॐ भूर्भुवः स्वः नेत्राभ्यां वौष्ट'।

6. बायें हाथ की हथेली पर दायें हाथ को सिर से घुमाकर मध्यमा और तर्जनी से ताली बजायें और पढ़ें:-
'ॐ भूर्भवः स्वः अस्त्राय फट्'।

जपके पूर्वकी चौबीस मुद्राएँ

सुमुखं सम्पुटं चैव विततं विस्तृतं तथा। द्विमुखं त्रिमुखं चैव चतुष्पञ्चमुखं तथा।।
षण्मुखाऽधोमुखं चैव व्यापकाञ्जलिकं तथा। शकटं यमपाशं च ग्रथितं चोन्मुखोन्मुखम्।।
प्रलम्बं मुष्टिकं चैव मत्सयः कूर्मो वराहकम्। सिंहाक्रान्तं महाक्रान्तं मुद्गरं पल्लवं तथा।।
एका मुद्राश्चतुर्विंशज्जपादौ परिकीर्तिताः।।

(1) सुमुखम्

(2) सम्पुटम्

(3) विततम्

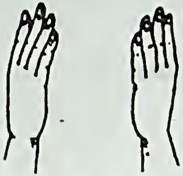
(4) विस्तृतम्

(5) द्विमुखम्

(6) त्रिमुखम्

(7) चतुर्मुखम्

(8) पञ्चमुखम्

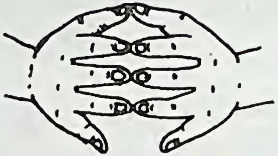
(9) षण्मुखम्

(10) अधोमुखम्

(11) व्यापकाञ्जलिम्

(12) शकटम्

(13) यमपाशम्

(14) ग्रथितम्

(15) उन्मुखोन्मुखम्

(16) प्रलम्बम्

(17) मुष्टिकम्

(18) मत्स्यः

(19) कूर्मः

(20) वराहकम्

(21) सिंहाक्रान्तम्

(22) महाक्रान्तम्

(23) मुद्गरम्

(24) पल्लवम्

हाथों में तीर्थ

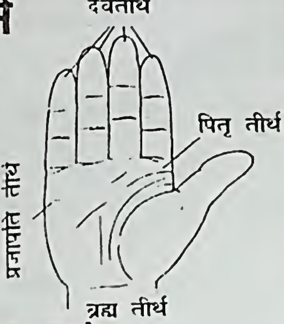

अग्नि पुराण में लिखा है:-

पैत्र्यं मूले प्रदेशिन्याः कनिष्ठायाः प्रजापतेः।
ब्राह्म्यम् अङ्गुष्ठमूलस्थं तीर्थ दैवं कराग्रतः॥
सव्य पाणि तेल वह्नेतीर्थं सोमस्य वामतः।
ऋषीणां तु समग्रेषु अङ्गुली पर्व सन्धिषु॥

अर्थातः मनुष्य के दोनों हाथों में कुछ देवताओं के तीर्थस्थान हैं, चारों अंगुलियों के अग्रभाग में देवतीर्थ, इसी कारण देवताओं को तर्पण में जलाञ्जलि अंगुलियो से दी जाती है। तर्जनी अंगुली के मूलभाग में 'पितृ तीर्थ' इसी कारण पितरो को अंगूठे के बीच में मे तर्पण में जलाञ्जलि दी जाती है, कनिष्ठा के मूल भाग में 'प्रजापति तीर्थ' इसी कारण ऋषियों को प्रजापति तीर्थ से तर्पण में जलाञ्जलि देने का विधान है, अंगूठे के मूल भाग में ब्रह्मतीर्थ है।

सन्ध्या उपासना विधि

सन्ध्या का वास्तविक अर्थ है दिन और रात्रि के मिलने का समय, सांयकाल।

शास्त्रों में सन्ध्या के विषय में लिखा है:-

संध्यामुपासते ये तु सततं संशितव्रताः।
विधूतपापास्ते यान्ति ब्रह्मलोकं सनातनम्॥

अर्थात्: जो नियम पूर्वक प्रतिदिन संध्या करते हैं वे पापरहित हो कर सनातन ब्रह्मलोक को प्राप्त होते हैं।

संध्योपासना हमारी संस्कृति का एक महत्वपूर्ण अंग है परन्तु समय के साथ साथ संध्योपासना का लोप होता जा रहा है इस को फिर से सुदृढ करने के निमित मैं संक्षिप्त रूप में शास्त्रानुसार संध्या उपासना विधि यहां पर लिख रहा हूँ ताकि हमारे नवयुवक इस को अपना कर अपने जीवन का उद्धार करें तथा अपनी संस्कृति के अंग भूत सन्ध्या उपासना विधि का प्रचार करें। हमारे पूर्वज दरिया के किनारे सन्ध्या करते थे परन्तु विस्थापन के कारण काश्मीरी पण्डित पूरे विश्व में भिखर गया और ऐसे स्थानो पर गये जहां पर दरिया, नदियां नही है इस कारण आप अपने बाथरूम में भी सन्ध्या कर सकते है (यह शास्त्र की आज्ञा है।)

जब आप स्नान के लिये बाथरूम में नहाने के लिये जायेंगे तो सबसे पहले बायाँ पाँव धोते हुये पढ़ें- ॐ नमोस्त्व-नन्ताय

सहस्र मूर्तये, सहस्र-पादाक्षि-शिरोरु-बाहवे। सहस्र-नाम्ने पुरुषाय शाश्वते, सहस्र-कोटी-युगधारिणे नमः। दायाँ पाँव धोते हुये पढ़ें- ॐ नमः कमलनाभाय नमस्ते जलशायिने। नमस्ते केशवानन्त वासुदेव नमोस्तुते॥ अञ्जलि में जल उठा कर पढ़ें-गंगा-प्रयाग-गय नैमिष-पुष्करादि तीर्थानि यानि भुवि सन्ति हरिप्रसादत्। आयान्तु तानि कर पद्म-पुटे मदीये, प्रक्षालयन्तु वदनस्य निशाकलङ्कम्। इसी जल से मुँह धोते हुये पढ़ें- तीर्थे स्नेयं तीर्थमेव समानानां भवति मानः। शंस्यो-अरुरुषो धूर्तिः प्राणङ्मर्त्यस्य रक्षाणो ब्रह्मणस्पते। यज्ञोपवीत दोनों हाथों के अँगूठों में रख कर तीन बार गायत्री मन्त्र पढ़ते हुये धोयें- ॐ भूर्भुव- स्वः तत्-सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्। यज्ञोपवीत को पहले दायें भुजा में डालते हुये पढ़ें- यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापते-र्यत्-सहजं परस्तात। आयुष्यम्-अग्र्यं प्रतिमुञ्च शुभ्रं, यज्ञोपवीतं बलम्-अस्तु-तेजः, प्राणायाम कीजिये, प्राणायाम करके नमस्कार करते हुये पढ़ें- नमो-अग्नये-अप्सुषदे, नम इन्द्राय, नमो वरुणाय, नमो वारुण्यै, नमोऽपां पतये, नमोऽदभ्यः। स्नान करते हुये पढ़ें- ॐ तत्-विष्णोः परमं पदं सदा पश्यन्ति सूरयः। दिवीव चक्षुर्-आततम् तत्-विप्रासो विपन्यवो जागृवांसः समिन्धते विष्णोर्यत्-परमं पदम्॥

माथे पर सात बार पानी छिड़कते हुये पढ़ें- ॐ भूः, ॐ भुवः ॐ स्वः, ॐ महः, ॐ जनः, ॐ तपः, ॐ सत्यम्। प्राणायाम तथा उपस्थान करते हुये पढ़ें- ॐ हंसः शुचिषत्-वसुरन्त-रिक्षसत्-होता-वेदिषत्-अतिथि-दुरोण-सत्। नृषत्-वरसत्, ऋत-सत्-व्योमसत्-अब्जा गोजा ऋतजा, अद्रिजा ऋतम्। सूर्यदेवता को नमस्कार करते हुये पढ़ें- नमो धर्मनिधानाय, नमः सुकृत साक्षिणे नमः प्रत्यक्षदेवाय भास्कराय नमो नमः। तर्पण करते हुये पढ़ें- ॐ नमो देवभ्यः यज्ञोपवीत गले में रखते हुये पढ़ें- स्वाहा ऋषिभ्यः, बायाँ यज्ञोपवीत रखकर तर्पण करते हुये पढ़ें- स्वधा पितृभ्यः दायाँ यज्ञोपवित रखकर पढ़ें- आब्रह्मस्तम्बपर्यन्तं ब्रह्माण्डं सचराचरं जगत्-तृप्यतु तृप्यतु-एवम्-अस्तु। गोविन्द गोविन्द हरे मुरारे, गोविन्द गोविन्द रथाङ्गपाणे, गोविन्द गोविन्द मुकुन्द कृष्ण गोविन्द गोविन्द नमो नमोस्तु। स्नान करके सूर्य भगवान् के ओर नमस्कार करते हुये पढ़ें- ॐ गायत्र्यै नमः, सावित्र्यै नमः, सरस्वत्यै नमः। ॐ प्रणवस्य ऋषि-ब्रह्मा, गायत्रं छन्द एव च। देवोग्नि-व्याहृतिषु च, विनियोगः प्रकीर्तितः, प्रजापते व्याहृतयः, पूर्वस्य परमेष्ठिनः, व्यस्ताश्चैव समस्ताश्च, ब्राह्मम्-अक्षरम्-ओम्-इति। व्याहृतीनां समस्तानां, दैवतं तु प्रजापतिः। व्यस्तानाम्-अयम्-अग्निश्च, वायुः सूर्यश्च देवताः। छन्दश्च व्याहृतीनाम्-एकाक्षराणां- उक्ताख्यं, द्व्यक्षराणां- अत्युक्ताख्यम्। विश्वामित्र ऋषिश्छन्दो, गायत्रं सविता तथा

देवतो पनये जप्ये, गायत्र्या योग उच्यते। आवाहयामि गायत्रीं, सर्वपापप्रणाशिनीम्। न-गायत्र्याः परं जप्यं, न व्याहृति-समं हुतम्। आगच्छ वरदे देवि, जप्ये मे सन्निधो भव। गायन्तं त्रायसे यस्मात् गायत्री त्वं ततः स्मृता। अग्नि-र्वायुश्च सूर्यश्च बृहस्पत्या-प एव च। इन्द्रश्च विश्वे देवाश्च देवताः समुदाहृताः। एवम्-आर्षं छन्दो दैवतं, विनियोगं चानु-स्मृत्य। गायत्र्या शिखां-आबद्ध्य, गायत्र्यैव समन्ततः। आत्मनश्चापः परिक्षिप्य प्राणायामं कुर्यात्। अपने आप को पानी छिड़क कर अंजलि धारण करते हुये पढ़े- ॐ ओजोसि सहोसि बलं-असि भ्राजोसि देवानां धाम नामासि। विश्वं-असि विश्वायुः सर्वं-असि सर्वायुर्-अभिभूः तीन आचमन एक साथ करते हुये पढे :- ॐ सूर्यश्च मामन्युश्च- मन्युपतयश्च मन्युकृतेभ्यः। पापेभ्यो रक्षन्ताम्। यत्-रात्र्या पापं-अकार्षं, मनसा वाचा हस्ताभ्यां, पद्भ्यां-उदरेण शिश्ना। रात्रिस्तत्-अवलुम्पतु, यत् किंचित् दुरितं मयीदम्-अहं- आपोऽमृत-योनौ सूर्य ज्योतिषि जुहोमि स्वाहा, अब सारे शरीर पर पानी छिड़कते हुये पढे- ॐ आपो हिष्ठा मयोभुव-स्तान ऊर्जे दधातन महे रणाय चक्षसे। यो वः शिवतमो रस-स्तस्य भाजयते हनः। उशतीर्-इव मातरः। तस्मा-अरंगमाम वो, यस्य क्षयाय जिन्वथ आपो जनयथा च नः। ॐ शन्नो देवीर् अभीष्टये-आपो भवन्तु पीतये शंयोर अभिस्रुवन्तु नः। तीन बार आचमन करते हुये पढ़ें- ॐ अन्तः-चरसि-भूतेषु गुहायां विश्वतो मुखः। त्वं यज्ञस्त्वं वषट्कार-आपोज्यातिः रसोमृतं ब्रह्मभूर्भुवः स्वरोम्। उपस्थान करते हुये पढ़ें:- शुक्रियं रुद्रस्य-य उदगात्-पुरस्तात्-महतो अर्णवात्-बिभ्राज-मानः सरिरस्य मध्ये। स माम्-ऋषभो रोहिताक्षः, सूर्यो विपश्चित्-मनसा पुनातु। यत्-ब्रह्मा-वादिष्म तन्मा मा हिंसीत्-सूर्याय बिभ्राजाय वै नमो नमः बायाँ यज्ञोपवीत रखकर सभी पितरों का तर्पण करके फिर से तर्पण करते हुये पढ़ें:-मातृपक्ष्या-स्तु ये केचित्-ये चान्ये पित्पक्षजाः। गुरु-क्ष्वरशुर बन्धूनां ये कुलेष्षु समुद्भवाः, ये प्रेतभावम्-आपन्ना ये चान्ये श्राद्धवर्जिता, जलदानेन ते सर्वे लभन्तां तृप्तिम्-उत्तमाम् दायाँ यज्ञोपवीत रखकर तर्पण करते हुये पढ़ें:- ॐ नमो देवेभ्यः गले में यज्ञोपवीत रख कर स्वाहा ऋषिभ्यः बायाँ यज्ञोपवीत रखकर स्वधापित्भ्यः दायाँ यज्ञोपवीत रखकर पढ़ें:- आब्रह्मस्तम्ब-पर्यन्तं ब्रह्माण्डं सचराचरं। जगत्-तृप्यतु तृप्यतु तृप्यतु एवम् - अस्तु सूर्य देवता को नमस्कार करते हुये पढ़ें:-नमो धर्मनिधानाय नमः सुकृत-साक्षिणे नमः प्रत्यक्ष देवाय भास्काराय नमो नमः, शान्तिः पुष्टि-स्तथा तुष्टिः सन्तु मे त्वत्-प्रसादतः, सर्वपाप-प्रशान्तिश्च तीर्थराज नमोस्तुते।

नोटः- यदि आप पूरी विधि अनुसार सन्ध्या करना चाहते हैं तो आप हमारे कार्यालय द्वारा छपाई हुई 'सन्ध्या' मंगा सकते है।

श्राद्ध

तर्पण - गोत्र

शास्त्रों में लिखा है:-

नास्ति मातृसमं तीर्थं पुत्राणां तारणाय च।
हितायात्र परत्रार्थं यैस्तु माता प्रपूजिता।।

अर्थात्:-माता के समान कोई तीर्थ नहीं है जो पुत्र माता का आदर करता है उस का इहलोक तथा परलोक का सुधार होता है।

वेदैर्-अपि च किं पुत्र! पिता येन प्रपूजितः
एष पुत्रस्य वै धर्मस्तथा तीर्थं नरेषु-हि।।

अर्थात्:-जो पुत्र पिता का आदर करता है उस को वेद पढ़ने की ज़रूरत नहीं है पिता ही पुत्र का धर्म है, पिता ही पुत्र का तीर्थ है।

जो व्यक्ति माता-पिता की सेवा करता है उस पर माता-पिता की कृपा होती है तथा वह संसार के प्रत्येक क्षेत्र में सफल रहता है तथा जिम पर पितृप्रकोप होता है वह किसी भी क्षेत्र में प्रगति नहीं करता है शास्त्रों में लिखा है कि मानव जीवन पर पितरों का विशेष प्रभाव होता है जो अपने पितरों का श्राद्ध या तर्पण नहीं करता है उस का जीवन कई प्रकार के संकटों से युक्त रहता है, अपने पितरों का श्राद्ध तथा तर्पण अवश्य करना चाहिये, श्राद्ध या तर्पण करते समय हमें गोत्र की आवश्यकता पड़ती है इस कारण अपने गोत्र के विषय में अवश्य जानना चाहिये।

गोत्र क्या है?

यह बात सुप्रसिद्ध है कि हमारे पूर्वज ऋषि या मुनि थे हमारे वंश को चलाने वाला अथवा जन्म देने वाला जो ऋषि या मुनि हुआ है उसी ऋषि के नाम से वंश चल पड़ता है परन्तु काश्मीर में पठान शासन के पश्चात् हम काश्मीरी, गोत्र के महत्व को भूल गये, काश्मीरी गोत्रों के साथ बहुत निरर्थक शब्द जुड़ गये हैं जिस कारण उन को समझने में द्विविधा होती है कि हमारे वंश को चलाने वाला कौन ऋषि है जैसे '**दर-भारद्वाज़**' इस में दर निरर्थक शब्द है '**भारद्वाज**' व्याकरण से शुद्ध है। जहां पर गोत्र में कुछ डांवा-डोल दिखता हो अथवा अपने गोत्र के विषय में पूरी जानकारी ना हो तो अपने गोत्र को '**कश्यप**' माने अर्थात '**कश्यप ऋषि**' के सन्तान।

काश्मीरी पण्डितों के गोत्र और जाति

हमारे पास ई 1889 की छपी हुई एक पुस्तक मौजूद है, जिस में काश्मीरी पण्डितों के गोत्र और जाते दर्ज हैं, उसी पुस्तक के आधार पर आम जनता की जानकारी के लिये विजयेश्वर पञ्चांग में हम ने गोत्र तथा जात दर्ज किये है

सं0	गोत्र	ज़ात
1	दत्तात्रेय	कौल, नगारी, जिन्सी, जलाली, वातल, सुल्तान, ओगरा, ऐमा, मोज़ा, दोनत, तोता, बसीह, किसू, मन्डल, संगारी, राफिज़, बालव, द्राबी, बामज़ाई
2	उपमान	रीवू।
3	धौम्य	राज़दान।
4	कण्ठ धौम्यां	राज़दान, वाँगनी, मुजू, शेर
5	स्वामिन मुद्गलि	ज़ाबेह, राज़दान, मुशरन, चन्ना, कण्ठ, खज़ांची, हस्त, वालव, मोंगा, देवानी, ज़टू, ज़ोतन, पोट, शोरा।
6	स्वामनि गौतम	गुरिटू, राज़दान, थपलू, नकैब,

सं0	गोत्र	ज़ात
		तहलाचार, काक, लाबरू, पारमन, ज़र्मी, पदौरा, लंगर, च्रंगू, खोसा, काकापोरी, बादाम, रैणा, काज़ी, चल्लू
7	स्वामनि गौतम लौगाक्ष	जोखू, राज़दान
8	स्वामनि भारद्वाज	तिक्कू, मुंशी, कहर, मिसकीन, घडियाली, बाज़ारी, खान
9	पालदेव वास गार्गेय	शिवपूरी, पण्डित, मल्ला, पूत, मीरखोर, कदलभुजू, कोकरू, हंगरू,

सं0	गोत्र	ज़ात
		बकाया, खशू, किचलू, मिसरी, खर, माम
10	पत सास	
	कौशिक	गंजू, कुचरू, सोलू, ज़टू, अम्बारदार, कुली, वैष्णवी, ब्राब्रू, मुसलमान, कपान, वांचू, मियां, जवानशेर, जाला, पंजू, मट्टू, फोतदार।
11	देवपत सामिन	
	औपमन्यु कौशिक	शिवपुरी
12	देव औपमन्यु	खोसू, मेता, पण्डित
13	भव कापिष्ठल	
	औपमन्यु	वानी, खान
14	सामिन वास	
	औपमन्यु	डुलू
15	भूत औपमन्यु	
	शलान क्यान	गीरू

सं0	गोत्र	ज़ात
16	स्वामिन वास	
	औपमन्यु	भटट
17	स्वामिन औपमन्यु	गिगू
18	कश औपमन्यु	भटट
19	भूतवास औपमन्यु	
	लौगाक्ष	पैशन, ज़ालपूरी, ठाकुर
20	राजभूत लौगाक्ष	
	देवल	भान
21	रात्रि भार्गवा	ज़ित्शू
22	भूत लौगाक्ष	
	धौम्या गौतम	हण्डू
23	देवसामिन गौतम	
	कौशक मुद्गल्य	
	भारद्वाज	पण्डित, कोकिल
24	स्वामिन मुद्गल्य पाराशर	गीरू
25	स्वामिन वास	तुफची

सं0	गोत्र	ज़ात
26	स्वामिन कौशिक	ठाकर, वातल
27	स्वामिन भार्गवा	बाली, बटव
28	स्वामिन कौशिक भारद्वाज	भटट, कोकरू
29	स्वामिन शाण्डल्य	पण्डित, वास
30	स्वामिन वास आत्रेय	दुस्सू, गासी, वाज़ा
31	स्वामिन गौतम आत्रेय शलान कौत्स	रैणा
32	स्वामिन गौतम आत्रेय	चोलू
33	स्वामिन कण्ठ कश्यप	लाब्रू
34	स्वामिन गार्गेय	मचामान
35	स्वामिन गण भौशक	पावेह
36	स्वामिन गौतम भारद्वाज	कमदा
37	स्वामिन वास लौगाक्ष	तव
38	दरभारद्वाज	दर, त्रिच्छल, मिसरी, जवानशेर, कन्धारी, थालचूर, ओठू, तुर्की, वागुज़ारी, बांगी

सं0	गोत्र	ज़ात
39	वशिष्ठ भारद्वाज	भटट, हखू, हण्डू
40	देव भारद्वाज	भटट, माड, कल्लू
41	शर्मण भारद्वाज	भटट
42	देव भारद्वाज कौशिक	देवा
43	शाण्डल्य भारद्वाज	भटट
44	नन्द कौशिक भारद्वाज	भटट
45	कौशिक भारद्वाज	भटट
46	शाण्डली	कार
47	चण्द शाण्डली	साधू
48	वर्षाण्डली	जोगी
49	वरवासक शाण्डली	सफाया
50	वरदेव शीलान कपी	मोटा
51	मित्र शाण्डली	सैद
52	देव शाण्डली	भतफूल
53	राज शाण्डली	वख
54	सम शाण्डली	भटट

सं0	गोत्र	ज़ात
55	स्वामिन ऋषि कनि गार्गेय	कौल, कमज़ात
56	शैलान कौत्स	तेलवान, कौल, मुक्कू
57	कौत्स आत्रेय	भटट
58	राजदत आत्रेय शलान कौत्स	भटट
59	शर्मण आत्रेय	गद्दू
60	भव आत्रेय	वारिकू
61	स्वामिन वार्षिकन	काठजू, काव, चौथाई
62	भव कापिष्ठल	काव
63	रात्र विशवामित्र अगस्त	त्रकरू, मटटू
64	दर केशटल	लदव, भटट
65	कण्ठ कश्यप	वासव, राज़दान, भटट
66	मित्र कश्यप	भटट
67	दत्तशर्मण कण्ठ कश्यप	ब्राडू, रैणा
68	देव कश्यप मुद्गल्य कश्यप	ब्राडू
69	देव कश्यप मुद्गल्य गौतम	आखन
70	स्वामिन भार्गव भारद्वाज ओस अत्री	कल्लू
71	देव गर्गी	बहान
72	देव वसिष्ट	अकबलू
73	देव कौत्स आत्रेय	बडगामी
74	देव विश्वामित्र वार्षिगन	वांगू
75	देव गौतम	भटट
76	देव कण्ठ कश्यप	कार
77	देव लौगाक्ष	पण्डित, सन्तापोरी
78	देव कौशक	भटट
79	अर्थ वार्षिण शाण्डल्य	चौधरी
80	कौशिक	भटट
81	पत्त सामिन कौशिक देव रात्र परवार	पण्डित, वाईल
82	वसिष्ट	भटट, रंगाटेंग

सं0	गोत्र	ज़ात
83	रात्र विश्वामित्र अगस्त	पण्डित
84	कार चन्द शाण्डल्य	चौधरी, कार
85	मित्रा कौशिक	पण्डित
86	शरमताकौत्स	भटट, सस
87	दतवास	कहार
88	वसिष्ट स्वामिन मुद्गल्य	भण्डारी
89	ईश्वर शाण्डल्य कौशिक	रावल, नखासी
90	दत दत शेलान कौत्स	भटट, सत्थू, कसबा, मलिक, कहकशू
91	रात्र वार्षिगण	कोतर
92	पाराशर	पचिह
93	आत्र भार्गव	हापा
94	भूत लौगाक्ष	पण्डित
95	राज वसिष्ट	शँगलू
96	दत्त वार्षिमण	सनर
97	ऋषि कौशिक	काशकारी
98	ऋषि कविगार्ग	ज़ारू
99	समवास गार्ग	भटट, सम
100	नन्द कौशिक	भटट
101	स्वामिन मुद्गल्य	मदन
102	स्वामिन हासवसी	खान, कटू
103	भव कापिष्ठल	राडू, कल्ला, सापन, लटू, कटू, वांटू, चूर, चूादर, गीरू, हकीम, वांगनू, शैव
104	भव कापिष्टल औपमन्यु	कठारू
105	स्वामिन वास लौगाक्ष	छटू
106	दरभारद्वाज	ज़ंगम
107	देव भारद्वाज	तू
108	भूत औपमन्यु	खि, रैबरी, ब्रारू, सैदा, उप्पल
109	भूत औपमन्यु शलान क्यान	गंजू, कंजू

सं०	गोत्र	ज़ात
110	स्वामिन आत्रेय	शाल, हण्डू, जदवाली, सिक, चक
111	शाण्डल्य	शायिर
112	स्वामिनवास गार्गी	सम, लन्गू
113	स्वामिन गोश वास औपमन्यु	चकू
114	शमर्ण कौत्स आत्रेय	रगू, नन्द, गदवा, दत्त, हलमत
115	देव पाराशर	यच्छ
116	कण्ठ धौम्या	काव ब्रेठ
117	स्वामिन औपमन्यु	गिगू
118	दर वार्षिमण	सफाया, बखशी, कुचरु, शाली
119	दर कापिष्ठल औपमन्यु	मीच
120	मित्रा स्वामिन कौशिक आत्रेय	पाण्डित
121	वासुदेव पालगार्ग्य	पटवारी
122	पत स्वामिन कोशिक	कन्ना
123	ऋषिकन्य गार्ग्य	गोजा

नोटः यदि आप का गोत्र या जात इस लिस्ट में नहीं है तो कृपया अपना गोत्र तथा जात इस लिस्ट में लिखने के लिये फोन : 9419133233 पर अवश्य सम्पर्क करें। – सम्पादक

मांस खाने के विषय में

यत्र प्राणि–वधो धर्मः अधर्मस्तत्र कीदृशः
ब्राह्माणो यत्र मांसाशी चांडालस्तत्र कीदृशः।

अर्थः जहां प्राणिहत्या धर्म माना जाता है अधर्म के विषय में वहां क्या कहा जाये, जहां ब्राह्मण ही मांस खाता हो वहां चण्डाल कैसा होगा।

आहर्ता चानुमन्ता च विशस्ता क्रयविक्रयी,
संस्कर्ता चोप भोक्ता च खादकाः सर्व एव ते।।

अर्थः जो हत्या के लिय पशु पालता है, जो उसे मारने की अनुमति देता है, जो उस का वध करता है, जो खरीदता है, बेचता है, पकाता है, खाता है वे सब के सब खाने वाले ही माने जाते हैं तथा सब पाप के भागी होते हैं।

ये भक्षयन्ति मांसानि भूतानां जीवितैषिणाम्
भक्ष्यन्ते तेऽपि भूतैस्तैरिति मे नास्ति संशयः।।

अर्थः जो जीवित रहने की इच्छा वाले प्राणियों के मांस को खाते हैं वे दूसरे जन्म में उन्हीं प्राणियों द्वारा भक्षण किये जाते हैं इस में किसी प्रकार का संशय नहीं है। – धर्म शास्त्र

अन्तिम संस्कार विधि

यह संस्कारों की कतार में 24वां तथा मनुष्य जीवन का अन्तिम संस्कार है। गीता में लिखा है:-

जातस्य हि ध्रुवं मृत्यु-र्ध्रुवं जन्म मृतस्य च।
तस्मात्-अपरि-हार्येऽर्थे न त्वं शोचितम्-अर्हसि।।

अर्थात्:-जन्म लेने वाले की निश्चय से मृत्यु और मरने वाले की निश्चय से जन्म होता है उदय होने वाले सूर्य का अस्त होना निश्चित है जन्म के साथ मृत्यु जुड़ी हुई है, मनुष्य मरने के लिये ही जन्म लेता है युग बदले अनेकों परिवर्तन हुये और संसार में नित्य परिवर्तन होते रहे हैं और होते रहेंगे परन्तु यह नियम न बदला न बदलेगा कि जन्म के पश्चात् मृत्यु और मृत्यु के पश्चात् जन्म होता है दिन और रात की भान्ति जन्म और मृत्यु का चक्र चलता है। कौन कैसे और क्यों जन्म लेता और मरता है यह एक रहस्य है परन्तु इतना जानना ज़रूरी है कि मृत्यु अटल है उसके लिये शोक करना निष्फल हैं।

एक हिन्दू के लिये जैसे जातकर्म, नामकर्ण, चूडाकर्म आदि संस्कार वेद विधि अनुसार किये जाते हैं ऐसे ही अन्तिम संस्कार भी यज्ञ के रूप में किया जाता है इस यज्ञ में पूर्णाहुति के रूप में पंच भौतिक शरीर को पर्ण किया जाता है यह अन्तिम संस्कार रूपी यज्ञ किस का कहां और कब होगा किसी को मालूम नहीं है।

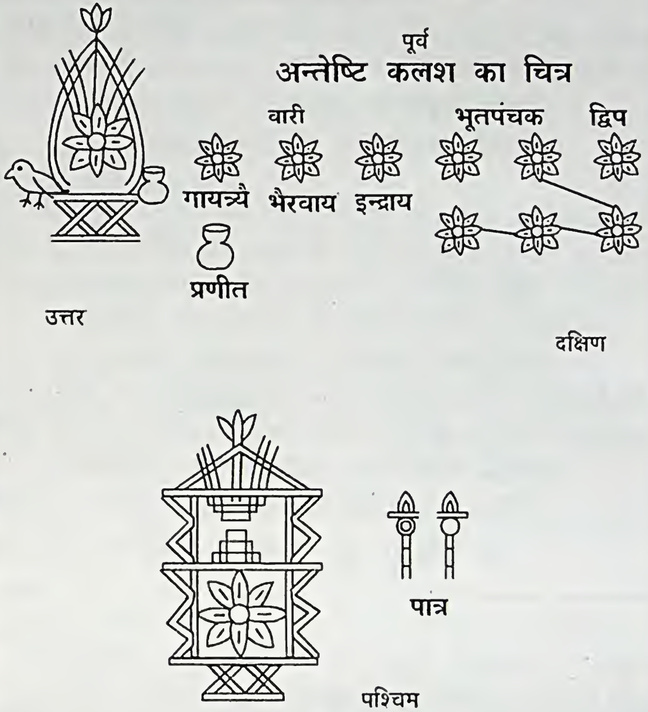

अन्तिम संस्कार की सामग्री

—सफेद लट्ठा लगभग 10 मीटर, सुई धागा, छटांग भर रुई, पुलहोर (न मिलने पर) ऊन अथवा सूत का मोज़ा, शहद 1 तोला, केसर रती भर, घी आधा किलो (असली) धूप, अखरोट 15, यज्ञोपवीत 1, चोंग छोटे 10 न मिलने पर (डोने) दूध दही पाव-पाव भर, जव का आटा आधा किलो, जव दाना आधा किलो, वारी वड़ी 1 अद्द, टाकू पर्वे 5 अद्द, कतरू अथवा वड़ा टाकू, टोकरी वड़ी 1 अद्द, ब्रिय मेव शीरीन् आदि लगभग 1 किलो, सिन्दूर 1 तोला, नारीवन 5 वन्दी, दर्भ के विष्टर 2 अद्द, पवित्र 2 अदद, लकड़ी लगभग 10 मन 4 (सौ किलो।)

कनटोपे पर उल्टा गायत्री मन्त्र लिखें-

ॐ त्-या दचो प्रनः योयोधिहिमधी स्यवदे र्गोभ ण्यं रेर्वतुवि त्सर्त स्वः वर्भु भू ॐ।

अन्त्यदान विधि

मनुष्य के मरणसमुख होने पर अन्त्यदान करना आवश्यक है, अन्त्यदान के लिये यथाशक्ति चालव वस्त्र धन आदि एकत्रित करके अन्त्यदान करने वाले मरणो—न्मुख मनुष्य के दायें हाथ में तिल पानी देकर पढें—

ॐ त्र्यम्वकं यजामहे सुगन्धि पुष्टि- वर्धनम् उवारुकम्-इव बन्धानात्-मृत्योर्मुखीय मामृतात् ॐ इत्येकाक्षरं ब्रह्म व्याहरन्-माम्- अनुस्मरन् यः प्रयाति त्यजन् देहं, स याति परमां गतिम्।। तत् सत् ब्रह्म अद्यतावत् तिथौ अद्य-महीना

पक्ष वार का नाम लेकर पढ़ें—

आत्मनो वाङ्मनः कायोपार्जित पाप निवारणार्थं विष्णु प्रीत्यर्थं-अन्नं फलं दक्षिणां वस्त्रादि ददानि ददानि ददानि पढ़कर सभी एकत्र किये वस्त्रों पर छींटे देकर—किसी दरिद्र नारायण को श्रद्धा से दीजिये।

अन्तिम संस्कार के विषय में कुछ जानकारी

गुरुजी न मिलने पर आप यह संस्कार खुद भी कर सकते है। जव भी आप समझेंगे कि मनुष्य के प्राण कण्ट पर आये हैं तो मनुष्य को चारपाई अथवा विस्तरे से उठाकर पृथ्वी पर उतारें, पृथ्वी लेपन कर के दर्भ अथवा घास विछाकर थोड़ा सा तिल फैंके तथा मृतक को दक्षिण की ओर सिर रख कर उस पर रखें। सिर के नज़दीक ही जलता हुआ दीपक (चोंग) उत्तर की ओर मुंह करके रखें। जब तक क्रिया कर्म का कार्य आरम्भ नहीं होगा तव तक गीता पाठ अवश्य करते रहें या गीता का कैस्ट चलाये। किंच्न को साफ करके एक पाव जव के आटे के चुचवरू (रोटी) पाव भर आलू चूर्मा तथा एक किलो चावल का वत्ता वनाये। अपने वेड़े (आंगन) में किसी जगह लेपन करें तथा अन्दर मृतक के सरहाने जलाया हुआ द्वीप लीपन की हुई जगह

पर रखें, धूप जला कर रखें तथा चित्र में बनाये हुये ब्रह्म कलश, भूत पंचक के चित्र जव के आटे से बनाये ब्रह्म कलश क अपृदल पर एक द्वीप में पानी, अखरोट तथा दो दर्भ के तिनके रखें, कलश के नैऋति कोण के पास एक टाकू में दभ के दो तिनके, जल, डाल कर रखें। इस पात्र को प्रणीत पात्र कहते हैं गायत्री अष्टदल तथा अस्त्र अशटदल पर एक एक दीप रखें दीप में पानी तथा अखरोट रखे भैरव पर वारी रखे। भूतपंचकों पर पांचदीप, पानी, दर्भ के दो दो तिनके डाल कर रखें, जव आटे के तीन पिंड बना कर किसी टाकू में रखे, किसी मिट्टी के बर्तन में थोड़ी सी लकडियां जला कर रखें। अव ब्रह्म कलश के सामने बैठ कर जलते हुये दीप-धूप को नमस्कार करते हुये पढ़ें।

ॐ कारो यस्य मूलं, क्रम-पद-जठरं, छन्द विस्तीर्ण-शाखा, ऋक्-पत्रं, साम-पुष्पं, यजुर्-उचित फलं, स्यात्- अथर्वा-प्रतिष्ठा यज्ञ-छाया, सुश्वेतैर्- द्विजगण-मधुपैर्- गीयते- यस्य नित्यं, शक्तिः सन्ध्या, त्रिकालं दुरित-भय-हरः, पातु नो वेद वृक्षः।

भद्रं पश्येम, प्रचरेम, भद्रं, भद्रं वदेम, श्रृणु याम भद्रं, तन्नो मित्रो वरुणो मां हन्ताम्-आदितिः सिन्धुः पृथिवी उत-द्यौः। ॐ तत्-विष्णोः परमं पदं, सदा पश्यन्ति सूर्यः दिवीव-चक्षुर-आततम्, तत्-विप्रासो विपन्यवो जागृवांसः समिन्द्धते विष्णो-र्यत्- परमं पदम।

गायत्री मन्त्र तीन बार पढ़ेः- **ॐ भूर्भुवः स्वः तत् सवितुर्-वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।**

भूतपंचकों के कलश को केवल अर्घ चढ़ाते हुये पढें, **द्रष्ट्रे नमः, उपद्रष्ट्रे नमः-अनु-द्रष्टे नमः ख्यात्रेनमः, उपख्यात्रे नमः। जाताय नमः, जनिष्य-मानाय नमः, भूताय नमः, भविष्यते नमः, चक्षुषे नमः, श्रोत्राय नमः, मनसे नमः, वाचे नमः, ब्रह्मणे नमः, भ्रान्ताय नमः, तपसे नमः।**

प्रणीतपात्र (जो ब्रह्मकलश के दायें तरफ रखा है) में केसर का तिलक और (आगे लिखे तीन मन्त्रों से तीन फूल डालते हुए पढ़ेः-(1) **संव्वः सृजामि हृदयं संसृष्टं मनो अस्तु वः (2) संय्या वः, प्रियास्तन्वः, संप्रिया, हृदयानि वः (3) आत्मा वो अस्तु संप्रियः, संप्रियास्तन्वो मम।**

कलश के पूर्व के तरफ अर्घ सहित तिलक फैंकते हुये पढ़ेः—

ये देवाः पुरः सदोग्नि नेत्रा, रक्षोहणस्ते-नः पान्तु, तेनोऽवन्तु तेभ्यः स्वाहा।

उत्तर की ओर. अर्घतिलक फैंकते हुये पढ़ें—

ये देवा उत्तरात् सदो मित्रा-वरुण-नेत्रा, रक्षोहणस्ते नः पान्तु, ते नो वन्तु, तेभ्यः स्वाहा।

ऊपर की ओर अर्घ फैंकते हुये पढ़ें:—

ये देवा उपरिषदः सोमनेत्रा अव-स्वदन्तो रक्षोहणस्ते नः पान्तु ते नो वन्तु तेभ्यः स्वाहा।

अपने आप को तिलक लगायें।

कलश को दो दर्भकाण्ड डालते हुये पढ़ेः—

ध्रुवा-द्यौर्-ध्रुवा-पृथिवी, ध्रुवासः पर्वता इमे। ध्रुवं विश्वम्-इदं जगत् ध्रुवो राजा- विशम्-असि।

कलश को तिलक लगाते हुये पढ़ें:-

अग्निम्-ईडे, पुरोहितं यज्ञस्य देवम् ऋत्विजम्। होतारं रत्न-धातमम्। यजमान अपने हृदय को जल से छिड़कते हुये पढ़ें—तीर्थे स्नेयं तीर्थम्-एव, समानानां भवति मानः .शंस्योर्-अरुरुषो धूर्तिः प्राणङ्-मर्त्यस्य रक्षाणो ब्रह्मणस्पते।

अनामिका ऊँगली पर पवित्र धारण करते हुये पढ़ें:- वसोः पवित्रम्-असि शतधारं वसूनां पवित्रम्-असि, सहस्र-धारम् अयक्ष्मा वः प्रजया संसृजामि रायस्पोषेण बहुला भवन्तीः।

अपने आप को तिलक लगाते हुये पढ़ें—परमात्मने पुरुषोत्तमाय पञ्चभूतात्मकाय विश्वात्मने मन्त्रनाथाय आत्मने नारायणाय आधारशक्त्यै समालभनं गन्धो नमः अर्घो नमः पुष्पं नमः।

दीपक को तिलक अर्घ पुष्प चढ़ाते हुये पढ़ें— स्वप्रकाशो महादीपः सर्वतस्तिमिरा-पहः। प्रसीद मम गोविन्द दीपोयं परिकल्पितः।

धूप को तिलक आदि चढ़ाते हुये पढ़ें—वनस्पति रसो दिव्यो गन्धाढ्यो गन्धवत्तमः। आधारः सर्वदेवानां धूपोयं परिकल्पितः।

सूर्य भगवान् को तिलक आदि लगाते हुये पढ़ें—नमो धर्म निधानाय नमः स्वकृत-साक्षिणे, नमः प्रत्यक्षदेवाय भस्कराय नमो नमः, समालभनं, गन्धो नमः अर्घोनमः पुष्पं नमः

अब यज्ञोपवीत बाँया रखकर सारी क्रिया करें—किसी पात्र में अर्घ सहित जल दायें हाथ के ऊपर से डालते हुये पढ़ें—यत्रास्ति माता न पिता, न बन्धु, भ्रातापि नो-यत्र सुहृत्-जनश्च। न ज्ञायते यत्रदिनं न रात्रिस्तत्रा-त्म दीपं शरणं प्रपद्ये, आत्मने नारायणाय आधारशक्त्यै दीप धूप संकल्पात् सिद्धिर्-अस्तु, दीपो नमः धूपो नमः तत्-सत्-ब्रह्म-अद्य-तावत्, तिथौ-अद्य।

(मृतक का नाम लेकर पितः-अमुक- गोत्रोत्पन्नः अन्त्यक्रिया निमित्तं एष ते दीप, एष ते धूपः।

टाकू में तिलक जल आदि डालते हुये पढ़ें— पाद्यार्थम्-उदकं नमः, शन्नो देवीर्- अभीष्टये आपो भवन्तु पीतये शंयोर्- अभिस्रवन्तु नः, भगवन्तः पाद्यम्-पाद्यम्।

टाकू में रखे हुये विष्टर या दर्भ के दो तिनकों से कलश को छिड़कते हुये पढें:-महागणपत्यादिभ्यः कलशमण्डल-देवताभ्यः अस्त्राय गायत्र्यै भैरवाय; महादंष्ट्राय, करालाय, मदोत्कटाय, श्मशानाधिपतये भैरवाय वटुकादिभ्यः पाद्यं नमः।

पाद्य शेष निर्माल्य में छोड़ कर फिर से टाकू में नया जल अर्ध्य के लिये डालते हुये पढ़ें—शन्नो देवीर्- अभीष्टये-आपो भवन्तु पीतये शंयोर्- अभिस्रवन्तुनः, भगवन्तः अर्ध्यम्- अर्ध्यम्। कलशमण्डल देवता, अस्त्र, गायत्रि, भैरव, महादंष्ट्र, कराल, मदोत्कट, श्मशानाधिपते, भैरव, वटुका-दयः इदं वो अर्ध्य नमः—तिलकं नमः, अर्घो नमः, पुष्पं नमः वासो नमः। आचमनीयं नमः

खोमू (कटोरी) से तर्पण करते हुए पढ़ें–

ॐ तत्-सत्-ब्रह्म-अद्यतावत्-तिथौ-अद्य-मास-तिथि-वार का नाम लेकर (पितुः अथवा मातुः) (जिसका देहान्त हुआ हो) अन्त्य-क्रिया- निमित्तं तिलाम्भसा-स्वर्ग-प्राप्तिर्-अस्तु, परा-तृप्तिर्- अस्तु-एताः कलश देवताः श्मशान-भैरवाः प्रीयन्ता प्रीताः सन्तु।

अन्त में सब कलशों को फूल चढ़ाते हुये पढ़े–ॐ तत् विष्णोः परम पदं सदा पश्यन्ति सूर्यः दिवीव चक्षुर-आततम्-तत् विप्रासो विपन्यवो जागृवांसः समिन्धिते विष्णो-र्यत्-परमं पदम्।

टाकू में जो लकडी जल रही है उस में तिल तथा चावल के दाने डालते हुये पढ़ें:-

पात्रं तिलाऽक्षतै-र्मिश्रं, कुसुमोदक- विष्टरैः अग्ने श्चे-शान दिक्-भागे प्रणीतम्- अभिधीयते। प्रणीतं नै-ऋते स्थाप्यं स विष्णु-नात्र संशयः।

अग्नि के सामने, आप अपने दायें तरफ एक चोंग रखिये, इस चोंग में जल विष्टर तिल डाल के रखें, यह "प्रणीत पात्र" कहलाता है, इस में तीन फूल डालते हुये पढ़ें - सं वः सृजामि हृदयं संसृष्टं मनो अस्तु वः, संसृष्टास्तन्वा सन्तु वः, संसृष्टः प्राणो अस्तु वः, संय्या वः, प्रियास्तन्वः, संप्रिया हृदयानि वः, आत्मा वो अअस्तु संप्रियः, संप्रियास्तन्वो मम।।

प्रणीतपात्र में से नव वार जल से अग्नि को छिड़कते हुये पढ़ें–ऋतन्त्वा सत्येन-अग्निं परिसमूहामि (1) सत्यं त्वर्तेन परिसमूहामि (2) ऋत- सत्याभ्यॉंत्वा परिसमूहामि (3) ऋतं त्वा सत्येन पर्युक्षामि (4) सत्यं त्वर्तेन पर्युक्षामि। (5) ऋत सत्याभ्यांत्वा पर्युक्षामि (6) ऋतंत्वा सत्येन परिषिञ्चामि (7) सत्यं त्वर्तेन परिषिञ्चामि (8) ऋत सत्याभ्यां त्वा परिषिञ्चामि (9) ज्वाला लिंग के ऊपर रखें हुय नारकतरू के पूर्व की ओर पाँच दर्भ के तिनके, दक्षिण की ओर तीन, उत्तर की ओर तीन, पश्चित की ओर पाँच तिनके फैंक कर अपने वायें तरफ एक टाकू में एक चुचवरू उसके ऊपर थोड़ा सा जव रखें फिर स्रुच यानी दो मुख वाले लकड़ी के वुमुनहुर के ऊपर विष्टर रखें और हाथ में उठा कर पढ़ें–मातुः अथवा पितुः अन्त्य क्रिया निमित्तं, स्रुच दर्भ के विष्टर सहित उल्टा चुचवुरू पर डाल कर पढ़ें–अग्नये वायवे सूर्याय ब्रह्मणे प्रजापतये कूष्मर्षेभ्य जुष्टं निर्वपामि।

स्रुच (दूसरे वुमुन हुरु) से घी की आहुतियाँ अग्नि में डालते हुए चुचवरू के टुकड़े वनाकर उसी के साथ डालते हुए पढ़ें–(1) आयुष्यः प्राणं सन्तनु स्वाहा प्राणात् व्यानं सन्तनु स्वाहा (2) व्यानात् अपानं सन्तनु स्वाहा (3) अपानात् चक्षुः सन्तनु स्वाहा (4) चक्षुषः श्रौत्रं सन्तनु स्वाहा (5) श्रोत्रात् वाचं सन्तनु स्वाहा (6) वाचः आत्मानं सन्तनु स्वाहा (7) आत्मानः पृथिवीं-सन्तनु स्वाहा (8) पृथिव्या अन्तरिक्षं सन्तनु स्वाहा (9) अन्तरिक्षात् दिवं सन्तुनु स्वाहा (10) दिवः स्वः सन्तनु स्वाहा।

ऋतुतिथ्यादिभ्यः देवताभ्यः स्वाहा, ब्रह्मणे स्वाहा, अभिजिते स्वाहा—चुचवरु के छोटे-छोटे टुकड़े भी घी करे आहुति के साथ डालते जायें—वामे गायत्र्यै स्वाहा, मध्ये भैरवाय स्वाहा, दक्षिणे अस्त्राय स्वाहा, भूतपंचकेभ्यः स्वाहा, ॐ भूर्लोकाय स्वाहा, ॐ भुवोलोकाय स्वाहा, ॐ स्वर्लोकाय स्वाहा, ॐ भूर्भुवः स्व-लोकाय स्वाहा।

(आज्य पात्र का घी आदि सभी अग्नि में फैंके) अखरोट जो घी पात्र में होगा वह पूर्णाहति का मंत्र पढ़ते हुये स्रुच से अग्नि में डालिये पूर्णाहुतिः डालते हुये पढ़ें—आश्रावितं अत्याश्रावितं-वषट्कृतं- अवषट-कृतम्- अननूक्तं-अत्यनूक्तं च। यज्ञे-तिरिक्तं कर्मणो यत्-च हीनम्-अग्नि- स्तानि प्रविदन् एतु कल्पयन् स्वाहा (नोट) अग्नि का अछिद्र मत कीजिये—जव कि यही अग्नि आप ने श्मशान में भी साथ लेना है।

कलशपूजा तथा अग्नि पूजा समाप्त करके वुज़ में लेपन करवा कर मृतक को लायें, पहने हुये कपड़े उतारिये पुरुष हो या स्त्री स्नानपट लगाइये, गर्म पानी से स्नान कीजिये, गुह्यस्थान आदि को मिट्टी तथा पानी से साफ कीजिये, स्नान करके कर्ता आँगन के पूजा स्थान से अस्त्रकलश, भैरवकलश, गायत्री कलश के चोंगू और वारी का जल लाकर गर्म पानी के स्नान के पानी में मिलायें उस जल में दूध, दही, घी सर्षप, तिल डालें, शव को विठा कर रखिये, लिखित 16 ऋचाओं से आहिस्ता-आहिस्ता वाल्टी में से कर्ता पानी डालता जाये—

(1) ॐ सहस्त्र-शीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात् स भूमिं विष्वतो वृत्वा-ऽत्यतिष्ठत्- दशागुलम्।। (2) पुरुष एवेदं सर्वं, यत्-भूतं यत् च भव्यम्। उतामृत-त्वस्ये शानो-यत्-अन्नेनाति रोहति।। (3) एतावानस्य महिमातो, ज्यायान् च पुरुषः। पादोस्य विश्वा-त्रिपाद् -अस्या मृतं दिवि।। (4) त्रिपाद्-ऊर्ध्वं उदैत्-पूरुषः, पादो स्येहा भवत् पुनः। ततो विश्वं व्याक्रामत्-सशना-नशने- अभिः।। (5) तस्मात् विराड्-अजायत, विराजो अधि पुरुषः। सजातो-अत्यरिच्यत, पश्चात् भूमिम्- अथो पुरः।। (6) यत्-पुरुषेण हविषा देवा यज्ञम्-अतन्वत। वसन्तो अस्यासीद्-आज्यं ग्रीष्म-इध्मः शरत्-हविः।। (7) तं यज्ञं बर्हिषि प्रोक्षन् पुरुषं जातम्-अग्रतः। तेन देवा-अयजन्त-साध्या ऋषयश्च ये।। (8) तस्मात-यज्ञात्-सर्वहुतः, संभृतं पृषत्- आज्यम्। पशून्-तान्-चक्रे, वायव्यान्- आरण्यान्-ग्राम्यान् च ये।। (9) तस्मात् यज्ञात् सर्वहुतः, ऋचः सामानि जज्ञिरे। छन्दांसि जज्ञिरे तस्मात् यजु-स्तस्मात्- अजायत। (10) तस्मात्-अश्वा अजायन्त, ये के चोभयादतः। गावो ह जज्ञिरे, तस्मात् तस्मात् जाता अजावयः।। (11) यत् पुरुषं व्यदधुः कतिधा-व्यकल्पयन्। मुखं किम्-अस्य, कौ बाहू, का ऊरू पादा उच्यते।। (12) ब्राह्मणोस्य मुखम्-आसीत्-राजन्यः कृतः। ऊरू तदस्य यत्-वैश्यः, पदभ्यां शूद्रो अजायत।। (13) चन्द्रमः मनसो जातः, चक्षोः सूर्यो अजायत। मुखात्-इन्द्रश्चाग्निश्च, प्राणात् वायुर्- अजायत।। (14) नाभ्या- आसीत्-अन्तरिक्षं, शीर्ष्णो द्यौः समवर्तत। पदभ्यां

भूमि दिंशः श्रोत्रात् तथा लोकान्- अकल्पय-न्।। (15) सप्तास्या सन्-परिधयः- त्रिसप्त समिधः कृताः। देवा-यत् यज्ञम्- तन्वाना-आबन्धन्-पुरुषं पशुम्। (16) यज्ञेन यज्ञम्-अयजन्त देवा-स्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन् ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः।

मृतक को स्नान करने वाले सामूहिक रूप से उच्चारण करते रहें–"**ॐ श्रीमत् नारायण नारायण नारायण**" अथवा **क्षन्तव्यो मेपराधः—शिव शिव शिव भो। श्री महादेव-शम्भो!** मृतक, पुरुष हो या स्त्री नया स्नानपट बाँधिये, पुरुष को पावों से नया यज्ञोपवीत डालकर बायें बाजू मे रखिये, पुराना यज्ञोपवीत सिर से निकाले, नव द्वारों (नाक के दो नथने दो कान, दो आँखें, दो गुह्यस्थान और मुख को छोटे-छोटे धूप के गोलों से बन्द करके, अनामिका ऊँगली में पवित्र डाले सिन्दूर का तिलक और नारीवन बांधिये, यदि मृतक महिला हो तो नारीवन भी बायें कान में फंसा के रखें, मृतक के मुँह में एक सिक्का डालिये, लट्टे तथा राम-राम पट्ट आदि से मृतक के शरीर को ओढ कर सिर पर लट्टे का कनटोपा जिस पर केसर से उल्टा गायत्री मन्त्र लिखा हो रखें यानी मृतक का सिर जिस कपड़े से ढाँपा जाये उस पर उल्टा गायत्री मन्त्र अवश्य लिखें, मृतक के पाँवों के तलों को थोड़ा सा शहद मले तथा घास का पुलहोर पाँवों में डालें पुलहोर में थोड़ी सी रुई भी रखिये (पुलहोर न मिलने पर ऊन या सूत का मोजा डालें-क्रिया करने वाला (यानी कर्ता) बाहिर पूजा स्थल पर निकल कर, चुचवरू के शेष बचे टुकड़े नदुर चूर्मा अथवा आलू चुर्मा भूत पंचकों के चोंग में डालें, अर्थी (यानी विमान) जो नजार ने पहले ही बना कर रखा होगा अथवा पहले का बना बनाया ही प्रयोग में लाना हो उसको अच्छी प्रकार से धोकर उस पर दर्भ बिछा कर उस पर तिल छिड़कें शव को उसी अर्थी पर रखिये, ऊपर सफेद चादर अथवा शाल आदि डालना हो डालिये, अर्थी को फूल की मालाओं से सजायें अर्थी को आंगन में निकाल कर शव का सिर दक्षिण की तरफ होना चाहिये; अर्थी के ऊपर फूल मेवा आदि फैंकिये, अब अर्थी के लिये रत्नदीप धूप कर्पूर जलायें सभी खड़े होकर सामूहिक रूप से आरती करें-

जय नारायण जय पुरुषोत्तम, जय वामन कंसारे
उद्धर मां सुरेश-विनाशन्-पतितोहं संसारे
घोरं हर मम नरकरिपो! केशव-कल्मष-भारम्
मां-अनुकम्पय दीनं अनाथं,कुरुभव-सागर-पारम्।।
जय जय देव, जया सुर सूदन, जय केशव, जय विष्णो
जय लक्ष्मी मुख-कमल-मधुव्रत, जय-दश-कन्धर-जिष्णो।

घोरं हर मम नरक रिपो! केशव..........यद्यपि सकलं अहं
कलयामि हरे, नहि किमपि-सत्वम्
तदपि न मुञ्चति मामिदं-अच्युत पुत्र कलत्र ममत्वं
घोरं हर ममनरकरिपो! केशव-कल्मषभारं............

पुनर्-अपि जननं पुनर्-अपि मरणं, पुनर्-अपि गर्भनिवासम्
सोढुम्-अलं पुनर्-अस्मिन् माधव-माम्-उद्धर-निजदासम्।
घोरं हर मम नरकरिपो................

त्वं जननी जनकः प्रभुर्-अच्युत-त्वं सुहृत् कुलमित्रम्
त्वं शरणं शरणागत वत्सल, त्वं-भव-जलधि-वहित्रम्।
घोरं हर मम नरकरिपो................

जनक-सुतापति-चरण-परायण शंकर- मुनिवर गीतं
धारय मनसि कृष्ण पुरुषोत्तम, वारय संसृति भीतिम
घोरं हर मम नरकरिपो........

समयानुसार ''जय जगदीश'' भी पढ़े (शंख बजायें) अब खड़े होकर क्रिया करने वाला पढ़े-

तत् सत् ब्रह्म-अद्य तावत्-मास-पक्ष- तिथि-वार तथा नाम गोत्र सहित लेकर-**पितुः** अथवा **मातुः स्वर्ग-प्राप्त्यर्थं धूपं रत्नदीपं कर्पूरं अर्पयामि नमः** (नोटः-यहाँ ब्रह्मकलश का अच्छिद्र न करें) जबकि कलश का चोंग आदि आपने श्मशान पर भी लेना है। कलश के पास तीन जव के आटे के पिंडों में से **एक पिंड हाथ में उठा कर पढ़े-तत् सत् ब्रह्म-वार- तिथि**--मृतक का नाम गोत्र सहित पढ़कर अर्थी पर शव के सिर के तरफ रखते हुये पढ़ें-पिता अथवा माता. ......**अन्त्य क्रिया निमित्तं एष ते बोधः पिण्डः प्रेतः तृप्यतु।**

अब सारा सामग्री कलश का चोंग अखरोट सहित, अस्त्र कलश चोंग 'गायत्री कलश' अखरोट सहित 'भैरव कलश की वारी' सब सामग्री इकठठी करके किसी टोकरी में उठा कर श्मशान पर ले जाइये कलश आदि जो आंगन में डाला है अर्थी निकलने के पश्चात् सब समेट कर निर्माल्य में डालें, पृथ्वी का लेपन कीजिये-चोंग भी श्मशान पर साथ लीजिये, वुज़ में भी एक चोंग जला कर रखें उसके ऊपर कोई टोकरी आदि रखें श्मशान से वापस आने पर उस को बुजायें, क्रिया करने वाला सबसे पहले शव के विमान को अपने दाहिने कन्धे से उठाये उसके पश्चात् दूसरे लोग विमान को उठा कर श्मशान की ओर चले, चलते-चलते रास्ते में सभी साथी सामूहिक रूप से उच्चारण करें-'**क्षन्तव्यो मेपराधः शिव शिव शिव भो! श्री महादेव शम्भो**। श्मशान पर पहुँचने से पहले आधे रास्ते में अर्थी को नीचे करके शव का सिर दक्षिण की ओर रख कर मृतक को सूर्य दर्शन करवा कर जव का दूसरा पिण्ड हाथ में लेकर पढ़ें-**तत् सत् बह्म अद्य तावत् तिथौ अद्य मासस्य पक्षस्य तिथौ वासरे पिता अथवा** जो कोई भी हो **अन्त्य क्रिया निमित्तं एष ते मकरध्वजः पिण्डः प्रेतः तृप्यतु**, फिर से अर्थी उठा कर श्मशान पर पहुँच कर अर्थी को नीचे रखकर जव का तीसरा पिण्ड रखते हुये पढ़ें-**तत् सत् ब्रह्म पितः अन्त्य क्रिया निमित्तं एष ते यम-दूतपिण्डः प्रेतः तृप्यतु।**

श्मशान भूमि की क्रिया

चित्र के अनुसार ब्रह्मकलश-ज्वालालिंग चितावास का नक़शा जव के आटे से बनाये, घर से ब्रह्मकलश का अखरोट सहित जो चोंग लाया है उसमें पानी विष्ठर डालकर ब्रह्मकलश के अष्टदल पर रखें-कलश पूजा घर में हम कर चुके हैं यहाँ धूप दीप जला कर चोंग को थोड़ा सा तिलक आदि लगा कर हाथ में फूल उठा कर कलश पर डालें।

प्राणायाम करके अग्नि को प्रणीत पात्र के जल से नव बार छिड़कते हुये पढें-

ऋतन्त्वा सत्येन परिसमूह्यामि, सत्यं त्वर्तेन परषिसमूह्यामि ऋत सत्या भ्यान्तवा परिसमूह्यामि। ऋतन्त्वा सत्येन पर्युक्षामि सत्यं त्वर्तेन पर्युक्षामि, ऋतसत्याभ्यान्त्वा पर्युक्षामि, ऋतन्त्वा सत्येन परिषञ्चामि सत्यंत्वर्तेन परिषिञ्चामि।

वुमुनहुरु से अग्नि में एक एक मन्त्र से आहुति डालें–**आयुषः प्राणं सन्तनु स्वाहा, प्राणात्- व्यानं, सन्तनु-स्वाहा, व्यानानात्-अपानं सन्तनु स्वाहा, अपानात्-चक्षुः सन्तनु स्वाहा, चक्षुषः श्रोत्रं सन्तनु स्वाहा, श्रोत्रात् वाचं सन्तनु स्वाहा, वाचं आत्मान सन्तनु स्वाहा, आत्मानः पृथिवीं सन्तनु स्वाहा, पृथिव्या अन्तरिक्ष सन्तनु स्वाहा, अन्तरिक्षात्-दिवं सन्तनु-स्वाहा, दिवः स्वः सन्तनु, स्वाहा। त्वं सोमासि सत्पति, त्वं राजोतवृत्रहा त्वं भद्रो असि क्रतुः स्वाहा।** ऋतु तिथ्यादि दे दें (अन्यथा पढें-**ऋतु तिथ्यादिभ्यः देवताभ्यः स्वाहा-ब्रह्मणेस्वाहा अभिजिते स्वाहा**-चुचवरु के छोटे टुकड़े भी घी के आहुति के साथ डालते जायें सभी जनता जो मृतक के साथ आई हो यजमान (क्रिया करने वाले) के पास आकर पंक्तिबद्ध रूप में बैठें जनता अलग-अलग टोलियों में बातें न करें बल्कि यदि आप मृतक के अन्तरात्मा की शान्ति के इच्छुक हैं तो निम्न वेदमन्त्रों से आहुति डालते समय श्रद्धा से सामूहिक रूप में "**स्वाहा**" का उच्चारण करें–यह आहति स्त्रुव (एक मुख वाले) वमुन हुर से (कर्ता) यजमान ही डालें–

(1) ॐ आयुर्यज्ञेन कल्पतां स्वाहा

(2) ॐ प्राणो यज्ञेन कल्पतां स्वाहा
(3) ॐ अपानो यज्ञेन कल्पतां स्वाहा
(4) ॐ ब्यानो यज्ञेन कल्पतां स्वाहा
(5) ॐ उदानो यज्ञेन कल्पतां स्वाहा।

पात्र का घी आदि सभी अग्नि में डालें-अब मृतक के शरीर को पूर्णाहुति के लिये चित्तावासकलश पर तिलक, फूल, अर्घ, लकड़ी की छोटी-छोटी 9 खूँटियाँ जव का आटा, बत्ता का पात्र, लेपन के पास लाकर रखें, अब पहले चितावास की पूजा करनी है, चित्तावास के चित्र में लिखी रेखायें जव के आटे से बनायें-इस को माया जाल भी कहते हैं, इन रेखाओं के अनुसार खूँटियाँ अपने स्थान पर दबायें (यह माया जाल धागे से भी बनाया जाता है)

टाकू में जल तथा विष्टर (दर्भ के दो तिनके) डालकर तीन फूल डालते हुये पढ़े-

संवः सृजामि हृदयं संसृष्टं मनो अस्तु वः (1) संसृष्टा, तन्वः सन्तु वः, संसृष्टः प्राणो अस्तु वः (2) संयावः प्रिया स्तन्वः, संप्रिया हृदयानि वः, आत्मा वो अस्तु संप्रियः संप्रियास्तन्वो मम (3) दर्भ के दो तिनके हाथ में पकड़कर तीन बार गायत्री मन्त्र पढ़ें-ॐ **भूर्भुवः स्वः तत्सवितु-र्वरेण्यं, भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचादयात्।** फिर से पढ़ें-**तत्-सत्-ब्रह्म अद्य-तावत्-तिथौ-अद्य-मासस्य पक्षस्य तिथौ- वारान्वितायां- ईशाने गगनयुतस्य ईशानस्य आग्नेये-सुकेतु- युतस्य-रुद्रस्य, नैऋते सजलयुतस्य विष्णोः, वायवे वायु-युतस्य, आत्मनो पितुः अन्त्यक्रिया निमित्तं अर्चां अहं करष्ये ॐ कुरुष्व।** दर्भ के दो-दो तिनके ईशानी कोण से डालते हुये पढ़ें :- **चित्तावास देवतानां इदं-आसनं नमः, पाद्यं नमः, अर्घ्यं नमः, गन्धो नमः। अर्धो नमः पुष्यं नमः, वासो नमः। अपोशानं नमः, आचमनीयं नमः।**

इसी चितावास कलश के ऊपर लकड़ी की चिता तैयार करके मृतक को, उस पर रखें, सिर दक्षिण की ओर मुँह पूर्व की ओर रखें। लकड़ी के छोटे-छोटे टुकड़ों के सिरों पर रुई लगा कर घी में डुबो कर रखें, उनको उल्मुक कहते हैं, क्रिया करने वाले को चाहिये एक उल्मुक को टाकू या कतरु में से जलाकर जलते हुये उल्मुक से मृतक के सिर के तरफ से जलाना आरम्भ करें

फिर आरम्भ करें फिर दूसरे साथी उल्मकों से चिता को हर तरफ से जलायें, अब घी का पात्र उमनहुर घी में डाला हुआ अखरोट आदि डालते हुये पढ़ें। **आकूत्यै त्वास्वाहा ईशाने, कामाये त्वा स्वाहा इति वायवे, समृद्धयै त्वा स्वाहा इति नैऋते**-चिता के तीन प्रदक्षिणा करके सभी उल्मक चिता के पूर्व दक्षिण कोण में फैंके, सभी कर्ता तथा अन्यान्य साथी हाथ में यव तथा कुछ फूल उठा कर खड़े रहें और यह पूर्णाहुति का मन्त्र पढ़ें–**आश्रावितं अत्याश्रावितं वषटकृतम्- अवषट् कृतम्- अननूक्तं अत्यनूक्तं च, यज्ञोतिरिक्तं कर्मणो यत्-च-हीनम्- अग्निस्तानि प्रविदन्-एतु कल्पयन् स्वाहा**-फिर से यव आदि की आहुति उठाकर-कर्ता पढ़े-**अस्मत् त्वम्- अभिजातासि, त्वत्-अहं जायते पुनः**- मृतक का नाम लेकर-**आसौ पिता अथवा माता स्वर्गाय लोकाय स्वाहा** (आहुति डालिये) अब अन्त में मृतक के सिर के नीचे जलता हुआ दीपक तथ आग का टोकू रखिये, जब चिता अच्छी प्रकार से प्रज्ज्वलित हो जये, मृतक का शरीर जब लगभग जल चुका हो-तो कुल्हाड़ी मृतक के सिर के तरफ जमीन में कुछ दबा कर रखें-फिर कर्ता को चाहिये-अस्त्र कलश की वारी को उठा कर उस में नया जल डालिये, चिता के तीन प्रदक्षिणा करते हुये वारी का जल आहिस्ता-आहिस्ता फैंकते हुये अखरी तीसरे प्रदक्षिणा के अन्त में कुल्हाड़ी या पत्थर पर वारी तोड़ दीजिए-उपस्थान करते हुये पढें-**नमो महिम्ने उत चक्षुषे महतां पिता उरु तत् गृणीमः हुतो याहि पथिभि-देवयानैर्- औषधीषु प्रतिष्ठा शरीरैः**

कर्ता दर्भ के दो तिनके हाथ में लेकर पढ़े-**पितुः अथवा मातुः अन्त्य क्रिया निमित्तं चितावास देवतानां पूजनम्-अछिद्रम्-अछिद्रम्- अस्तु। ॐ शान्तिः शान्तिः** सभी श्मशान पर आई हुई जनता चित्ता की ओर हाथ जोड़ के रहें-सभी सामुहिक रूप में पढ़े– **ॐ यो रुद्रो अग्नौ य अप्सु य औषधीषुयो वनस्पतिषु यो रुद्रो विश्वा भुवना विवेश तस्मै रुद्राय नमो अस्तुदेवाः।।**

सभी परिजंनों का जहाँ पानी सुलभ हो नहा कर मुख शोद्धन आदि करके बायाँ यज्ञोपवीत रख कर थोड़ा सा तिल हाथ में लेकर तर्पण करना चाहिये तर्पण करते हुये पढे - **ॐ तत् सत् ब्रह्म मास-पक्ष-तिथि-वार का नाम लेकर-पितुः अथवा मातुः अन्त्य क्रिया निमित्तं एतत् तिलोदकम्-एतत् ते उदक-तर्पणम्।**

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः

शिवनामावल्यष्टकम्

हे चन्द्रचूड मदनान्तक शूलपाणे
स्थाणो गिरीश गिरिजेश महेश शम्भो।
भूतेश भीतभयसूदन मामनाथं
संसार दु:खगहनाज्जगदीश रक्ष।।१।।

हे चन्द्रचूड! (चन्द्रमाको सिरमें धरण करनेवाले), हे मदनान्तक! (कामदेवको भस्म कर देनेवाले), हे शूलपाणे!, हे स्थाणो! (सदा स्थिर रहनेवाले), हे गिरीश तथा गिरिजापते, हे महेश, हे शम्भो, हे भूतेश, जरा, मृत्यु आदिसे भयभीतकी रक्षा करनेवाले, हे जगदीश्वर शिव! संसारके गहन दु:खोंसे मेरी रक्षा कीजिये।।१।।

हे पार्वती हृदय वल्लभ चन्द्रमौले
भूताधिप प्रमथनाथ गिरीशजाप।
हे वामंदेव भव रुद्र पिनाकपाणे
संसारदु:ख गहनाज्जगदीश रक्ष।।२।।

हे माता पार्वती के हृदयेश्वर हे चन्द्रमौले!, हे भूताधिप! हे प्रमथ (रुण्ड-मुण्ड-तुण्ड) गणोंके स्वामिन्!, गिरिजाका पालन करने वाले, हे वामदेव, हे भव, हे रुद्र, हे पिनाकपाणे, हे जगदीश्वर शिव! संसारके गहन दु:खों से मेरी रक्षा कीजिये।।२।।

हे नीलकण्ठ वृषभध्वज पञ्चवक्त्र
लोकेश शेषवलयं प्रमथेश शर्व।
हे धूर्जटे पशुपते गिरिजापते मां
संसारदु:खगहनाज्जदीश रक्ष।।३।।

हे नीलकण्ठ, हे वृषकेतु, हे पञ्चमुख, लोकेश, शेषका कंकन धारण करने वाले!, हे प्रमथगणोंके स्वामी, हे शर्व, हे धूर्जटे, हे पशुपते, हे गिरिजापते, हे जगदीश्वर शिव संसारके गहन दु:खोसे मेरी रक्षा कीजिये।।३।।

हे विश्वनाथ शिव शङ्कर देवदेव
गङ्गाधर प्रमथनायक नन्दिकेश।
बाणेश्वरान्धकरिपो हर लोकनाथ
संसारदु:खगहनाज्जगदीश रक्ष।।४।।

हे विश्वनाथ, हे शिव, हे शङ्कर, हे देवाधिदेव, हे गङ्गाको धारण करनेवाले, हे प्रमथगणोंके स्वामी, हे नन्दीश्वर, हे बाणेश्वर, हे अन्धकासुर के विनाशक, हे हर, हे लोकनाथ, हे जगदीश्वर शिव! संसारके गहन दु:खों से मेरी रक्षा कीजिये।।४।।

वाराणसीपुरपते मणिकर्णिकेश
वीरेश दक्षमखकाल विभो गणेश।

सर्वज्ञ सर्वहृदयैकनिवास नाथ
संसारदुःखगहनाज्जगदीश रक्ष॥५॥

हे वाराणसी नगरीके स्वामिन्, हे मणिकर्णिकेश, हे वीरेश, हे दक्षयज्ञके विध्वंसक, हे विभो, हे गणेश, हे सर्वज्ञ, हे सर्वान्तरात्मन्, हे नाथ! हे जगदीश्वर शिव! संसारके गहन दुःखों से मेरी रक्षा कीजिये॥५॥

श्रीमन् महेश्वर कृपामय हे दयालो
हे व्योमकेश शितिकण्ठ गणाधिनाथ।
भस्माङ्गराग नृकपाल कलापमाल
संसारदुःखगहनाज्जगदीश रक्ष॥६॥

हे श्रीमान् महेश्वर, हे कृपामय, हे दयालो, हे व्योमकेश, (आकाश ही है केश जिनका), हे नीलकण्ठ, हे गणाधिनाथ, हे भस्मको अङ्राग बनानेवाले, मनुष्यों के कपालसमूह की माला धारण करने वले, हे जगदीश्वर शिव! संसार के गहन दुःखों से मेरी रक्षा कीजिये॥६॥

कैलासशैलविनिवास वृषाकपे हे
मृत्युञ्जय त्रिनयन त्रिजगन्निवास।
नारायणप्रिय मदापह शक्तिनाथ
संसारदुःखगहनाज्जगदीश रक्ष॥७॥

हे कैलासशैल पर निवास करने वाले, हे वृषाकपे, हे मृत्युञ्जय, हे त्रिनयन, हे तीनों लोकों में निवास करने वाले, हे नारायणप्रिय, हे अहंकार को नष्ट करने वाले, हे शक्तिनाथ, हे जगदीश्वर शिव! संसारके गहन दुःखों से मेरी रक्षा कीजिये॥७॥

विश्वेश विश्वभवनाशक विश्वरूप
विश्वात्मक त्रिभुवनैकगुणाभिवेश।
हे विश्वबन्धु करुणामय दीनबन्धो
संसारदुःखगहनाज्जगदीश रक्ष॥८॥

हे विश्वेश, हे संसारके जन्म-मरणके चक्रको दूर करनेवाले, हे विश्वरूप, हे विश्वात्मन्, हे त्रिभुव के समस्त गुणोंसे परिपूर्ण, हे विश्वबधो, हे करुणामय, हे दीनबन्धो! हे जगदीश्वर शिव! संसार के गहन दुःखों सेमेरी रक्षा कीजिये॥८॥

गौरीविलास भवनाय महेश्वराय
पञ्चाननाय शरणागतरक्षकाय।
शर्वाय सर्वजगतामधिपाय तस्मै
दारिद्र्यदुःखदहनाय नमः शिवाय॥९॥

भगवती पार्वती के विलासके आधार महेश्वर के लिये पञ्चाननके लिये, शरणगतोंके रक्षक के लिये, शर्व -शम्भुके लिये, सम्पूर्ण जगत्पतिके लिये एवं दारिद्र्य तथा दुःखकों भस्म करनेवाले भगवान् शिवके लिये मेरा नमस्कार है॥९॥

विजयेश्वर पंचांग कार्यालय के

नये प्रकाशन

लेखक : ओंकार नाथ शास्त्री

नवग्रह पूजा : इस पुस्तक से आप स्वयम नवग्रहों का पुष्पार्चन अथवा होम कर सकते हैं इस पुस्तक को इस प्रकार सरल विधि से बनाया गया है कि थोडी सी हिन्दी पढ़ने वाला भी इस पुस्तक से लाभ उठा सकता है। इस पुस्तक का कैसट् भी आप को मिल सकता है।

श्राद्ध विधि : प्रत्येक मनुष्य को पितृ ऋण चुकाने के लिये श्राद्ध अवश्य करना चाहिये। यदि आप अपने पित्रों का श्राद्ध करना चाहते हैं तो आप के लिये सरल विधि से श्राद्ध विधि बनाई गई है आप स्वयम भी इस पुस्तक से श्राद्ध कर सकते हैं। इस का कैसट् भी आप को मिल सकता है। मंगा कर लाभ उठायें और पितृ ऋण से मुक्ति पायें।

दसवां, ग्यारहवां तथा बारहवां दिन : यदि आप को दसवें, ग्यारहवें तथा बारहवें दिन पर किसी प्रकार से गुरुजी का प्रबन्ध नहीं होता है तो आप इस पुस्तक से अच्छी प्रकार अपने पित्र का दसवां दिन, ग्यारहवां दिन तथा बारहवां दिन वैदिक विधि से कर सकते हैं इस पुस्तक का कैसट् भी आपको मिल सकता है।

हम और हमारे संस्कार : यदि आप स्वयम अपने संस्कारों के विषय में कुछ जानना चाहते हैं अथवा अपने बच्चे को अपने संस्कारों से परिचित कराना चाहते हैं तो आप इस पुस्तक से लाभ उठा सकते हैं। इस पुस्तक में विस्तार पूर्वक 24 संस्कारों के विषय में जानकारी दी गई है। जो कि प्रत्येक काश्मीरी पण्डित परिवार के लिये जरूरी है।

यह पुस्तके आपको मिल सकती हैं

1 विजयेश्वर ज्योतिष कार्यालय
तालाब तिलो (जैन कालोनी के नज़दीक) जम्मू
फोन : 2555763

2 विजयेश्वर ज्योतिष कार्यालय
(जे के बुक शॉप) तालाब तिलो, गली नं 1, जम्मू
फोन : 2505423, 9419240070

3 विजयेश्वर ज्योतिष कार्यालय
चिनार चौक (रूप नगर), जम्मू फोन : 9419103424

ज़रा ध्यान दें

1. यदि आप शुद्ध तथा सही जन्म पत्री बनवाना चाहते हो
2. यदि आप अपने बच्चों के कुण्डलियों का सही मिलान करवाना चाहते हो
3. यदि आप को अपनी जन्म पत्री दिखानी हो

? तो

इन से सम्पर्क करें।

1. **विजयेश्वर ज्योतिष कार्यालय**
   तालाब तिलो (जैन कालोनी के नज़दीक)
   जम्मू फोन : 2555763

2. **विजयेश्वर ज्योतिष कार्यालय**
   (J. K. BOOK SHOP)
   तालाब तिलो, गली नं॰ 1, जम्मू
   फोन: 2505423, 9419240070

3. **विजयेश्वर ज्योतिष कार्यालय**
   चिनार चौक (रूप नगर), जम्मू
   फोन : 9419103424

(हम आपकी सेवा के लिये हर समय उपलब्ध हैं।)

श्री मार्तण्ड तीर्थ का महात्म्य

पूर्व सतीसरसि मग्न मृताण्डखण्डात्, प्रर्दुबभूव रविरश्मिमयं महोयत्
मार्तण्ड इत्यमिधया प्रथितिं जगाम- तस्याद्यशक्तिरसि भर्गशिखे! त्वमेव।

अर्थः प्राचीन काल में सतीसर में डूबे हुय मृत अण्ड से जो सूर्य किरण स्वरूप तेज प्रकट हुआ और मार्तण्ड नाम से प्रसिद्ध हुआ। हे भर्गशिखा भगवती! उस मार्तण्ड की आध्यशक्ति तुम ही हो

दक्षिण कश्मीर के जिला अनंतनाग में श्री मार्तण्ड तीर्थ एक अति प्राचीन तीर्थ स्थल है, जिसके आविभार्व की कथा सतीसर से घाटी तक के निर्माण की प्रक्रिया से जुड़ी है। यह तीर्थ स्थल समस्त मनोकामनाओं को पूर्ण करने वाला है। इसी तीर्थ राज़ की महिमा के बारे में पौराणिक ग्रन्थों जैसे ऋग्वेद, सोमवल्योपनिषद, मार्तण्ड़ ब्राह्मण, मार्तण्ड़ माहत्म्य, मार्कण्डेय पुराण, नीलमत पुराण, ब्रह्मववर्त पुराण, भृंगीश संहिता आदि में उल्लेख है। यह वह तीर्थ है जहां महर्षि कश्यप और अदिति की तेरहवीं संतान के रूप में श्री मार्तण्ड प्रकट हुए, जहां से शिव और पार्वती ने श्री अमरनाथ गुफा की और प्रस्थान किया, जहां कश्यप ऋषि ने अपने बारह संतानों (बारह सूर्यो) से विचारविमर्श कर श्री मार्तण्ड देव को मलमास (अधिमास) का आधिपत्य बनाया। प्रत्येक ढाई वर्ष के बाद यहां मलमास के कुम्भ मेले का आयोजन होता है। देश भर और बाहर के कई देशों से श्रद्धालु इस तीर्थ पर आकर अपने पित्रों के उद्वार हेतु श्राद्धादि करते हैं। यही वह तीर्थ हैं जहां अकाल मृत्यु का ग्रास बने पित्रों का उद्वार होता है और उन्हें प्रेतयोनी से मुक्ति मिल जाती है। यहां पर विशेष परिस्थितियों में पित्रों की मुक्ति के लिए द्वादशी, आदि करने का विधान है। इसके अतिरिक्त प्रत्येक रविवार, विजय सप्तमी, अमावसी, सूर्यग्रहण चंद्रग्रहण आदि पर्वो पर श्राद्ध तथा अन्नदानादि करना उत्तम है। इन पुण्यपर्वों पर तीर्थ यात्री मार्तण्ड़ तीर्थ परिसर के अतिरिक्त पावन चाका नदी के घाटों पर संगम तक श्राद्धादि क्रिया करते हैं।

(तेरहवां सूर्य मार्तण्ड सांस्कृतिक संदर्भ से उद्धृत)

OUR PUBLICATIONS FROM

KASHMIRI SAMITI
Kashmir Bhawan Marg Amar Colony,
Lajpat Nagar, IV, New Delhi
Ph. : 26433399, 26465280

Taneja Electricals & Tent House
(PUNJABI & KASHMERI CATERING)
4, Raghunath Mandir, Amar Colony,
Lajpat Nagar New Delhi
Ph. : 26429046

Brahmputra Complex
Shop No. 45, Sec-29, Noida
Ph. : 2453307

Departments of Department
Shop No. 1, Upper Ground Floor, Kartik Niketan-1
B-21, Shalimar Garden Extn. 11 Sahibabad. Gzb.

Krishan Lal Masala Store
271, I.N.A. Market, New Delhi Ph. : 24653227

K. TRADERS
Om Nagar, Udiwala, Bohni
Ph. : 2504702, 9419123582

Maanav Suvidha Shopee
(Jain masaley Wale)
Opp. Pacca Ghrat Talab Tillo Jammu
Ph. : 2555274
Mob. : 9419833111

Kong Posh Musical Group
104, Phase 1, Purkhoo Camps Jammu
Ph. : 0191-2605427
Mob. : 9419136447

Ram Shyam Genrel Store
Subhash Nagar, Jammu

Gupta Stationery Store
City Chowk, Jammu

विजयेश्वर कैसट्स

1. गीता प्रवचन (काश्मीरी भाषा में अर्थ तथा व्याख्या) 11 कैसट्स
2. लल्लवाक्यः काश्मीरी भाषा में 7 कैस्ट्स
3. रामगीता
4. नित्य नियम विधि
5. जन्म दिन पूजा विधि
6. भवानी सहस्रनाम
8. पंवस्तवी
9. महिम्नापारः 3 कैस्ट्स
10. जगद्धरभट्ट के विलाप
11. अन्तिम संस्कार विधि
12. श्राद्ध
13. दसवां दिन
14. ग्यारहवां व बारहवां दिन
15. नवग्रह पूजा
16. दुर्गा सप्तशती

नक्कालों से सावधान : असली कैसट्स खरीदते समय कैसट् पर भगवान् कृष्ण का फोटू अवश्य देखें, हमारे प्रत्येक कैसट् पर भगवान् कृष्ण का फोटू ट्रेड मार्क के रूप में लगा हुआ है।

-प्रकाशक

बिजबिहारा का शिव मन्दिर
आतंकवाद के साये में

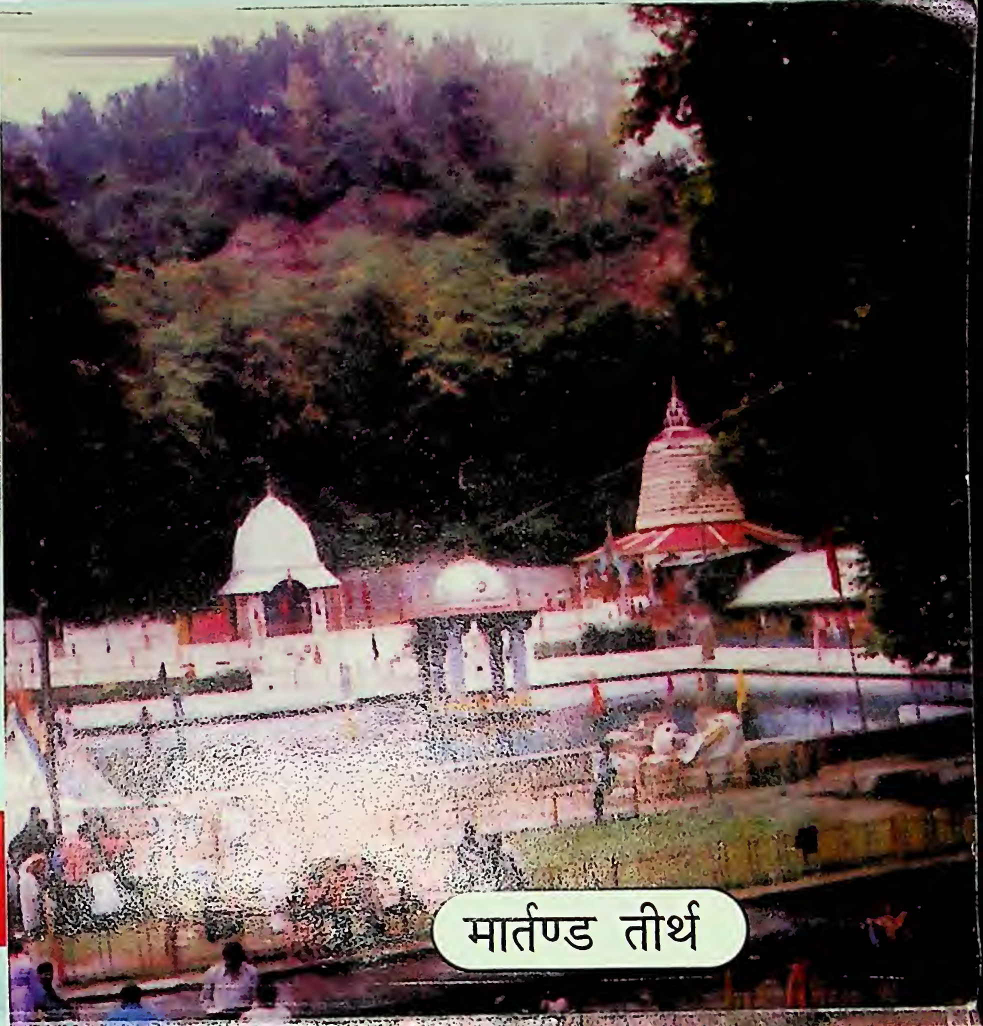

मार्तण्ड तीर्थ

यत्-चावहा-सार्थम्-असत्कृतोसि
विहारशय्यासन-भोजनेषु।
एकोऽथवा-प्यच्युत तत्समक्षं
तत्-क्षामये-त्वाम्-[illegible]अप्रमेयम्॥

भावार्थ [illegible] हे गुरुदेव! [illegible] शय्या आसन भोजनादि [illegible] के सामने यादि आप [illegible] अपमानित हुये होंगे उस अपराध के लिये क्षमा मांगता हूँ।

सम्पादक

ओंकार नाथ शास्त्री

संस्थापक

पं. प्रेम नाथ शास्त्री

विजयेश्वर पञ्चाङ्ग कार्यालय (रजि.)

अजीत कालोनी, गोलगुजराल जम्मू, स्वरदूत : 2555607